डॉ. उषा किरण सोनी की साहित्य साधना : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

DR. USHA KIRAN SONI KI SAHITYA SADHANA : AK VISHLESHNATMAK ADHYYAN

कोटा विश्वविद्यालय, कोटा

की

पीएच.डी. (हिन्दी) उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबन्ध

कला संकाय

शोधार्थी

गायत्री साल्वी

शोध पर्यवेक्षक

डॉ. मनीषा शर्मा

सह आचार्य

हिन्दी विभाग

राजकीय कला कन्या महाविद्यालय, कोटा

कोटा विश्वविद्यालय, कोटा (राज.)

2020

प्रमाण पत्र

मुझे प्रमाणित करते हुए प्रसन्नता हो रही है, कि शोध प्रबन्ध **'डॉ. उषा किरण सोनी की साहित्य साधना : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन'** शोधार्थी **गायत्री साल्वी (RS/1449/16)** ने कोटा विश्वविद्यालय, कोटा के कला संकाय में पीएच.डी. (हिन्दी) के नियमानुसार निम्नलिखित आवश्यकताओं के साथ मेरे निर्देशन में पूर्ण किया है।

1. शोधार्थी ने विश्वविद्यालय के नियमानुसार कोर्सवर्क पूर्ण किया है।
2. शोधार्थी ने 200 दिन के आवासीय आवश्यकता नियम को पूरा किया है।
3. शोधार्थी ने विश्वविद्यालय के नियमानुसार समय–समय पर अपने कार्य का प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत किया है।
4. शोधार्थी ने विभाग व संस्था प्रधान के समक्ष अपना शोधकार्य प्रस्तुत किया है।
5. शोधार्थी द्वारा यू.जी.सी से अनुमोदित शोध–पत्रिका में शोध पत्र का प्रकाशन किया है।

मैं इस शोध प्रबन्ध को कोटा विश्वविद्यालय, कोटा की पीएच.डी. उपाधि प्रदत्त किये जाने हेतु मूल्यांकनार्थ प्रस्तुत करने की अनुशंसा करती हूँ।

दिनांक :

स्थान :

शोध पर्यवेक्षक

डॉ. मनीषा शर्मा

सह आचार्य, हिन्दी विभाग

राजकीय कला कन्या महाविद्यालय, कोटा

ANTI-PLAGIARISM CERTIFICATE

It is certified that Ph.D. thesis titled 'डॉ. उषा किरण सोनी की साहित्य साधना : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन' by **Gayatri Salvi** (**RS/1449/16**) has been examined by us with the following anti-plagiarism tools. We undertake the follows:

a. Thesis has significant new work/Knowledge as compared already published or are under consideration to be published elsewhere. No sentence, equation, diagram, table, paragraph or section has been copied verbatim for previous work unless it is placed under quotation marks and duly referenced.
b. The work presented is original and own work of the author (i.e. there is no plagiarism). No ideas, processes, results or words of other have been presented as author's own work.
c. There is no fabrication of data or result which have been compiled and analyzed.
d. There is no falsification by manipulation research materials, equipment or processes, or changing or omitting data or result such that the research is not accurately represented in the research record.
e. The thesis has been checked using **Urkund** software and found within limits as per HEC plagiarism policy and instructions issued from time to time.

(Gayatri Salvi)
(Research Scholar)
Place : Kota
Date :

(Dr. Manisha Sharma)
(Research Supervisor)
Place : Kota
Date:

शोध सार

मनुष्य एक जिज्ञासु व चिन्तनशील प्राणी है और अपनी इसी प्रवृत्ति के कारण वह समाज में आ रहे परिवर्तनों व नारी की स्थिति व दशा पर अपने विचार प्रस्तुत करने लगा है। वर्तमान समाज में वह स्त्री–पुरुष सम्बन्धों में आ रहे बदलाव, भ्रष्टाचार, छल–छद्म, मानवीय रिश्तों में आ रहे टकराव के प्रति अपनी मार्मिक संवेदना प्रकट करने एवं समाज सुधार हेतु संघर्षरत हैं। इसी परम्परा की मुहिम में एक कड़ी के रुप में जुड़ी डॉ. उषा किरण सोनी अपने साहित्य के माध्यम से अपना अनुपम योगदान दे रही हैं।

इनके विचारों से समाज को अवगत कराने के लिए शोध विषय – ''डॉ. उषा किरण सोनी की साहित्य साधना–एक विश्लेषणात्मक अध्ययन'' को सात अध्यायों में विभक्त किया गया है।

प्रथम अध्याय 'डॉ. उषा किरण सोनी का 'व्यक्तित्व एवं कृतित्व', के अन्तर्गत इनके जीवनवृत्त व साहित्य–संसार का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। इनके जीवन–वृत्त के अन्तर्गत जन्म, बचपन, पारिवारिक–परिवेश, शिक्षा–दीक्षा, रुचि–अभिरुचि, व्यवसाय, आत्मीय सम्बन्धों का यथार्थ, साहित्य सृजन की प्रेरणा एवं शुभारम्भ आदि का वर्णन किया गया है। कृतित्व के अन्तर्गत इनके सम्पूर्ण साहित्य–संसार का विवेचन किया गया है।

द्वितीय अध्याय 'डॉ. उषा किरण सोनी की मूल्यपरक मीमांसा', इसके अन्तर्गत इनके साहित्य में वर्णित आध्यात्मिक और दर्शनपरक मूल्य, सांस्कृतिक, सामाजिक एवं राजनैतिक जीवन मूल्यों का विस्तृत विवेचन करते हुए मूल्यों का महत्व तथा उपयोगिता के बारे में जानकारी प्रदान की गई है।

तृतीय अध्याय 'डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य में सामाजिक चेतना', साहित्य और समाज एक सिक्के के दो पहलू हैं। समाज से भिन्न साहित्य की कल्पना नहीं की जा सकती। लेखिका ने सम्पूर्ण समाज की यथार्थ जीवनानुभूतियों को अपनी कलम कलवार से साकार दृश्यावलियों के रुप में अभिव्यक्त किया है।

चतुर्थ अध्याय 'डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य में रसानुभूति', रस जीवन है, प्राण तत्व है। रस के अभाव में कोई भी काव्य, काव्य नहीं वरन् नीरस, उबाऊ, शब्दजाल मात्र रह जाता है। लेखिका के साहित्य में श्रृंगार रस, वीर रस, करुण रस, वात्सल्य रस, हास्य रस के साथ ही आधुनिक काल में उद्भूत रस 'देशभक्ति रस', 'सत्य रस' (यथार्थ रस) 'बुद्धि रस' का भी सुन्दर परिपाक हुआ है।

पंचम अध्याय 'डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य में भाषा', भाषा भावों–विचारों की संवाहक होती है। किसी भी साहित्य को पढ़ते या सुनते ही सबसे पहले सामना भाषा से ही होता है। भाषा मात्र शब्दों का संयोजन ही नहीं बल्कि अभिव्यक्ति का पूरा रूपाकार होने के साथ ही अनुभूति और संवेदना का माध्यम भी होती है। लेखक की क्षमता का आधार यह है कि वह कितने प्रभावी ढंग से अपने सर्जनात्मक अनुभव को सम्प्रेष्य बना पाता है। डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य की भाषा में ये सभी गुण मौजूद हैं।

षष्ठम् अध्याय 'अन्य शिल्पगत विशेषताएँ', साहित्यकार के पास अपने मनोभाव तथा विषय की प्रस्तुति के लिए श्रेष्ठ शिल्प का होना नितान्त आवश्यक है, जिसके द्वारा वह अपने कथ्य को अक्षुण्ण रुप से पाठक तक संप्रेषित कर सके। शिल्प वह माध्यम है जिसके द्वारा लेखक अथवा साहित्यकार अपने अनुभव को रचनात्मकता का आधार बनाकर उसे कलात्मक मोड़ देता है। साहित्यकार के शिल्प की सफलता उसके द्वारा निर्मित शब्द–चित्र (बिम्ब) की स्पष्टता एवं सजीवता पर निर्भर करती है। डॉ. उषा किरण सोनी ने गद्य एवं पद्य दोनों ही विधाओं में अपने मनोभाव तथा कथ्य को बिम्बों द्वारा स्पष्टता एवं सजीवता प्रदान कर अद्भुत रचना कौशल का परिचय दिया है।

सप्तम अध्याय 'उपसंहार', ''डॉ. उषा किरण सोनी की साहित्य साधना–एक विश्लेषणात्मक अध्ययन'' विषय पर सात अध्यायों में शोध कार्य पूर्ण करने के पश्चात इस निष्कर्ष पर पहुँचना और आसान हो गया कि लेखिका डॉ. उषा किरण सोनी युग–बोध की लेखिका हैं। इन्होंने समाज में घटित घटनाओं को अन्तर्दृष्टि प्रदान करते हुए अपने अन्तर्मन के भावों को सृजन में उकेरा है। समाज की ज्वलंत समस्याओं को लेखनी का विषय बनाकर समाज–सुधार का मार्ग प्रशस्त किया है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि डॉ. उषा किरण सोनी का सम्पूर्ण साहित्य वर्तमान समाज को आईना दिखाता सा जान पड़ता हैं। समाज का सच उजागर करती इनकी कहानियाँ प्रत्यक्ष घटित घटनाओं की अनुभूति कराती हैं तो निबन्धों में सूक्ष्मता के साथ गहरा संजीदापन है। शब्दों की बेजोड़ कसावट कम शब्दों में सारभूत कह देने में सक्षम हैं। भावों की अनुगामिनी भाषा में लालित्य, रंजकता, शब्द–छवियाँ तथा अर्थ–गांभीर्य है। शब्द–विन्यास, पद–विन्यास, अलंकारिकता, ध्वन्यात्मकता और बिम्बात्मकता आपकी भाषा को जीवंतता प्रदान करती हैं। रचनाओं में शोषित, प्रताड़ित, वंचित वर्ग के प्रति गहरी संवेदना हैं। लेखिका ने नारी को समाज में पहचान व उसका अधिकार दिलाने हेतु शिक्षा व ज्ञान–प्राप्ति को महत्व दिया हैं। इनके सम्पूर्ण साहित्य में कल्पना, यथार्थ और प्रतिभा का मिश्रण दिखने को मिलता हैं।

घोषणा शोधार्थी

मैं **गायत्री साल्वी** (शोधार्थी–हिन्दी विभाग) यह घोषणा करती हूँ, कि मेरा यह शोध–प्रबन्ध **'डॉ. उषा किरण सोनी की साहित्य साधना : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन'** जो मेरे द्वारा प्रस्तुत किया गया है, यह मेरा अपना शोध कार्य है। मैंने यह शोध कार्य **डॉ. मनीषा शर्मा,** सह आचार्य हिन्दी के निर्देशन में पूरा किया है। यह मेरा अपना मौलिक कार्य है। मैनें अपने विचारों को अपने शब्दों में प्रस्तुत किया है और जहाँ दूसरे विचारों व शब्दों का प्रयोग किया है, वह मेरे द्वारा मान्य स्रोतों से लिया गया है। अपरिहार्य स्थिति में ली गई ऐसी हर सामग्री का यथास्थान सन्दर्भ एवं आभार व्यक्त कर दिया गया है, जो कार्य इस शोध प्रबन्ध में प्रस्तुत किया गया है।

मैं यह भी घोषणा करती हूँ कि मैंने विश्वविद्यालय के सभी अकादमिक नियमों का निष्ठा एवं ईमानदारी से पालन किया है तथा किसी तथ्य को गलत प्रस्तुत नहीं किया है। मैं समझती हूँ कि मेरे द्वारा किसी भी नियम उल्लंघन पर मेरे खिलाफ प्रशासनिक कार्यवाही की जा सकती है। मेरे खिलाफ जुर्माना भी लगाया जा सकता है यदि मैंने किसी स्रोत से बिना उसका नाम दर्शाये या जिस स्रोत से अनुमति की आवश्यकता हो, बिना अनुमति के लिया हो।

दिनांक : **गायत्री साल्वी**

स्थान : **शोधार्थी**

(RS/1449/16)

प्रमाणित किया जाता है कि शोधार्थी गायत्री साल्वी **(RS/1449/16)** द्वारा दी गई उपर्युक्त सभी सूचनाएँ मेरी जानकारी के अनुसार सही है।

शोध पर्यवेक्षक

दिनांक : डॉ.मनीषा शर्मा

स्थान : सह आचार्य, हिन्दी

राजकीय कला कन्या महाविद्यालय, कोटा

प्राक्कथन

कालचक्र सदैव गतिमान है और इसकी गति को आज तक कोई नहीं रोक सका। काल और परिस्थिति के अनुसार मानव जीवन में भी अनेकानेक परिवर्तन आते रहते है। मेरे जीवन में भी अप्रत्याशित घटनाओं ने परिवर्तन ला दिए। शैक्षिक अध्ययन में मेरी अत्यधिक रुचि रही है लेकिन अल्पायु में विवाह की घटना ने इस मार्ग में अवरोध पैदा कर दिया परन्तु काल की गति प्रबल है, जीवन में घटित दूसरी घटना ने मुझे पुनः अध्ययन के लिए विवश कर दिया। वैधव्य की मेरी यही विवशता कालान्तर में मेरी साहित्यिक रुचि के रूप में परिवर्तित हो गई। समय से प्रेरित होकर मैंने न केवल उच्च शिक्षा प्राप्त की वरन् साहित्य का गहन अध्ययन भी प्रारम्भ किया।

मेरे पूज्यनीय पिताजी और माताजी ने मुझे अपने आश्रय में रखकर हौंसला एवं हिम्मत देकर मेरे उत्साह को बढ़ाया। राजकीय सेवा में पदस्थापित हो जाने के बाद भी मैं अध्ययन–अध्यापन के साथ–साथ श्रेष्ठ साहित्यकारों के साहित्य को पढ़ती और प्रेरणा प्राप्त करती रही। सामाजिक जीवन विशेषकर नारी जीवन से जुड़े साहित्य को पढ़ना मुझे ज्यादा रुचिकर लगता।

कथा सम्राट मुंशी प्रेमचन्द, जैनेन्द्र के साथ ही महादेवी वर्मा, मन्नू भण्डारी, चित्रा मुद्गल, शिवानी, आशापूर्णा देवी, उषा प्रियंवदा, अमृता प्रीतम, मैत्रेयी पुष्पा, ममता कालिया, क्षमा चतुर्वेदी, प्रेमजी जैन जैसी अनेकानेक महिला लेखिकाओं का साहित्य मेरे लिए प्रेरणा पुंज रहा है। जब मैंने डॉ. उषा किरण सोनी के बारे में पत्र–पत्रिकाओं में छपे लेख पढ़े तो मैं बहुत अभिभूत हुई। हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, राजस्थानी, भोजपुरी, उर्दू, तेलगू, पंजाबी, बंगला इतनी सारी भाषाओं की ज्ञाता लेखिका अपने नाम के अनुरूप उषा के सुनहरे प्रकाश से सम्पूर्ण साहित्याकाश को आलोकित किए हुए है। समाज के यथार्थ को अनावृत्त करता इनका साहित्य मार्मिक संवेदना जाग्रत करता हुआ समाज का पथ–प्रशस्त कर रहा है। डॉ. उषा किरण सोनी का साहित्य पढ़कर मुझे मेरा लक्ष्य साकार होता सा जान पड़ा। बार–बार डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य को पढ़ते–पढ़ते मेरा शोधार्थी मन **'डॉ. उषा किरण सोनी की साहित्य साधना : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन'** विषय की ओर आकृष्ट हुआ।

इस शोध कार्य के लिये मैं सर्वप्रथम अपनी शोध निर्देशिका परम आदरणीया **डॉ. मनीषा शर्मा ,** सह आचार्य, हिन्दी विभाग, राजकीय कला कन्या महाविद्यालय, कोटा का श्रद्धा के साथ हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ जिनके मार्गदर्शन, साहित्यिक दृष्टिकोण एवं

अमूल्य सुझावों से यह कार्य पूर्ण हो सका तथा जिन्होंने अपना अमूल्य समय प्रदान कर उक्त कार्य को सम्पन्न कराया। शोध की क्रियाविधियों में उनके गहन चिंतन और प्रेरणा ने मुझे कार्य के लिये मनोबल एवं संबल प्रदान किया। डॉ. शर्मा (शोध पर्यवेक्षक) का पूर्व से ही मुझ पर स्नेह, ममत्व और आशीर्वाद रहा है इनका मार्गदर्शन मुझे हमेशा मिलता रहा। मैं सदैव इनकी ऋणी रहूँगी।

मेरे श्रद्धेय हिन्दी के महान विद्वान स्व. श्री कमलेश दीक्षित का मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद सदैव मुझ पर रहा है मैं सदैव इनकी ऋणी रहूँगी। डॉ. रामावतार मेघवाल जिन्होंने मेरे शोध कार्य में रूचि लेकर तथ्यों के संकलन में मुझे सहयोग प्रदान किया। इनके सहयोग के बिना इस कार्य को पूर्ण करना असंभव था। जिन्होंने शोध की इस कठिन डगर में मेरा सहयोग करते हुए मेरा उत्साह वर्धन किया और मुझे कर्मठ बनाये रखा। डॉ. रंजना शर्मा एवं डॉ. कविता यादव ने मुझे नैतिक रूप से सहयोग प्रदान कर मेरा आत्मबल बढ़ाया मैं उनका भी आभार प्रकट करती हूँ।

पिता श्री दुर्गा शंकर वर्मा, माता श्रीमती विद्यादेवी और गुरुजन मेरे ईश्वर हैं। इनके स्नेहिल, ममतामय आशीर्वाद और उत्साहवर्धन ने मेरा सपना साकार किया मैं आजीवन इनकी ऋणी रहूंगी। मेरे अनुज प्रवीण साल्वी की भी मैं आभारी हूँ जिसने मुझे आत्मबल एवं हौंसला प्रदान कर विपरीत परिस्थितियों से डटकर मुक़ाबला करना सिखाया।

मेरे वरिष्ठ साथी श्रीमती इंदुबाला शर्मा, सुश्री सीमा शर्मा, श्रीमती पुष्पलता सुमन ने मुझे उत्साह प्रदान कर मेरे हौंसलों को उड़ान दी मैं सदैव इनकी आभारी रहूँगी। मेरे पुत्र संदीप साल्वी के साथ तो मुझे बीकानेर जाकर डॉ. उषा किरण सोनी जी से मिलने का सुअवसर प्राप्त हुआ। डॉ. उषा किरण सोनी का प्रत्यक्ष आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन मुझे मिला जो मेरे लिए बड़े सौभाग्य की बात हैं।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को सात अध्यायों में विभक्त किया गया है–

प्रथम अध्याय में डॉ. उषा किरण सोनी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विस्तृत विवेचन किया गया। इस अध्याय में डॉ. उषा किरण सोनी के व्यक्तिगत जीवन यथा जन्म, परिवार, शिक्षा–दीक्षा, व्यवसाय, रुचि–अभिरुचि पर विस्तृत चर्चा की गई है। इस अध्याय के अभिव्यक्ति भाग में डॉ. उषा किरण सोनी के रचना संसार की जानकारी विस्तार से प्रस्तुत की गई है। इनके चार कविता संग्रह, चार कहानी संग्रह, एक बालगीत संग्रह, दो बालोपयोगी यात्रावृत्त, एक बालकथा संग्रह के साथ ही दो सह लेखन संग्रह, और एक इनके शोध ग्रंथ पर आधारित आलोचनात्मक पुस्तक 'कन्हैयालाल सेठिया के साहित्य में जैन सम्मत जीवन मूल्य' को सम्मिलित करते हुए उन पर विस्तृत विवेचना की गई है। इस

प्रकार इस अध्याय में उनके व्यक्तिगत जीवन से लेकर उनके साहित्यकार के रूप में प्रतिष्ठित होने तक के संघर्ष को विवेचित किया गया है।

द्वितीय अध्याय में डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य की मूल्य परक मीमांसा की गई है। इस अध्याय में मूल्य का सैद्धान्तिक विवेचन करते हुए साहित्य में आध्यात्मिक और दर्शनपरक जीवन मूल्य, सांस्कृतिक जीवन मूल्यः आस्था के स्वर तथा सामाजिक और राजनैतिक जीवन मूल्यों पर कविता संग्रह, कहानी संग्रह, बालगीत संग्रह यथा समस्त विधाओं के सन्दर्भ में विस्तृत विवेचन किया गया है।

तृतीय अध्याय में डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य में सामाजिक चेतना पर विस्तार से चर्चा की गई है। इस अध्याय में साहित्य और सामाजिकता के पारस्परिक सम्बन्ध का उल्लेख करते हुए डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य में देश और काल की व्याप्ति, साहित्य में पारिवारिक चेतना, ग्रामीण और नगरीय जीवन, महानगरीय चेतना के साथ ही साहित्य में नारी–चिंतन, भू–मण्डलीकरण का समाज पर प्रभाव, साहित्य में वर्ग चेतना यथा (उच्च वर्ग, मध्यम वर्ग, निम्न वर्ग) साहित्य में वैयक्तिक चेतना और उत्तर आधुनिकता का प्रभाव तथाा डॉ. उषा किरण सोनी की सामाजिक दृष्टि पर विस्तृत रूप से विवेचन किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य में रसानुभूति पर विस्तार से चर्चा की गई है। इस अध्याय में रस का स्वरूप और काव्य में स्थान निर्धारित करने के साथ ही डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य में विभिन्न रस यथा श्रृंगार रस, वीर रस, करुण रस, वात्सल्य रस, हास्य रस तथा आधुनिक काल में उद्भूत रस–देश भक्ति रस, सत्य रस (यथार्थ रस), बुद्धि रस पर विस्तृत विवेचन किया गया है।

पंचम अध्याय में डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य में भाषा के बारे में विस्तृत विवेचन किया गया है। इस अध्याय में भूमिका–कथ्य और भाषा का सामंजस्य, काव्यभाषा का स्वरूप, कहानी साहित्य में भाषा का स्वरूप, यात्रावृतांत में भाषा का स्वरूप तथा डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य में भाषा और कथ्य का सामंजस्य आदि बिन्दुओं पर विस्तृत अध्ययन किया गया है।

षष्टम अध्याय के अन्तर्गत डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य की शिल्पगत विशेषताओं पर चर्चा की गई है। डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य में पात्रों की सृष्टि और विषयौचित्य, वातावरण की सृष्टि और उपयोगिता, उद्देश्यपरकता और भटकाव, संवादों का स्वरूप, प्रतीक और बिम्ब, शैलीगत विशेषताएँ आदि बिन्दुओं पर विस्तृत अध्ययन किया गया है।

सप्तम अध्याय 'उपसंहार' है जिसमें समस्त अध्यायों का निष्कर्ष एवं मूल्यांकन प्रस्तुत किया गया है। इस शोध प्रबन्ध के अन्त में स्वयं शोधार्थी द्वारा लिया गया डॉ. उषा किरण सोनी का साक्षात्कार भी प्रस्तुत किया गया है जिसमें साहित्य क्षेत्र के महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर समाहित हैं। इस अध्याय के अन्त में सन्दर्भ ग्रन्थों की सूची प्रस्तुत की गई हैं।

मेरे गुरु एवं पथ प्रदर्शक परम श्रद्धेय श्री श्रीराम जी शर्मा, अंग्रेजी व हिन्दी के प्रकाण्ड विद्वान (से.नि.प्रधानाचार्य, नारेड़ा) एवं आदर्श स्वरूप द्वारा अनुसंधान में स्वयं के ज्ञान से मुझे नवीन ज्ञान प्रदान कर शोध कार्य में मार्गदर्शन किया। यह एक ऐसी बौद्धिक प्रक्रिया होती है, जो भ्रान्त धारणाओं का परिमार्जन करते हुये, नवीन ज्ञान को प्रकाश में लाती है। मैं इस शोध का पूर्ण श्रेय इनको देकर सदैव इनकी ऋणी रहूँगी।

राजस्थान की अन्नपूर्णा नगरी बारां के राउमावि, मण्डोला में प्रधानाचार्य पद पर पदौन्नति पश्चात् कार्य में गति आई हैं। बारां जिले के छोटे से गाँव बामला में मेरी शिक्षा–दीक्षा और बचपन बीता है। इसलिए यही मेरी कर्मभूमि भी है। मेरे गुरुजन श्री श्रीराम शर्मा, श्री रधुवीर शर्मा, श्री नाथूलाल नागर, श्री कन्हैयालाल नागर, श्री इकबाल हुसैन, श्रीमती कंचन मीणा का आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन सदैव मिलता रहा तथा मेरे साथी श्री प्रहलाद मीणा, श्री भंवर लाल नागर, श्री जितेन्द्र सिंह सोलंकी, (व्याख्याता हिन्दी), श्रीमती बीना सिंह (व.अ.संस्कृत), श्रीमती कौशल मीणा (व.अ.विज्ञान) तथा निदेशालय द्वारा नियुक्त जिला प्रभारी श्री छगन लाल परिहार ने समय–समय पर मेरा मार्गदर्शन एवं उत्साह वर्धन कर इस शोध ग्रन्थ को शीघ्र पूरा करने में सहयोग प्रदान किया इनकी मैं सदैव आभारी रहूँगी। इस अवसर पर मैं शोध कार्यावधि में मेरे शिक्षा विभाग के अधिकारी एवं समस्त विद्वज्जनों को भी धन्यवाद देना चाहूँगी, जिन्होंने बिना किसी अवरोध के इस शोध कार्य में मुझे पूर्ण सहयोग दिया।

आदरणीया डॉ. उषा किरण सोनी और डॉ. मनीषा शर्मा (शोध निर्देशिका) के सहयोग एवं मार्गदर्शन के बिना इस शोध कार्य के पूर्ण होने की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के लेखन में परम आदरणीय डॉ. मनीषा शर्मा, सह आचार्य, हिन्दी विभाग, कन्या कला महाविद्यालय का स्नेहिल निर्देशन, मार्गदर्शन निरन्तर मिलता रहा। विषय चयन से लेकर इस शोध कार्य के पूर्ण होने तक जिस आत्मीयता और सहृदयता के साथ समय–समय पर मुझे बहुमूल्य सुझाव एवं मार्ग दर्शन करते हुए इस शोध प्रबन्ध को पूरा करने में सहायता की उसके लिए मैं सदैव इनकी ऋणी रहूँगी।

'बिना गुरु नहीं होता जीवन साकार, गुरु ही है सफल जीवन का आधार,
सर पर होता जब गुरु का हाथ, तभी बनता जीवन का सही आकार।

परम आदरणीया डॉ. उषा किरण सोनी ने भी समय–समय पर प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से मुझे मार्गदर्शन प्रदान कर इस शोध प्रबन्ध को पूरा करने में मेरी हर सम्भव सहायता की है। अनुपलब्ध पत्र–पत्रिकाओं की फोटो कॉपी से लेकर अपना सम्पूर्ण साहित्य एवं नवीन कविता संग्रह, बालकथा संग्रह, निबन्ध संग्रह की प्रति मुझ तक प्रेषित करने का भार वहन कर मेरे इस शोध–प्रबन्ध को इसके परिणाम तक पहुँचाने के कार्य को सुगम कर दिया। इसके लिए मैं सदैव इनकी आभारी रहूँगी। सार्वजनिक मण्डल पुस्तकालय कोटा, कन्या कला महाविद्यालय पुस्तकालय कोटा, जहाँ से मैंने आवश्यक पुस्तकें प्राप्त कर शोध प्रबन्ध हेतु अध्ययन सामग्री जुटाई, मैं इन पुस्तकालयों की सदैव आभारी रहूँगी।

मैं बोहल शोध मंजूषा, साहित्यांचल, सृजन कुंज एवं पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज (सांध्य) पत्रिकाओं के संपादकों का भी आभार व्यक्त करना चाहूँगी जिन्होंने मेरे शोध आलेख प्रकाशित किए।

इस शोध प्रबन्ध के कलात्मक एवं त्रुटि रहित मुद्रण कार्य के लिए मैं कम्प्यूटर ऑपरेटर, श्री योगेश कुमार नामा, निकुंज कम्प्यूटर एण्ड जॉब वर्क सेन्टर, केशवपुरा, कोटा (राज.) को मैं हृदय से धन्यवाद देती हूँ, जिन्होंने अपनी व्यस्तता और व्यक्तिगत कार्यों की मजबूरी के बाद भी अथक सहयोग प्रदान किया उनके सहयोग से ही अपने शोध प्रबन्ध को इच्छित समय में प्रस्तुत करने में मैं समर्थ हो पायी हूँ। वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियों को शुद्ध करने का मैंने यथा सम्भव प्रयास किया है फिर भी टंकण सम्बन्धी कुछ त्रुटियाँ रह गयी हो, तो मैं क्षमा प्रार्थी हूँ।

अप्रेल 2016 से प्रारम्भ हुए इस शोध कार्य को अपनी पूर्णता तक पहुँचने में लगभग 4 वर्ष का लम्बा समय लगा। इन चार वर्षों में मेरे परिजनों, गुरुजनों, स्नेही मित्रों एवं आत्मिक स्वजनों ने भी मेरे हौंसले को बनाए रखकर मुझे हमेशा आशीर्वाद प्रदान किया। आप सभी के स्नेहभाव के प्रति मैं नतमस्तक व कृतज्ञता प्रकट करती हूँ।

अन्त में मैं उपर्युक्त महानुभावों के साथ–साथ सर्वशक्तिमान ईश्वर की हृदय के अन्तरतम से कृतज्ञ हूँ, जिनकी असीम कृपा से यह गूढ़ कार्य सम्पन्न हो सका है।

स्थान : कोटा
दिनांक :

गायत्री साल्वी
शोधार्थी, हिन्दी
पंजीयन क्रमांक RS/1449/16
राजकीय कला कन्या महाविद्यालय, कोटा (राज.)

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विवरण	पृ.सं.
	अनुक्रमणिका	
	तालिका सूची	
	रेखाचित्र सूची	
1.	अध्याय प्रथम – डॉ. उषा किरण सोनी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व	1–43
1.	डॉ. उषा किरण सोनी का व्यक्तित्व : एक सामान्य परिचय	1
1.1	जन्म एवं बचपन	2
1.2	शिक्षा	3
1.3	व्यवसाय	4
1.4	अभिरूचियाँ	5
1.5	परिवेश एवं लेखन प्रेरणा	6
1.5.1	पारिवारिक परिवेश	6
1.5.2	सामाजिक परिवेश	7
1.5.3	साहित्यिक परिवेश	8
1.6	सम्मान व पुरस्कार	10
1.7	ज्ञान फाउण्डेशन ट्रस्ट – संस्थापिका डॉ. उषा किरण सोनी	11
1.7.1	बालिका शिक्षा प्रसार–प्रचार क्षेत्र	11
1.7.2	साहित्यिक अनुसंधान क्षेत्र	12
1.7.2	कला एवं संस्कृति संरक्षण शोध क्षेत्र	12
1.7.4	सामाजिक क्षेत्र– आर्थिक सहायता	13
1.7.5	छात्रवृत्ति	13
1.7.6	गौशाला सेवा	13
1.8	साहित्यिक उपलब्धियाँ	13

क्र.सं.	विवरण	पृ.सं.
1.8.1	प्रकाशन	13
1.8.2	सहलेखन	14
1.8.3	सामुदायिक पत्रिका	14
1.8.4	समाचार पत्र में प्रकाशित रचनाएँ	14
1.8.5	प्रसारण	14
1.8.6	संपादन	14
1.9	**रचनाओं पर शोध व अनुवाद**	14
1.9.1	शोध	14
1.9.2	अनुवाद	15
1.10	**व्यक्तित्व के विविध आयाम**	**15**
1.10.1	बाल साहित्यकार के रूप में	15
1.10.2	कथाकार के रूप में	16
1.10.3	कवयित्री के रूप में	17
1.10.4	निबंधकार एवं संपादक के रूप में	18
2.	**डॉ. उषा किरण सोनी का कृतित्व : एक सामान्य परिचय**	**19**
2.1.	**कविता संग्रह –**	**19**
2.1.1	अक्षरों की पहली भोर	19
2.1.2	मौन के स्वर	20
2.1.3	मुक्ताकाश में	22
2.1.4	शब्द की अनुगूँज	24
2.2	**कहानी संग्रह**	**24**
2.2.1	काम्या	24
2.2.2	नेपथ्य का सच	26
2.2.3	तृष्णा तू न गई.....	28
2.2.4	नए सूरज की तलाश	30
2.3	**निबन्ध संग्रह**	**31**
2.3.1	'अक्षर से 'अक्षर' तक'	32
2.4	**बालगीत संग्रह व बाल कथा संग्रह**	**33**
2.4.1	टिम टिम तारे	33

क्र.सं.	विवरण	पृ.सं.
2.4.2	घरौंदा	34
2.5	**अन्य**	**36**
2.5.1	**बाल साहित्य यात्रावृतांतः**	**36**
2.5.1.1	द्वार से धाम तक	36
2.5.1.2	मेरी यूरोप यात्रा	37
2.5.2	**सहलेखन कविता संग्रह**	**39**
2.5.2.1	सबके साथ : सबसे अलग	39
2.5.3	**सह लेखन कहानी संग्रह**	**39**
2.5.3.1	'मन में बसा आकाश'	39
2.5.4	**शोध ग्रन्थ पर आधारित आलोचनात्मक पुस्तक –**	**39**
2.5.4.1	''कन्हैयालाल सेठिया के साहित्य में जैन सम्मत जीवन मूल्य'	39
	निष्कर्ष –	**41**
2.	**अध्याय द्वितीय– डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य की मूल्यपरक मीमांसा**	**44–86**
2.1	**मूल्य का सैद्धान्तिक विवेचन –**	**45**
2.1.1	सामान्य अर्थ एवं परिभाषा	45
2.1.1.1	भारतीय विचारधारा	46
2.1.1.2	पाश्चात्य विचारधारा	46
2.1.2	**मूल्यों का वर्गीकरण –**	**47**
2.1.2.1	विभिन्न विद्वानों ने मूल्यों का वर्गीकरण निम्न प्रकार से किया है	47
2.1.2.2	विकास की दृष्टि से मूल्यों का वर्गीकरण	48
2.1.2.3	व्याख्या की दृष्टि से मूल्यों का वर्गीकरण	48
2.2	**साहित्य में आध्यात्मिक और दर्शन परक जीवन मूल्य**	**49**
2.2.1	कविता के सन्दर्भ में	49
2.2.2	कहानी के सन्दर्भ में	53
2.2.3	बालगीत के सन्दर्भ में	57
2.2.4	बालोपयोगी यात्रावृतांत के सन्दर्भ में	57

क्र.सं.	विवरण	पृ.सं.
2.2.5	बालकथा संग्रह के संदर्भ में	60
2.2.6	निबंध संग्रह के संदर्भ में	60
2.3	**सांस्कृतिक जीवन मूल्यः आस्था के स्वर**	**61**
2.3.1	कविता के संदर्भ में	61
2.3.2	कहानी के सन्दर्भ में	64
2.3.3	बालगीत के संदर्भ में	68
2.3.4	बालोपयोगी यात्रावृतांत के सदर्भ में	68
2.3.5	बाल कथा के संदर्भ में	70
2.3.6	निबन्ध संग्रह के संदर्भ में	71
2.4	**सामाजिक और राजनैतिक जीवन मूल्य**	**72**
2.4.1	कविता के संदर्भ में	72
2.4.2	कहानी के सन्दर्भ में	75
2.4.3	बालगीत संग्रह के संदर्भ में	79
2.4.4	बालोपयोगी यात्रावृतांत के संदर्भ में	79
2.4.5	बालकथा के संदर्भ में	80
2.4.6	निबंध संग्रह के सन्दर्भ में	80
	निष्कर्ष	**81**
3.	**अध्याय तृतीय – डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य में सामाजिक चेतना**	87–133
3.1	**साहित्य और सामाजिकता के पारिस्परिक सम्बन्ध**	**88**
3.2	**डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य में देश और काल की व्याप्ति**	**91**
3.3	**डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य में पारिवारिक चेतना**	**96**
3.4	**डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य में ग्रामीण और नगरीय जीवन**	**99**
3.5	**डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य में महानगरीय चेतना**	**101**

क्र.सं.	विवरण	पृ.सं.
3.6	**डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य मे नारी–चिंतन**	**103**
3.7	**भू–मण्डलीकरण का समाज पर प्रभाव**	**107**
3.8	**डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य में वर्ग चेतना**	**113**
3.9	**डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य में वैयक्तिक चेतना और उत्तर आधुनिकता का प्रभाव–**	**117**
3.10	**डॉ. उषा किरण सोनी की सामाजिक दृष्टि**	**123**
	निष्कर्ष	**128**
4.	**अध्याय चतुर्थ – डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य में रसानुभूति**	**134–155**
4.1	**रस का स्वरुप और काव्य में स्थान**	**135**
4.1.1	**रसावयव**	**136**
4.1.1.1	स्थायी भाव	136
4.1.1.2	विभाव	137
4.1.1.3	अनुभाव	137
4.1.1.4	संचारी भाव	137
4.2	**डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य में विभिन्न रस**	**138**
4.2.1	श्रृंगार रस	138
4.2.2	करुण रस	140
4.2.3	वीर रस	141
4.2.4	वात्सल्य रस	142
4.2.5	हास्य रस	143
4.2.6	शान्त रस	144
4.3	**आधुनिक काल में उद्‌भूत रस**	**146**
4.3.1	देशभक्ति रस	146
4.3.2	सत्य रस (यथार्थ रस)	148
4.3.3	बुद्धिरस और बौद्धिक चिन्तन	150
	निष्कर्ष	152

क्र.सं.	विवरण	पृ.सं.
5.	अध्याय पंचम – डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य में भाषा	156–186
5.1	भूमिका–कथ्य और भाषा का सामंजस्य	157
5.2	काव्य भाषा का स्वरुप	159
5.3	कहानी साहित्य में भाषा का स्वरूप	164
5.4	यात्रावृतांत में भाषा का स्वरुप	169
5.5	निबन्ध में भाषा का स्वरूप	172
5.6	डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य में भाषा और कथ्य का सामंजस्य	175
	निष्कर्ष	183
6.	अध्याय षष्ठम् – अन्य शिल्पगत विशेषताएँ	187–224
6.1	पात्रों की सृष्टि और विषयौचित्य	188
6.2	वातावरण की सृष्टि और उपयोगिता	192
6.3	उद्देश्यपरकता और भटकाव	197
6.4	संवादों का स्वरूप	203
6.5	प्रतीक और बिम्ब	206
6.6	शैलीगत विशेषताएँ	214
	निष्कर्ष –	220
7.	अध्याय सप्तम – उपसंहार	225–233
	शोध सारांश	234–248
	सन्दर्भ ग्रन्थ सूची	249–254
	प्रकाशित शोध पत्र	
	परिशिष्ठ –	
	साक्षात्कार	
	कॉफ्रेंसों में प्रस्तुत पत्र	

शब्द संक्षिप्तीकरण

डॉ. – डॉक्टर

सं. – सम्पादक

पं. – पण्डित

अ.भा. – अखिल भारतीय

वि.वि. – विश्वविद्यालय

एम.ए.हिन्दी – स्नातकोत्तर हिन्दी

आ.प्र. – आन्ध्र प्रदेश

प.बंगाल – पश्चिम बंगाल

राउमा – राजकीय उच्च माध्यमिक

राज. – राजस्थान

उ.प्र. – उत्तर प्रदेश

पृ. – पृष्ठ

सं. – संख्या

अध्याय प्रथम

डॉ. उषा किरण सोनी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

अध्याय प्रथम

डॉ. उषा किरण सोनी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

1. डॉ. उषा किरण सोनी का व्यक्तित्व : एक सामान्य परिचय

साहित्य समाज का प्रतिबिम्ब है। समाज के समस्त क्रिया–कलाप, परिवेश, परिस्थितियों का लेखा–जोखा तथा भावपक्ष व कलापक्ष के मणिकांचन मिश्रण की झलक हमें साहित्यानुशीलन से ही प्राप्त होती है। इतिहास गवाह है आज हमारा देश साहित्य की जिन बुलन्दियों को छू रहा है, इससे इस देश के कलमकारों के साहित्यिक अवदान का पता चलता है।

साहित्यकार की दृष्टि कालातीत होती है वह सभी के सुख–दुःख में सुखी या दुःखी होता है। किसी भी संवेदनशील कवि के लिए यह त्याज्य नहीं है। बात चाहे वर्तमान की कही जा रही हो परन्तु वह भूत और भविष्य दोनों को समेटे रहती है। जैसे– रामकथा या महाभारत गाथा हर काल में कही गई है पर एक सर्जक द्वारा हर बार एक नए ही रूप में प्रस्तुत की जाती रही है। लेखिका ने साहित्य की गद्य व पद्य दोनों ही विधाओं पर लेखनी चलाकर साहित्य की श्रीवृद्धि की है तथा युग की पुकार को वाणी देकर कालजयी साहित्य से नवाज़ा है।

साहित्य लेखन के क्षेत्र में पुरुष लेखक ही नहीं महिला लेखिकाओं ने भी इतिहास रचा है। आशापूर्णा देवी, शिवानी, मन्नू भण्डारी, महादेवी वर्मा, चित्रा मुद्‌गल, महाश्वेता देवी, ममता कालिया, मृदुला सिन्हा, कृष्णा सोबती, तसलीमा नसरीन आदि लेखिकाओं ने साहित्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस क्षेत्र में देश की ही नहीं हमारे राजस्थान की महिला लेखिकाओं ने भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है, जिसमें प्रमुख है– प्रमिला गंगल, मोनिका गौड़, डॉ. बासंती हर्ष, डॉ० मेघना शर्मा, शकुंतला सरूपरिया, अनुश्री राठौड़, क्षमा चतुर्वेदी, प्रेमजी जैन आदि।

इसी क्रम में राजस्थान के बीकानेर जिले की लेखिका डॉ० उषा किरण सोनी भी साहित्याकाश में चमकते सितारे की भाँति अपनी उषा के सुनहले किरणों के प्रकाश से साहित्य जगत को आलोकित करते हुए अपनी महत्वपूर्ण पहचान बना चुकी है। संवेदनाओं के व्यापक फ़लक की रचयिता डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य में मानवीय रिश्तों में आ रहे बदलाव, अवसादों, त्रासदियों तथा विकृतियों को जानने समझने की जद्‌दोजहद प्रखर रूप से अभिव्यक्त हुई है। वर्तमान के विद्रूप और प्रकृति के मनोहारी स्वरूप के वर्णन के

साथ–साथ अव्यवस्थाओं के शिकार ज़र्ज़र मन की पीड़ा, सामाजिक समस्याओं तथा मनुष्य की सांसारिक सीमा बद्धता का रेखांकन इनके साहित्य में हुआ है।

इन्होंने समाज में घटित घटनाओं को अपने अनुभवों की कूँची से कल्पनाओं के रंग–भरकर समाज के यथार्थ से पाठक को परिचित कराया है। पाठक इनकी रचनाओं को पढ़कर भाव–विभोर ही नहीं होता बल्कि उस क्षण को पूरी शिद्दत के साथ जीता हुआ आत्मलीन हो जाता है। समाज की प्रत्येक समस्या को लेखनी का विषय बनाते हुए समाज–सुधार का मार्ग प्रशस्त किया। वह चाहे नारी जीवन की समस्या हो या महानगरीय विडम्बना या हो निम्न वर्ग की मजबूरियों से भरा बिल–बिलाता जीवन।

साहित्यानुशीलन से ज्ञात होता है कि रचनाकार के व्यक्तित्व का आकलन करने हेतु उसका जीवन संबंधी परिचय उतना ही महत्वपूर्ण होता है, जितना कि उसका सर्जनात्मक व्यक्तित्व निर्माण के विविध आयामों तथा उस निर्माण की पृष्ठभूमि में कार्य करने वाले विभिन्न तत्वों का।

वस्तुतः सर्जनात्मक व्यक्तित्व निर्माण की प्रक्रिया में उसके कौन–कौन से पैतृक संस्कार विकसित हुए हैं और कौनसे आन्तरिक संस्कार जाग्रत होकर परिष्कृत हुए हैं, जो उसके आदर्श और दृष्टिकोण को भी साहित्य में समाहित कर देते हैं। जीवन के इन्हीं तत्वों से मिलकर सृजनात्मक व्यक्तित्व का निर्माण होता है। यही जीवन के अहम् पक्ष हैं, जो व्यक्ति को सृजनात्मक शक्ति प्रदान कर उसे सामान्य से विशिष्ट बनाता है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि साहित्यकार के साहित्य पर प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से उसके व्यक्तित्व के निर्माण की पृष्ठभूमि के मूल में अनेक वैयक्तिक व सामाजिक–सांस्कृतिक परिवेश का प्रभाव अवश्य दृष्टिगोचर होता है।

अतः किसी भी लेखक या रचनाकार की सृजनात्मकता को समझने के लिए उसके निर्माण की पृष्ठभूमि तथा व्यक्तित्व को समझना नितांत आवश्यक है। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु यहाँ डॉ० उषा किरण सोनी के जीवन और परिवेश की पृष्ठभूमि का अध्ययन किया जा रहा है।

1.1 जन्म एवं बचपन –

29 जनवरी सन् 1952 ई. को मुंडरेवा, जिला बस्ती (उ.प्र.) में श्री रामाज्ञा प्रसाद स्वर्णकार के घर उनकी ज्येष्ठ पुत्री बिन्दुदेवी ने अपनी प्रथम पुत्री को जन्म दिया। साहित्यिक अभिरूचि रखने वाले, धार्मिक ग्रंथ तथा उपन्यास पढ़ने के शौकीन नाना ने अपनी नवजात नातिन को नाम दिया – उषा किरण।

उषा किरण जी के दादाजी श्रीवासुदेव प्रसाद जी ने स्वर्णकार बाघमार मैंढ क्षत्रिय स्वर्णकार पारिवारिक व्यवसाय (स्वर्णकारी) को न अपनाकर उच्च शिक्षा प्राप्त की तथा उत्तर प्रांत के कृषि विभाग में मुख्य अभियंता के पद तक को सुशोभित किया। दादाजी की इच्छानुसार लेखिका के पिता श्री रामचन्द जी बाघमार, क्षत्रिय स्वर्णकार ने भी उच्च शिक्षा प्राप्त की तथा उ. प्र. के सिंचाई विभाग में अभियंता के पद पर आसीन हुए। इनकी माताजी श्रीमती बिंदुदेवी को भी पढ़ने का बहुत शौक था; उन्हें अपने पिता से साहित्यिक अभिरूचि विरासत में मिली थी। वे भी धार्मिक ग्रंथ व श्रेष्ठ उपन्यास खूब पढ़ती। शिक्षित माता–पिता की सारी महत्वाकांक्षाओं का केन्द्र थी उनकी संतानें अर्थात पुत्रियाँ। पुत्र न होने के कारण उनका पूरा ध्यान अपनी पुत्रियों को उच्च शिक्षित एवं संस्कारवान कर उनके व्यक्तित्व को स्वस्थ व सुंदर आकार देने पर रहता।

पिता सरकारी कर्मचारी थे अतः हर तीन–चार साल बाद उनका स्थानान्तरण होता रहता। उनके स्थानान्तरणों के कारण पिता के साथ उन्होंने उ.प्र. के विभिन्न गाँवों व नगरों, पश्चिमी उत्तर प्रदेश के नरौरा (जहाँ से निचली गंग नहर निकली हैं), अलीगढ़, बुंदेलखण्ड के जालौन, बरूआ, सागर, झाँसी तथा पूर्वी उत्तरप्रदेश के बलरामपुर, बस्ती तथा पड़रौना आदि स्थानों पर अपना बचपन गुजारा। बचपन में ही नेपाल की सीमा पर स्थित कोयला बासा नामक स्थान पर थारू जनजाति के लोंगो को निकट से देखा। उन्हें इन सभी स्थानों के निवासियों की जीवन–शैली को जानने व समझने का अवसर मिला।

उषा किरण जी के बचपन में घटी दो मुख्य घटनाओं का प्रभाव उन पर सदैव बना रहा। 1963–64 में 'बलरामपुर गर्ल्स हायर सेकेण्डरी स्कूल' बलरामपुर में पढ़ते समय भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पण्ड़ित जवाहरलाल नेहरू से दूसरी भेंट और आशीर्वाद प्राप्त करना (प्रथम भेंट 1956–57 में हुई थी नरौरा (उ.प्र.) में जब वे गंगा से निकली निचली गंग नहर का उद्घाटन करने आए थे) उषा किरण के जीवन की दूसरी घटना घटी 7 अप्रेल 1966 को जब उनकी माताजी का अचानक ह्रदयगति रुक जाने से देहान्त हो गया। पिता की ज्येष्ठ संतान होने से घर की सारी जिम्मेदारी के साथ छोटी बहिनों का पालन–पोषण व वृद्धा दादी की सेवा भी इनका ही उत्तरदायित्व हो गया।

1.2 शिक्षा –

डॉ. उषा किरण जी की प्राथमिक शिक्षा विभिन्न स्थानों पर हुई। कक्षा नौ में इन्होंने विज्ञान के विषयों का चुनाव कर (उन दिनों नवीं कक्षा से ही विज्ञान व कला विषयों का चुनाव किया जाता था) लिया और 1964 में बलरामपुर गर्ल्स हायर सेकेण्डरी स्कूल से दसवीं तथा 1966 में विज्ञान के विषयों के साथ राजकीय कन्या इन्टर कॉलेज बस्ती से

बारहवीं की परीक्षा उत्तीर्ण की। 1966 में बारहवीं की परीक्षा के बाद ही माँ की मृत्यु हो जाने से आगे की शिक्षा पर प्रश्न चिह्न लग गया।

शिक्षा प्राप्ति की ललक तथा माँ का सपना पूरा करने के उद्देश्य से एक वर्ष बाद पुनः प्रयास किया और उदित नारायण डिग्री कॉलेज, पड़रौना में बी.ए. प्रथम वर्ष में प्रवेश ले लिया। यही से 1969 में कला संकाय से बी.ए. तथा गोरखपुर विश्वविद्यालय से 1971 में समाजशास्त्र में एम. ए. की उपाधि ली। जीवन की व्यस्तता व उत्तरदायित्वों ने एक बार फिर व्यवधान डाला परन्तु चार वर्ष के बाद इन्हीं उलझनों में से एक सिरा सुलझा लिया और 1975 में श्री गणेशराय महाविद्यालय डोभी, जौनपुर (उ.प्र.) से बी.एड. की उपाधि ली। 18 वर्षों के एक लंबे अन्तराल के बाद 1993 में पंजाब विश्वविद्यालय से हिंदी में प्रथम श्रेणी में स्वर्ण पदक के साथ एम. ए. किया।

16 वर्षों के एक लम्बे अंतराल के बाद सन् 2009 में आपकी आगे पढ़ने की इच्छा पुनः बलवती हुई जबकि वे 57 वर्ष की आयु पूर्ण कर चुकी थी। सतत् शिक्षण व श्रेष्ठ पुस्तकों का पठन इसका कारण रहा। उषाजी ने 'जैन विश्व भारती विश्व विद्यालय लाड़नूँ' (राज.) में पीएच. डी. करने के लिए अपना पंजीयन कराया। आपका विषय था 'कन्हैयालाल सेठिया के साहित्य में जैन सम्मत जीवन मूल्य' सेठिया जी की मंत्र कविताएँ जो कुल चार–छह शब्दों की होती थी, ने इन्हें इस कार्य के लिए प्रेरित किया। 2009 अक्टूबर मास में विश्वविद्यालय ने आपको पीएच.डी. करने की अनुमति दी और कठिन परिश्रम कर सेठिया जी के साहित्य मे स्नानकर ठीक दो वर्ष बाद 2011 अक्टूबर में, आपने अपना शोध कार्य वि. वि. में जमा करवा दिया जिसकी भूरि–भूरि प्रशंसा हुई। जनवरी 2012 में आप सेवानिवृत्त हुई और मार्च 2012 में आपको पीएच.डी. की उपाधि से नवाज़ा गया। इस प्रकार आप अपनी माताजी द्वारा देखे गए स्वप्न को पूर्ण कर सकीं।

1.3 व्यवसाय –

लेखिका ने स्योबाई कमला देवी टिबडेवाल गर्ल्स इंटर कॉलेज, पड़रौना (उ.प्र.) में समाजशास्त्र की व्याख्याता के रूप में 1973–74 से शिक्षण कार्य प्रारम्भ किया, जो कुल एक वर्ष ही चला। पति के स्थानांतरण के कारण दक्षिण भारत जाना पड़ा, जहाँ लगभग डेढ़ वर्ष काकीनाड़ा (आंध्र प्रदेश) में नवभारत पब्लिक इंग्लिश मीडियम स्कूल में अध्यापन कार्य किया। एक वर्ष 1980–81 में अभिनव बाल–भारती राजलदेसर (राज.) तथा 1981–82 में ही. सो. रामपुरिया विद्या निकेतन बीकानेर (राज.) में अध्यापन कार्य किया।

1982 में केन्द्रीय विद्यालय संगठन में चयनित होकर केन्द्रीय विद्यालय कं.–1 सूरतगढ़ (राज.) से प्रारम्भ कर आवड़ी चैन्नई (तमिलनाडु), इच्छापुर (पं. बंगाल), गुत्ती (आन्ध्र

प्रदेश) तथा बीकानेर (राज.) के विभिन्न केन्द्रीय विद्यालयों में स्थानान्तरित होकर जाती व अध्यापन कार्य करती रही। केन्द्रीय विद्यालय संगठन में लगभग 30 वर्षों तक शिक्षण कार्य के उपरांत सन् 2012 में केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक–1 बीकानेर से हिंदी स्नातकोत्तर शिक्षिका (P.G.T.) के पद से सेवानिवृत्त हुई।

सेवानिवृत्ति के उपरान्त आप स्वतंत्र लेखन में व्यस्त है। यह 'शब्द श्री' साहित्य संस्थान बीकानेर (राज.) तथा 'मरू नवकिरण' पत्रिका बीकानेर (राज.), 'मैढ़ स्वर्णकार संदेश' जोधपुर (राजस्थान) की संरक्षिका होने के साथ ही अखिल भारतीय साहित्य परिषद राजस्थान की आजीवन सदस्या है तथा भारत विकास परिषद मुख्य शाखा बीकानेर राजस्थान एवं कादम्बिनी क्लब बीकानेर (राज.) की भी सदस्या हैं।

1.4 अभिरूचियाँ –

बचपन से ही उषा किरण को नृत्य संगीत व नाटक प्रिय थे। बचा हुआ समय पुस्तकों (स्वाभाविक है) कहानियों और खेलों में चला जाता। विद्यालय के सांस्कृतिक कार्यक्रमों वाद–विवाद तथा आशु भाषण जैसी प्रतियोगिता में विद्यार्थी जीवन से ही सक्रिय रहीं। नाटकों व विचित्र वेशभूषा प्रतियोगिता में कुछ पुरस्कार भी पाए। खेलों में आपको बेसबॉल तथा बॉस्केटबॉल बहुत प्रिय था। इंटर मीडिएट कक्षाओं में आप एन.सी.सी. की कैडेट भी रही।

बाल्यकाल से ही कहानियाँ पढ़ने का शौक रखने वाली उषा किरण जी को उनकी माताजी ने उनकी बारहवीं वर्षगाँठ पर पढ़ने के लिए प्रथम उपन्यास दिया–आनंदमठ। बंकिमचंद्र जी द्वारा रचित इस उपन्यास को पढ़ने के बाद से अनगिनत श्रेष्ठ कहानी–संग्रहों व उपन्यासों को पढ़ने का क्रम आज भी निरंतर चल रहा हैं। श्रेष्ठ साहित्य पढ़ने के क्रम में घर में 'रामचरित मानस' का प्रतिदिन किया जाने वाला पाठ एवं आपकी माँ के द्वारा स्वरचित एक गीत गाते–गाते आपको कविता में भी रूचि होने लगी। मैथिलीशरण गुप्त की कुछ रचनाएँ उसी काल में पढ़ी गईं। कामायनी, रश्मिरथी जैसी काव्य कृतियाँ उसी समय पढ़ी गई थी।

भारतीय नारी की रूचियों के अनुरूप उषा किरण जी को भाँति–भाँति के पकवान, विभिन्न प्रांतो के व्यंजन बनाकर खिलाना तथा कलात्मक वस्तुएँ बनाना भी प्रिय है। इसके साथ ही बैंज़ो बजाना भी पसंद है। वे लगातार अध्ययन अथवा श्रम की थकान उतारने के लिए अर्थात स्वान्तः सुखाय बैंज़ो वादन करती हैं।

बचपन से ही पिता की सरकारी नौकरी, फिर वायुसैनिक पति के साथ और उनके शिक्षिका बनने के बाद निजी कार्यकाल में उन्हें भारत के विभिन्न प्रांतो में रहने का अवसर

मिला। पर्यटन की रूचि होने के कारण इन्होंने विभिन्न तीर्थ स्थानों व दर्शनीय स्थलों की यात्रा की। कश्मीर से कन्याकुमारी तक की यात्रा तो की ही, बंगाल (कलकत्ता) से मुम्बई (महाराष्ट्र) तक की यात्रा कई बार की। प्रकृति को उसके वास्तविक रूप में निहारना इन्हें नितांत प्रिय है। केदारनाथ, बद्रीनाथ की चोटियों पर भटकते बादल, भाँति– भाँति के फूलों–फलों से लदे वृक्ष और लताएँ, कल–कल निनाद करती नदियाँ अनवरत बहते झरने व दक्षिण में समुद्र की लहरों का गर्ज़न इन्हें सदा अपनी ओर आमंत्रित करता रहा हैं।

आधुनिक कवियों में राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' तथा उपन्यासकारों में अमृतलाल नागर, शरतचंद्र, आशापूर्णा देवी, शिवानी एवं नरेंद्र कोहली आपके प्रिय साहित्यकार रहे जिन्हें पढ़कर आप अभिभूत हो जाती हैं।

1.5 परिवेश एवं लेखन प्रेरणा –

प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्तित्व को आकार देने में उसके परिवेश की विशेष भूमिका होती है। उसके माता–पिता द्वारा प्रदत्त संस्कारों के साथ–साथ परिवार के सदस्यों व मित्रों के विचार भी व्यक्तित्व निर्माण की प्रक्रिया में अपना योगदान देते है। व्यक्ति जहाँ जन्म लेता है, जहाँ उसका पालन–पोषण होता हैं; उन सभी स्थानों का प्राकृतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक वातावरण व उस स्थान के निवासियों की जीवन–शैली भी उसे प्रभावित करती हैं। इन सभी का मिला–जुला प्रभाव कृतिकार की कृति पर पड़ता है चाहे वह कला की कोई भी विधा हो। लेखन से जुड़े लोगों की भाषा–शैली, विश्वास, मूल्य, मान्यताएँ व दृष्टिकोण परिवेश का परिणाम होती हैं।

1.5.1 पारिवारिक परिवेश–

डॉ० उषा किरण जी के पिता श्री रामचंद्र जी अपने पिता की ज्येष्ठ संतान थे और माता श्रीमती बिंदुदेवी भी अपने पिता की ज्येष्ठ पुत्री थी। इन्हें दोनों की प्रथम संतान होने का गौरव मिला। वे पूरे परिवार की प्रिय थी। इनके नानाजी को श्रेष्ठ उपन्यास पढ़ने का बड़ा शौक था परन्तु निरन्तर आभूषणों की रचना करते रहने से उन्हें पढ़ने का समय कम मिल पाता। अतः जब वे गहने गढ़ते तब लेखिका की माताजी अपने पिता को उपन्यास पढ़कर सुनाती। कालांतर में बड़ी होने पर लेखिका भी उन्हें पढ़कर (उपन्यास व धार्मिक ग्रंथ) सुनाया करती। यह परतंत्र भारत में चल रहे स्वतंत्रता संग्राम का समय था। अतः देश–प्रेम से ओत–प्रोत रचनाओं को वे अधिक पसंद करते थे। इनके अतिरिक्त नारी–मुक्ति संबंधी, सती, बाल–विवाह, दहेज जैसी कुप्रथाओं पर कुठाराघात करती कहानियों को पढ़ना इनकी माताजी व नानाजी को विशेष प्रिय था। संस्कारी व शिक्षित माता–पिता के विचारों

का प्रभाव लेखिका के लेखन पर भी पढ़ा। लड़की–लड़का दोनों को ही उनके परिवार में समान दृष्टि से देखा जाता था। दोनों को ही उत्थान के समान अवसर प्राप्त थे।

शिवभक्त अभियंता पिता से इन्हें शिवभक्ति व धार्मिक सहिष्णुता घुट्टी में प्राप्त हुई। विभिन्न धर्मों के मानने वाले व्यक्तियों के साथ उनके पिता की मित्रता थी। अतः बचपन में ही हिंदू धर्म के साथ–साथ इस्लाम व ईसाई धर्म का भी परिचय मिला। लेखिका के पति श्री जयचंदलाल सोनी लावट एक सेवानिवृत्त वायुसैनिक हैं। आप भारतीय वायुसेना में वारंट अफ़सर के पद पर कार्यरत थे तथा 'पश्चिमी स्टार' एवं 'समर मेडल' पदकों से अलंकृत है। आप राजलदेसर जिला–चुरू (राज.) के निवासी है।

विवाह के बाद लेखिका के पति व सासू माँ दोनों ने ही इन्हें सदा आगे पढ़ने लिखते रहने को प्रोत्साहित किया। इनकी सासू माँ स्वयं अशिक्षित थी परन्तु वे शिक्षा के महत्व को भली–भाँति समझती थी इसलिए जब उन्होंने जाना कि उषा किरण जी उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहती है तो उन्होंने न केवल अनुमति दे दी, वरन् तन, मन, व धन से पूरा साथ भी दिया। वे इन्हें बहू की तरह नहीं बेटी की तरह प्रेम करती थी। सासू माँ का उदार दृष्टिकोण एवं उनके जीवन के कठोर अनुभवों का निचोड़ इनके लेखन को प्रेरणा देता रहा हैं। लेखिका के बच्चे उच्च शिक्षा प्राप्त कर उच्च पदों पर प्रतिष्ठित है। बड़ा पुत्र गौरव विशाल सोनी इंजीनियर है तथा छोटा पुत्र डॉ. गौत्तम विवेक सोनी वैज्ञानिक है। एक मात्र पुत्री राजकिशोरी सोनी का कुछ समय पूर्व एक दुर्घटना में देहान्त हो चुका हैं।

1.5.2 सामाजिक परिवेश –

व्यक्ति के विचारों को प्रभावित करता है उसके चारों ओर फैला समाज और सामाजिक संबंध जो उसके दृष्टिकोण का निर्माण करते हैं। पास–पड़ोस, विद्यालय, घर व संपर्क में आने वाले सभी सदस्य अपने–अपने तरीके से व्यक्ति के विचारों के निर्माण व दृढ़ता में सहायक होते हैं।

बलरामपुर गर्ल्स हायर सेकेण्डरी स्कूल में प्रतिवर्ष मनाए जाने वाली बसंत पंचमी, मीलाद–उन–नबी तथा गुरूनानक जयन्ती में स्कूल की सभी छात्राएँ, बिना किसी भेदभाव के बढ़–चढ़कर भाग लिया करती थी। मोहर्रम पर शहर में निकले ताजियों में कितने ताजिए हिन्दुओं के है और कितने मुसलमानों के, यह पता लगाना कई बार कठिन हो जाता था। होली भी सभी मिल–जुलकर मनाते। भारत को स्वतंत्र हुए लगभग सत्रह साल हो चुके थे परन्तु अंग्रेज़ी सरकार के विरूद्ध उठ खड़े होने वाले भारतीयों की एकजुटता अब भी स्पष्ट दिख जाती थी।

माँ की मृत्यु होने के एक वर्ष बाद जब लेखिका उदित नारायण डिग्री कॉलेज, पड़रौना में पढ़ने गई तो पाया कि वहाँ के सभी छात्र–छात्राएँ, चाहे वे किसी प्रांत, धर्म, भाषा से जुड़े रहे हो, क्षेत्रीय भाषा भोजपुरी में बातें करते। इसी महाविद्यालय में पढ़ते समय वे हिंदी के प्रकाण्ड विद्वान व कवि डॉ. केदारनाथ सिंह के सानिध्य में आई। डॉ. केदारनाथ सिंह इसी महाविद्यालय में हिंदी के व्याख्याता थे, बाद में वे प्राचार्य भी रहे। वे हिन्दी, संस्कृत, उर्दू व बांग्ला के साथ अन्य कई भाषाओं के विद्वान हैं। कॉलेज में आयोजित वाद–विवाद प्रतियोगिताओं में भाग लेते समय आप उनसे मार्गदर्शन लेती। उन्होंने हिंदी विषय(बी.ए.) में नहीं लिया था परन्तु छिट–पुट लेखन व साहित्यिक अभिरूचि के कारण एवं भाषा के संशय दूर करने के लिए आप सदैव डॉ. केदारनाथ सिंह से मिलती और मार्गदर्शन पाती। लेखिका को डॉ. केदारनाथ सिंह से पितृवत आशीर्वाद सदा ही मिलता रहा है।

डॉ. केदारनाथ सिंह उदित नारायण डिग्री कॉलेज पड़रौना में अपने कार्यकाल में अक्सर मूर्धन्य साहित्यकारों को बुलाते व अपने विद्यार्थियों को उन्हें सुनने का अवसर देते। लेखिका ने इसी काल में डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी से भेंटकर आशीर्वाद पाया तथा प्रसिद्ध कवि शिवमंगल सिंह 'सुमन' का काव्यपाठ सुना था। वे इन दोनों ही साहित्यकारों से हुई भेंट को अपने जीवन में पाए श्रेष्ठ वरदानों में गिनती हैं।

समाज में स्त्री को ऊँचा उठने के अवसर कम ही मिलते थे। आपने अपने आस–पड़ोस सहपाठिनों के बीच व परिचितों में से अनेक स्त्रियों को अपने वज़ूद के लिए लड़ते हुए पाया। इन्होंने देखा कि विधवा को पुनर्विवाह की अनुमति धर्म के नाम पर नही दी जाती। कहीं उच्च शिक्षिता अहंकारी स्त्री को मार्ग से भटककर घर–संसार को उजड़ते देखा तो कहीं प्रेम से पति–पुत्र सभी पर शासन करते भी देखा। लेखिका ने अपनी लेखनी से उन्हें सजा–सँवारकर प्रतिष्ठित कर दिया। इनकी कहानियों के अधिकांश पात्र पाठक को अपने आस–पास की किसी खिड़की से झाँकते दृष्टि–गोचर होते हैं।

1.5.3 साहित्यिक परिवेश–

एक ओर प्रतिदिन घर में सभी के द्वारा किया जाने वाला 'रूद्राष्टकम्' व 'शिवतांडव' का पाठ व इनकी माताजी का 'रामचरित मानस' पढ़कर अर्थ समझाना और दूसरी ओर लेखिका की माँ का ही निरंतर कहानियाँ व उपन्यास पढ़ने का शौक मिलकर इनके साहित्य के प्रति अभिरूचि जगाने के लिए यथेष्ठ था; ऊपर से शुद्ध उच्चारण के साथ व्याकरण सम्मत शुद्ध भाषा का प्रयोग करने का आदेश इन्हें घर में ही साहित्यिक परिवेश उपलब्ध करा देता था।

लेखिका की माताजी स्वान्तः सुखाय कविता लिखती थी, जो कभी प्रकाशित नहीं

हुई, परन्तु लेखिका की प्रेरणा स्रोत रही। महादेवी वर्मा, जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानन्दन पंत, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', मैथिलीशरण गुप्त, रामधारी सिंह 'दिनकर' तथा केदारनाथ सिंह की कविताओं का असर इनके लेखन का प्रेरणापुंज रहा।

इन्होंने बंकिमचन्द्र चटर्जी, रवीन्द्र नाथ टैगोर, आशापूर्णा देवी ये तीनों बंगाली प्रांत के लेखक थे, इनके अनुवाद पढ़े और प्रेरणा प्राप्त की। इनके अलावा लेखिका को शिवानी, धर्मवीर भारती, आचार्य चतुरसेन, फणीश्वर नाथ रेणु, अमृतलाल नागर, हजारी प्रसाद द्विवेदी और रांगेय राघव आदि लेखकों के उपन्यास तथा कहानियाँ आदि रचनाएँ पढ़कर लेखन प्रेरणा मिली।

बचपन से ही कविता, कहानियाँ व उपन्यास पढ़ने के शौक के कारण जब भी अवसर मिलता आप कवि सम्मेलनों में मूर्धन्य कवियों की कविताएँ सुनने जाती और स्वयं भी छोटी–मोटी तुक–बंदियाँ करती, परन्तु कभी मंच पर जाकर पढ़ने का साहस न जुटा पाती। बी.ए. में पढ़ते समय डॉ. केदारनाथ सिंह के प्रोत्साहन पर एक–दो बार उन्हें अपनी तुकबन्दियाँ दिखाकर सराहना भी पाई। बी.एड. करते समय महाविद्यालय में साहित्यिक रूचि रखने वाले छात्र–छात्राएँ अक्सर कवि गोष्ठी का आयोजन करते जिसमें कई प्रोफेसर भी सम्मिलित होते। इन गोष्ठियों में हिन्दी व उर्दू की रचनाएँ जोर–शोर से पढ़ी जाती। महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका में लेखिका की विभागाध्यक्ष जी ने सराहना करते हुए इन्हें एक छोटा–सा पुरस्कार भी दिया।

लेखिका को अपने जीवन के लगभग अठारह वर्ष दक्षिण भारत के प्रांतों (आंध्रप्रदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक) में तथा दो वर्ष पश्चिमी बंगाल (कलकत्ता) में बिताने का अवसर मिला। इन्होंने अहिन्दी भाषी दक्षिण भारत में रहते हुए अपना समय श्रेष्ठ हिन्दी साहित्य को पढ़ने में लगाया। अनेक व्यस्तताओं व उत्तरदायित्वों के बीच धीमी गति से आप लिखती रहीं तथा उत्तर भारत की कुछ आंचलिक पत्र–पत्रिकाओं के साथ ही हैदराबाद से प्रकाशित 'दैनिक हिन्दी मिलाप' में आपकी रचनाएँ प्रकाशित होती रही। उत्तर भारत में रहते समय आकाशवाणी से प्रसारित परिचर्चाओं में आपने कई नामचीन लोगों के साथ भाग लिया। आकाशवाणी से आपकी कविताएँ, कहानियाँ व नाटक प्रसारित होते रहे हैं।

बीकानेर आने के बाद आपने प्रसिद्ध जनकवि श्री हरीश भादाणी जी से मिलकर उनका आशीर्वाद तो पाया ही साथ ही उनके अमूल्य सुझाव भी मिले। बीकानेर में आप लगातार कवि गोष्ठियों, परिचर्चाओं व अन्य साहित्यिक कार्यक्रमों में भाग लेती रहती है। श्री भवानीशंकर व्यास 'विनोद', श्री गौरीशंकर, आचार्य अरूणश्री, श्रीलाल मेहता, श्रीलाल नथमल जोशी, श्री लक्ष्मी नारायण रंगा, मदन केवलिया, श्री रामनरेश सोनी, डॉ. वेद शर्मा, श्रीमती

प्रमिला गंगल, डॉ. मदन सैनी, श्री रवि पुरोहित आदि साहित्यकारों से आप निरन्तर संपर्क में रहती हैं। युवा पीढ़ी के डॉ. चंचला पाठक, इरशाद अज़ीज़, क़ासिम बीकानेरी, संजय पुरोहित, संजय आचार्य 'वरूण' आदि साहित्यकारों का भी साथ मिला।

राजस्थान साहित्य अकादमी की पूर्व अध्यक्षा डॉ. अजीत गुप्ता एवं प्रसिद्ध आलोचक डॉ. नंद किशोर आचार्य को सुनना आपको सदैव ही प्रेरित करता रहा है। नागरी भंडार में स्थित 'विश्वभारती' तथा 'अजित फाउण्डेशन' जैसी कई संस्थाएँ निरंतर साहित्यिक वातावरण का निर्माण करती हैं; उक्त दोनों ही संस्थाओं के कार्यक्रमों में आप नियमित रूप से हिस्सा लेती हैं।

1.6 सम्मान व पुरस्कार–

डॉ. उषा किरण सोनी को अपने लेखन कार्य तथा विश्वविद्यालय में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने पर कई सम्मान व पुरस्कार प्राप्त हुए जिनका विस्तृत विवरण निम्नांकित हैं–

1. स्वर्ण पदक – पंजाब वि.वि. एम.ए. हिन्दी में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने पर।
2. प्रथम पुरस्कार– मातुश्री रतन देवी वर्मा पुण्य स्मृति समिति, नागौर (राजस्थान)
3. युद्धवीर फाउण्डेशन पुरस्कार–हैदराबाद (आ.प्र.)
4. शंभूशेखर सक्सेना विशिष्ट साहित्य पुरस्कार– (राजस्थान, 2014–15)
5. वीरांगना सावित्रीबाई फुले फैलोशिप सम्मान (नई दिल्ली)
6. पं. विद्याधर शास्त्री अवार्ड–राव बीकाजी संस्थान, (राजस्थान, 2015)
7. 'कलम कलाधर' मानद उपाधि अ.भा.साहित्य संगम उदयपुर (राजस्थान, 2015)
8. 'साहित्यकार सम्मान'– महाराजा गंगासिंह वि.वि. बीकानेर (राजस्थान, 2016)
9. 'समाज सेवी सम्मान' अ.भा.मैढ़ क्षत्रिय युवा स्वर्णकार समाज बीकानेर (राजस्थान, 2013)
10. 'दिवजोत वाक् कविता सम्मान', वाक् साहित्यिक संस्था (कोलकत्ता, प. बंगाल)
11. 'साहित्यकार सम्मान', – रोटरी क्लब मिड टाउन बीकानेर (राजस्थान)
12. मातृशक्ति सम्मान',– मरूधरा बीकाणा महासंघ, बीकानेर (राजस्थान, 2014)
13. 'साहित्यकार सम्मान' – साहित्यांगन संस्थान सीकर (राजस्थान, 2015)
14. 'साहित्यकार सम्मान'– युग भारती एवं शशि मित्तल ट्रस्ट, बीकानेर (राजस्थान, 2015)
15. ''साहित्यकार सम्मान'' – कल्याण फाउण्डेशन ट्रस्ट बीकानेर (राजस्थान, 2016)
16. 'अक्षर शब्द माधुरी सम्मान''–अक्षर अध्ययन एवं अनुसंधान संस्थान, श्री डूँगरगढ़, 2010

17. 'समाज सेवा सम्मान',–किशनलाल रूकमिणी देवी मेमोरियल ट्रस्ट, बीकानेर (राजस्थान)
18. 'शतक शिरोमणी रचना सम्मान'– मंजिल ग्रुप साहित्यिक मंच, (नई दिल्ली)
19. सेवा सम्मान–बाहेती पंचायत ट्रस्ट, बीकानेर (राज.)
20. राष्ट्र भाषा गौरव सम्मान–अखित भारतीय साहित्य साधक मंच, बंगलौर (कर्नाटक)
21. सुंदर सुरभि सम्मान–प्रेरणा प्रतिष्ठान, बीकानेर (राजस्थान)
22. मैढ़ महिला दीप पुरस्कार–मैढ़ ट्रस्ट (बंगलौर, कर्नाटक)
23. बीकाणा गौरव अवार्ड – विरासत संरक्षण संस्थान, बीकानेर (राज.)
24. कन्हैयालाल सेठिया सम्मान, स्वामी दिव्यानंद जी द्वारा
25. संस्थापिका – ज्ञान फाउण्डेशन ट्रस्ट, बीकानेर
26. संरक्षिका –'शब्द श्री' साहित्य संस्थान व 'मरू नवकिरण' पत्रिका बीकानेर एवं 'मैढ़ स्वर्णकार संदेश' जोधपुर (अखिल भारतीय सामुदायिक पत्रिका)
27. आजीवन सदस्या – अखिल भारतीय साहित्य परिषद् राजस्थान
28. सदस्या – भारत विकास परिषद्, मुख्य शाखा, बीकानेर एवं कादम्बिनी क्लब, बीकानेर
29. स्वतंत्र लेखन (से.नि.केन्द्रीय विद्यालय संगठन)

लेखिका डॉ. उषा किरण सोनी ने 'ज्ञान फाउण्डेशन ट्रस्ट' की संस्थापिका के रूप में विभिन्न क्षेत्रों में कार्य किए जो निम्न प्रकार है–

1.7 ज्ञान फाउण्डेशन ट्रस्ट – संस्थापिका डॉ. उषा किरण सोनी

ट्रस्ट की स्थापना सन् 2007 में सार्वजनीन प्रन्यास अधिनियम 1959 एवं आयकर अधिनियम 1961 के अन्तर्गत की गई। प्रन्यास विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत है, विशेषतः –

1.7.1 बालिका शिक्षा प्रसार–प्रचार क्षेत्र –

प्रन्यास द्वारा संभाग के विद्यालयों में से, उनकी शैक्षणिक उपलब्धियों के आधार पर, चयन करके एक विद्यालय को आदर्श बालिका विद्यालय के रूप में घोषित किया जाता है। चयनित विद्यालय की शैक्षणिक सेवाभावी, खेलकूद व अन्य पाठ्य–सहगामी गतिविधियों में अग्रणी प्रतिभाओं को नगद पुरस्कार, सम्मान पत्र व प्रन्यास का सम्मान प्रतीक देकर सम्मानित किया जाता है। अब तक निम्नांकित विद्यालयों –

(i) श्री यूनियन क्लब रा.बा.उ.मा. विद्यालय, राजलदेसर, चुरू

(ii) श्री भुवालका रा.बा.उ.मा. विद्यालय, रतनगढ़, चुरू

(iii) रा.उ.मा.बालिका विद्यालय श्री डूँगरगढ़, बीकानेर

(iv) रा.उ.मा.बालिका विद्यालय, मोनासर, बीकानेर

(v) रा.उ.मा.विद्यालय, बिग्गा, बीकानेर

को सम्मान व पुरस्कार दिए जा चुके है। शैक्षणिक सत्र–2015–16 से सहशिक्षा (Co-education) वाले विद्यालयों को भी सम्मिलित किया गया है।

1.7.2 साहित्यिक अनुसंधान क्षेत्र – साहित्यिक शोध के प्रोत्साहन हेतु प्रन्यास – प्रतिवर्ष एक शोधार्थी को 'ज्ञान फाउण्डेशन पुरस्कार' राशि रूपये 11000/– देकर सम्मानित करता है। अब तक दिए गए पुरस्कार –

(i) श्री यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द' के साहित्य पर – डॉ. ज्योत्सना स्वर्णकार

(ii) श्री यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' के साहित्य पर – डॉ. नीतू ओझा

(iii) जनकवि हरीश भादाणी के साहित्य पर – डॉ. अखिलेश पांडे

(iv) डॉ. नन्दकिशोर आचार्य के साहित्य पर – डॉ. कविता बिस्सा

(v) श्री देवीदास रांकावत के साहित्य पर – डॉ. हंसा स्वामी

(vi) आचार्य तुलसी का साहित्य – डॉ. कृष्णा स्वामी

(vii) राजस्थान स्वयं सेवक संघ का दर्शन – डॉ. भगवान सिंह राठौड़

(viii) आचार्य महाप्रज्ञ संबोधि कृत जीवन दर्शन पर – डॉ. उर्मिला शर्मा

(ix) आचार्य महाप्रज्ञ – रतनपाल चरितम् पर – मेघना व्यास

1.7.3 कला एवं संस्कृति संरक्षण शोध क्षेत्र –

प्रन्यास प्रतिवर्ष एक व्यक्ति को 'ज्ञान फाउण्डेशन सम्मान' –राशि रूपये 5100/– एक शॉल+स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित करता है।

अब तक निम्नांकित को सम्मानित किया जा चुका है–

व्यक्ति/संस्था	विषय	सम्मान राशि शॉल+स्मृति चिह्न
(i) श्री सुमित शर्मा	लघु फिल्म – ''हाल–ए–हवेली''	5100/–शॉल,स्मृति चिह्न
(ii) डॉ. निधि सिंह	एम.डी. स्तरीय शोध, यज्ञ थैरेपी का चिकित्सकीय प्रभाव	5100/–शॉल,स्मृति चिह्न
(iii) गायत्री प्रकाशन	साहित्यिक नवाचार	5100/–शॉल,स्मृति चिह्न
(iv) श्री मैढ़ क्षत्रिय	जाग्रति विकास संस्था, सामाजिक समरसता एवं चेतना हेतु	5100/–शॉल,स्मृति चिह्न
(v) सुश्री समीरा	पर्यावरण प्रदुषण व संरक्षण विषय	

परवीन राठौड	पर लेख प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर	5100/–शॉल,स्मृति चिह्न

1.7.4 सामाजिक क्षेत्र– आर्थिक सहायता –

(i) अ. स्वजातीय विधवा (छत्तीसगढ़) की आर्थिक सहायता हेतु	रू.20000/– दिए
ब. उपर्युक्त विधवा के बच्चों के शिक्षार्थ आर्थिक सहायता	रू.30000/– दिए
(ii) स्वजातीय विधवा (राजस्थान) की आर्थिक सहायता	रू.10000/– दिए
(iii) नैत्रहीन स्वजातीय कन्या (राजस्थान) की शिक्षा–दीक्षा हेतु	रू.15000/– दिए
(iv) बेसहारा स्वजातीय विधवा के पुत्र के निधन पर सहायता (इसकी पहचान दर्शाना उचित नही समझा गया है)	रू31000/– दिए

(v) पैतृक गाँव राजलदेसर, जिला – चुरू में सार्वजनिक प्याऊ का निर्माण कराया जिसके रख–रखाव का सम्पूर्ण खर्च प्रन्यास वहन करता है।

1.7.5 छात्रवृत्ति–

स्मृति शेष श्रीमती राजकिशोरी सोनी (पुत्री) की स्मृति में प्रतिवर्ष एक स्वजातीय छात्रा के लिए 'श्री मैढ़ क्षत्रिय स्वर्णकार छात्र–छात्राएँ वेलफेअर सोसायटी', जोधपुर के माध्यम से दी जाती है। अब तक–

(1) सुश्री मनीषा सोनी, भीलवाड़ा (राज.) रू. 5100 (2014–15)

(2) स्वजातीय छात्रा, विवरण आना शेष है रू. 5100 (2015–16)

1.7.6 गौशाला सेवा–

(1) बालोतरा (राज.) गौशाला 2014 ई. रू. 51000/–

(2) गोगासर, चुरू (राज.) गौशाला 2017 ई. रू. 11000/–

1.8 साहित्यिक उपलब्धियाँ –

1.8.1 प्रकाशन –

(1) चार काव्य संग्रह–

'अक्षरों की पहली भोर', 'मौन के स्वर', 'मुक्ताकाश में', 'शब्द की अनुगूँज'

(2) चार कहानी संग्रह–

'काम्या', 'नेपथ्य का सच', 'तृष्णा तू न गई......', 'नए सूरज की तलाश'।

(3) चार बाल साहित्य–

'टिम टिम तारे' (बालगीत), 'घरौंदा' (बाल कथा संग्रह), 'द्वार से धाम तक', तथा ' मेरी यूरोप यात्रा' (दोनों बालोपयोगी यात्रा वृत्तांत है)

(4) एक निबंध संग्रह– अक्षर से 'अक्षर' तक

(5) एक आलोचनात्मक पुस्तक –

'कन्हैयालाल सेठिया के साहित्य में जैन सम्मत जीवन मूल्य' कुल 14 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

1.8.2 सहलेखन –

(1) 'सबके साथ : सबसे अलग' – काव्य संग्रह

(2) 'मन में बसा आकाश' – कहानी संग्रह

(3) 'एकता का संकल्प' – काव्य संकलन में रचनाएँ सम्मिलित

1.8.3. सामुदायिक पत्रिका –

'मैढ़ महिला दीप' व 'मैढ़ स्वर्णकार संदेश' राष्ट्रीय स्तर की सामुदायिक पत्रिकाओं में निरन्तर रचनाएँ प्रकाशित।

1.8.4 समाचार पत्र में प्रकाशित रचनाएँ–

कादम्बिनी, मधुमती, समाज कल्याण, भाषा, भाषा–परिचय, सरिता, गृहशोभा, वनिता, शिविरा, नया शिक्षक, सदानीरा, उत्पल, विकल्प आदि राष्ट्रीय स्तर की पत्रिकाओं एवं राजस्थान पत्रिका, दैनिक भास्कर, दैनिक हिंदी मिलाप, दैनिक युगपक्ष आदि मुख्य समाचार पत्रों में रचनाएँ प्रकाशित। कुछ रचनाएँ पुरस्कृत भी हुई।

1.8.5 प्रसारण –

आकाशवाणी के सूरतगढ़ एवं बीकानेर केंद्रों से 1984 से ही कविताओं, कहानियों, लेखों, वार्ताओं, नाटक व परिचर्चाओं का अनवरत् प्रसारण जारी है।

1.8.6 संपादन –

माध्यमिक शिक्षा निदेशालय(राज.) द्वारा शिक्षक दिवस पर प्रकाशित बाल साहित्य 'भोर का उजास' 2013 का संपादन।

1.9 रचनाओं पर शोध व अनुवाद –

1.9.1 शोध –

1. उषा किरण सोनी की कहानियों में नारी की संवेदना' विषय पर 2009 में महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय बीकानेर की शोधार्थी द्वारा एम. फिल (लघुशोध) संपन्न किया जा चुका है।
2. डॉ. उषा किरण सोनी की साहित्य साधनाः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन' विषय पर कोटा विश्वविद्यालय, कोटा (राज.) से स्वयं के द्वारा पीएच.डी. स्तरीय शोधकार्य जारी है।

1.9.2 अनुवाद –

1. 'तपस्या' कहानी का अनुवाद हिन्दी से राजस्थानी भाषा में श्री विश्वनाथ भाटी, तारानगर चुरू कर चुके हैं जो अनुसिरजण– उत्थै रो राजस्थानी तिमाही छापौ, प्रयास संस्थान चुरू के अक्टू–दिसंबर 2012 के अंक में प्रकाशित हो चुका है।
2. 'काम्या' कहानी संग्रह का हिन्दी से अंग्रेजी भाषा में अनुवाद कार्य प्रगति पर है। अनुवादिका है– डॉ. प्रियंका चौधरी, मनीपाल विश्वविद्यालय, जयपुर।
3. 'नए सूरज की तलाश' कहानी संग्रह का हिन्दी से उर्दू भाषा में अनुवाद कार्य प्रगति पर है। अनुवादिका है– डॉ. फ़रगाना, जयपुर।

1.10 व्यक्तित्व के विविध आयाम –

व्यक्तित्व के विविध आयाम के अन्तर्गत लेखिका द्वारा किए गए सर्जनात्मक कार्यों पर प्रकाश डाला गया है, जो निम्न प्रकार से है–

1.10.1 बाल साहित्यकार के रूप में –

लेखिका बाल मनोविज्ञान की चितेरी है, इन्होंने बालमन की जिज्ञासाओं का समाधान बहुत ही सरल एवं सहज रूप से किया है। मनुष्य और प्रकृति का घनिष्ठ संबंध है। प्रकृति ही प्राणी में अनेक जिज्ञासाओं का संचार करती है; खासतौर से बालकों में प्रकृति के क्रिया–कलाप, प्रतिक्रियाएँ जिज्ञासाएँ जगाती ही नहीं है वरन् समाधान भी देती है। आवश्यकता है तो इस विस्तृत फ़लक में अपना समाधान खोजने की। बालक के माता–पिता, गुरूजन प्रकृति की सत्यता को जानने समझने में उसकी मदद करते हैं।

चार से आठ वर्ष तक के बच्चों को खेल–खिलौने, राक्षसों व परियों की कहानियाँ, गुडिया का खेल खेलना, पशु–पक्षियों के क्रिया–कलाप जैसे काल्पनिक चरित्रों में रूचि होती है। जबकि आठ से बारह वर्ष के बालक अपने आस–पास के परिदृश्य को देख प्रकृति एवं मानवीय क्रिया–कलापों की ओर आकृष्ट होते है। यही उम्र होती है जो बालकों को इन सब से परिचित कराने की क्षमता रखती है। इस उम्र में बालक जो कुछ देखता है एवं सीखता है उसे वो कभी नहीं भूलता।

शिक्षाविदों का मानना है कि बालक को खेल–खेल में गीतों, कविताओं तथा कहानियों के माध्यम से आनंददायी शिक्षण कराया जाए। लेखिका द्वारा बालकों की इन्हीं आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए बाल–साहित्य की रचना की गई। इनका बाल–साहित्य प्रेरणादायी, शिक्षाप्रद होने के साथ–साथ इनकी जिज्ञासाओं को शांत करने में भी समर्थ हैं। बालगीत संग्रह–'टिम टिम तारे' में संग्रहीत कविताएँ व गीत प्रकृति में घटने

वाली आश्चर्यजनक घटनाओं के बारे में वैज्ञानिक व दार्शनिक तरीके से इनकी जिज्ञासाओं का मनोरंजक रूप से समाधान प्रस्तुत करते हैं।

यात्रावृतांत 'द्वार से धाम तक' व 'मेरी यूरोप यात्रा' बालकों को देश–विदेश की सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, धार्मिक, आर्थिक स्थिति की जानकारी देने के साथ ही बालकों के मन में पर्यटन के प्रति रूचि जाग्रत करते है। पर्यटन ज्ञानार्जन व मनोरंजन हेतु महत्वपूर्ण है। पर्यटन ही हमें धरती पर बिखरे पड़े प्राकृतिक सौन्दर्य से साक्षात कराता हैं।

बालकथा संग्रह 'घरौंदा' में (संकलित) सभी बालकथाएँ बालकों को संस्कारित करने एवं श्रेष्ठ व्यक्तित्व निर्माण में सहायक हैं। बालकथा 'घरौंदा' हमें बचपन की याद दिलाता हैं। एक समय था जब टी.वी., इंटरनेट, मोबाईल नहीं थे, तब बालकों के मनोरंजन का साधन दादी–नानी व माँ की प्रेरक कहानियाँ हुआ करती थी। एक था राजा और एक थी रानी और हम सन्नद्ध होकर कभी दादी को तो कभी माँ को घेरकर बैठ जाते थे, कितने सुखद थे वे क्षण ? कई बार इन कहानियों को सुनकर लगता था कि कितनी अच्छी–अच्छी बातें है इन कहानियों में जो हमें अच्छा इंसान बनाने के लिए प्रेरित करती हैं। लेखिका द्वारा रचित बालकथा संग्रह 'घरौंदा' भी बालकों को प्रेरणा प्रदान करने तथा संस्कारित कर श्रेष्ठ व्यक्तित्व निर्माण हेतु एवं स्वयं के व्यक्तित्व का विकास कर बालकों को सफलता के प्रथम सोपान तक पहुँचाने की दिशा प्रदान करता हैं।

1.10.2 कथाकार के रूप में –

डॉ. उषा किरण सोनी एक सशक्त कहानीकार के रूप में हमारे समक्ष जीवन के यथार्थ को साकार करती कहानियों के द्वारा जीवन के कटु सत्य से परिचय कराती हुई समाज को एक नई दिशा प्रदान करती हैं। किसी भी साहित्यकार की कलात्मक सृष्टि की प्रेरणा उसके निजी जीवन से ही उद्भूत होती हैं। संवेदना अनुभूति को जन्म देती है और अनुभूति कला की रचना करती हैं। रचना का विषय चाहे बाह्य–जीवन से लिया जाए या निजी जीवन से सर्वत्र रचनाकार की रचनानुभूति का ही योग होती है।

लेखिका के यथार्थ जीवनानुभव ही इनकी कहानियों में प्रकट हुए है। इन्होंने चारों कहानी संग्रह 'काम्या', 'नेपथ्य का सच', 'तृष्णा तू न गई....', 'नए सूरज की तलाश' में मानवीय जीवन मूल्यों तथा सामाजिक जीवन की समस्याओं से सरोकार कराया है।

'काम्या' कहानी संग्रह की कहानियाँ मानवीय मूल्यों के ह्रास का भय पैदा करने वाली ताकतों के विरूद्ध कोई वैयक्तिक चुनौती या प्रतिरोध न बनकर सामाजिक चिंतन की कुंद होती संवेदनाओं को तलाशने का आह्वान व उपक्रम हैं। इस संग्रह की कहानियों में

व्यवस्था से दमित मानव जीवन के भीतर उमड़ते दर्द को वाणी देकर संवेदना जाग्रत की गई हैं, यही संवेदना पाठक के अन्तस पर दस्तक देती हैं।

'नेपथ्य का सच' कहानी संग्रह की समस्त कहानियाँ नारी जीवन और किसी ना किसी रूप में उसके मन के मौन अंधियारे कोने की अनुगूँज हैं, जो व्यवस्थाओं से आहत मन की तमाम उबड़–खाबड़ संरचनाओं की अथक एवं निरपेक्ष यात्रा है। लेखिका ने नारी के न जाने कितने मूर्त–अमूर्त चिन्तन परिदृश्यों को पाठक के समक्ष उपस्थित कर नेपथ्य के सच को अनावृत्त करने का प्रयास किया हैं।

'तृष्णा तू न गई....' कहानी संग्रह की कहानियों में व्यक्तिगत एवं सामाजिक अनुभवों को अभिव्यक्ति प्रदान की गई हैं। कहानियाँ पाठक की जिज्ञासाओं का समाधान खोजने का प्रयास करती हुई, अन्त में पाठक को तृप्ति का अनुभव भी करा देती हैं। सभी कहानियाँ समाज के सच को उज़ागर कर मार्मिक संवेदना जगाती हैं।

इनका चौथा कहानी संग्रह 'नए सूरज की तलाश' मानवीय सत्य की तलाश कर रही कहानियों द्वारा समाज को मानवीय जीवन–मूल्यों व मानव–जाति के उपकार हेतु सकारात्मक ऊर्जा से आपूरित करने का उपक्रम हैं।

इस प्रकार लेखिका एक कथाकार के रूप में सभी पाठकीय जरूरतों को पूरा करती हुई कथा संसार से परिचय कराती हैं। पाठक इन कहानियों को पढ़कर आनन्द की अनुभूति करते हुए आत्मलीन हो जाता है। सभी कहानियाँ समाज के यथार्थ तथा सामाजिक कुरीतियों, भ्रष्टाचार, अव्यवस्थाओं से आहत मानव जीवन की कहानियाँ हैं। इन्होंने समाज का कोई भी कोना अछूता नहीं छोड़ा। समाज की हर समस्या पर लेखनी चलाई है।

1.10.3 कवयित्री के रूप में–

साहित्य को परिभाषा देना बहुत ही मुश्किल कार्य हैं। साहित्य में समाज का प्रतिबिंब झलकता हैं। ज्ञानराशि के संचित कोश का नाम ही साहित्य है। देशकाल, परिस्थितियों का दर्शन साहित्य ही करवाता हैं। लेखिका द्वारा गद्य व पद्य दोनों ही विधाओं में साहित्य सर्जना की गई है। एक कवयित्री के रूप में लेखिका 'अक्षरों की पहली भोर' के उजास से तर्पण के सुख तक की यात्रा बड़ी कुशलता से करवाती हैं। मानवीय संवेदनाओं में आ रहे बदलाव और इससे प्रभावित होती सांस्कृतिक परम्पराओं पर भी पैनी नज़र लेखिका की हर वक्त बनी रहती है। 'मौन के स्वर' कविता संग्रह की कविताएँ अन्तःकरण के उन्मेष की कविताएँ हैं। यथार्थ की चिन्तनपरक अनाविल अभिव्यक्ति जो जीवन के अनुभवों में पकी हैं, इन्हीं अनुभवों की धुरी पर सुख–दुःख का परिभ्रमण हैं। संग्रह की कविताएँ अव्यक्त कवि मन की शब्द संगिनी है। यह 'अनुचिंतन' 'आलोड़न' मन का 'निसर्ग'

है तथा छटपटाहट की आहट हैं। जिसके माध्यम से कवयित्री ने समय, समाज और प्रकृति को कविता में फिर से रचने की एक ईमानदार कोशिश की हैं।

'मुक्ताकाश में' कविता संग्रह की कविताएँ यायावर मन की खोज है, जो मुक्ताकाश में पंख पसारकर उड़ता मन पाखी जो भूल जाता है कि उसके एक पंख से अतीत और दूसरे से भविष्य जुड़ा हैं। यह कविताएँ अतीत और भविष्य के बीच वर्तमान से संतुलन बनाये रखने के कठिन प्रयास में चिंतन—मनन करते हुए स्वयं से वार्तालाप है। इस वार्तालाप में उसका सामना करते है अनेक प्रश्न जिनके उत्तर ढूँढने की चाह 'मुक्ताकाश में' की गई है।

'स्वगत' एवं 'भवगत' दो खण्डों में विभक्त कविताएँ जीवन के शाश्वत सत्यों से परिचय कराती हैं तथा वर्तमान समाज की यथार्थता उजागर कर समाज के सत्य से भी साक्षात् करवाती हैं। इन्हीं चिन्तन—मनन, विचारों की ऊहापोह के साथ कई प्रश्न लेखिका के मन—मस्तिष्क में कौंधते है, उन्हें वह बहुत ही सरल एवं सहज रूप से कविता में बाँध पाठक के समक्ष प्रस्तुत कर देती हैं।

'शब्द की अनुगूँज' कविता संग्रह की कविताएँ 'अन्तर्नाद' एवं 'अनुनाद' दो खण्डों में विभक्त है। 'अन्तर्नाद' खण्ड की कविताएँ आध्यात्मिक भाव—भूमि पर रचित दार्शनिक एवं चिंतनपरक दृष्टिकोण से जीवन की नश्वरता एवं शाश्वत सत्यों का दर्शन कराती है, तो 'अनुनाद' खण्ड की कविताओं में वर्तमान सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक जीवन मूल्यों की प्रतिष्ठा के साथ ही देशभक्ति का स्वर भी गुंजायमान है, तो प्रकृति के मानवीकरण रूप में शृंगार रस की छटा शोभायमान है। वर्तमान समाज के भ्रष्टाचार पर व्यंग्य प्रहार हैं, तो आदमी की असलियत को बेनक़ाब कर समाज को नई दिशा प्रदान करने की अनुगूँज भी हैं।

1.10.4 निबंधकार एवं संपादक के रूप में—

साहित्य की अनेक विधाओं में रचनाकर्म करने के उपरान्त भी रचनाकार को लगे कि कहीं न कहीं कुछ अधूरापन रह गया हैं, कुछ अतृप्ति हैं जिसकी पूर्ति वह मन खोलकर केवल निबंध में ही कर सकता हैं। कई बार लेखक कहानी में या अन्य गद्य विधा में अपनी बात नहीं कह पाता लेकिन निबंध एक ऐसी विधा हैं जहाँ वह समाज के बारे में, हिन्दुत्व व धर्म के बारे में, आध्यात्मिकता के बारे में अपने आदर्शों, भावनाओं और देश के बारे में अपने विचारों को सहज रूप से व्यक्त कर सकता हैं। शायद निबंध विधा को चुनने के पीछे लेखिका की भी मंशा यही रही हो। इनके निबंध संग्रह— 'अक्षर से 'अक्षर' तक' में कुल बाईस निबंध संग्रहीत हैं। दस निबंध मध्यकालीन और अर्वाचीन साहित्यकारों के रचनात्मक

अवदान पर, चार निबंध युवा दायित्व बोध पर, तीन निबंध महिला संचेतना पर, एक निबंध अक्षर की साक्षरता पर तथा चार निबंध विविध विषयों के महारथियों की जीवनियों पर आधारित हैं। निबंध विधा भाव संप्रेषण की सबसे सहजतम एवं सरलतम विधा हैं।

डॉ. उषा किरण सोनी की लेखनी से साहित्य की कोई भी विधा अनछूई नहीं रही इन्होंने गद्य व पद्य की सभी विधाओं पर अपनी लेखनी से रंग भरकर साहित्य जगत को रंगीन बना दिया। अपने नाम के अनुरूप उषा की किरणों के धवल प्रकाश से साहित्य जगत को आलोकित कर दिया हैं।

संपादन के रूप में भी लेखिका ने महत्वपूर्ण ख्याति अर्जित की है। संपादक का कार्य समुद्र में से मोती ढूँढ निकालने के समान हैं। संपादक ढेर सारी रचनाओं में से श्रेष्ठ रचनाओं तथा स्तरीय रचनाओं को छाँटकर उनका शोधन करता हैं और उन्हें श्रेष्ठता के क्रम में सजाता हैं। इस कार्य को लेखिका ने बख़ूबी से पूर्ण किया एवं साहित्य जगत में संपादक के रूप में अपनी पहचान बनाई है। इन्होंने माध्यमिक शिक्षा निदेशालय द्वारा शिक्षक दिवस पर प्रकाशित बाल साहित्य की पुस्तक 'भोर का उजास' का संपादन किया। इस प्रकार लेखिका सम्पादक के रूप में अपनी पहचान बना चुकी है।

2. डॉ. उषा किरण सोनी का कृतित्व : एक सामान्य परिचय

डॉ. उषा किरण सोनी के कृतित्व का सामान्य परिचय निम्न प्रकार से है –

2.1 कविता संग्रह –

डॉ. उषा किरण सोनी के कुल चार कविता संग्रह है –

2.1.1 अक्षरों की पहली भोर –

संस्करण – 2007

प्रकाशक – ज्ञान पब्लिकेशन्स, ज्ञान कुंज, 307 गाँधी नगर, बीकानेर (राज.)

इस कविता संग्रह में कुल 80 कविताएँ संग्रहीत है। इस संग्रह की भूमिका हरीश भादाणी एवं रवि पुरोहित द्वारा लिखी गई है। सभी कविताएँ मानवीय संवेदना जाग्रत करने वाली है। रवि पुरोहित का कहना है कि–''संवेदनाओं के ऐसे व्यापक फ़लक की रचयिता डॉ. उषा किरण सोनी की मानवीय रिश्तों, अवसादों, त्रासदियों, विकृतियों को जानने, समझने और आत्मसात कर काव्य उत्पाद की ज़द्दोज़हद 'अक्षरों की पहली भोर' की अधिसंख्य रचनाओं में पाठकों को देखने को मिलती है।''

इस संग्रह की कविताओं में वर्तमान का विद्रूप और प्रकृति का मनोहारी चित्रण तथा अव्यवस्थाओं से आहत मन और रश्मि स्पर्श या छहराती वल्लरियों से उल्लासित खगकुल

का शौर्यगान और प्रकृति के हर सिंगार का विज्ञान, समयचक्र के साथ हो रहे बदलाव का आभास और नवल पल में नवल जगत के नव सृजन का आह्वान सभी कुछ एक साथ बहुत सहजता से शामिल हो जाता है कि पाठक विचार सागर में डुबकियाँ लगाता आनन्द विभोर हो उठता है।

'सहस्राब्दी महोत्सव' कविता में स्वार्थ का त्याग कर प्राणी मात्र से प्रेम व सद्भाव बनाये रखने का आह्वान किया गया है –

'परमार्थ का उद्भव करें हम
स्वार्थ का हो पराभव।
प्रेम और सद्भाव का हम
मिलकर मनाएँ महोत्सव।' [1]

समय के साथ बदलाव और साथ ही बदलते चेहरों को देखता हुआ कभी अतीत में झाँकता वर्तमान, कभी अतीत में मान ली गई उपलब्धियों की वंदना करने लगता है। स्वतन्त्र देश के खण्डित होते हुए सपनों पर भी नजर डालता है।

'तपः पूत इस पुण्य धरा पर ही
पहले स्वाहा का स्वर लहराया था।
इसकी मिट्टी के कण–कण से हमने
सभ्यता को शिखर चढ़ाया था।' [2]

'स्वातंत्र्य गाथा' कविता में देशभक्ति का स्वर सुनाई देता है। नारी सम्बन्धी कविताओं में जहाँ अपना आदर्श स्थापित किया है तो उनके भीतर का विरोधाभास भी सायास या अनायास प्रकट हो ही गया है। संग्रह की कविताएँ– 'नारी', 'नारी शक्ति', 'कहाँ जा रही' और 'सिर्फ़ पायदान है' वहीं 'इन्दिरा प्रियदर्शिनी' आदि पाठक को सोचने पर विवश कर देती है कि पुरुष प्रधान समाज में क्या आज की नारी की स्थिति यही है, इसका जिम्मेदार वह स्वयं है या समाज।

मानवीय रिश्तों में आ रहे बदलाव को 'आधुनिक रिश्ते', 'बदलती परिभाषाएँ', 'झोपड़ियाँ' 'युग' 'कविताओं में बख़ूबी देखा जा सकता है।

इस प्रकार लेखिका ने मानवीय संवेदना जाग्रत करने के साथ ही वर्तमान समाज के यथार्थ को भी उजागर किया है।

2.1.2 मौन के स्वर –

संस्करण – 2012

प्रकाशक – ज्ञान पब्लिकेशन्स, ज्ञान कुंज – 307, गाँधी नगर, बीकानेर

'मौन के स्वर' कविता संग्रह में कुल 74 कविताएँ संकलित है। इस संग्रह की भूमिका भवानी शंकर व्यास 'विनोद' रामनरेश सोनी, डॉ. उमाकांत गुप्त तथा डॉ. संध्या सिंह के द्वारा लिखी गई है। इस संग्रह की कविताओं को भवानी शंकर व्यास 'विनोद' अन्तःकरण के उन्मेष की कविताएँ मानते है, तो रामनरेश सोनी यथार्थ की चिंतनपरक अनाविल अभिव्यक्ति। डॉ. उमाकांत का मानना है कि – यह कविताएँ जीवन के अनुभवों में पकी कविताएँ है और डॉ. संध्या सिंह इसे शब्दों का चंदोवा सदृश मानती है।

वास्तव में संग्रह की सभी कविताएँ अन्तःकरण के उन्मेष की तथा यथार्थ जीवन की अभिव्यक्ति है। अनुचिन्तन, आलोड़न, व निसर्ग के त्रिकोण में बँधी कविताओं में विचारों, भावों, उपभावों, दृश्य बिम्बों और प्रतीकों की ऐसी जगमगाहट है, जो कथ्य को सुग्राह्य बनाने व भावों को नया उन्मेष देने का काम करती हैं।

'अनुचिंतन' खण्ड की कविताओं का कथ्य फ़लक काफी विस्तृत है, इसमें सम्बन्धों के समीकरण के साथ ही ईश्वरीय सत्ता के प्रति समर्पण भाव भी है। बाज़ारवाद, भौतिकता की चकाचौंध और महानगरीय यंत्रणाएँ है तो वर्तमान युवा पीढ़ी का संकल्प बोध भी है। कल्पना से लेकर यथार्थ तक,स्त्री जीवन से लेकर दलित विमर्श तक अनेक प्रकार के काव्य रसायन भिन्न–भिन्न आस्वाद देते है।

कविता 'आलोक से भर देंगे' में कर्मठ और उत्साही युवा पीढ़ी के हौंसले को अभिव्यक्ति प्रदान की गई है साथ ही नारी विमर्श, देशभक्ति के स्वर की अनुगूँज भी सुनाई देती है। कविताओं में सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठापना भी देखने को मिलती है और यथार्थ की चिन्तन–परक अभिव्यक्ति बहुत ही आकर्षक रूप में प्रकट हुई है। भ्रष्टाचार जो देश को खोखला किए जा रहे हैं, इन षड़यन्त्रों से आहत कवयित्री का चिन्तन 'बन्द द्वार के पीछे' कविता में मुखर हुआ है –

> **'बन्द द्वार के पीछे**
> **बिकती मातृभूमि सिक्कों में**
> **भुनता देशद्रोह किश्तों में**
> **रचाते 'वे' आतंकी षड्यंत्र**
> **स्वर्ग सी भू बन जाती नर्क।'**[3]

'महानगर', 'अपने घर का सपन', 'हाल बेहाल', 'बूढ़े लाचार चेहरे', 'कहाँ आ गए'', जैसी कविताएँ जन–मन को आन्दोलित करती है व सांस्कृतिक स्खलन को रेखांकित करती है। 'आलोड़न' खण्ड की कविताएँ उद्वेलनकारी, ठोस चिन्तनपरक, दर्शन व आध्यात्मिकता के रंग में रंगी हैं। इन कविताओं में मानव मन पर काल की तूलिका के रंग है। पथ की

तलाश, सच की आस एवं यही आस अंतस की तास है। 'वृत' कविता में यही सब दृष्टिगत होता है।

'वांछा के केन्द्र से
कर्म की त्रिज्याएँ
खींचती है जीवन वृत्त
सुख–दुःख की
गूँज–अनुगूँज सुन
चिंता और चिन्तन के गिर्द
भटकता है व्याकुल चित्त
आतुर है
परिधि तक पहुँचने को
जहाँ है शांति प्रदाता
अनंत मौन।'[4]

'निसर्ग' खण्ड प्राकृतिक सौन्दर्य एवं पर्यावरण चेतना तथा व्यक्ति, समाज और प्रकृति से संपृक्त हैं।

2.1.3 मुक्ताकाश में –

संस्करण – 2015

प्रकाशन – ज्ञान पब्लिकेशन्स, ज्ञान कुंज – 307, गाँधी नगर, बीकानेर

'मुक्ताकाश में' कविता संग्रह में कुल 80 कविताएँ संग्रहीत हैं। दो खण्ड़ों में 'स्वगत' व 'भवगत' में विभक्त यह कविताएँ दार्शनिक, आध्यात्मिक अन्तर्मन की पुकार व समाज की यथार्थ जीवनानुभूतियों का सच्चा दस्तावेज़ है।'स्वगत' खण्ड में 42 कविताएँ है, जो जीवन के शाश्वत सत्यों से परिचय कराती है।

'सत्व का कोष है आत्मतत्व
और पारद सा चंचल है मन
दोनों है एक ही कारा के बन्दी
जो है पंचतत्व निर्मित नश्वर तन।' [5]

'तुम ठहर जाते', 'आस्ति–नास्ति', 'विश्वास', 'खाली पृष्ठ', 'उत्सव' जीवन की सड़क', 'अनचीन्हा चेहरा', 'दृष्टिकोण', 'सरोकार', 'परछाइयाँ, 'परिभाषा' आदि कविताओं में आत्म–चिन्तन प्रमुख है।

'भवगत' खण्ड की कविताएँ भी उत्कृष्ट कोटि की है। इन कविताओं में आध्यात्म

एवं दार्शनिकता का पुट है, तो कहीं प्रश्नानुकूल भाव है, जो लेखिका को उद्वेलित करते है। 'भवगत' जैसा की शीर्षक से ही विदित है, लेखिका ने संसार में घटित–घटनाओं के प्रति मार्मिक संवेदना प्रकट की है। इस खण्ड की रचनाओं को पढ़कर ऐसा लगता है, मानों लेखिका संसार का भ्रमण कर आई है। कहीं उनकी संवेदनाएँ मार्मिक है, तो कहीं प्रकृति में खुशी के क्षण तलाश कर उनका मन हरा हो गया है।

'विकास' कविता में वर्तमान भौतिकतावादी युग पर करारा व्यंग्य किया गया है। इस भौतिकतावादी संस्कृति एवं महानगरीय सभ्यता ने वातावरण एवं रिश्तों को प्रदूषित कर दिया है। मनुष्य प्राप्य को छोड़ दुष्प्राप्य के पीछे भाग रहा है। लेखिका प्रश्नानुकूल भाव सागर में गोते लगाते हुए कई प्रश्नों के उत्तरों की चाह रखती हुई, 'प्राप्य–दुष्प्राप्य' कविता के माध्यम से अपना चिन्तन प्रकट करती है।

'उसे दीवार पर टँगी
अप्सरा और जलपरी
को निहारते–सराहते देख
मानवी के मन में कौंधा
कैसा है मानव का मन
दुष्प्राप्य को पाने की चाह में
करता है ये लाखों जतन
पर सहज प्राप्य का यह
करता अनादर, दुखाता है मन।' [6]

'कौन किसका विधाता है' कविता भी इसी प्रकार के प्रश्नों के उत्तर की तलाश है। कभी माँ की याद सताती है, तो कभी नारी के सशक्तिकरण की हुँकार कविताओं में गूँजती है, तो कभी चंचल किशोर के प्रति वात्सल्य का सागर उमड़ता है और इसी बीच 'रोबोटी संतान' कविता में वर्तमान युग में संतान का माता–पिता के प्रति उपेक्षा भाव पीड़ा देता है। परन्तु आशा की किरणों से संसार को आलोकित करने की चाह में आह्वान करती हुई कहती है, 'आईये'! 'अब तो जागे' अर्थात् हम उस सृष्टा का वर प्रेम और स्नेह फिर से प्राप्त करें। चारों ओर राग–अमंद होगा और फिर से धरती पर स्वर्ग होगा।

इस प्रकार 'मुक्ताकाश में' संग्रह की कविताएँ यथार्थ जीवनानुभूतियों के साथ शाश्वत सत्यों तथा आध्यात्मिक, दार्शनिक, सामाजिक–सांस्कृतिक, राजनैतिक, आर्थिक विडम्बनाओं के प्रति मार्मिक चिन्तनपरक अभिव्यक्ति है।

2.1.4 शब्द की अनुगूँज –

संस्करण – 2018

प्रकाशक – कलासन प्रकाशन, मॉडर्न मार्केट, बीकानेर

'शब्द की अनुगूँज' कविता संग्रह में कुल 83 कविताएँ है, जो 'अन्तर्नाद' और 'अनुनाद' दो खण्ड़ों में विभक्त हैं। मन–मस्तिष्क में कौंधते विचारों की ऊहापोह तथा सर्वाधिक पाने की लालसा के साथ ही राग–विराग दोनों भावों की स्वीकृति तथा पलायन इन सभी के बीच चलता अन्तर्द्वन्द्व, शायद यही जीवन का सबसे बड़ा सत्य है। 'मौन से मौन तक' की यात्रा में महाशून्य से गुंजित 'शब्द की अनुगूँज' जीवन के शाश्वत सत्यों तथा समाज के यथार्थ से रू–ब–रू करवाती है।

'अन्तर्नाद' खण्ड की कविताएँ जहाँ आध्यात्मिक एवं दार्शनिकता के साथ ही संसार की नश्वरता से परिचय करवाती हैं, वहीं 'अनुनाद' खण्ड की कविताओं में सामाजिक यथार्थ, देशभक्ति की अनुगूँज के साथ ही नारी की गरिमा का बख़ान हुआ है तो कहीं प्राकृतिक सौन्दर्य की छटा बिखेरती रागात्मक भाव जाग्रत करती हुई आनन्दानुभूति करवाती है।

'शुष्क भू को सरसाता मेह
बुझे मन को हरषाता नेह
घन करता घोर गर्जन
मन करता, मौन नर्तन।' [7]

इस प्रकार 'शब्द की अनुगूँज' कविता संग्रह की कविताओं में 'अन्तर्नाद' और 'अनुनाद' की गूँज सर्वत्र सुनाई देती है। संग्रह की सभी कविताएँ सरल एवं सहज भावबोध की, गागर में सागर भरने सदृश है।

2.2 कहानी संग्रह –

डॉ. उषा किरण सोनी एक सशक्त कथाकार के रूप में साहित्यांगन में अपने चार कहानी संग्रह के साथ उपस्थित हुई है जिनका सामान्य परिचय निम्नांकित है –

2.2.1 काम्या –

संस्करण – 2008

प्रकाशन – ज्ञान पब्लिकेशन्स, ज्ञानकुंज, 307 गाँधीनगर, लालगढ़, बीकानेर

'काम्या' कहानी संग्रह में कुल तेरह कहानियाँ संग्रहित है। सभी कहानियाँ सत्य घटनाओं पर आधारित है। इस संग्रह की भूमिका भवानीशंकर व्यास 'विनोद' द्वारा लिखी गई है। 'ये कहानियाँ मानवीय मूल्यों के ह्रास का खौफ़ पैदा करने वाली ताकतों के खिलाफ कोई वैयक्तिक चुनौती या प्रतिरोध न बन कर सामाजिक चिंतन की कुंद होती

संवेदनाओं को खोलने का आह्वान व उपक्रम है। इस संग्रह की रचनाएँ व्यवस्था से दमित जिंदगियों के भीतर उमड़ते दर्द को मुखरित करती है और यही संवेदना पाठक के अन्तर्मन पर दस्तक देती है।'

लेखिका ने समाज में फैली कुरीतियों तथा स्त्री–पुरुष दोनों के अन्तःद्वन्द्व का चित्रण बहुत सहज एवं सरलतम भाषा में किया है। इनकी अधिकांश कहानियाँ नारी–जीवन से सम्बन्धित है। समाज में नारी की स्थिति क्या हैं ? तथा उसकी इस स्थिति की जिम्मेदार क्या वो स्वयं नहीं हैं ? नारी मनोविज्ञान की परत–दर–परत खोलती इनकी कहानियाँ सामाजिक यथार्थ को निरा नंगा कर देती है। समाज में फैली कुरीतियों का वर्णन भी इनकी कहानियों में देखने को मिलता है।

सती प्रथा का वर्णन कहानी 'प्रश्न' में किया गया है। राज जिसने पति के साथ देह त्याग दी उसे सभी सम्मान से सती की उपाधि देते है और रीता का पति की मृत्यु के बाद परिवार की, समाज की जिम्मेदारियाँ उठाना, दोनों में असली बलिदान किसका है ? यही इस कहानी का प्रश्न है। 'तपस्या' कहानी में सौतेली माँ शब्द का प्रयोग अनुचित है। माँ तो माँ होती है। इस कहानी की पात्रा मीना इस भूमिका को बख़ूबी निभाती है।

'कठबपवा' में सौतेले पिता का दंश सहती बालिका के प्रति मार्मिक संवेदना जाग्रत हुई है। 'अनुष्ठान' कहानी में तांत्रिकों के चक्कर में पड़कर उस पर विश्वास कर वह अपने ही बेटे को गवां बैठती है। इसमें नारी की ईर्ष्यालु प्रवृत्ति को भी दर्शाया है, जिससे त्रेता युग की कैकेयी भी नहीं बच पायी थी, वैसे ही सुरजा ने भी अपना सब कुछ गवां दिया।

'मोहभंग' में मनुष्य की लालची प्रवृत्ति के दुष्परिणामों को दर्शाया गया है। कहानी 'चाँदनी के फूल' में कुसंगति में पड़कर की गई गलतियों के परिणाम पुरुष को पुरुषत्व से हीन कर देते है। उसके वैवाहिक जीवन में कटुता ला देते है तथा सम्बन्ध टूटने की कगार पर आ जाता है। पात्र रघु कुसंगति को छोड़कर अपने वैवाहिक जीवन में मधुमास बनाने में सफल रहा।

'एक कप चाय', 'नीयत और नियति', में युग (वर्तमान) का सच है। 'सृजन की चाह' में मातृत्व की भूख को पेट की भूख से बड़ा बताया गया है। बहुत ही मार्मिक संवेदना की अभिव्यक्ति इस कहानी में हुई है। 'बीति ताहि बिसार दे' में डूबते को तिनके का सहारा वाली कहावत चरितार्थ होती है, तो 'रानी' कहानी में आज की बेबस नारी का चित्रण हुआ है। परन्तु समय की माँग के अनुसार उचित निर्णय नारी के जीवन का अंधेरा मिटा देता है। आज भी नारी सशक्त व सबल तभी हो सकती है, जब वह समाज के

सारे बंधनों को तोड़कर सही व विवेकपूर्ण निर्णय ले और वातावरण के अनुकूल अपने आपको ढाल ले।

'निष्कृति' कहानी में शुभदीप का आहत पुंसत्व, उसकी आर्थिक अक्षमता उसे घर में बंधुआ मजदूर बनने को मजबूर कर देता है, तो 'काम्या' कहानी में स्त्री का देह सुख के लिए अपने पति को धोखा देना स्त्रीत्व पर कलंक है, पुरुष की लंपटता अर्थात् परस्त्रीगामी होना तो उसकी प्रवृत्ति हैं, लेकिन देवी पद को त्याग अगर स्त्री भी ऐसा कार्य करे तो उसका परिणाम कहानी से स्पष्ट हो जाता है। स्निग्धा अपने सोने जैसे संसार को खुद ही उजाड़ देती है।

संग्रह की सभी कहानियाँ सामाजिक यथार्थ पर आधारित हैं। लेखिका ने कहानियों में जहाँ स्त्री–पुरुष सम्बन्धों का तथा उनके बाह्य एवं शारीरिक सौंदर्य का वर्णन किया है वहीं मन की आन्तरिक भावनाओं, सुन्दर विचारों का, पछताने का एवं अन्तःकरण के टूटने का, कल्पनाओं की उड़ान भरने का वर्णन भी सीधी एवं सरल भाषा में किया है। इनका उद्देश्य समाज–सुधार की दरकार रहा है।

2.2.2 नेपथ्य का सच –

संस्करण : 2009

प्रकाशन – ज्ञान पब्लिकेशन्स, ज्ञान कुंज, 307 गाँधी नगर, बीकानेर

'नेपथ्य का सच' कहानी संग्रह में कुल बारह कहानियाँ संकलित हैं। इस संग्रह की भूमिका मदन सैनी एवं रवि पुरोहित द्वारा लिखी गई है। रवि पुरोहित का मानना है कि –'नेपथ्य का सच' की कहानियाँ नैसर्गिक मानवीय मूल्यों से आहत संवेदनाओं का सुराग खोजने का उपक्रम हैं। संवेदनाओं के कोलाहल के पार्श्व में चाहे खोखली परम्पराएँ हो या जीवन–सम्बन्धों की जीर्ण–शीर्ण अवस्थाएँ।'' इस संग्रह की कहानियाँ नारी जीवन से सम्बन्धित हैं या यूं कहे कि किसी न किसी रूप में ये कहानियाँ नारी मन के अँधियारे कोने की अनुगूँज हैं। नारी–जीवन का व्यवस्थाओं से आहत मन तथा तमाम उतार–चढ़ाव इस संग्रह की कहानियों में दृष्टिगत होते हैं। लेखिका इन कहानियों के माध्यम से सामाजिक समरसता तथा सामाजिक चेतना लाना चाहती है।

इस संग्रह की कहानियों में मानवीय कमजोरियाँ भी है, तो जीवन–मूल्यों का उपस्थापन भी है। कहानियों में छल–कपट, स्वार्थपरता, लोभ–मोह, ईर्ष्या–द्वेष, वेर–विरोध और घात–प्रतिघात भी है, तो परदुःखकातरता, परोपकार, दया, क्षमा, वचन–पालन, सहनशीलता और स्वाभिमान की प्रतिष्ठा भी है। दाम्पत्य–सुख की अभिलाषा के साथ ही स्त्री–पुरुष सम्बन्धों में भारतीय सांस्कृतिक गौरव की झलक भी देखने को मिलती है।

प्रथम कहानी 'परिंदा' में चिड़े–चिड़ी के ब्याज से नई पीढ़ी में पुरानी पीढ़ी के प्रति आ रहे अलगाव की मानसिकता ध्वनित हुई है। वहीं 'अनोखा सूर्यास्त' कहानी में गलतफ़हमी या शक का विवेकपूर्ण चिन्तन के महत्व को रेखांकित किया गया है।

''उसी समय एक नया विचार जन्मा, 'अगर इस समय मैं देखूँ कि वे किसी परिचित से गप्पें हाँक रहे तो, मुझे कैसा लगेगा ? शायद मेरा मन भी उसे क्रुद्ध दृष्टि से देखेगा और ....और उसका ज़हर अचानक उतर चला। चेहरे का तनाव ढ़ीला पड़ने लगा। दूरी का कारण और विचारों का औचित्य तो उसे मिल गया पर शब्दों के अनौचित्य की कचोट अभी बाकी थी।'[8]

लेखिका ने नारी–मन को संवेदनाओं के स्तर पर जिस गहराई से व्यक्त किया है वह आश्वस्त करती है।

'खाली हाथ' कहानी में बाल विवाह की विडम्बना एवं वैधव्य की त्रासदी है। रमा पाठकों के समक्ष अनेक अनुत्तरित प्रश्न लेकर आती है। 'भूकम्प के बाद' कहानी में बेरोजगारी से उभरने के लिए रामोजी का धर्म परिवर्तन कर रहमानुल्लाह बन जाना तथा हमीदा से निकाह कर लेना जबकि वह पूर्व में शादी शुदा है। लेखिका द्वारा शिक्षा का महत्व बताया गया है। यहाँ 'पानी पीजिए छानकर, सम्बन्ध कीजिए जान कर' कहावत चरितार्थ हो रही है। विवाह जैसे पवित्र–संस्कार को 'समाधान' कहानी में महिमा–मण्डित किया गया है।

'तिरंगे से वादा' कहानी में शिक्षित मालकिन की प्रेरणा से नौकरानी की लड़की शीला पढ़–लिख कर अन्तर्राष्ट्रीय धाविका बनकर ओलम्पिक खेलों में स्वर्ण पदक हासिल कर देश का नाम रोशन करती है। 'मरुपुष्प' की नायिका कल्याणी अभिजात्य वर्ग से सम्बन्धित है। माता–पिता की मृत्यु के बाद उसके भाई उसके विवाह की सोचते तक नहीं और वह अविवाहित ही रह जाती है। एक संभ्रांत महिला का कल्याणी से परिचय होता है और उसकी कहानी वह सुनती है तो दोनों के बीच मध्यस्थता से कल्याणी और दिवाकर का विवाह सम्पन्न कराने में सहायक होती है।

इन कहानियों में दाम्पत्य प्रेम के विविध आयामों में स्त्री–मन के उद्वेलन, मर्यादा–बंधन, आडम्बरहीन सामंजस्य के साथ ही पुरुष–मन के छल–छद्म एवं स्वार्थपरता के बिम्ब भी देखे जाते है। 'सुबह का भूला' कहानी के पात्र कामताप्रसाद व उनकी पत्नी भविष्य की चिन्ता से आक्रान्त हो अपने खाते में पूँजी जमा कराते रहते हैं, लेकिन जब पौत्री के विवाह की चिन्ता में उनके पुत्र का रक्तचाप बढ़ जाता है तो वह अपनी जमा पूँजी बेटे को दे देते है।

'निर्णय' कहानी के माध्यम से लेखिका द्वारा आज की कलयुगी संतानों को सबक सिखाया गया है तथा कलयुगी पुत्र,पुत्र–वधुओं की मनोवृत्ति को भी अनावृत्त किया गया है। 'पूर्णकाम' कहानी जीवन में सपने देखना तथा उन्हें पूरा करने का प्रयत्न करने हेतु प्रेरित करती है। 'एक पेशकार की आपबीती' कहानी दुनियादारी के आदर्श को व्यावहारिता के धरातल पर प्रतिष्ठित करती है। इस कहानी में एक व्यक्ति की उज्ज्वल छवि, भले ही उसे उत्कोच के रूप में उपहार मिले हो, लेकिन उसकी उदारता, परोपकारिता समाज में उसे सम्मान का अधिकारी बनाती है।

अंत में 'नेपथ्य का सच' कहानी वचन–पालन जैसे मूल्यबोध के साथ ही अपने जीवन स्तर के यथार्थ को स्वीकार करने की अभिप्रेरणा भी है। लेखिका की सलाह इस कहानी में भी झलकती है। मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा एवं भले–बुरे की पहचान करने की दृष्टि का विकास भी इनकी कहानियों में बख़ूबी देखा जा सकता है। लेखिका की दृष्टि समाज के प्रत्येक कोने को छूकर आयी हैं। समाज का सच इनकी कहानियों में नेपथ्य के झीने आवरण से झाँकता नजर आता है।

2.2.3 तृष्णा तू न गई.....

संस्करण – 2010

प्रकाशन – ज्ञान पब्लिकेशन्स, ज्ञान कुंज –307, गाँधी नगर, बीकानेर (राज.)

'तृष्णा तू न गई....' 'कहानी संग्रह में कुल बारह कहानियाँ संग्रहीत है। यह कहानी संग्रह समाज की उन परिस्थितियों से साक्षात् कराता है जिन्हें समाज अपनी मर्जी के अनुसार चलाना चाहता है। कहानियों की भाषा–शैली एवं संप्रेषणीयता, आत्मिक संस्पर्श के साथ संवेदना जगाने वाली है जो समाज में एक नवीन दृष्टिकोण जाग्रत करने में अपनी सक्षम भूमिका निभा रही है।

लेखिका ने समाज की छोटी से छोटी समस्या को भी लेखनी का विषय बनाकर समाधान खोजने का प्रयास किया है। शिक्षा का महत्व, स्वाभिमान पूर्ण जीवन का महत्व, नारी अधिकारों के प्रति जागरूकता आदि भाव इन कहानियों में व्यक्त हुए है। लोभवश एवं ईर्ष्यावश किए गये कार्यों के दुष्परिणामों पर भी प्रकाश डाला गया है। पति–पत्नी के बीच आ रही कटुता के कारणों का पता लगाकर समाधान खोजने का प्रयास भी कहानियों के माध्यम से किया गया है।

'भूमिका' कहानी उच्च वर्ग की सोच को अभिव्यक्त करती है तथा भारतीय संस्कृति एवं संस्कारों की जीवन्तता बनाये रखने के साथ ही शिक्षा का महत्व भी बतलाती है। किस प्रकार किसी के खानदानी खून का असर संतान में आकर असर दिखाता है, 'असर' कहानी

के माध्यम से हत्यारे पिता व कंजरी सरगम का रक्त अब शीना में रंग ला रहा है। डॉ. इति व कमलकान्त अपने पालन–पोषण, प्यार यहाँ तक कि जीवन देकर भी इसे नहीं बदल पाये थे। लेखिका एक स्त्री है और स्त्री होने के नाते वह स्त्री के अधिकारों का हनन होते हुए नहीं देख सकती। 'अधिकार' कहानी स्त्री के अधिकारों के प्रति जागरूकता एवं समझदारी को दर्शाती है।

'ये द्रोपदियाँ' कहानी पंजाब क्षेत्र में जमीन को बँटवारे से बचाने की सोच पर आधारित हैं। 'लेकिन यह सच है', कहानी मनोहर बाबू के माध्यम से उस वर्ग की सोच को अभिव्यक्त करती है जो पत्नी को मन से प्रेम न करके शरीर से लगाव रखता है।

'अनोखा फैसला' कहानी मुखिया के सही निर्णय की उपयोगिता दर्शाती है तथा निःस्वार्थ सेवा के भावों को भी अभिव्यक्ति प्रदान करती है। 'सलोनी की शादी' उन अभिभावकों की मानसिकता को अनावृत्त करती है, जो लड़कियों की कमाई या सेवा के लालच में उनका विवाह टालते रहते हैं। सलोनी के माध्यम से लेखिका ने लड़कियों की शिक्षा की अनिवार्यता पर प्रकाश डाला है। सलोनी जो सारी उम्र माँ व परिवार की सेवा करती रही बीमार पड़ जाने पर उसकी सेवा करना सबको भारी पड़ने लगता है।

सौतेली माँ के बारे में सभी ने सुना है और अगर माँ दूसरी हो तो पिता तीसरा हो जाता हैं परन्तु बच्चों में प्रेम लवंग–पद्म की तरह फलता–फूलता रहता है। अभिन्न को सौतेली माँ घर से बेघर कर देती है, दस वर्ष बाद अभिन्न पूर्ण सफलता के साथ घर में प्रवेश करता है। आधुनिक युग में कम्प्यूटर एवं इन्टरनेट से आ रहे परिवर्तनों को 'एक शादी ऐसी भी...' में देखा जा सकता है। 'काली छाया' कहानी उस सूत्रधार की लीला को व्यंजित करती हैं जो अपने अनुसार संसार को चला रहा हैं। 'तृष्णा तू न गई....' कहानी बेटों की आड़ में धन बटोरने वाले माँ–बाप की कहानी हैं, जो बेटों को उन्नति के शिखर पर पहुँचाकर उनकी बोलियाँ लगाते है उसके दुष्परिणाम कहानी में दृष्टिगत हो जाते हैं साथ ही सास–बहू का मनोविज्ञान भी यहाँ देखने को मिल जाता है।

'रिक्त क्षणों में वह अपने पति व सास–ससुर के साथ किए गए अपने दुर्व्यवहार को याद कर पछताती परन्तु इसका अब कोई लाभ न था।' [9]

'आधी छोड़ सारी को....' कहानी में एक परिवार का चित्रण है। दो लड़के हैं। दोनों प्रेम–विवाह के चक्कर में, एक तो प्रेम–विवाह कर चला जाता है और दूसरा आत्महत्या कर लेता है। माता–पिता को वर्तमान समय की माँग को देखते हुए अपने फैसले बदलने तथा पुरानी परम्पराओं को त्यागने का भाव कहानी में दर्शाया गया है।

'प्रत्येक कहानी में जिस समस्या को उठाया उसका समाधान सुझाने का भी प्रयास किया है। सभी समस्याएँ वर्तमान युग में भौतिकता के विकास के कारण आई परेशानियाँ ही समस्या बन जाती है। अतः स्वाभाविक जीवन जीना ही आत्मिक शांति का आधार है और हम अज्ञानतावश शांति को धन एकत्रित करके खोजना प्रारम्भ कर देते है।'[10]

लेखिका ने समाज को भिन्न–भिन्न कोणों से देखा हैं। सभी कहानियाँ सामाजिक यथार्थ को अनावृत्त करती है।

2.2.4 नए सूरज की तलाश –

संस्करण – 2015

प्रकाशन – ज्ञान पब्लिकेशन्स, ज्ञान कुंज–307, गाँधी नगर, बीकानेर

डॉ० उषा किरण सोनी के इस कहानी संग्रह में कुल तेरह कहानियाँ संकलित है। सभी कहानियाँ यथार्थ जीवनानुभूतियों का सच्चा दस्तावेज़ है, जो समाज में घटित प्रत्येक घटना को सहजरूप से पाठक के समक्ष प्रस्तुत करते हुए वर्तमान में घटित घटनाओं को अतीत का प्रतिफलन मानकर भविष्य में इसका परिणाम अवश्य देखने को मिलेगा जैसी धारणा को पुष्ट करती हैं। दृष्टि के समक्ष जो घट रहा है वह सत्य ही हो यह आवश्यक नही इस पूरी प्रक्रिया में अपने विचार संवेदनशील और सृजनात्मक मन की सृष्टि हेतु आमंत्रित करते है।

लेखिका ने घटना के मूल में जुड़े पात्रों की अनुभूति को कल्पना से सरोबार कर मानवीय अस्तित्व के दृश्यात्मक रूपक प्रस्तुत किए है और कहानियों में प्रमाणिकता के साथ जीवन के यथार्थ को चित्रित किया है। 'शुभदृष्टि' कहानी में पुरुष मनोवृत्ति को उजागर कर स्त्री को आगाह किया गया है। पुरुष अपने कुत्सित विचारों व शब्दों द्वारा मानसिक व्याभिचार करते हैं और तृप्ति का अनुभव करते हैं। श्वेता माताजी की सीख पर विचार करती है।

'रति–विरति' कहानी स्त्री की विवेकहीन मनोवृत्ति को दर्शाती है। रति अवस्थी ड्राईवर मनोज से विवाह कर अपना जीवन स्वयं उजाड़ लेती है। लेकिन कहानी में अपनी बेटी को अच्छे संस्कार देने की दरकार है। 'राम–राम का सच' कहानी वृद्धाश्रम में हो रहे भ्रष्टाचार, अनाचार का पर्दाफ़ाश करती है। सत्ता और पद के मद में जीवन–मूल्यों की बदलती परिभाषा, जब कोई भ्रष्टाचार का प्रबल विरोधी भ्रष्टाचार करता ही नहीं वरन् उसे सही भी ठहराता है। 'बदलती परिभाषाएँ' कहानी से स्पष्ट हो जाता है।

'पूतोंवाली' कहानी वर्तमान में पुत्रों द्वारा की जा रही माता–पिता की उपेक्षा को इंगित करती है। 'वृंदा' तीन–तीन बेटों के होते आज मैं अकेली रह गई हूँ इन तीनों में कोई एक यदि बेटी होती तो शायद उसके दिल में माँ के लिए दर्द होता।'[11]

'छाती में जमी बर्फ़' कहानी में लेखिका द्वारा पुरुष लंपटता को दर्शाया गया है तो 'बदला' कहानी में सुनंदा द्वारा किए गए अपमान जनक कृत्य को दर्शाने के साथ ही दहेज प्रथा के दुष्परिणामों की ओर भी समाज का ध्यानाकर्षित किया गया है।

ईश्वर ने 'चोंच दी है, तो चुगा भी देगा ही' की कहावत चरितार्थ करती कहानी 'वाह रे! मानुष मन' बहुत ही आकर्षक बन गई है। 'उस्ताद कौन ?' कहानी बुद्धिमानी से कार्य करने को प्रेरित करती हैं। कई बार थोड़ी सी सहायता जीवन बदल देती हैं। उद्दण्ड जन्मेजय को कुछ नम्बर देकर अगली कक्षा में पहुँचाना उसके जीवन की दिशा बदल देता हैं। वह सेना में मेजर बन जाता है। भारतीय सभ्यता एवं सांस्कृतिक जीवन–मूल्यों की प्रतिष्ठापना 'षोड़सी' कहानी में हुई है। पाश्चात्य संस्कृति का पहनावा भारतीय संस्कृति में हेय दृष्टि से देखा जाता है। 'डायरी के पन्ने' कहानी संस्मरण शैली में लिखी गई हैं। कहानी में परोपकारी मनोवृत्ति को अभिव्यक्ति प्रदान की गई है।

अंतिम कहानी 'नए सूरज की तलाश' राजघरानों के सच को अनावृत्त करती है। सरस्वती को पिता का वह दर्द अनुभव हुआ जो पूर्व में उन्होंने अपने पिता को दिया था, वह समझ गई और ईसुरी के अंधेरे जीवन को प्रकाशित करने के लिए किसी नए सूरज की तलाश करने निकल पड़ी। कहानी प्रसिद्ध कथाकारों की स्मृति कराती है।

लेखिका ने समाज की समस्याओं एवं मानवीय दुर्बलताओं से बिल बिलाते जीवन को कहानियों में उकेरा है। संग्रह की सभी कहानियाँ मानवीय सत्य और ऐसे जीवन–मूल्यों के प्रतिस्थापन का प्रयास है जो उस क्षितिज की तलाश कर रही है जहाँ से उगा सूर्य मानवता के मस्तक पर अपना धवल निष्कलुषित प्रकाश फैला कर मानव–जाति को सकारात्मक ऊर्जा से भर देगा।

इस संग्रह का अनुवाद उर्दू भाषा में किया जा रहा है, जो इनको साहित्य क्षेत्र में एक सफल कथाकार के रूप में पहचान स्थापित कराता है।

2.3 निबन्ध संग्रह –

निबन्ध एक ऐसी विधा है जहाँ साहित्यकार मन खोलकर स्वतंत्र रूप से अपने भावों, विचारों, को पाठक के समक्ष रख सकता है। लेखिका के निबन्ध संग्रह का सामान्य परिचय निम्नांकित है –

2.3.1 अक्षर से 'अक्षर' तक–

संस्करण – 2017

प्रकाशन – कलासन प्रकाशन, मॉर्डन मार्केट, बीकानेर

'अक्षर से 'अक्षर' तक' निबन्ध संग्रह में कुल बाईस निबन्ध संग्रहीत हैं। इस संग्रह की भूमिका भवानी शंकर व्यास 'विनोद' द्वारा लिखी गई है। इनका मानना है कि "साहित्यकार की अनेक विधाओं में रचनाकर्म करने के उपरान्त भी रचनाकार को लग सकता है कि कहीं न कहीं कुछ अधूरापन रह गया है, कुछ अतृप्ति है जिसकी पूर्ति मन खोलकर वह केवल निबन्ध में ही कर सकता है। एक बात और है, और वह यह है कि साधारण गद्य की तुलना में निबन्ध में अपेक्षाकृत अधिक प्रतिभा का प्रकाशन संभव है तथा उसमें अधिक सरसता, सजीवता, नव–चिन्तन तथा विचारों की उद्‌भावना की अभिव्यक्ति सार्थक ढ़ग से की जा सकती है। डॉ. उषा किरण सोनी ने निबन्ध विधा को चुना, इसके पीछे इन्हीं में से कोई कारण हो सकता है।"

इस संग्रह के बाईस निबन्धों में दस निबन्ध मध्यकालीन और अर्वाचीन साहित्यकारों के रचनात्मक अवदान पर आधारित है, चार निबन्ध युवा दायित्व–बोध पर तथा तीन निबन्ध महिला संचेतना, एक निबन्ध अक्षर की साक्षरता पर एवं चार निबन्ध विविध विषयों के महारथियों की जीवनियों पर आधारित हैं। सभी निबन्ध साहित्यिक कसौटी पर खरे उतरते है। इनका रचनात्मक कौशल एवं सर्जनात्मक अनुभूति चिन्तनपरक, संवेदनासिक्त तथा लोक–केन्द्रित है जिसमें इनकी वैयक्तिकता तथा जीवन–दृष्टि की झलक देखने को मिलती है।

वास्तव में निबन्ध वह विचार प्रधान रचना है। जिसे निबन्धकार अपने समकालीन युगीन परिवेश को खुली आँखों से देखने–समझने के उपरान्त अपने मन में उपजे भावों, विचारों के समवाय को मौलिक रूप से निबद्ध कर प्रस्तुत करता है। निबन्ध में स्वच्छन्द व्यक्तिगत मौलिक विचार आकार लेते हैं। 'जीवन में आचार' निबन्ध में शास्त्र विहित आचरण अर्थात् सदाचार पर बल दिया गया है। सदाचार ही आत्मोत्थान कर सम्पूर्ण मानव जाति को विनाश से बचा सकता है।

'जन्म एक सहज जैवीय घटना है जबकि जीवन का निर्माण किया जाता है। जन्म का अर्थ है एक खान से पाषाण खण्ड का बाहर आना और जीवन है उस पाषाण खण्ड को तराश कर जीवन्त प्रतिमा का निर्माण करना। विभिन्न विचारों, आस्था, विश्वास और मूल्यों के अनुसार जिस आकार में व्यक्ति ढलकर तैयार होता है वह उसी के अनुरूप अपने जीवन में आचरण करता है।' [12]

लेखिका की चिन्तन दृष्टि व्यापक है भाषा में लचीलापन एवं सूक्ष्मता है। शब्दों की कसावट अद्‌भुत है। इन्होंने अपनी रूचियों, अनुभूतियों, विचार सरणियों को कहीं भी आरोपित नहीं किया है। स्वाभाविक जीवन दृष्टि का प्रकाशन इनके निबन्धों में हुआ है।

2.4 बालगीत संग्रह व बाल कथा संग्रह –

डॉ. उषा किरण सोनी कवयित्री एवं कथाकार के साथ ही बाल–साहित्यकार के रूप में भी अपनी पहचान बना चुकी हैं। इनके बाल–साहित्य का विवेचन निम्न प्रकार से हैं।

2.4.1 टिम टिम तारे–

संस्करण – 2010

प्रकाशन – ज्ञान पब्लिकेशन्स, ज्ञान कुंज–307 गाँधी नगर, बीकानेर

'टिम टिम तारे' बालगीत संग्रह में कुल उन्नीस बाल–कविताएँ संग्रहीत हैं। छोटे बच्चों को अगर कविताओं और गीतों के माध्यम से पढ़ाया और सिखाया जाए तो वह अधिक लाभप्रद होगा बच्चे उसे जीवनभर याद रखेंगे। इसी उद्देश्य से लेखिका ने इस बालगीत संग्रह की रचना की है, जो उनके ज्ञानार्जन में सहायक होकर उन्हें प्रेरित करेंगी।

'बालकों को संस्कारित करने का काम अकेले परिवार और विद्यालयों का ही नहीं हैं बल्कि सृजकों का भी योगदान नितान्त आवश्यक है। कच्ची मिट्‌टी के जैसे चाहे वैसे बर्तन कुम्हार बना लेता है। कच्ची उम्र में बच्चों को भी जैसे संस्कार दिए जाते हैं वे आजीवन उसके साथ रहते हैं।'[13]

'टिम टिम तारे' बालगीत संग्रह की कविताओं की भाषा सरल, सहजग्राह्य व ज्ञानार्जन में सहायक हैं। यह बाल–पाठकों के लिए पूर्णतः उद्देश्यपूर्ण रचनाकर्म है जो नई पीढ़ी को न केवल उनकी परम्पराओं से परिचय कराता है बल्कि उन्हें संस्कारवान बनाकर मानवीय गुणों का प्रस्फुरण भी करता है। इस संग्रह की कविताएँ बाल–पाठकों को बहुरंगी संसार का भ्रमण करवाती है। जिसमें रंग–बिरंगा इन्द्रधनुष है, आकाश में नगीने से जड़े हुए टिम टिम तारे है, तो सम्पूर्ण सृष्टि में जीवन शक्ति का संचरण करने वाला ऊर्जा का अक्षय स्रोत सूरज है। प्रकृति से प्राप्त ऋतुओं का उपहार है, तो 'जल ही जीवन है' कविता में जल की महिमा का बख़ान है। जीवन में उल्लास भरते रंग–बिरंगे त्योहारों की बहार के साथ ही 'फलों का राजा' आम की रसीली बातें है। 'अगर कहीं' कविता में बाल कल्पनाओं की उड़ान है, तो संसार में तीन की महिमा का बख़ान भी है। ईश्वर का प्रतिनिधित्व करती माँ की निर्मल छवि के साथ ही स्वराष्ट्र के प्रति निष्ठा एवं समर्पण की प्रेरणाएँ तथा गुरु की महिमा का बखान भी है। 'वर्ष हर्ष में' कविता के माध्यम से बालक खेल–खेल में वर्ष के बारह महीनों के नाम व जानकारी प्राप्त कर लेते है।

'चींटी की बात' कविता जहाँ परिश्रम का महत्व बताती है, वहीं किताबें जीवन का सार, सारा संसार दिखाती हैं। किताबों के महत्व से बाल पाठक रू–ब–रू होते है। जीवन और धरती की उष्णता शांत करती शीतल बूंदों में भीगने का आनन्द भी बाल पाठक उठाते है। काले रंग का महत्व भी 'काला' कविता में बताया गया है।

'काले रंग से कभी न डरना, जीवन में उजियाली भरना।'[14]

सोच को सकारात्मक बनाए रखने के उद्देश्य से लेखिका द्वारा 'काला' कविता की रचना की गई है। संजय आचार्य 'वरूण' का मानना है कि– ''यह कृति टिम टिम तारे सुसंस्कृत कर्त्तव्यनिष्ठ, ज्ञानवान, गुणसम्पन्न और राष्ट्र समर्पित पीढ़ी के निर्माण की दिशा में उठाया गया एक सार्थक कदम है।''

निश्चय ही लेखिका द्वारा अपनी शैली के अनुसार एक सकारात्मक दृष्टिकोण से बालगीत संग्रह 'टिम टिम तारे' की सर्जना की गई है, जो बाल पाठकों के आदर्श व्यक्तित्व का निर्माण करने के साथ ही सद्चरित्र निर्माण की सभी आवश्यकताओं को पूर्ण करने में सहायक होगी। बहुआयामी रचनाकार लेखिका अपनी नवीनतम कृति 'टिम टिम तारे' के साथ बिल्कुल नये अंदाज़ में उपस्थित हुई है। भाषा की गरिमा, अनुभवों व अनुभूतियों की प्रभावोत्पादकता का सुन्दर संयोजन इस कृति में देखने को मिलता है।

2.4.2 घरौंदा–

संस्करण – 2017

प्रकाशन – कलासन प्रकाशन, मॉडर्न मार्केट, बीकानेर

बालकथा संग्रह 'घरौंदा' में दस बाल–कथाएँ संकलित हैं। सभी बाल–कथाएँ प्रेरणास्पद है। राजा–रानी व परियों की कहानी बीते समय की यादें मात्र रह गई है। आधुनिक युग में टी.वी., इन्टरनेट, मोबाईल ने तो मानों बचपन को छीन ही लिया है। आज तकनीकि प्रौद्योगिकी के युग में बालकों को समय दे पाने की फुर्सत ही न रही अभिभावकों के पास। बालकों की आवश्यकता को महसूस करते हुए उन्हें संस्कारित कर व्यक्तित्व निर्माण हेतु प्रेरित करने के उद्देश्य से लेखिका द्वारा बालकथा संग्रह की सर्जना की गई है। लेखिका ने नई पीढ़ी को अर्थात् बालकों को संस्कारित व स्वयं की शक्तियों का विकास कर सफलता के प्रथम सोपान तक पहुँचाने की दिशा निर्धारित करने का प्रयास किया है।

'सफलता का स्वाद' कहानी द्वारा जीवन में सफलता पाने का संदेश है, जिसने एक बार सफलता का स्वाद चख लिया उसे आगे बढ़ने से कोई रोक नहीं सकता। 'घरौंदा' कहानी में अनुपयोगी सामग्री से उपयोगी सामग्री निर्माण के साथ ही स्त्री–जीवन की कला का रहस्य भी व्यंजित हुआ है। 'दिन का सपना' कहानी बालकों को जीवन का लक्ष्य

निर्धारित करने की प्रेरणा प्रदान करती है। 'देश की नाक 'देशनोक' कहानी में करणी माता से जुड़ी कथा की विस्तृत जानकारी प्रदान की गई है। मंदिर परिसर में ढेरों चूहों के विषय में भी लेखिका द्वारा अपने पोते विभोर को दो बातें बताई 'पहली यह कि यहाँ चूहे को चूहा नहीं 'काबा' कहा जाता है और दूसरी यह कि यहाँ के ढेरों चूहों के बीच केवल एक या दो ही सफेद चूहे दिखते हैं। सफेद चूहे का दिखना सौभाग्यसूचक होता है।'[15]

रंग–बिरंगें फूलों की जानकारी देते हुए गुलाब के फूल अर्थात् 'सबसे प्यारा फूल' द्वारा अच्छी आदतों व अच्छे व्यवहार का महत्व बताया गया है।

दोस्ती में कोई छोटा न कोई बड़ा होता है और न ही कोई अमीर व ग़रीब होता है। 'दोस्ती का कमाल' कहानी सच्चे दोस्त का महत्व बताती है, जो आपकी हर सम्भव सहायता कर आपका साथ निभाये। परिश्रम द्वारा कठिन से कठिन कार्य भी संभव हो जाता है और आपकी समाज में सम्मान व प्रतिष्ठा भी बढ़ती है। 'सोने का चूहा' कहानी बालकों को परिश्रम करने की प्रेरणा प्रदान करती है। 'कच्ची उम्र का बड़प्पन' कहानी में गिरिराज के माध्यम से बताया गया है कि समय एवं परिस्थिति बालक को समय से पहले कैसे समझदार बना देती है; गिरिराज अपने पिता को अपनी एक किडनी देकर पूरे परिवार की आजीविका एवं पिता का जीवन बचाने में सहायक होता है।

'जीवन की दिशा' बालकों को अभ्यास की सीढ़ियाँ चढ़कर जीवन को नई दिशा प्रदान करने हेतु प्रेरित करती है । अंत में कमला का ब्याह (कठपुतली नृत्य–नाटिका) के माध्यम से लेखिका ने शिक्षा का महत्व बताया है। साथ ही पढ़–लिखकर योग्य बनने के उपरान्त ही ब्याह करने का संदेश भी दिया है। वर्तमान युग में स्त्री–शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु राज्य सरकार द्वारा भी कई योजनाएँ शिक्षा जगत में प्रोत्साहन हेतु चलाई जा रही है। लेखिका एक शिक्षिका भी है और शिक्षिका होने के नाते शिक्षा के महत्व को बख़ूबी जानती है। बालकों को शिक्षित कर, संस्कारवान, ज्ञानवान, बनाने का स्तुत्य प्रयास लेखिका द्वारा किया गया है ।

साधारण एवं सहजग्राह्य भाषा शैली में आकर्षक बाल–कथाओं द्वारा बालकों को प्रेरणा प्रदान कर नई दिशा निर्धारण का मार्ग प्रशस्त किया गया है। पुस्तक में कहानियों का चित्रात्मक प्रस्तुतिकरण बाल पाठकों को आकर्षित एवं प्रेरित करने में सहायक हैं। बच्चों को चित्र बहुत आकर्षित करते हैं, वह चित्र देखकर कहानी को शीघ्रता से समझ पाने में समर्थ होते है। इसीलिए लेखिका ने कहानियों को रोचक बनाने के उद्देश्य से सचित्र कहानियों का लेखन किया है।

2.5 अन्य –

2.5.1 बाल साहित्य यात्रावृतांत –

डॉ० उषा किरण सोनी ने बालगीत संग्रह एवं बालकथा संग्रह के साथ ही बालोपयोगी यात्रावृतांत लिखकर बाल–साहित्य में श्रीवृद्धि की हैं। इनकें बालोपयोगी यात्रावृतांत का विवेचन निम्न प्रकार से हैं।

2.5.1.1 द्वार से धाम तक–

संस्करण : 2015

प्रकाशनः ज्ञान पब्लिकेशन्स,ज्ञान कुन्ज–307, गाँधीनगर, बीकानेर

'द्वार से धाम तक' यात्रा वृतांत में लेखिका ने उत्तराखण्ड के चारों धाम की यात्रा देवभूमि हरिद्वार से शुरू की। उनकी यात्रा यमुनोत्री, बडकोट से गंगोत्री, धरासु से केदारनाथ एवं तिलवाड़ा से बद्रीनाथ तक, तत् पश्चात वापसी में हरिद्वार यात्रा सम्पन्न हुई। मानव आदि–अनादि काल से यात्राएँ करता आ रहा है, तथा अपनी यात्रा के अनुभव सुनाता आ रहा है। चूँकि पहले इन्हें लिपिबद्ध करने की व्यवस्था न थी, इसलिए मौखिक रूप से ही अपने अनुभव सुनाये जाते थे।

पहिये के आविष्कार ने तो इस क्षेत्र में क्रांति ला दी। आज मनुष्य ने कंदराओं से निकल पूरी धरती को नाप चुकने के बाद चाँद–सितारों तक की यात्रा सफलता पूर्वक पूरी कर ली हैं। लिपि के आविष्कार एवं इंटरनेट की सुविधा ने मानव को इन यात्राओं का घर बैठे आनन्द प्राप्ति में महती भूमिका अदा की है। यात्राएँ दरअसल ज्ञानार्जन का सर्वश्रेष्ठ और अद्वितीय माध्यम हैं। यात्रा एक चलती–फिरती पाठशाला है, जो कदम–कदम पर बिना औपचारिकता के शिक्षित और प्रशिक्षित करती हैं।

लेखिका के द्वारा की गई चार धाम की यात्रा का वृतांत बालमन को आकर्षित कर पर्यटन के प्रति रूचि तथा पर्यटन के लाभ एवं प्राकृतिक सौंदर्य, तीर्थ स्थलों के महत्त्व को बताने के साथ ही बालकों के ज्ञानार्जन व मनोरंजन, आनन्द व शांति की प्राप्ति के लिए प्रेरित एवं आमंत्रित करने में सहायक सिद्ध होगी।

'द्वार से धाम तक' यात्रा का लेखिका ने बहुत ही सहज एवं संप्रेषणीय वर्णन किया हैं। मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण रखते हुए इन्होंने उन प्रसंगों पर अधिक बल दिया हैं जो मार्ग की कठिनाइयों पर आत्मविश्वास द्वारा विजय प्राप्त की जाती हैं। अपनी यात्रा के समय की अलग–अलग मनःस्थितियों और दृश्यों को इतनी जीवन्तता के साथ शब्दांतरित किया हैं कि पाठक इस यात्रा का आनन्द पूरे मनोयोग से लेने लगता हैं। कुछ पंक्तियाँ उदाहरण स्वरूप दृष्टव्य हैं–

'एक ओर था स्वर्ग सा सौंदर्य और दूसरी ओर था सामने खड़ी मृत्यु का भय परन्तु साहसी जीवन सदैव मृत्यु से शक्तिशाली रहा है। मैं अब और ऊपर चढ़ने में स्वंय को अक्षम महसूस कर रही थी अतः भैरव मंदिर से आगे जाने के लिए एक मज़बूत पिट्ठू ले लिया गया। पिट्ठू की पीठ पर टोकरी में बैठना मेरे लिए एक नया और अनोखा अनुभव था। अभी मुश्किल से हम सौ मीटर ही गए होंगे कि तेज़ वर्षा के साथ ओले गिरने लगे जिससे कठिनाइयों की रही–सही क़सर भी पूरी हो गई। ठंडी हवा, ठंडा वर्षा का जल और ठंडे (बर्फीले) ओले, कठिनतम खड़ी चढ़ाई, फ़िसलन, भीड़ व सँकरी सड़क; सब कुछ मिलकर केवल प्रार्थना की शक्ति ही बचा सके थे जो कि अत्यन्त धीमी गति से चढ़ता हर यात्री कर रहा था।'[16]

लेखिका ने रास्ते की इन कठिनाइयों का तथा अपनी बिखरी आत्मशक्ति को एकत्रित कर कठिनाइयों पर विजय पाने का बहुत ही सजीव चित्रण किया है। प्रत्येक पृष्ठ पर यात्रा के दौरान कैमरे से लिए गए छायाचित्र एवं कठिन शब्दों का अर्थ जो बाल पाठकों को पढ़ने में सुगमता प्रदान करेंगे। साथ ही इनका शब्द भण्डार भी समृद्ध होगा। जितना प्रभावशाली इनका लेखन है उतना ही आकर्षक पुस्तक का प्रस्तुतीकरण हैं। दर्शनीय स्थलों की भव्यता एवं प्राकृतिक सौन्दर्य की दृश्यावलियाँ और इन धार्मिक स्थलों के प्रति श्रद्धा–भाव यात्रा हेतु प्रेरित करते हैं।

2.5.1.2 मेरी यूरोप यात्रा –

संस्करण – 2015

प्रकाशन – ज्ञान पब्लिकेशन्स, ज्ञान कुंज–307, गाँधी नगर, बीकानेर

'मेरी यूरोप यात्रा' बालोपयोगी यात्रा वृतांत में लेखिका ने यूरोप के तीन देशों नीदरलैण्ड, फ्रांस और बेल्ज़ियम की यात्रा का वर्णन बच्चों के लिए किया है। किसी देश की यात्रा का वर्णन उस देश के दर्शनीय स्थल, संस्कृति एवं स्थान से हमारा परिचय कराने का उपयोगी माध्यम हैं। उस स्थान की सभ्यता एवं संस्कृति को जानने समझने के साथ ही बहुत कुछ सीखने की प्रेरणा भी यात्रा वृतांत देता हैं। 'मेरी यूरोप यात्रा' यात्रा वृत्तांत इन तीनों देशों की संस्कृति, इतिहास एवं पर्यटन से जुड़े हुए प्रमुख स्थलों का जीवन्त परिचय कराता है।

नीदरलैण्ड विश्व पटल पर मौजूद छोटा किन्तु प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण देश है। मानव ने अपने श्रम से इस प्रकृति प्रदत्त, सौन्दर्य को अतुलनीय बना दिया है। इस देश के प्राकृतिक सौन्दर्य और नगर संयोजन का वर्णन हमें यात्रा करने को प्रेरित करता है। यहाँ जनसंख्या का बहुत बड़ा भाग आवागमन के लिए साईकिलों का उपयोग करता है। यह

पर्यावरण प्रदूषण से बचने का बहुत उत्तम उपक्रम है। प्रदूषण रहित वातावरण ही प्राकृतिक सौन्दर्य को बनाये रख सकता है। ग़सन डायमण्ड फैक्ट्री, मैडम तुसाद के विश्व प्रसिद्ध मोम के पुतलों का संग्रहालय एवं एनी फ्रेंक का घर और अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय पर्यटन की दृष्टि से विशेष उल्लेखनीय है। यहाँ की शिक्षा व्यवस्था बालकों के सर्वांगीण विकास में सहायक है।

फैशन की नगरी पेरिस का एफ़िल टॉवर अपनी ऊँचाई से हमें बादलों का निवासी होने का अहसास कराता है। डिज़नी पार्क का ''इट्स ए स्मॉल वर्ल्ड'' में संसार के विभिन्न देशों की संस्कृतियों का पुतलों द्वारा जीवन्त अभिनय ज्ञानवर्धक एवं रोचक है। लूव्रे म्यूजियम में विभिन्न धर्मों एवं मानव सभ्यताओं से सम्बन्धित चित्रों, मूर्तियों एवं वस्तुओं का संग्रह अतुलनीय है।

इसी प्रकार बेल्जियम का 'इस्कॉन मन्दिर' विदेश में भारत होने का अहसास कराता है। यूरोप की साफ–सुथरी सड़कें, प्राकृतिक सौन्दर्य को बनाए रखने का प्रयत्न, सुरक्षित यातायात व्यवस्था तथा स्वेच्छा से यातायात नियमों की पालना आकर्षक एवं प्रेरणा का स्रोत हैं। प्राकृतिक सौन्दर्य वर्णन में उपमाओं, अलंकारों, बिम्बों का संयोजन लेखिका की सशक्त लेखनी का अहसास कराते है। उदाहरण देखिए –

'उषा का जादू टूट रहा था पर दिन का स्वामी अभी पधारा नही था। नीला आकाश, नीला समुद्र और बीच में ताज़े मक्खन से सफेद बादलों का ढ़ेर सभी शांत हो दिनकर की अगवानी में सन्नद्ध खड़े थे।[17]

लेखिका ने प्राकृतिक सौन्दर्य की दृश्यावलियों के आकर्षक बिम्बों की छटा बिखेर दी है।

'पतझड़ की विदाई हो रही थी और शीत ऋतु ने कमान संभाल ली थी। सूर्य देवता अब कभी–कभी ही दर्शन देते, बादल आकाश की झलक देखने ही नहीं देते, दिन भर तेज़ ठण्डी हवाएँ चलती रहतीं और कभी–कभी अपने साथ झीसी की झर भी ले आतीं। सितम्बर में जिन पेड़ों पर कुछ ही पत्ते पीले दिखते थे अब उल्टी स्थिति हो गई थी। अक्टूबर मध्य में कुछ ही पेड़ों पर गिने–चुने पत्ते दिखते क्योंकि अधिकांश वृक्ष पल्लवों के वस्त्र उतार कर दिगम्बर सन्यासी हो गए थे।'[18]

इस प्रकार 'मेरी यूरोप यात्रा' यात्रावृतांत में यूरोप के इतिहास उसके विकास एवं समृद्धि का वर्णन भी है जो हमें वहाँ के मनुष्यों के अमूल्य योगदान, प्राकृतिक सौन्दर्य एवं मानव निर्मित ऐतिहासिक इमारतों आदि का दर्शन कराती है और मन में यूरोप यात्रा की इच्छा जाग्रत करती है। नीदरलैण्ड, फ्रांस एवं बेल्जियम की यात्राओं का वर्णन केवल

बालकों के लिए ही नहीं वयस्कों के लिए भी आकर्षक एवं ज्ञान का स्रोत हैं। भाषा सरल एवं सहजग्राह्य तथा आकर्षक है।

2.5.2 सहलेखन कविता संग्रह –

2.5.2.1 सबके साथ : सबसे अलग–

प्रथम संस्करण – 2005

प्रकाशक – अमर भारती साहित्य संस्कृति संस्थान (पंजीकृत)

1084, विवेकानन्द नगर, गाज़ियाबाद

संपादक – डॉ. धनंजय सिंह

'सबके साथः सबसे अलग' पुस्तक में 26 रचनाकारों की रचनाएँ संकलित है, जिसमें पाँचवें स्थान पर डॉ. उषा किरण सोनी की कविताएँ, 'युग', झोपड़ियाँ, मानवता का क्रंदन, 'धरती' की चेतावनी', 'बदलती परिभाषाएँ' संग्रहीत है। लेखिका ने स्वतन्त्र लेखन के साथ सहलेखन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हैं। इनके अक्षरों की पहली भोर' कविता संग्रह में यह कविताएँ संग्रहीत है, जो वर्तमान की यथार्थ जीवनानुभूतियों को अनावृत कर संवेदना जाग्रत करती है।

2.5.3 सह लेखन कहानी संग्रह –

2.5.3.1 मन में बसा आकाश–

प्रथम संस्करण – 2006

प्रकाशक – अमर भारती साहित्य संस्थान 1084, विवेकानन्द नगर, गाज़ियाबाद

संपादक – डॉ. धनंजय सिंह

'मन में बसा आकाश' पुस्तक में कुल सात कथाकारों की कहानियाँ संग्रहीत हैं। इसमें लेखिका की 'परिंदा' एवं 'समाधान' कहानियों को स्थान प्राप्त हैं। नये रचनाकारों को साहित्य जगत में अपनी उपस्थिति अंकित कराना प्रथम कदम होता हैं। इसके बाद अगला कदम रचनाकारों को पहचान और प्रतिष्ठा प्राप्ति की ओर अग्रसर करता है।

'परिंदा' एवं 'समाधान' दोनों ही कहानियाँ लेखिका के कहानी संग्रह 'नेपथ्य का सच' में संग्रहीत हैं। इन्होंने समाज के यथार्थ को कहानियों के माध्यम से प्रस्तुत कर समाज को नई दिशा प्रदान करने का प्रयास किया हैं।

2.5.4 शोध ग्रन्थ पर आधारित आलोचनात्मक पुस्तक –

2.5.4.1 कन्हैयालाल सेठिया के साहित्य में जैन सम्मत जीवन मूल्य–

संस्करण – 2013 प्रथम

प्रकाशक – ज्ञान पब्लिकेशन्स, ज्ञान कुंज–307, गाँधी नगर, बीकानेर

बहुमुखी प्रतिभा की धनी डॉ. उषा किरण सोनी की लेखनी से कोई भी साहित्यिक विधा अछूती नहीं रही। इन्होंने गद्य व पद्य दोनों ही विद्याओं में लेखन कार्य किया तथा अपने शोधग्रन्थ को भी आलोचनात्मक पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित करवाकर स्व. श्री कन्हैयालाल जी सेठिया के प्रति एक सच्ची श्रद्धांजली अर्पित की है, जो सम्पूर्ण राष्ट्र, समाज, शिक्षक, शिक्षार्थी एवं युवा वर्ग के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी।

इस आलोचनात्मक पुस्तक के विषय में डॉ. वेद शर्मा का मानना है कि– ''प्रज्ञापुरुष कविर्मनीषी पद्मश्री कन्हैयालाल सेठिया'' का समग्र सृजन मूलतः मानवीय मूल्यों का उपस्थापक है, पर सघन अवगाहनोपरान्त हम पाते है कि वहाँ जैन सम्मत जीवन–मूल्यों का प्रत्याभिज्ञान ही सर्वाधिक मुखर हुआ है।''

कन्हैयालाल सेठिया जी के साहित्य में जैन–सम्मत जीवन–मूल्यों का सुन्दर निदर्शन देखने को मिल जाता है– 'सर्वज्ञ/मैं/से/अनभिज्ञ!।[19]

डॉ. उषा किरण सोनी अपने प्राक्कथन में लिखती है कि – ''हिन्दी, राजस्थानी, उर्दू व संस्कृत चारों भाषाओं में काव्य की रचना करने वाले सशक्त हस्ताक्षर है कवि कन्हैयालाल सेठिया। आपने दर्शन, अध्यात्म, नीति, काल–चिन्तन, संवेदना, युगबोध से अनुप्राणित सभी शैलियों में सृजन किया है। आपने कृतियों में जीवन–मूल्यों विशेषकर जैन सम्मत जीवन मूल्यों को पिरोने का अपने ही अंदाज़ में महती कार्य किया है।''

लेखिका द्वारा श्री सेठिया जी पर लिखी आलोचनात्मक पुस्तक भावी शोधार्थियों का मार्गदर्शन करेगी तथा श्री सेठिया जी के साहित्यिक अवदान युगीन संदर्भ में जैन–सम्मत जीवन–मूल्यों की प्रासंगिकता से परिचय करवायेगा। श्री सेठिया जी के साहित्य पर किसी भी देश–विदेश के विश्वविद्यालय ने धोरों की धरती के इस महान रचयिता के सृजन को शोधपरक पैनी नजरों से देखकर ठेठ उपलब्धिपरक महार्घ जीवन–मूल्यों का सम्यक, अनुशीलन एवं उद्घाटन नहीं किया है।

लेखिका द्वारा श्री सेठिया जी पर किया गया शोध कार्य स्तुत्य है। सरलतम शब्दों में जीवन के गूढ़तम रहस्य उघाड़कर रख देना सेठिया जी की विशिष्टता थी।

'चार–चार भाषाओं के अनेक काव्य संग्रहों में जीवन मूल्यों को उकेरने वाला कवि यदि कहे कि ''हाल मॉडणों कोनी आयो'' तो यह उसके अकिंचन की पराकाष्ठा है।'[20]

ऐसे महामानव के बहुआयामी व्यक्तित्व व कृतित्व ने इस शोध ग्रन्थ को आलोचनात्मक पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित करने हेतु लेखिका को प्रेरित किया।

अक्षय चन्द शर्मा के अनुसार – 'सेठिया जी राजस्थान के पुराने कवियों की परम्परा में नए व राष्ट्रीय कवियों में अग्रणी है। राष्ट्रीय जागृति और देश–प्रेम की भावनाएँ फैलानें में

आपका बड़ा हाथ रहा हैं। राजस्थानी और हिन्दी दोनों ही भाषाओं में सेठिया जी ने उद्बोधक राष्ट्रीय कविताएँ लिखी है जो कालजयी है और राजस्थान की सीमा के बाहर भी उसी सम्मान के साथ पढ़ी जाती हैं।' [21]

लेखिका द्वारा मनीषी, चिन्तक, दार्शनिक कवि श्री कन्हैयालाल सेठिया के साहित्य को सृजन के आठ अध्यायों में विभक्त कर उसमें जैन–सम्मत जीवन–मूल्यों पर आलोचनात्मक कार्य किया गया हैं और अपनी इस आलोचनात्मक पुस्तक को पाठकों को समर्पित कर जैन सम्मत जीवन मूल्यों का प्रत्याभिज्ञान कराने में सफलता हासिल की हैं।

निष्कर्ष –

डॉ. उषा किरण सोनी युगबोध की लेखिका हैं। इन्होंने समाज में घटित घटनाओं को अन्तर्दृष्टि प्रदान करते हुए अपनी भावनाओं को सृजन में उकेरा है। इनकी रचनाओं को पढ़कर लगता है कि यह समाज का कोना–कोना, झाँक आई है। मानवीय संवेदना की लेखिका को मानवीय रिश्तों, त्रासदियों, विकृतियों के जानने–समझने की अदम्य शक्ति प्राप्त है। वर्तमान का विद्रूप और प्रकृति का मनोहारी स्वरूप तथा अव्यवस्थाओं के शिकार जर्ज़रमन की व्यथा इनके साहित्य में देखने को मिलती है।

इनका साहित्य यथार्थ जीवनानुभूतियों का साहित्य है। अनुभव, भोगा हुआ यथार्थ, पैतृक संस्कार, सामाजिक परिवेश इनके प्रेरणा स्रोत के पारदर्शी धरातल है। लेखिका ने जीवन के प्रत्येक विषय पर लेखनी चलाई; चाहे वह नारी–जीवन की समस्या हो, या महानगरीय जीवन की विडम्बना, या हो निम्नवर्ग की मज़बूरियों से भरा बिलबिलाता जीवन। देशभक्ति, प्राकृतिक सौन्दर्य तथा आध्यात्म व दर्शन की सुन्दर छटा भी इनकी रचनाओं में देखने को मिलती है। जैन सम्मत जीवन–मूल्यों की जानकारी कराता इनका शोध–ग्रंथ 'कन्हैयालाल सेठिया के साहित्य में जैन सम्मत जीवन–मूल्य' बहुत ही उपयोगी हैं। सेठिया जी के गागर में सागर भरने जैसी मंत्र बीज कहानियों, कविताओं की कला से प्रभावित हो इन्होंने भी वामन कविताओं में जीवन के गूढ़तम रहस्यों को उघाड़ कर रख दिया हैं।

डॉ. उषा किरण सोनी राजस्थान के ही नहीं, देशभर के साहित्यकारों के बीच साहित्याकाश में चमकते सितारे की भाँति सम्पूर्ण साहित्यजगत को आलोकित कर रही है। इनकी लेखन कला इतनी सशक्त है, जो हर समस्या को समाधान देते हुए यथार्थ जीवनानुभूतियों का अहसास कराती हुई समाज–सुधार का मार्ग प्रशस्त करती हैं। जीवन और जगत के सत्य को उद्घाटित करती इनकी कविताएँ एवं कहानियाँ पाठक को भावविभोर कर साहित्य–सागर में डुबकियाँ लगाने को मज़बूर कर देती हैं।

कविता संग्रह 'अक्षरों की पहली भोर', 'मौन के स्वर', 'मुक्ताकाश में', 'शब्द की अनुगूँज' की कविताएँ बहुत ही सरस एवं आकर्षक शैली में संवेदना जगाने वाली है; साथ ही अनन्त के गूढ़तम रहस्यों को उद्घाटित करते हैं। इनके कहानी संग्रह 'काम्या', 'नेपथ्य का सच', 'तृष्णा तू न गई...' 'नए सूरज की तलाश' की कहानियाँ स्त्री–पुरुष के सम्बन्धों एवं नारी–जीवन की समस्याओं को अनावृत करती है।

इनका नारी मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण इनकी कहानियों में देखने को मिलता है। लेखिका ने बालमनोविज्ञान पर आधारित बालोपयोगी साहित्य सृजन कर बालकों को परिवेश, पर्यावरण के साथ ही देश–विदेश के महत्व यात्राओं के लाभ एव ंपर्यटन के महत्व को बताया है। प्रकृति और मनुष्य का अटूट सम्बन्ध हैं। प्रकृति प्राणी में जिज्ञासा जाग्रत करती है, बालमन को प्रकृति के क्रिया–कलाप ज्यादा आकर्षित करते है, वह उन्हें जानने व समझने तथा समाधान पाने की इच्छा रखता है। लेखिका ने बालकों को प्रेरित करने तथा ज्ञान प्रदान करने के उद्देश्य से बाल–साहित्य की सर्जना की है। अपनी सहज, सरल, सुगम्य भाषा–शैली में लेखिका ने व्यक्तित्व व कृतित्व का बोध कराया है।

सन्दर्भ सूची –

1. अक्षरों की पहली भोर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 32
2. अक्षरों की पहली भोर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 36
3. मौन के स्वर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 33
4. मौन के स्वर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 73
5. मुक्ताकाश में, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 21
6. मुक्ताकाश में, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 56
7. शब्द की अनुगूँज, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 49
8. नेपथ्य का सच, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 19
9. तृष्णा तू न गई..., डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 70
10. जगमग द्वीप ज्योति/नवम्बर–दिसम्बर, 2015–16
11. नए सूरज की तलाश, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 32
12. अक्षर से 'अक्षर' तक, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 18
13. (समीक्षा) नया शिक्षक, अक्टूबर–नवम्बर–2011, पृ.सं. 96
14. टिम टिम तारे, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 22
15. घरौंदा, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 17

16. द्वार से धाम तक, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 10
17. मेरी यूरोप यात्रा, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 06
18. मेरी यूरोप यात्रा, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 17
19. कन्हैयालाल सेठिया के साहित्य में जैन सम्मत जीवन–मूल्य, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 56
20. कन्हैयालाल सेठिया के साहित्य में जैन सम्मत जीवन–मूल्य, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 11
21. कन्हैयालाल सेठिया के साहित्य में जैन सम्मत जीवन–मूल्य, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 19

अध्याय द्वितीय

डॉ.उषा किरण सोनी के साहित्य की मूल्यपरक मीमांसा

अध्याय द्वितीय

डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य की मूल्यपरक मीमांसा

आदिकाल से ही सम्पूर्ण भारतीय वाङ्मय आदर्शों एवं मूल्यों के कारण श्रेष्ठ पद पर प्रतिष्ठित रहा है; इसलिए हमारा देश संसार में विश्वगुरु कहलाता आया है। आदिकालीन प्राचीन धर्मग्रन्थों, वेदों, पुराणों, उपनिषदों, स्मृतियों तथा रामायण, महाभारत जैसे महाकाव्यों आदि में इन आदर्शात्मक एवं नैतिक, सामाजिक–सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक, धार्मिक मूल्यों को महत्व दिया गया है। हमारी सम्पूर्ण भारतीय सामाजिक व्यवस्था मूल्यपरक रही है। मूल्य ही मानव–जीवन को नई दिशा प्रदान कर समाज–निर्माण एवं समाज–विकास में सहायक होते है। हमारे धर्मग्रन्थों में इनका वर्णन देखने को मिलता हैं।

हमारे हिन्दू–धर्मग्रन्थ रामायण में जिन आदर्शवादी मूल्यों की स्थापना हुई है, इतिहास गवाह है कि ऐसा आदर्श आज तक किसी युग में देखने को नहीं मिला। पारिवारिक रिश्तों में जिन आदर्शात्मक नैतिक मूल्यों की स्थापना रामायण में हुई है, उसका कोई सानी नहीं है। राम को वचनबद्धता के कारण आदर्श पुत्र के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त हुई है तथा भाई–भाई, सेवक–स्वामी, राजा–प्रजा, पति–पत्नी के आदर्श रूप को भी इसमें महत्व दिया गया है। असत्य पर सत्य की विजय, अधर्म पर धर्म की विजय का आदर्श समाज के समक्ष प्रस्तुत किया। इसी प्रकार महाभारत में गीता का उपदेश देते हुए श्रीकृष्ण अर्जुन को कर्म का महत्व बताते है तथा निष्काम भाव से कर्म करने का संदेश देते है। जैन धर्मग्रन्थों तथा बौद्ध धर्म–ग्रन्थों में भी इसी आदर्शात्मक मूल्य–परक जीवन व्यवस्था का वर्णन देखने को मिलता है। मूल्य समाज की मान्यताओं और धारणाओं के अनुसार बनते–बिगड़ते रहते है, लेकिन शाश्वत मूल्य न कभी मिटते है और न ही कभी बदलते है। हर एक समाज अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप मूल्यों का निर्माण करता है। साहित्य पाठकों को जीवन के यथार्थ से जोड़ता है तथा नैतिक मूल्यों के प्रति आस्था उत्पन्न करता है।

आदि–अनादि काल से चली आ रही इस मूल्यपरक सामाजिक व्यवस्था की आवश्यकता प्रत्येक युग में रहेगी। वर्तमान समय में भी इसी आवश्यकता को समझते हुए लेखकों तथा साहित्यकारों द्वारा आदर्शात्मक मूल्यपरक साहित्य की रचना की जा रही है। इस क्षेत्र में हमारे राजस्थान की लेखिका डॉ० उषा किरण सोनी ने सामाजिक फ़लक पर यथार्थ जीवनानुभवों की कूँची से कल्पनाओं के रंग भरते हुए मूल्यपरक साहित्य का चित्र

उकेरा है। इनका सम्पूर्ण साहित्य मूल्यों पर आधारित है, जिसकी मूल्यपरक मीमांसा निम्न प्रकार से हैं–

2.1 मूल्य का सैद्धान्तिक विवेचन –

2.1.1 सामान्य अर्थ एवं परिभाषा –

मूल्य शब्द का सामान्य अर्थ किसी वस्तु अथवा अवस्था की कीमत से लिया जाता है।

संस्कृत हिन्दी कोश के अनुसार – 'हिन्दी में प्रयुक्त मूल्य शब्द संस्कृत की 'मूल' धातु के साथ 'यत्' प्रत्यय संयुक्त कर देने से बना है, जिसका अर्थ कीमत, मजदूरी आदि होता है....।'[1]

मूल्य शब्द अंग्रेजी के वेल्यू टंसनमद्ध (Value) शब्द का समानार्थी है। वेल्यू शब्द लेटिन भाषा से आया है जिसका अर्थ है, अच्छा या सुन्दर।

कुछ विद्वानों का मानना है कि मूल्य शब्द मूलतः अर्थशास्त्र का है तथा अर्थशास्त्र में इसका अर्थ बाज़ारदर अर्थात् विनिमय के आवश्यक प्रतिमान के अर्थ में प्रयुक्त होता है।

डॉ. राधाकृष्णन मुखर्जी के अनुसार– ''मूल्य जीवन, परिवेश, आत्म, समाज, संस्कृति और इन सबके अलावा मानवीय अस्तित्व तथा अनुभूति के आदर्शात्मक–आध्यात्मिक आयाम से उद्भूत होते हैं।''[2]

डॉ. धर्मवीर भारती ने मूल्य के विषय में अपना मत प्रकट करते हुए कहा कि –''मूल्य की अवधारणा, मानवतावादी दृष्टि से निष्पन्न एक नियम सम्पन्न चेतना का नाम है। ये अन्ततोगत्वा मानव जीवन में ही पनपते है और उनका विकास व्यक्ति समूह और समाज की ओर होता है। मूल्य व्यवस्था उसके व्यक्तित्व की व्याख्या और ढ़ाँचे का संचालन करती है।''[3]

पाश्चात्य विचारक आलपोर्ट मानते हैं– ''मूल्य वे मानव विश्वास है जिनके आधार पर मानव वरीयता प्रदान करते हुए कार्य करता है।'' तथा दार्शनिक व समाजशास्त्री जोसेफ एच.फिचर ने अपना मंतव्य देते हुए लिखा है– ''मूल्य वे मानदण्ड है जो सम्पूर्ण संस्कृति और समाज को अभिप्राय व सार्थकता प्रदान करते हैं।''[4]

रामधारी सिंह 'दिनकर' ने मूल्यों को आधारगत मानते हुए कहा है– ''मूल्यों से ही मानव का व्यवहार संयत होता है। मूल्य वे मान्यताएँ है जिन्हें मार्गदर्शक मानकर सभ्यता चलती रहती है और जिनकी उपेक्षा करने वालों को परम्परा अनैतिक, उच्छृँखल या बागी कहती है।''[5]

वस्तुतः मूल्य मानव समाज को प्रगति की ओर ले जाते हैं; तथा उनके जीवन में श्रद्धा, विश्वास, प्रेरणा व प्रतिबद्धता जैसे उद्धात्त भावों का संचरण करते है। ये मूल्य ही सम्पूर्ण जगत को संचालित कर समाज में पूर्ण व्यवस्था बनाये रखते है। भारतीय व पाश्चात्य दोनों ही दर्शनों में अपने–अपने जीवन मूल्य है।

2.1.1.1 भारतीय विचारधारा –

भारतीय विचारधारा में धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चार पुरुषार्थों की कल्पना जीवन को संयमित एवं सम्यक रूप से चलाने के लिए की गई हैं। मोक्ष, जीवन का अंतिम अर्थात् चरम लक्ष्य है। साधारण शब्दों में– धर्मयुक्त अर्थोपार्जन कर काम की पूर्ति करते हुए निवृत्त होकर मोक्ष पा लेना ही मानव का लक्ष्य है।

भारतीय धर्म–ग्रन्थों, वेदों, संहिताओं, ब्राह्मण ग्रन्थों, स्मृतियों, रामायण, महाभारत जैसे महाकाव्यों में मूल्य की इस विचारधारा को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। इन ग्रन्थों में नैतिकता, सदाचरण, पवित्रता, आत्मज्ञान, परोपकार, धर्माचरण, सत्य, अहिंसा, आत्म संयम व मर्यादा जैसे मूल्यों का निरूपण किया गया है। मूल्यानुसार आचरण के लिए पाप–पुण्य, स्वर्ग–नरक, जन्म–मृत्यु व पुनर्जन्म आदि का विधान वेद संहिताओं में मिलता है।

हमारी बुद्धि को सत्कर्मों में प्रेरित करने के लिए और जीवन को प्रकाश की ओर ले जाने के लिए ऋग्वेद में गायत्री मंत्र का विधान हैं।

''ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहिधियो योनः प्रचोदयात्।''[6]

रामायण में वचनबद्धता को सर्वश्रेष्ट जीवन–मूल्य माना गया है। ''रामचरितमानस' के 'अयोध्याकाण्ड' की पंक्ति दृष्टव्य है। –

''रघुकुल रीति सदा चलि आई,
प्राण जाहूँ बरू वचन न जाई।''[7]

इसी प्रकार महाभारत में भी असत्य पर सत्य की, अर्धम पर धर्म की, पाप पर पुण्य की विजय को दर्शाते हुए सत्य का पालन व धर्माचरण पर बल दिया गया है।

2.1.1.2 पाश्चात्य विचारधारा –

'मूल्य' ग्रीक भाषा का शब्द है, जो ''एक्सियम'' तथा 'लागस' शब्दों से बना है। 'मूल्य' शब्द की व्युत्पत्ति और संकल्पना के प्राचीनतम आधार ग्रीक व लेटिन भाषा में मिलते है। इसी से अंग्रेजी के 'वेल्यू' शब्द का हिन्दी में अनुवाद 'मूल्य' शब्द के रूप में हुआ है। किसी भी वस्तु के दो पक्ष होते है– एक तथ्य तथा दूसरा उसका मूल्य। तथ्य पर विचार

करना उस वस्तु का वर्णन, निरूपण व गुणावधारणा कहलाता है। हमारे सभी अनुभवों में मूल्यों का विचार समाहित होता है।

रेण्डम के शब्दकोश के अनुसार, वेल्यू का अर्थ उपयोगी से लिया गया है – ''Value is the quality of anything renders desirabale or useful. The value of sunlight, good books. Works implies spiritual qualities, mind and character as few know his true worth.''[8]

प्रसिद्ध पाश्चात्य विचारक 'मूर' मूल्य को शुभ अर्थात् शिवत्व की संज्ञा से अभिहित करते हुए कहते है कि "Good is an organic whole of the intririsically valuable parts."[9] अर्थात् भीतर से मूल्यांकन अंशों की सर्वांगपूर्ण समष्टि ही शुभ है।

अर्थशास्त्र के प्रसिद्ध विद्वान 'मैकेंजी' के मतानुसार ''मूल्य से हमारा आशय उस विचार से है जो एक विवेकशील प्राणी के चिंतन का परिणाम हो। इस प्रकार मूल्य की परिभाषा विवेकपरक चुनाव के प्रत्यक्ष लक्ष्य रूप में स्वयमेव उद्भूत होती है।''[10]

2.1.2 मूल्यों का वर्गीकरण –

मूल्यों के वर्गीकरण में विद्वानों में मतैक्य का अभाव है। विभिन्न विद्वानों ने अपने–अपने दृष्टिकोण से मूल्यों का वर्गीकरण किया है। किसी ने जैविक मूल्यों को प्राथमिकता दी है, तो किसी ने आध्यात्मिक मूल्यों को। जहाँ भारतीय मनीषियों ने मूल्यों को चार वर्गों में धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष में विभाजित किया, वह पूर्णतया वैज्ञानिक माना जाता है।

2.1.2.1 विभिन्न विद्वानों ने मूल्यों का वर्गीकरण निम्न प्रकार से किया है –

जे.एस.मैकेंजी ने मूल्यों को दो भागों में वर्गीकृत किया है।

(1) साधनात्मक मूल्य (2) साध्यात्मक मूल्य।

इसी प्रकार डॉ. देवराज ने भी मूल्यों को दो वर्गों में विभाजित किया है –

(1) आन्तरिक मूल्य (2) बाह्य मूल्य ।

आर.बी.वेरी ने मूल्यों को चार वर्गों में विभाजित किया है –

(1) नकारात्मक मूल्य (2) सकारात्मक मूल्य
(3) विकासवादी मूल्य (4) वास्तविक मूल्य।

डॉ. हुकुमचन्द राजपाल के अनुसार –

''मूल्य चार प्रकार के होते है – भौतिक, मानसिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक।''[11]

पाश्चात्य विचारक डब्ल्यू एम.अर्बन ने मूल्यों को आठ भागों में विभाजित किया है –

(1) शारीरिक मूल्य (2) आर्थिक मूल्य (3) मनोरंजनात्मक मूल्य
(4) आध्यात्मिक मूल्य (5) चारित्रिक मूल्य (6) सौंदर्यात्मक मूल्य

(7) बौद्धिक मूल्य (8) धार्मिक मूल्य।"[12]

वस्तुतः भारतीय मनीषियों ने चार पुरुषार्थ –

(1) धर्म – इसमें नैतिक और सामाजिक मूल्य आ जाते हैं।

(2) अर्थ – इसका सम्बन्ध भौतिक मूल्यों से हैं।

(3) काम – इसके अन्तर्गत सौन्दर्य और कला सम्बन्धी सभी मूल्य आ जाते हैं।

(4) मोक्ष – इसमें आध्यात्मिक मूल्य आते है। इस तरह सभी मूल्य इन चार पुरुषार्थों के अन्तर्गत समाहित हो जाते हैं।

2.1.2.2 विकास की दृष्टि से मूल्यों का वर्गीकरण –

(क) जैविक मूल्य

(ख) पराजैविक मूल्य

(क) जैविक मूल्य –

सर्वप्रथम व्यक्ति जिन मूल्यों की प्राप्ति करना चाहता है, वह है जैविक मूल्य। इसके अन्तर्गत मानव की शारीरिक आवश्यकताएँ आती है। जैविक मूल्यों के अन्तर्गत तीन तरह के मूल्य आते है।

(1) जिजीविषा सम्बन्धी मूल्य (2) भूख–प्यास सम्बन्धी मूल्य (3) काम–परक मूल्य।

(ख) पराजैविक मूल्य –

असामान्य अवस्था में व्यक्ति की जागरूकता जैविक मूल्यों के प्रति बढ़ जाती हैं। अन्यथा सामान्य दशा में तो व्यक्ति की चेतना का केन्द्र–बिन्दु जैविक मूल्यों से हटकर पराजैविक मूल्य होते हैं। ये दो प्रकार के होते हैं–

(1) पराजैविक (सामाजिक मूल्य) – इन मूल्यों के अन्तर्गत आर्थिक, पारिवारिक, जातीय, साम्प्रदायिक एवं राजनीतिक मूल्य आते हैं।

(2) पराजैविक (मानविकी मूल्य) – इसके अन्तर्गत दार्शनिक, धार्मिक, शैक्षणिक, साहित्यिक व कलात्मक मूल्यों को समाहित किया जाता है।

2.1.2.3 व्याख्या की दृष्टि से मूल्यों का वर्गीकरण –

मानव मूल्य व्याख्या कोश में व्याख्या के आधार पर इनका वर्गीकरण पाँच भागों में किया गया है –

1. प्राकृतिक मूल्य –

(i) शारीरिक (ii) हार्दिक

(iii) मानसिक (iv) बौद्धिक

(v) आत्मिक मूल्य।

2. विस्तारक मूल्य –

(i) वैयक्तिक मूल्य (ii) पारिवारिक मूल्य

(iii) सामाजिक मूल्य (iv) राष्ट्रीय मूल्य

(v) वैश्विक मूल्य।

3. सत्यम् शिवं सुन्दरम् परक मूल्य –

(i) लोककल्याणकारी मूल्य (ii) मनोरंजनात्मक मूल्य

(iii) सौन्दर्यात्मक मूल्य (iv) साहित्यिक मूल्य

(v) पर्यावरण परक मूल्य।

4. उदात्त मूल्य –

(i) नैतिक मूल्य (ii) धार्मिक मूल्य

(iii) चारित्रिक मूल्य (iv) सांस्कृतिक मूल्य

(v) आध्यात्मिक मूल्य।

5. आधुनिक मूल्य –

(i) राजनीतिक मूल्य (ii) आर्थिक मूल्य

(iii) संवैधानिक मूल्य (iv) सरकारी व ऐतिहासिक मूल्य

(v) वैज्ञानिक मूल्य।

इस प्रकार मूल्यों के सैद्धान्तिक विवेचन के अन्तर्गत मूल्य का अर्थ एवं परिभाषा के साथ ही विभिन्न विद्वानों के मत द्वारा मूल्य की अवधारण को स्पष्ट कर मूल्यों का वर्गीकरण किया गया । मूल्यों का मानव जीवन मे बहुत महत्व हैं। मूल्य ही जीवन को दिशा प्रदान कर मानव विकास का मार्ग प्रशस्त करते है।

2.2 साहित्य में आध्यात्मिक और दर्शनपरक जीवन मूल्य –

2.2.1 कविता के सन्दर्भ में –

'अक्षरों की पहली भोर' कविता संग्रह की कविताओं में आध्यात्मिक और दर्शनपरक जीवन–मूल्यों की प्रतिष्ठापना हुई है। इस संग्रह का प्रारम्भ ही 'अक्षर' कविता से हुआ है। ब्रह्म स्वरूपा 'अक्षर' जो सम्पूर्ण सृष्टि का नियामक है।

'अक्षर' एवं साक्षर की महत्ता को उजागर करती यह कविता मानव को लक्ष्य संधान कर इस नश्वर जगत में अपनी अमिट छाप छोड़ने का संदेश देती है।

'सकल विश्व के जो कराता है दर्शन,
नयन खोलता देता वाणी का वर।
जो घटता नहीं है, न होता है क्षर,

वही ब्रह्म है, जो कहाता है अक्षर।"[13]

इन पंक्तियों में लेखिका उषा किरण सोनी की अक्षर यात्रा का सुरमुई उजास दिखाई देने लगता है। आध्यात्मिक एवं दर्शनपरक जीवन–मूल्यों को वाणी देती इन पंक्तियों में लेखिका की सृजन–प्रक्रिया के दौरान हुए जीवनानुभव व्यक्त हुए है।

'कौन सा है कल नया
और कौन सा है पल नया
साक्षी है ब्रह्माण्ड सारा
घट रहा पल–पल नया।'[14]

आध्यात्मिक एवं दर्शनपरक जीवन–मूल्यों की छटा 'कर सृजन' कविता की पंक्तियों में बखूबी देखी जा सकती है। संसार की परिवर्तनशीलता तथा संसार में पल–पल कुछ नया घटता रहता है, जिसका साक्षी सारा ब्रह्माण्ड है।

'मौन के स्वर' कविता संग्रह की कविताओं में भी आध्यात्मिक एवं दर्शनपरक जीवन–मूल्यों की झलक देखने को मिलती है। 'अनुनय' कविता की पंक्तियाँ दृष्टव्य है –

'जर्जर गात उठाकर हाथ
करता देख निकट इति अनुनय
दो त्राण, मुक्त हों प्राण प्रभो!
मृण्मय हो जाए मृण्मय।'[15]

ईश्वर ही सृष्टि का रचयिता एवं नियामक है। उसी के द्वारा पंचतत्व (हवा, जल, अग्नि, भूमि, आकाश) से मिलकर मानव की रचना की गई है। मानव देह मृण्मय है और अन्त में मानव भी ईश्वर से यही कामना करता है।

लेखिका आत्मा–परमात्मा की सत्ता को कविता 'आवरण–अनावरण' के माध्यम से विश्लेषित करते हुए लिखती है।

'मुक्ता है बन्द सीप में
दिखता बस आवरण।'[16]

ईश्वर सीप में बन्द मोती की भाँति प्रत्येक आत्मा में निवास करता है, लेकिन हमें केवल आवरण अर्थात् मानव तन ही नजर आता है। लेखिका द्वारा आध्यात्मिक एवं दर्शनपरक जीवन–मूल्य की प्रतिष्ठापना की गई है।

'निदेशक' कविता में भी ईश्वरीय महिमा का गुणगान सरल शब्दों में किया गया है। इस जीवन को देने वाला और लेने वाला वही एक निदेशक है, जो अनादि, अखण्ड, अनन्त आदि नामों से जाना जाता है।

'वही देता जीवन का उपहार
है करता वही काल बन अन्त
निदेशक वही एक है विशेष
वही जो अनादि, अखण्ड, अनंत।' [17]

उस ईश्वरीय सत्ता को पाने के लिए उस ईश्वरीय नाद को सुनने के लिए मौन का वरण करना होगा चेतना का अनावरण करना होगा। रोम–रोम में कान उगाने होंगे अपने भूत, भविष्य, वर्तमान को भूल उसी में लय होना होगा। लेखिका 'नाद' कविता के माध्यम से आध्यात्मिक एवं दर्शनपरक जीवन–मूल्यों की प्रतिष्ठापना करने का प्रयास कर रही है।

'नही सुन सकते
ब्रह्माण्ड में व्याप्त
अनहद नाद
उसे सुनने के लिए
करना होगा मौन का वरण
चेतना का अनावरण
उगाने होंगे
रोम–रोम में कान
तभी सुन सकोगे
उस निराकार का साकार गीत
बिसरा देगा जो
अद्य, भवि और अतीत।'[18]

'मुक्ताकाश में' कविता संग्रह खण्ड–1 स्वगत एवं खण्ड–2 भवगत में जिन आध्यात्मिक एवं दर्शनपरक जीवन–मूल्यों का विवेचन हुआ है वो निम्न पंक्तियों में वर्णित है।

'नयन भी है, सृष्टि भी
पर व्यर्थ दोनों उजास बिन
दमक उठता है जगत जब
किरण बन तुम बिखर जाते हो।'[19]

सम्पूर्ण जगत परमब्रह्म परमात्मा के प्रकाश से ही आलोकित है। आँखों का और सृष्टि का उजास ईश्वरीय उजास बिन व्यर्थ है। जब ईश्वरीय रूपी सूर्य का प्रकाश जगत में फैलता है तो सम्पूर्ण सृष्टि दमक उठती है।

'तू अनादि है, तू अनन्त हैं
तू ही सृजन है, तू ही ध्वंस है।
मैं अधम हूँ पर तेरा अंश हूँ
निज स्पर्श से मुझे हंस कर।'[20]

परमपिता परमात्मा अनादि है, अनन्त है, वो ही सृष्टि का सृजनकर्ता है और वो ही विध्वंसकर्त्ता है। मानव अधम है परन्तु उसी का ही अंश है। उसी की कृपा से अंतिम लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति संभव है। लेखिका द्वारा आध्यात्मिक एवं दर्शनपरक जीवन–मूल्यों के प्रति अपनी गहरी आस्था व्यक्त की गई है।

'चलो तोड़ डालें मन पंछी के पर
मंद करें गति इच्छा–रथ की
ज्यों ही घटा मोह, छँटा तम
दीख पड़ी आभा परम पथ की।'[21]

निम्न पंक्तियों में मन को वश में कर इच्छाओं पर विजय पाने की कामना की गई है और ज्यों ही हमारा मोह कम हुआ आत्मा–परमात्मा के बीच का अँधेरा मिट जायेगा और ईश्वर के परमपथ का प्रकाश नज़र आने लगेगा।

'जब तक परिग्रह शासन करता
चलता रहता चक्र निरन्तर
भुक्ति बंध और मुक्ति सत्य है
पाएगा! कर्मों का क्षय कर।'[22]

प्रस्तुत पंक्तियों में आध्यात्मिक एवं दार्शनिक जीवन–मूल्यों का प्रकाशन हुआ है। कर्म फल सभी को भोगना पड़ता है। जीवनचक्र निरन्तर चलता रहता है। सभी जीवन में मोक्ष की कामना करते है। 'शब्द की अनुगूँज' कविता संग्रह के 'अन्तर्नाद' खण्ड की कविताओं में आध्यात्मिक तथा दर्शनपरक जीवनमूल्यों की प्रतिष्ठापना हुई है।

'मैं' छोड़ सृष्टि से प्रेम करें
परमार्थ से हम करें मिलन
अन्तस का अंधकार मिटा
हो जाएँ हम किरन–किरन।'[23]

प्रस्तुत पंक्तियों में अहंकार त्यागने तथा सृष्टि के सभी जीवों से प्रेम करने पर बल दिया है। ऐसा करने पर ही ईश्वर से मिलन सम्भव हो सकेगा। अज्ञानता का नाश होगा और उस परमसत्ता के प्रकाश का साक्षात्कार होगा।

'नहीं लौटता

मुँह से निकला शब्द

और गुजरा हुआ अब्द

नहीं रहता

स्नेह बिन दीप में उजास

जीवन, थम जाने पे साँस

नहीं मिलता कभी

तरू से बिछड़ा पल्लव

और भव में रहते विभव।'[24]

लेखिका ने बहुत ही सरलतम शब्दों में जीवन के यथार्थ से परिचय करवाते हुए दार्शनिक जीवन–मूल्यों की स्थापना की हैं।

'कठिन है

स्वयं से हटना

कठिनतम है।

परम् पर टिकना।'[25]

प्रस्तुत पंक्तियों में कम शब्दों में गहरे भाव छिपे हुए है। यहाँ लेखिका ने गागर में सागर भरने की कहावत को चरितार्थ करते हुए आध्यात्मिक एवं दार्शनिक जीवन–मूल्यों का प्रकाशन किया है। लेखिका कुशल शब्द शिल्पी है, इनके शब्दों में गूढ़ अर्थ छिपे है।

इनके साहित्य में आध्यात्मिक एवं दर्शनपरक जीवन–मूल्य कविताओं में ही नहीं कहानियों में भी देखने को मिलते है। कहानी के सन्दर्भ में इनका विवेचन निम्न प्रकार है –

2.2.2 कहानी के सन्दर्भ में –

इनका प्रथम कहानी संग्रह 'काम्या' में आध्यात्मिक एवं दर्शनपरक जीवन–मूल्यों को निम्न कहानियों में बखूबी देखा जा सकता हैं। 'अनुष्ठान' कहानी में सुरजा द्वारा तांत्रिकों को घर बुलाकर टोने–टोटके करवाना इन्हीं जीवन मूल्यों को दर्शाते है।

'श्रीहरि की पत्नी को पुत्र के कमरे में और उसकी वस्तुओं पर कभी भयानक चित्र मिलते तो कभी रंगा नींबू, उसका माथा ठनका। विष्णुकान्त दिन–ब–दिन सूखता जा रहा था। उसका मन न तो किसी काम में लगता, न ही खाने–पीने में। माँ की चिंता बढ़ती जा रही थी। उन्हें अपने सूत्रों से पता लगा कि उनके देवर के घर में तांत्रिकों को आते–जाते देखा गया है, वहाँ महामारण अनुष्ठान चल रहा है। वे सुरजा के बदले हुए व्यवहार को देख कुछ–कुछ अनुमान भी लगा रहीं थीं। उन्होंने अपने पति महंत श्रीहरि से बात की।

महंत जी ने पत्नी का पुत्र प्रेम ही समझा और श्रीकान्त व सुरजा के बारे में इस प्रकार की किसी बात पर विश्वास करने से इन्कार कर दिया। वे क्या करतीं ? बस निरन्तर पुत्र की मंगल कामना ईश्वर से करती रहतीं।'[26]

इस कहानी का परिणाम यह होता है कि सुरजा अपने एक मात्र पुत्र को खो देती है। जो दूसरों के लिए खाई खोदता है, उसके लिए ईश्वर कुआं तैयार रखता है। ईश्वर सभी को कर्मों का दण्ड देता है। उसके आगे किसी की नहीं चलती। 'जैसी करनी वैसी भरनी।'

'सुरजा बेटे के शव को गोद में लिए दहाड़ें मार–मार कर रोए जा रही थी और छाती पीट–पीटकर कहे जा रही थी।

''अरे! मैंने खुद ही तेरी जान ले ली मेरे बच्चे, हाय! मुझे क्या पता था कि दूसरी माँ की गोद उजाड़ने के प्रयास का दण्ड देने के लिए परमात्मा मेरी ही गोद सूनी कर देगा।''

श्रीहरि की पत्नी उसे सांत्वना देने का असफल प्रयास कर रही थी।''[27]

'नीयत और नियति' कहानी में भी आध्यात्मिक और दर्शनपरक जीवन–मूल्यों का प्रकाशन हुआ है। ईश्वर व्यक्ति को कर्मानुसार फल देता है, अच्छे को अच्छा, बुरे को बुरा। ईश्वर व्यक्ति की नियति उसकी नीयत के परिणाम स्वरूप निर्धारित करता है। दमयंती यही सोचती है कि आज जो उसकी दशा है वह नीयत के कारण है या फिर नियति के कारण।

'स्वामिनी बनने की नीयत लेकर आई दमयंती को नियति ने आज सेविका बना दिया था। कोई उसका अपना न था। अपनों पर शासन करने की इच्छा ने उसे सभी अपनों से दूर कर दिया था। एकाकीपन ही उसका साथी था। बच्चे स्कूल चले जाते तो घर का काम–काज करते हुए वह अपने अतीत पर दृष्टि डालती और सोचती कि उसकी इस दशा के लिए उसकी नीयत जिम्मेदार है या नियति?' [28]

लेखिका के दूसरे कहानी संग्रह 'नेपथ्य का सच' में भी आध्यात्मिक और दर्शनपरक जीवन–मूल्यों की छटा देखने को मिल जाती है। 'अनोखा सूर्यास्त' कहानी की पंक्तियाँ दृष्टव्य है–

'वह सोचती, क्या विधाता ने पुरुष को यह अधिकार दिया है कि वह जब चाहे जो चाहे कह दे ?

अगर हाँ, तो नारी को क्या दिया ? सहनशक्ति ? भूलने की आदत ? विधाता का यह पक्षपात क्यों ? कभी सोचती, 'आखिर मैंने क्या पाप किया है ? क्यों नहीं मैं सामान्य

औरतों की तरह कुछ कह पाई ? क्यों नहीं सफाई दे पाई ? हाय रे ! उद्दंड मन, आड़े आ गया। बिना अपराध के क्यों सफाई दूँ?' [29]

आत्मकथा शैली में लिखी गई इस कहानी में एक औरत की वेदना और ईश्वर का स्त्री–पुरुष के अधिकारों में भेदभाव संवेदना जाग्रत करते हैं। कहानी में आध्यात्मिक और दर्शनपरक जीवनमूल्यों की प्रतिष्ठापना हुई है।

'नेपथ्य का सच' कहानी में भी इन्हीं मूल्यों की प्रतिष्ठापना निम्न पंक्तियों में देखने को मिल जाती हैं।

'सुखी रहो, विवाह कर अपने जीवन को सारे अर्थ दो और आजीवन पति का प्रेम पाओ, कह मैंने अनुपमा कपूर के सिर पर हाथ फेरा पर मन में अब भी गूँज रहा था।

काश ! अनुपमा सूद ने भी उचित समय पर उचित निर्णय लिया होता।' [30]

अफ़सर पति पाने की लालसा में उसने अपना जीवन एकांकी बना लिया, यही नेपथ्य का सच लेखिका ने इस कहानी में व्यक्त किया है।

इनके तीसरे कहानी संग्रह 'तृष्णा तू न गई...' की कहानियों में भी आध्यात्मिक और दर्शनपरक जीवन–मूल्यों की झलक देखी जा सकती है।

'कहते है उसकी लाठी में आवाज़ नहीं होती। जब से शारदा के पिता मनोहर बाबू से मिलकर लौटे थे तभी से उन्होंने शारदा के इलाज के लिए पैसा पानी की तरह बहाना प्रारम्भ कर दिया था। कुछ प्रयास और कुछ ईश्वरेच्छा शारदा दीवार पकड़कर चलने लगी थी, अब तो छड़ी लेकर पाँच–दस कदम चल लेती। सुधार तीव्रता से हो रहा था लगता था महीने–डेढ़ महीने में पैर पूरी तरह ठीक हो जाएँगे। शारदा के पैर ठीक हो रहे थे और मनोहर बाबू लँगड़े हो गए।' [31]

बिल्कुल सच है उसकी लाठी में आवाज़ नहीं होती और वो जो करता है, उसका अंदाज़ा भी नहीं लगाया जा सकता। शारदा जो विवाह के बाद लंगड़ी हो जाती है तो पति दूसरी शादी करने की बात करने लगता है और अपने ससुर से दम्भ भरते हुए कहता है मैं शारदा को छोड़ थोड़े रहा हूँ, वो भी रहेगी और उसकी बेटी भी, पर ईश्वर को कुछ और ही मंजूर था, शारदा तो ठीक हो गई लेकिन मनोहर बाबू के दोनों पैर दुर्घटना में टूट गये।

'अभिन्न बिना टिकट रेल में चढ़ गया पर भूख से आँते कुलबुला रही थीं उसका क्या करे ? कहते है कि भगवान एक दरवाजा बन्द करता है तो दूसरा खोल देता है। रेल में सरदार अनूप सिंह सपरिवार यात्रा कर रहे थे। उनके साथ उनकी बूढ़ी माँ भी थी। अनूप सिंह की माँ ने अभिन्न के चेहरे पर लिखी भूख की इबारत पढ़ और उसकी बद्तर हालत देख, अपने पोतों को खाने के लिए दे रही मट्ठियों के साथ उसे भी चार मट्ठियाँ

खाने को दीं जिसे झिझकते हुए उसने ले ली। अनूप सिंह के दोनों बेटे छठीं व सातवीं में पढ़ते थे और अनूप सिंह दिल्ली में ढ़ाबा चलाते थे।'[32]

प्रस्तुत कहानी 'लवंग पद्म' में आध्यात्मिक और दर्शनपरक मूल्यों की स्थापना हुई है। सच है कि ईश्वर एक दरवाजा बंद करता है तो दूसरा खोल देता है। अभिन्न को सौतेली माँ द्वारा घर से निकाल देने पर ईश्वर उसे अनूप सिंह के यहाँ सहारा दे देते है।

'नए सूरज की तलाश' कहानी संग्रह की कहानियों में भी आध्यात्मिक और दर्शनपरक जीवन–मूल्यों की प्रतिष्ठापना देखने को मिलती है।

'हाँ! राम–राम की कोठरी में कुछ वृद्धजन रहते हैं जो वहाँ बैठकर सारे दिन राम–राम का जाप करते रहते हैं। उन्हें लोग त्योहारों, व्रतों के पूर्ण होने व अन्य प्रसन्नता के अवसरों पर चाय, फल–मिठाई, भोजन और कभी–कभी वस्त्र भी देते हैं। मैंने भी तो आपके प्रमोशन पर प्रसाद के रूप में फल व मिठाइयाँ भिजवाई थी।' नीरजा की यह बात सुनकर प्रसन्न हुए वेदान्त ने पत्नी को, उन बूढ़ों के लिए समय–समय पर कुछ न कुछ भेजते रहने की हिदायत दी।' [33]

भगवान के नाम पर हो रहे पाखण्ड़ का पर्दाफ़ाश लेखिका ने कहानी के माध्यम से कर दिया है और राम–राम का सच समाज के समक्ष प्रकट कर दिखाया कि कितना सच है राम–राम की कोठरी में हो रहे शोषण के पीछे।

'बस तीव्रगति से गंगासागर की ओर दौड़ी जा रही थी पर मेरा मन अब भी दीपक द्वारा प्रस्तुत तर्कों और मीमांसा की मीमांसा में उलझा था। मैं सोच रही थी कि सत्ता और पद के मद में क्या जीवन–मूल्यों की परिभाषाएँ इतनी बदल जाती है ?' [34]

लेखिका द्वारा वर्तमान समय में सत्ता और पद के मद में जीवन–मूल्यों की बदलती परिभाषाओं के प्रति चिन्तन व्यक्त हुआ है। जिसे 'बदलती परिभाषाएँ' कहानी के माध्यम से व्यक्त कर आध्यात्मिक एवं दर्शनपरक जीवन–मूल्यों की प्रतिष्ठापना की गई है। लेखिका सोच रही है कि हर गलत बात का विरोध करने वाला दीपक अब आकण्ठ भ्रष्टाचार में डूब गया है। उनका मन दीपक द्वारा प्रस्तुत तर्कों और मीमांसा की मीमांसा में उलझा था।

'यह सब सुनकर अब हमारा मन भी मेले में न लगा अतः हम भी लौट पड़े। मार्ग में सभी मौन होकर अपने–अपने ढ़ंग से सुनंदा से जुड़ी घटनाओं की मीमांसा करते चल रहे थे। मैं भी सोच रही थी कि यह सब कर सुनंदा ने किससे बदला लिया ? राजरानी चौधरी से ? पिता के भय से ? शिशिर से ? परंपरा से ? या स्वयं से ? मन ही मन मैंने ईश्वर से सुनंदा को सद्बुद्धि देने की प्रार्थना की।' [35]

प्रस्तुत कहानी 'बदला' में आध्यात्मिक एवं दर्शनपरक जीवन–मूल्यों की प्रतिष्ठापना हुई है। सुनंदा द्वारा लिया गया बदला यह सोचने को मज़बूर करता है कि उसने अपना तन–मन–धन सब गवाँकर आखिर बदला किससे लिया है ? मेले में सुनंदा की छोटी बहन से उसकी स्थिति जानकर सभी अपने–अपने ढ़ंग से सुनंदा से जुड़ी घटनाओं की मीमांसा करते है और ईश्वर से प्रार्थना करते है कि वह उसे सद्‌बुद्धि प्रदान करें।

2.2.3 बालगीत के सन्दर्भ में –

बालगीत संग्रह 'टिम टिम तारे' में 'तीन की महिमा' तथा 'वह कौन' आदि बाल गीतों में आध्यात्मिक और दर्शनपरक जीवन मूल्यों की छटा बिखरी हुई है।

'तीन शक्तियाँ जग में देख
ब्रह्मा, विष्णु और महेश।' [36]

इस बालगीत के माध्यम से लेखिका बालकों को संसार की तीन शक्तियों, तीन लोक, तीन ऋतुओं, तीन गुरु, तीन तरह के प्राणियों, तीन अवस्थाओं और तीन रंगों से बने तिरंगे आदि का महत्व बताना चाहती हैं।

'माँ से मैंने पूछा–
कलियों को फूल बनाता कौन ?
फूलों में रंग सजाता कौन ?
पतझड़ में सूखे पेड़ों पर,
फिर कोंपल नए खिलाता कौन ?

माँ बोली –

वह ही सबका निर्माता हैं।
हम सबका भाग्य विधाता है।
है वही सभी का पिता और
वह ही हम सबकी माता है।

फिर बोली –

आओ उसको हम करें नमन।
जिसने हम सबको दिया जनम।
वह परम् पिता परमेश्वर है।
है सत्य वही, वह ईश्वर है।' [37]

2.2.4 बालोपयोगी यात्रावृतांत के सन्दर्भ में –

लेखिका द्वारा बालोपयोगी यात्रावृतांत, 'द्वार से धाम तक' तथा 'मेरी यूरोप यात्रा'

में आध्यात्मिक और दर्शनपरक जीवन–मूल्यों की प्रतिष्ठापना की गई है। 'द्वार से धाम तक' यात्रावृतांत के माध्यम से बालकों को हिन्दू धर्म के तथा देश के प्रसिद्ध 'चार धाम' तीर्थ स्थलों की जानकारी दी गई हैं। साथ ही यहाँ लोग क्यों जाते हैं ? इससे क्या–क्या लाभ प्राप्त होते हैं ? अर्थात् क्या, क्यूँ, कैसे आदि प्रश्नों के उत्तर ढूँढ़ने की जिज्ञासा बालकों में विकसित करने का पूर्ण प्रयास लेखिका ने बहुत ही अनूठे ढ़ंग से किया हैं। देखिए –

'जानते हो! हमारे देश भर में फैले हैं अनेक बड़े–बड़े प्रसिद्ध मन्दिर। इन मन्दिरों में जाकर दर्शन करने से हमारे मन को शांति व आनन्द प्राप्त होता है। संभवतः इसीलिए हमारे देश के प्रसिद्ध 'चार धाम' भारत के चारों कोनों में स्थित है– भारत के पूर्व में स्थित हैं– 'जगन्नाथपुरी धाम', यह उड़ीसा प्रान्त में स्थित हैं। पश्चिम में है 'द्वारिका धाम' जो गुजरात में स्थित है। देश के उत्तर में स्थित है– 'बद्रीनाथ धाम', यह उत्तराखण्ड प्रान्त में स्थित है तथा देश के दक्षिणी भाग तमिलनाडु में स्थित है 'रामेश्वरम् धाम'। ये चारों मन्दिर 'भारतवर्ष के चार धाम' के नाम से जाने जाते है। इन चार धामों की यात्रा करते समय यात्री प्रभु दर्शन के साथ–साथ मन्दिरों की सुन्दरता, चित्रकारी व मूर्तिकारी को भी देख प्रसन्नता से भर उठता है।' [38]

लेखिका द्वारा 'द्वार से धाम तक' यात्रा वृत्तांत के माध्यम से उत्तराखण्ड के चार धाम यमुनोत्री, गंगोत्री, केदारनाथ तथा बद्रीनाथ नामक तीर्थ स्थलों की जानकारी देते हुए उन्हें इनकी यात्राओं हेतु प्रेरणा प्रदान कर इनसे होने वाले लाभ के बारे में बताते हुए, बालकों के मन में आध्यात्मिक और दर्शनपरक जीवन–मूल्यों को विकसित करने का प्रयास किया है।

'राजा भागीरथ की तपस्या के फलस्वरूप स्वर्ग से उतरी गंगा जी भगवान शिव के जटाजूट में समा जाती हैं और पुनः राजा भागीरथ की प्रार्थना पर शिव जी के जटाजूट से निकल, धार के रूप में गोमुख से गिरती हैं और तब भागीरथी नामक नदी के रूप में संसार को दर्शन देती हैं माँ गंगा। गंगोत्री मंदिर समुद्र से 3140 मी. ऊपर स्थ्ति है। चारों ओर ऊँचे पहाड़ों की चोटियों पर जमी बर्फ़ और उन पर बैठे–टहलते बादलों को नंगी आँखों से देखना यात्रा को सफल बना देता है।' [39]

इसी प्रकार बालोपयोगी यात्रावृतांत 'मेरी यूरोप यात्रा' में भी आध्यात्मिक और दर्शनपरक जीवन–मूल्यों की छटा देखने को मिल जाती है। देखिए –

'मैडम तुसाद के म्यूजियम से बाहर आकर डैम स्क्वायर में रॉयल पैलेस के सामने हम कुछ देर यूँ ही खड़े रहे और स्वयं को यह विश्वास दिलाते रहे कि वे सब मोम के

पुतले थे न कि वास्तविक चरित्र। लगभग दो सौ मीटर की दूरी पर दिख रहे एम्स्टर्डम सेंट्रल स्टेशन की ओर हमने क़दम बढ़ाए ही थे कि 'हरे कृष्णा–हरे रामा' की मधुर ध्वनि ने हमारे पैरों में ब्रेक लगा दिए। धुर यूरोप में इस्कॉन मंदिरों व आश्रमों से जुड़े भक्तों की मंडली ढोलक व मंजीरों के साथ तन्मयता से कीर्तन करती चली आ रही थी। धोती–कुर्ता पहने पुरुष भक्तों व साड़ी में सजी महिला भक्तिनों को देख आँखों में भारत सजीव हो उठा।' [40]

यूरोप यात्रा के दौरान लेखिका नीदरलैण्ड की राजधानी व प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर एम्स्टर्डम के भ्रमण के वृतांत यहाँ बयां कर रही है। भारत में ही नहीं देश के हर कोने में ईश्वर भक्ति की गूँज आध्यात्मिक और दर्शनपरक जीवन–मूल्यों को जीवन्तता प्रदान करते हैं।

'भारत के मन्दिरों की भाँति यहाँ भी पुष्पदान, मंगल आरती, सुन्दर आरती, धूप आरती, राजभोग आरती, संध्या आरती व शृंगार आरती की जाती है और बाल्य भोग, उपालय भोग, राज भोग, वैकालिका भोग, शीतला भोग तथा रात्रिकालीन भोग लगाए जाते हैं। मुख्य मन्दिर से सटे विशाल आगार में चतुर्भुज विष्णु की शयन मुद्रा में लगी विशाल मूर्ति के अलावा श्रीमद्भागवत आधारित कथाओं के अनेक चित्र लगे है; विशेष बात यह है कि ये सभी चित्र व मूर्तियाँ विदेशी चित्रकारों व मूर्तिकारों द्वारा बनाई गई हैं।' [41]

लेखिका द्वारा भारत के मन्दिरों की तुलना इस्कॉन मन्दिर से करते हुए यहाँ के भोग तथा आरती का वर्णन किया है। भगवान विष्णु की शयन मुद्रा में लगी विशाल मूर्ति के अलावा, श्रीमद्भागवत आधारित कथाओं के अनेक चित्रों का वर्णन किया गया है जो कि विदेशी चित्रकारों व मूर्तिकारों द्वारा बनाए गये हैं।

अतः आध्यात्मिकता का स्वर पूरे संसार में गुंजायमान है। भारत में जो आध्यात्मिक और दर्शनपरक, जीवन–मूल्य है, वह विश्व में भी देखने को मिल जाते हैं।

'पूजा का समय होते ही मंदिर के पट खोल दिए गए और भीतर आने पर भक्तों व पर्यटकों का स्वागत आचार्या रूपमंजरी ने किया। वे गोपिकाएँ भी भीतर आ गई, पूरे विधि–विधान से पूजा सम्पन्न होने पर आचार्या रूपमंजरी ने क्रमशः डच व अंग्रेजी में श्रीकृष्ण की महत्ता समझाई फिर संसार के सभी कष्टों को हरने वाले मंत्र 'हरे कृष्णा हरे रामा' का सस्वर गायन किया भी और सभी से कराया भी।' [42]

इस्कॉन मन्दिर का वर्णन लेखिका द्वारा किया गया है। आचार्या रूपमंजरी ने डच व अंग्रेजी में श्रीकृष्ण की महत्ता समझाते हुए संसार के समस्त कष्टों को हरने वाले मंत्र 'हरे कृष्णा हरे रामा' का सस्वर गायन कराया ।

इस प्रकार मेरी यूरोप यात्रा, बालोपयोगी यात्रा वृतांत में आध्यात्मिक और दर्शनपरक जीवन–मूल्यों को उकेरा गया है ।

2.2.5 बालकथा संग्रह के संदर्भ में –

बालकथा संग्रह **'घरौंदा'** की कहानी 'देश की नाक देशनोक' में आध्यात्मिक और दर्शनपरक जीवन–मूल्यों के दर्शन हो जाते है।

'सभी ने मंदिर के मुख्य भाग में जाकर **करणी माता** जी की मूर्ति के दर्शन किए और प्रसाद चढ़ाया। माँ की मूर्ति, पुजारी, प्रसाद, दर्शनार्थी सभी के इर्द–गिर्द चूहे ही चूहे थे पर आश्चर्य की बात यह थी कि वहाँ चूहों व उनके मल–मूत्र के कारण किसी भी तरह की दुर्गंध नहीं थी। प्रांगण में बने दो अन्य छोटे–छोटे मंदिरों के दर्शन कर विभोर फिर से भोग वाले कड़ाहे के पास रखे दूध के बर्तन के निकट आ खड़ा हुआ। दादी ने अपने साथ लाया हुआ दूध, मंदिर द्वारा काबाओं (चूहों) के लिए डाले गए दूध मे डाल दिया।'[43]

लेखिका द्वारा करणी माता की महिमा का बख़ान कर आध्यात्मिक और दर्शनपरक जीवन–मूल्यों की प्रतिष्ठापना की गई है।

2.2.6 निबंध संग्रह के संदर्भ में –

साहित्य की अन्य विधाओं में रचनाकर्म करने के उपरान्त भी कुछ अतृप्ति का भाव लेखिका को लगा होगा इसी की तृप्ति मन खोलकर वह निबंध में कर सकती थी, इसलिए उन्होंने इस विधा पर भी अपनी लेखनी चलाई। निबंध संग्रह 'अक्षर से 'अक्षर' तक' के निबंधों में आध्यात्मिक और दर्शनपरक जीवन–मूल्यों की झलक बख़ूबी देखी जा सकती है ।

'स्वयं की नश्वरता और 'अक्षर' की अनश्वरता से पूर्ण परिचित होकर ज्ञानी, अक्षरों के मेल से बनी भाषा का प्रयोग कर बनाई गई स्तुति द्वारा उस 'अक्षर' से तादात्म्य स्थापित करने का प्रयास करता है। उससे तादात्म्य स्थापित करने के अपने सतत् प्रयास में सफल होकर वह स्वयं 'अक्षरमय' हो जाता है। यही है 'अक्षर' और अक्षर का वह गूढ़ संबंध जिसे जान व समझ कर अपने प्रयासों से क्षर मानव 'अक्षर' में समाहित हो जाता है।'[44]

लेखिका ने 'अक्षर' को परम ब्रह्म स्वरूप मानते हुए उससे तादात्म्य स्थापित करने का प्रयास किया है। जब मानव स्वयं की नश्वरता और 'अक्षर' की अनश्वरता को समझ लेगा तो ज्ञानी होकर अक्षरों के मेल से बनी भाषा का प्रयोग कर बनाई गई स्तुति द्वारा उस 'अक्षर' अर्थात ईश्वर से तादात्म्य स्थापित कर स्वयं अक्षरमय हो जायेगा। निबंध में आध्यात्मिक और दर्शनपरक जीवन–मूल्यों की स्थापना हुई हैं।

'शुद्ध मन से प्रतिपल ब्रह्म का चिंतन करने वाले साधक को बह्म का साक्षात्कार अवश्य होता है। सहज योग में आँखें नहीं मूँदनी पड़ती, मौन व्रत नहीं लेना पड़ता, संसार

को नहीं त्यागना पड़ता और न ही नित्य कर्म छोड़ने पड़ते हैं। सभी सांसारिक कर्म करते हुए भी सहज समाधि ली जा सकती है और यही कर्मयोग भी है।' [45]

'युगपुरुष कबीर' निबंध में कबीर ने शुद्ध मन से कर्म करने पर बल दिया है। उनके अनुसार लोकहित में निष्काम भाव से कर्म करना पड़ता है यही ब्रह्म की सच्ची सेवा है। सभी सांसारिक कर्म करते हुए भी सहज समाधि ली जा सकती है और यही कर्मयोग भी है। कबीर निष्काम कर्म करने की प्रेरणा देते है, जो बिना फल की इच्छा के किया जाए।

'ब्रह्म जो निराकार, अनंत, अखण्ड़, व अज्ञात है, उसके विषय मे जानने की जिज्ञासा और उससे मिलने की उत्कंठा समस्त जीवात्माओं की होती है। साहित्य के क्षेत्र में जीवात्मा और परमात्मा के इसी संबंध की अभिव्यक्ति रहस्यवाद के नाम से जानी जाती है। इस भाव के अन्तर्गत साधिका आत्मा निराकार ब्रह्म को, प्रकृति का मानवीकरण कर, उसमें ढूँढती, अनुभव करती और उससे मिलने की आतुरता रखती है।' [46]

छायावाद की प्रमुख लेखिका महादेवी वर्मा सम्पूर्ण प्राकृतिक पदार्थों में ईश्वर को देखते हुए उससे मिलन की आकांक्षा रखती है। अलौकिक प्रेम की अनन्य साधिका महादेवी वर्मा का सम्पूर्ण साहित्य रहस्यवाद से ओतप्रोत है। इसीलिए निबंध में आध्यात्मिक और दर्शनपरक जीवन–मूल्यों की प्रतिष्ठापना हुई है।

2.3 सांस्कृतिक जीवन मूल्यः आस्था के स्वर –

डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य मे सांस्कृतिक जीवन–मूल्य और आस्था के स्वर सभी विधाओं में मुखरित हुए है।

2.3.1 कविता के संदर्भ में –

लेखिका के प्रथम कविता संग्रह 'अक्षरों की पहली भोर' में निम्नांकित कविताओं में इन मूल्यों की झलक देखने को मिल जाती है।

'मुक्ता से झलमल तुषारकण
सज्जित भूतल का पोर–पोर
नर्तन रत हैं किरण किन्नरियाँ
विद्युल्लेखा सी चिलक ओढ़नी
झाँक रहीं कर पल्लव कोर।'[47]

'भोर' कविता की इन पंक्तियों में लेखिका ने भोर के समय के प्राकृतिक सौन्दर्य का मनोहारी वर्णन किया है। प्राकृतिक सौन्दर्य के साथ–साथ मानवीकरण की छटा चहुँ ओर बिखरी हुई है। अलंकार, दृश्यबिम्ब एवं प्रतीकों के माध्यम से सांस्कृतिक जीवन–मूल्यों की प्रतिष्ठा और आस्था के स्वरों की स्वर लहरी सुनाई दे रही है ।

'तिरे बैलों की घंटियों
शंख और अज़ान के स्वर
गृहिणी ने ओज ले,
मॉड दी अल्पना द्वार पर
'घर' उद्‌भासित हुआ।' [48]

सांस्कृतिक जीवन–मूल्य तथा आस्था के स्वरों से ओत–प्रोत पंक्तियों में सूर्योदय के समय का वर्णन कर हमारी भारतीय संस्कृति की झाँकी प्रस्तुत की गई है ।

'मौन के स्वर' कविता संग्रह मे भी सांस्कृतिक जीवन–मूल्यों तथा आस्था के स्वरों की अनुगूँज सुनाई देती है। 'अनुचिंतन', 'आलोड़न' और 'निसर्ग' के शीर्षकों के त्रिकोण में बँधी यह कविताएँ इन मूल्यों की प्रतिष्ठा में सहायक सिद्ध हुई हैं।

'समय आने पर अपने नव मुकुलों से
संस्कारी, परिश्रमी और सुविज्ञ
होने की, अपेक्षा करती है
और चलता रहता है
पीढ़ी दर पीढ़ी यह चक्र।' [49]

वर्तमान में हमारी संस्कृति, संस्कारों में जो परिवर्तन हो रहा है, लेखिका उन्हीं नई पौध से आशा करती है कि समय आने पर यही नई पौध संस्कृति, परिश्रम, और सुविज्ञ होने की अपेक्षा आने वाली पीढ़ी से करती है और संसार में यह क्रम पीढ़ी दर पीढ़ी चलता रहता है ताकि अपने सांस्कृतिक जीवन–मूल्य और आस्था के स्वर बचे रहे।

'नूतन स्वर्णिम वस्त्र पहनकर
अभिनन्दन को थाल सजाती।
रवि–पथ आता निकट देखकर
खग कलरव के वाद्य बजाती।' [50]

लेखिका ने प्राकृतिक सौन्दर्य के वर्णन में अभिनन्दन का बड़ा ही मनोहारी दृश्य उपस्थित करते हुए, हमारे सांस्कृतिक जीवन–मूल्यों को जीवन्तता प्रदान की है। लेखिका ने 'मुक्ताकाश में' कविता संग्रह की कविताओं में कई अनुत्तरित प्रश्नों का हल ढूँढ़ते हुए सांस्कृतिक जीवन–मूल्यों और आस्था के स्वरों को वाणी देने का सफल प्रयास किया है। खण्ड–1 'स्वगत' और खण्ड–2 'भवगत' की कविताओं में इन मूल्यों को देखा जा सकता है।

'अनवरत दौड़ते

जलद योद्धाओं के

अश्वों के खुरों से उड़ी

धूल सी झरती झीसी

तेज़ सीटियों की

तुरही बजाता पवन

छिड़ा है प्रकृति और

मानव के बीच युद्ध।' [51]

लोभवश मानव ने अपने ही हाथों अपना अहित कर लिया है। प्रकृति से छेड़छाड़ कर मानव ने अपना वर्तमान ही नहीं भविष्य को भी संकट में डाल दिया है। अपने सांस्कृतिक जीवन–मूल्यों एवं आस्था को छोड़ कर मानव अच्छा नहीं कर रहा, उसे इसका परिणाम भोगना ही पड़ेगा। लेखिका इन मूल्यों को बचाये रखने हेतु मानव को सचेत करने का प्रयास कर रही हैं।

'आभारी हूँ इन फूलों की

निज सुगन्ध से मन पुलकाया

आभारी मैं इन शूलों की

जीवन में विश्वास जगाया

भूली–बिसरी यादों की हूँ।

मेरा अन्तरतम सरमाया।' [52]

कृतज्ञता प्रकट करना हमारी संस्कृति है। 'आभार' कविता में हमारे सांस्कृतिक जीवन–मूल्यः आस्था के स्वरों की प्रतिष्ठापना हुई है ।

'स्पर्धा में

बिसरा रही

सब कुछ अपना री

न बन सकी पुरुष

न रह सकी नारी।' 53

नारी पुरुष बनने की प्रतिस्पर्धा में अपने देवीय स्वरूप को भुला बैठी हैं। लेखिका ने कविता के माध्यम से सांस्कृतिक चेतना जाग्रत करने का प्रयास किया हैं।

'शब्द की अनुगूँज' कविता संग्रह की कविताएँ 'सुन्दर की परिभाषा' 'बनाए रखो' 'मेह और नेह', 'यही बच्चे', 'पद की गरिमा', 'आता है सावन', 'रसवंती निशा', 'वसंत' तथा

'ओ ऋतुराज' आदि मे सांस्कृतिक जीवन–मूल्यों एवं आस्था के स्वरों की अनुगूँज सुनाई देती है।

'मानव है मानव संग मानव सा प्रेम करें
परिस्थिति हो कैसी भी पर्वत सा धीर धरें
स्थान और काल देख नियम औ धर्म करें
दण्ड धरें हाथ में पर सेवक सा कर्म करें।' [54]

प्रस्तुत पंक्तियों में मानवीय गुणों का बखान कर हमारे सांस्कृतिक जीवन–मूल्यों, मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठापना की गई हैं।

'दिगम्बर विटपों ने पहन लिए फिर वस्त्र नए
सज गए द्वार–द्वार, पल्लवों के बंदनवार
मुक्त कर दी बंदी गंध कलियों ने खोल द्वार
पकड़ हाथ बंदी का, ले उड़ी फागुनी बयार।' [55]

बसंत को ऋतुओं का राजा माना जाता है। लेखिका ने 'ओ ऋतुराज!' कविता के माध्यम से प्रकृति का मानवीकरण रूप में वर्णन कर हमारे सांस्कृतिक जीवन मूल्यों एवं आस्था के स्वरों से सृष्टि को गुंजायमान किया है।

2.3.2 कहानी के सन्दर्भ में –

डॉ० उषा किरण सोनी के साहित्य की सभी विधाओं में सांस्कृतिक जीवन–मूल्य तथा आस्था के स्वर सुनाई पड़ते हैं। इनका प्रथम कहानी संग्रह 'काम्या' की कहानियों में इन मूल्यों की झलक देखी जा सकती हैं।

'माँ जब मुझे उन लोगों के सामने लाई तो मेरी आँखे उठ ही नहीं रही थी। कब उन्होंने अँगूठी पहनाई याद नहीं पर वह स्पर्श मेरे रोम–रोम में बिजली दौड़ाता चला गया था। मुझ पर एक नशा–सा छा गया था और उसी में उन के माता–पिता के पैर छू कर मैं भीतर चली गई थी।' [56]

लेखिका ने 'प्रश्न' कहानी में हमारे सांस्कृतिक जीवन–मूल्यों को बड़े खूबसूरत ढ़ंग से उकेरा है। हमारी संस्कृति के गुण है होने वाले पति से लज्जा, शर्म, सकुचाहट होना।

''नमस्ते मेरा नाम परेश है, मैंने मनोविज्ञान में एम.ए.किया है और आज ही इस कॉलेज में प्रवक्ता का पद सँभाला है।'' दो जुड़े हुए हाथों के पीछे से आवाज़ आई।' [57]

भारतीय संस्कृति में हाथ जोड़कर अभिवादन करने की परम्परा है। 'चाँदनी के फूल' कहानी में परेश अपना परिचय हाथ जोड़कर नमस्ते के साथ देता है। प्रस्तुत गद्यांश में सांस्कृतिक जीवन–मूल्यों की झलक दिखाई देती है।

'शुचिता सुशांत के थके रूखे चेहरे, जो समय व आयु की मार खा–खा कर बुढ़ापे की कोर तक आ पहुँचा था, को देख मन ही मन दुःखी हो रही थी। कभी इसी चेहरे को देख वह फूल सी खिल उठती थी। मेरा, सुशांत के परस्त्रीगामी होने के प्रतिउत्तर में क्या उसे यों अपमानित किया क्या, वही कार्य उसने स्वयं नहीं किया ? क्या यह ठीक था ? क्या इसका कोई अन्य विकल्प न था ? क्या धैर्य से समझा बुझा कर वह सुशांत को सही मार्ग पर नहीं ला सकती थी ? शायद मैं ऐसा कर सकती थी। काश! मैंने ऐसा किया होता।' [58]

भारतीय संस्कृति में चरित्र को महत्वपूर्ण माना जाता है। स्त्री की तो वह सबसे बड़ी पूँजी है, अगर चरित्र नहीं तो कुछ भी नहीं। पुरुष प्रधान समाज में पुरुष के चरित्र पर इतनी अँगुली नहीं उठती, जितनी स्त्री के चरित्रहीन आचरण पर और स्त्री का भी उसके जैसा चरित्रहीन हो जाना शोभा नही देता। पुरुष को सही मार्ग पर लाने का और भी विकल्प हो सकता है। पुत्री के विधवा हो जाने पर शुचिता की आत्मग्लानि यहाँ व्यंजित हुई है। लेखिका कहानी के माध्यम से हमारे सांस्कृतिक जीवन–मूल्यों की रक्षा के प्रति जागरूकता लाना चाहती है।

दूसरे कहानी संग्रह 'नेपथ्य का सच' में भी सांस्कृतिक जीवन–मूल्य तथा आस्था के स्वरों की अनुगूँज सुनाई देती है। जो निम्न गद्यांश में वर्णित है।

'वह ऊँचा और बहुत ऊँचा उड़ने और गगनचुंबी इमारतों पर बैठ दुनिया देखने को लालायित रहता। धीरे–धीरे उसके पंखों में शक्ति आने लगी। शैशव विदा लेने लगा और आँखों में रस उतरने लगा। चिड़ा–चिड़ी उसके लिए चुन–चुन कर स्वस्थ व पौष्टिक दाना लाते व उसे नए–नए खेतों का पता बताते। अब परिंदा की उड़ान अट्टालिकाओं की ऊँचाई तक पहुँचने में सफल होने लगी।' [59]

लेखिका द्वारा 'परिंदा' कहानी में चिड़ा–चिड़ी द्वारा परिंदा की देख–रेख, लालन–पालन करना तथा परिंदा द्वारा प्राकृतिक दृश्यों को देख मोहित होना आदि हमारे सांस्कृतिक जीवन–मूल्यों को प्रकट करता है। वर्तमान दौर में आ रहे सांस्कृतिक–सामाजिक जीवन–मूल्यों में परिवर्तन की ओर ध्यानाकर्षित करने का प्रयास किया गया है। आज संतान सक्षम होते ही माता–पिता का तिरस्कार करने लग जाती है।

अपने जन्मदाता की उन्हें जरूरत नहीं होती। मूल्यों के ह्रास के प्रति लेखिका की गहरी संवेदना प्रकट हुई है।

'अब एक आज्ञाकारी बच्चे की तरह, बूढ़ें कामताप्रसाद जी भी उठकर गए और अपनी पेंशन के खाते की पासबुक लाकर निपुण के हाथों में रख, भीगी आँखों व मुस्कुराते

होंठों से मौन क्षमा याचना करते हुए पुत्र के हाथों पर आश्वासन की थपकियाँ देने लगे, मानों सुबह का भूला शाम को घर आ गया हो।' [60]

दुःख–सुख एवं मुसीबत में सहयोग करना हमारे सांस्कृतिक जीवन–मूल्य है। माता–पिता का फ़र्ज होता है कि वह अपने बच्चों को हर मुसीबत से बचाये रखें परन्तु स्वार्थ व धन लोलुपता वश अगर वह ऐसा नहीं कर पाते तो परिणाम कुछ भी हो सकता है। निपुण बच्चों की पढ़ाई के खर्च एवं बेटी की सगाई के खर्च से तंग आकर चिंता में घुलने लगता है और एक दिन रक्तचाप बढ़ जाने से चक्कर खाकर गिर जाता है। बूढ़े कामताप्रसाद एवं निपुण की माँ अपनी स्वार्थपरता पर लज्जित होते है, तथा अपनी पेंशन के खाते की पासबुक निपुण को थमा देते है।

'भारत–पाक विभाजन के समय हम भारत आए थे। उस क्षेत्र में यह रस्म है कि विवाह के समय सालियाँ दूल्हे से मज़ाक करती व छेड़ती हैं तब दूल्हा अपनी सभी सालियों को कुछ न कुछ (साधारणतया चाँदी के छल्ले) उपहार में देता है। छल्ला या अन्य उपहार पाकर वे उसे सताना छोड़ देती हैं, यही रस्म किलीचड़ी कहलाती है। मैं इकलौती साली हूँ न इसलिए मुकेश जीजाजी ने मुझे किलीचड़ी में सोने की अँगूठी दी थी।' [61]

हमारे देश में कई सामाजिक सांस्कृतिक परम्पराएँ रीति–रिवाज़ प्रचलित है। किलीचड़ी रस्म भी हमारे सांस्कृतिक जीवन–मूल्यों की ओर संकेत करती है।

'तृष्णा तू न गई....' कहानी संग्रह की कहानियों में भी लेखिका ने सांस्कृतिक जीवन–मूल्यों तथा आस्था के स्वरों का रंग भरने का प्रयास किया है। देखिए–

'रजत व विशाल की पत्नी के लगातार इसरार करने पर भी भूमिका ने गिलास नहीं थामा न ही पीना स्वीकार किया। इसे रजत ने अपनी अवमानना समझा। पार्टी में भूमिका से हाथ में मदिरा का गिलास थामें, खड़े उसके सास व ससुर ने भी सबका साथ देने के लिए थोड़ी सी मदिरा लेने को कहा इससे रजत की भी बात रह जाएगी पर भूमिका ने स्पष्ट शब्दों में विरोध करते हुए थोड़ा ऊँचें स्वर में कहा, ''यह मेरे संस्कारों व सिद्धान्तों के विरूद्ध है मैं किसी भी कीमत पर शराब नहीं पिऊँगी।'' [62]

पाश्चत्य सभ्यता एवं संस्कृति ने हमारे भारतीय मूल्यों को क्षति पहुँचाई है। शराब पीना हमारे सांस्कृतिक मूल्यों के विरूद्ध है ख़ासकर महिलाओं को। लेखिका द्वारा कहानी के माध्यम से हमारे सांस्कृतिक जीवन–मूल्यों की प्रतिष्ठापना की गई है।

'शारदा के पिता ने अपनी बेटियों से कहा कि जब मैं मूर्ति गढ़ूँ तब तुम मुझे उपन्यास पढ़कर सुनाया करो। उन्होंने सोचा, 'बेटियाँ श्रेष्ठ साहित्य पढ़ेगी, तो उनमें

सुविचार व संस्कार जन्म लेंगे, दूसरे वे मेरी आँखों के सामने रहेंगी साथ ही मेरा शौक भी पूरा हो जाएगा।' [63]

बहुत ही समझदारी से लेखिका ने सांस्कृतिक जीवन–मूल्यों की प्रतिष्ठापना की हैं। वह चाहती है कि अच्छा साहित्य पढ़कर सभी संस्कारवान बने। यहाँ लेखिका का इशारा पढ़ाई अर्थात सत् साहित्य का पठन करने से है ताकि संस्कार एवं सुविचारों का जन्म हो।

'नये सूरज की तलाश' कहानी संग्रह की कहानियों में भी सांस्कृतिक जीवन–मूल्य और आस्था के स्वर स्पष्ट सुनाई दे रहे है। निम्नांकित पंक्तियों में इन्हें देखा जा सकता है।

'नीहारिका प्रतिदिन षोडसी को गृहस्थी के काम से, घर से बाहर आते–जाते देखती। उसे उसके वस्त्र व रहन–सहन अज़ीब लगते। वह विवाहित महिलाओं के किसी भी चिह्न यथा सिंदूर, चूड़ी, बिंदी व मंगलसूत्र आदि का बिल्कुल प्रयोग न करती यहाँ तक कि उसे भारतीय वेशभूषा धारण करना भी पंसद न था। वह पति दिपंकर के साथ अक्सर बाहर जाती तब भी इन्ही जींस व टीशर्ट या कोट–पैंट आदि पाश्चात्य शैली के वस्त्र ही धारण करती। पैंसठ वर्षीया नंदिनी कुमारन व बासठ वर्षीया नीहारिका को पहले तो उसे ऐसे देखना न सुहाता फिर धीरे–धीरे आदत पड़ गई; यूँ भी सबको अपनी तरह अपनी इच्छा से जीने व रहने का अधिकार है।' [64]

भारतीय संस्कृति में विवाहित स्त्री को सुहाग चिह्नों को धारण करना होता है तथा पहनावा भी भारतीय संस्कृति के अनुरूप ही पहनना होता है, परन्तु समाज की एकांकी परिवार व्यवस्था और पाश्चात्य जीवन–शैली ने हमारे सांस्कृतिक मूल्यों को नष्ट कर दिया है। लेखिका ने 'षोडसी' कहानी के माध्यम से हमारे सांस्कृतिक जीवन–मूल्यों की विशेषताओं पर प्रकाश डाला है जो कि प्रशंसनीय व वंदनीय भी है।

'ईसुरी अब अपनी गुरु को माता जी कहने लगी थी। सरस्वती बाई भी उससे मातृवत स्नेह करतीं पर यौवन की ओर बढ़ रही ईसुरी को अपने निकट बैठने वाले बीस वर्षीय तबला वादक चन्द्रभान की देह का परिमल भी आकर्षित करता। 'ईसुरी के निखरते ठुमरी गायन और बढ़ते आत्मविश्वास को देख सरस्वती बाई को अपना भविष्य सुरक्षित महसूस होता। दसवीं की छात्रा व जानी–मानी उभरती गायिका ईसुरी अब सत्रह वर्ष की हो चली थी। उन्होंने समय रहते, मातृत्व के वशीभूत हो, अगले वर्ष तक उसका विवाह कर देने का मन बनाया।' [65]

परम्परा व संस्कृति को जिंदा रखने की चाह ने सरस्वती द्वारा ईसुरी को ठुमरी गायन की शिक्षा दी। यौवन की ओर बढ़ रही ईसुरी का चन्द्रभान की ओर आकर्षित होना

स्वाभाविक था। लेखिका द्वारा कहानी के माध्यम से सांस्कृतिक जीवन–मूल्यों को भविष्य के लिए सुरक्षित रखने की प्रेरणा प्रदान की गई है।

2.3.3 बालगीत के संदर्भ में –

'टिम टिम तारे' बालगीत संग्रह में सांस्कृतिक जीवन–मूल्यः आस्था के स्वर गुंजायमान है।

'जो भी सच्ची राह पे चलता
ध्रुव सा हमसे आकर मिलता
अटल सदा वह हम संग रहता
अंधकार में राह दिखाता
तुम भी सच्ची राह पे चलना
नभ पर आकर हमसे मिलना।' [66]

सांस्कृतिक जीवन–मूल्यों व नैतिकता का पाठ पढ़ाते हुए 'टिम टिम तारे' बालगीत बालकों को ध्रुव सा अटल तथा सबसे मिलकर रहने और अंधकार में प्रकाश दिखाने, सच्चाई के मार्ग पर चलने की प्रेरणा प्रदान करता है ।

'गुरू गुणों की खान है, तुम सब लो यह जान
सत्यं, शिवं सुंदरम् से करवाते पहचान
करवाते पहचान, दूर अज्ञान हो जाता
कर्म–अकर्म के अंतर का, हमें ज्ञान हो जाता
बिन गुरु है अँधियारा जीवन, बात मेरी लो मान
जीवन सफल बनाता ज्ञानी गुरु गुणों की खान।'[67]

भारतीय संस्कृति में गुरु का महत्वपूर्ण स्थान है। गुरु ही हमें सत्यं, शिवम्, सुन्दरम् की पहचान करवाता है और अज्ञान को दूर करता है। ज्ञानी गुरु गुणों की खान है। बालकों में 'गुरु' बालगीत द्वारा गुरु के प्रति सम्मान भाव जाग्रत कर सांस्कृतिक जीवन मूल्यों तथा आस्था के स्वरों की प्रतिष्ठापना की गई है।

2.3.4 बालोपयोगी यात्रावृतांत के सदर्भ में –

बालोपयोगी यात्रावृतांत 'द्वार से धाम तक' तथा 'मेरी यूरोप यात्रा' में सांस्कृतिक जीवन मूल्यों तथा आस्था के स्वरों को प्रतिष्ठा प्राप्त हुई है। देखिए –

'यमुना का नीला जल पिघली हुई बर्फ़ के समान ठंडा था। पत्थरों से टकराते नीलाभ जल पर डूबते सूर्य की रक्तिम किरणें अनोखी रंग–बिरंगी छटा बिखेर रहीं थीं जिसे

निहारते हमें समय का ध्यान ही न रहा कि बूँदों का खिलवाड़ प्रारम्भ हो गया तब हम चैतन्य हो, आश्रय की खोज में होटल की ओर दौड़े।' 68

प्राकृतिक दृश्यों में हमारी सांस्कृतिक विरासत की झलकियाँ देखने को मिलती है । लेखिका द्वारा प्राकृतिक सौन्दर्य का वर्णन कर, युमनोत्री यात्रा का वृतांत बालकों के ज्ञानार्जन हेतु प्रेरणापुंज के रूप में प्रस्तुत कर सांस्कृतिक जीवन–मूल्य तथा आस्था का स्वर जाग्रत करने का प्रयास किया है।

'कहीं अमलतास जैसा पेड़ फूलों से लदा झूम रहा था तो कहीं सूखे पेड़ पर लताओं ने डेरा जमा रखा था। अब खड़ी चढाई प्रारम्भ हो गई थी जिससे सौन्दर्यानंद का स्थान अब भय लेने लगा। मात्र छह साढ़े छह फुट चौड़ी सड़क जिसके एक ओर गहरी खाई और दूसरी ओर वनों तथा निरन्तर गिरते पतले–पतले झरनों से भरे पहाड़। इस पतली सड़क पर खच्चरों पर चढ़ें यात्री चार मज़दूरों द्वारा ढ़ोई जा रही पालकी पर चढ़े यात्री, पिट्ठुओं की पीठ पर लदे यात्री और पैदल यात्री; ये सभी चढ़ भी रहे थे और उतर भी रहे थे। भीड़ ही भीड़, खड़ी चढ़ाई और फ़िसलन सब कुछ तो था जीवन लीलने को तैयार पर श्रद्धा, विश्वास व आस्था के सहारे सभी यात्री अपने लक्ष्य की ओर बढ़े जा रहे थे। सामने बर्फ से लदी चोटियाँ उन्हें निरंतर बुला जो रही थीं।'[69]

लेखिका ने प्राकृतिक दृश्यावलियों की मनोरम छवियाँ अंकित कर सांस्कृतिक जीवन मूल्यों व आस्था के स्वरों को वाणी प्रदान की है। अलंकृत व मुहावरेदार भाषा में दृश्य–बिंबों की झाकियाँ बहुत आकर्षक बन गई है।

'मेरी यूरोप यात्रा' बालोपयोगी यात्रा वृतांत में भी इन सांस्कृतिक जीवन–मूल्यः आस्था के स्वर की स्वर लहरी सुनाई दे रही है।

'नीदरलैण्ड में सरकार व अभिभावक दोनों के द्वारा बच्चों पर विशेष ध्यान दिया जाता है। इस यात्रा में हमें बच्चों के लिए लगाए गए एक विशेष मेले को देखने का अवसर मिला। इस मेले का एक छोर डेल्फ़ट के विशाल पुस्तकालय से जुड़ा था । इस पुस्तकालय में बड़ी संख्या में पुस्तकों के साथ–साथ हमें बच्चों के सर्वांगीण विकास का भी भरपूर प्रबन्ध दिखा।'[70]

बालकों के सर्वांगीण विकास हेतु सरकार व अभिभावक दोनों के द्वारा विशेष ध्यान दिया जाता है। मेले में विशाल पुस्तकालय इसी प्रयोजन से जुड़ा है। लेखिका द्वारा रचित यात्रावृतांत में सांस्कृतिक जीवन–मूल्य व आस्था के स्वरों का निखरा रूप सामने आया है।

'दोपहर में किसी–किसी दिन धूप दिख जाती तो हम निकटवर्ती ग्रामीण क्षेत्र का रहन–सहन देखने निकल पड़ते। नहरों के किनारे दूर–दूर तक फैले विस्तृत खेत, चरती

गायों, भेड़ों व घोड़ों के झुंड, बड़े–बड़े एकमंज़िले तो कही दुमंज़िले घर और उनके सामने खड़ी कारें व पास ही बहती नहर में छोटी–छोटी नावें यूरोपीय ग्रामीण जीवन का परिचय देते। इस भ्रमण में कई खेतों, दुकानों व इमारतों पर डच में लिखें दो वाक्यांशों ने हमारा ध्यान आकृष्ट किया ये थे–टी हूर और टी कूप। पूछने पर पता लगा कि टी हूर का अर्थ है– किराए के लिए खाली है और टी–कूप का अर्थ है– बिकाऊ है; यह जानकर हम हँसे बिना न रह सके।'[71]

लेखिका यूरोप यात्रा के वर्णन में वहाँ के ग्रामीण परिवेश, रहन–सहन तथा वहाँ की नहरों, खेतों, पशुओं आदि से परिचय करवाती है। डच वाक्यांशों का अर्थ भी जाना और इससे बालकों में सांस्कृतिक जीवन–मूल्यों की झाँकी सजीव रूप से प्रस्तुत करने का प्रयास किया।

'इट्स ए स्मॉल वर्ल्ड' में संसार के विभिन्न देशों की संस्कृतियों का पुतलों द्वारा जीवन्त अभिनय किया जा रहा था जिसमें भारत को, ताजमहल की पृष्ठभूमि में, पुतलों द्वारा विभिन्न भारतीय नृत्य करते दिखाया गया था। विज्ञान, तकनीक, मानव मन, बाल चरित्र, परी कथाओं व कार्टून कथाओं का अद्भुत संगम और इन सबसे सुन्दर थी कार्टून व परी कथाओं के चरित्रों की परेड़। सुबह से कब शाम हुई पता ही नहीं चला तभी अँधेरा होने के साथ–साथ लाइट शो की उद्घोषणा हुई।'[72]

लेखिका द्वारा यूरोप की संस्कृति को भारतीय संस्कृति से तुलनात्मक रूप से प्रस्तुत कर विभिन्न सांस्कृतिक जीवन–मूल्यों का परिचय दिया है।

2.3.5 बाल कथा के संदर्भ में –

'घरौंदा' बाल कथा संग्रह की कहानियों में लेखिका ने सांस्कृतिक जीवन मूल्यों तथा आस्था के स्वरों की प्रतिष्ठापना की है जो निम्नांकित गद्यांशों मे वर्णित है ।

'उन बेकार की चीजों में अनन्या को अपनी एक पुरानी छोटी सी गुडिया मिली जिसे देखते ही वह पुलक उठी। आठ वर्षीया अनन्या उस गुडिया को लेकर भागती हुई दादी के कमरे में गई और उछलती हुई बोली, ''दादी जी ! देखिये मेरी प्यारी गुडिया मुझे मिली। मैं पहले इससे खूब खेलती थी फिर यह न जाने कब और कैसे खो गई ? याद नहीं। अभी–अभी पीछे वाले कमरे की आलमारी, जिसकी माँ सफाई कर रही है, उसी में मिली है।'[73]

गुड्ड़े–गुडिया से खेलना हमारी बाल संस्कृति रही है। बचपन में गुडिया से खेलना घरौंदा बनाना लड़कियों का प्रिय खेल होता है, जो हमारे सांस्कृतिक जीवन–मूल्यों को व्यक्त करता है।

''मेरे प्यारे बेटे सुनो! गुलाब, बेला, गेंदा, सूरजमुखी आदि फूलों के पौधें छोटे होते है और हरसिंगार, कनेर, कनक चंपा आदि की झाड़ियाँ काफी बड़ी होती है। जानते हो, अमलतास, मौलसिरी, गुलमोहर, पलाश आदि फूलों के पेड़ तो खूब बड़े–बड़े होते है। इनके अलावा भी ढ़ेरों तरह के फूल होते है जिनमें से कमल, कुमुदनी जैसे फूल तो पानी में खिलते हैं कोई फूल अकेला खिलता है तो कोई अमलतास की तरह गुच्छों में खिलता है। किसी को तोड़ना कठिन होता है तो कोई अपने आप झड़ कर गिर जाता है। कुछ फूलों में सुगन्ध होती है तो कुछ गन्धहीन होते है।'' माँ ने बेटे के ज्ञान में वृद्धि की।'[74]

भारतीय संस्कृति में माँ को प्रथम गुरु का दर्जा प्राप्त है। यहाँ भी एक माँ अपने बेटे के ज्ञान में वृद्धि करने हेतु उसे फूलों के पौधों की जानकारी दे रही है। हमारे सांस्कृतिक जीवन–मूल्य इसी तरह पीढ़ी–दर–पीढ़ी हस्तांतरित होते रहते है और हमारी परम्परा आगे भी इसी प्रकार चलती रहेगी।

2.3.6 निबन्ध संग्रह के संदर्भ में –

लेखिका ने 'अक्षर से 'अक्षर' तक' निबन्ध संग्रह के निबन्धों के माध्यम से सांस्कृतिक जीवन–मूल्यों तथा आस्था को स्वरों को वाणी देने का प्रयास किया है, जो निम्न प्रकार है।

'माँ चाहे तो राम बना दे, चाहे कृष्ण–बलराम
नैतिकता का पाठ पढ़ाकर, देती अनाम को नाम'।

नीति से बने है नैतिक और नैतिकता, जिसका अर्थ है नीति सम्बन्धी। हिंदी शब्दकोश के अनुसार नीति का अर्थ है– आचार–व्यवहार का वह नियम जो समाज के हित में स्थिर किया गया हो। हम कह सकते है कि नैतिकता 'आचरणगत श्रेष्ठता' का मापदंड़ है। नैतिकता ही व्यक्ति को श्रेष्ठ व्यक्ति के पद पर आसीन करती है।

प्रत्येक संतान में नैतिकता के श्रेष्ठ गुणों का बीज बोकर उसे अंकुरित व पल्लवित–पुष्पित करती है माँ। माँ बच्चे को गर्भकाल से ही संस्कारित करने लगती है।'[75]

माँ बालक की प्रथम शिक्षिका होती है। माँ बच्चे को जैसी शिक्षा देगी बच्चा वैसा ही बन जायेगा। माँ ही बालक को नैतिकता का पाठ पढ़ाकर संस्कारवान बनाती है। सांस्कृतिक जीवन–मूल्यों को बालक में विकसित कर उसे समाज में प्रतिष्ठित स्थान, दिलाने में अहम भूमिका माँ की ही होती है।

'सत्य सदैव सूर्य की भाँति प्रखर व स्पष्ट होता है। एक सत्य के समक्ष अनगिनत असत्य नहीं टिक सकते। सत्य सदैव प्रत्येक वस्तु, व्यक्ति या परिस्थिति से निर्लिप्त रह स्वयं को प्रतिष्ठित करता है और सदैव सर्वहितकारी होता है। सत्य निष्ठा मानव चिंतन की

वह विशिष्ट मनोदशा है जिसके बल पर विकट से विकट परिस्थिति में भी वह विचलित नहीं होता।'[76]

प्रस्तुत निबन्ध '21वीं सदी, युवा पीढ़ी की समस्याएँ और प्राचीन भारतीय मूल्य' की पंक्तियों में सांस्कृतिक जीवन–मूल्यों की प्रतिष्ठापना हुई है । सत्यनिष्ठा मानव जीवन का सर्वोपरि सांस्कृतिक, नैतिक मूल्य है।

'मरुधरा के सोनलिया रेत के धोरों की धरती के मोहक सौन्दर्य के समक्ष स्वर्ग का सौन्दर्य भी लज्जित होता है। जिस पर मोहित हो देवता भी इसी धरती पर रमण करने आते है और नर–नारी भी इस रंगीली धरती का यशगान करते नहीं अघाते। जिस प्रकार एक मात्र 'वन्दे मातरम्' गीत बंकिमचन्द्र को 'जन गण मन' रवीन्द्रनाथ टैगोर को तथा 'सारे जहाँ से अच्छा' गीत अल्लामा इकबाल को अमर करने के लिए पर्याप्त है, उसी प्रकार 'धरती धोरां री' गीत महाकवि सेठिया को अमरत्व प्रदान करता है।'[77]

श्री कन्हैयालाल सेठिया जी की कविता 'धरती धोरां री' अर्थात राजस्थान की धरती मरुधरा के मोहक सौन्दर्य जो स्वर्ग के सौन्दर्य से भी बढ़कर है जिसका गुणगान सभी नर–नारी करते है; इस धरती पर देवता साक्षात् रमण करते है। 'धरती धोरां री' निबंध में सांस्कृतिक जीवन–मूल्यों एवं आस्था के स्वरों की अनुगूँज ध्वनित हो रही हैं।

2.4 सामाजिक और राजनैतिक जीवन–मूल्य –

डॉ० उषा किरण सोनी के साहित्य में आध्यात्मिक दर्शनपरक जीवन–मूल्यों तथा सांस्कृतिक जीवन–मूल्य; आस्था के स्वर के साथ ही सामाजिक और राजनैतिक जीवन–मूल्यों की प्रतिष्ठापना भी हुई है, जो निम्न प्रकार है–

2.4.1 कविता के संदर्भ में –

कविता के संदर्भ में सामाजिक और राजनैतिक जीवन–मूल्यों की प्रतिष्ठापना डॉ. उषा किरण सोनी के चारों कविता संग्रह 'अक्षरों की पहली भोर', 'मौन के स्वर', 'मुक्ताकाश में', 'शब्द की अनुगूँज' में देखने को मिल जाती है जो निम्नांकित पंक्तियों में दृश्टव्य है।

'भोर से संध्या तक
आपाधापी और भागदौड़।
हर ओर सर्वोत्तम और
सर्वाधिक पाने की होड़।'[78]

लेखिका ने वर्तमान समय में सामाजिक मूल्यों में आ रहे बदलाव को 'आधुनिक रिश्ते' कविता के माध्यम से प्रस्तुत किया है। सर्वाधिक पाने की चाह में व्यक्ति

रिश्तों को भूलता जा रहा है। इसलिए आज रिश्तों में पहले जैसी बात नहीं रही है, रिश्तों में मात्र औपचारिकता है।

'गंदे नाले के पास, पुल के नीचे पटरी के किनारे
गंधाती बातास बीच, उगी हुई झोंपड़ियाँ
नगरों और महानगरों के पंचतारा अंचल के
मखमल पर टाट सा पैबंध लगाती झोंपड़ियाँ।'[79]

समाज के निम्नवर्गीय लोगों के जीवन का बहुत ही मार्मिक, हृदयस्पर्शी वर्णन 'झोंपड़ियाँ' कविता में कर सामाजिक और राजनैतिक जीवन–मूल्यों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त की गई है।

'सविनय अवज्ञा आंदोलन
और असहयोग के बल से।
कंपित कर डाला ब्रिटिश राज्य
बस दो शब्दों के बल से।'[80]

स्वतंत्रता आन्दोलन में गाँधी जी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उन्होंने सत्य, अहिंसा के बल पर ब्रिटिश राज्य को मात दी। लेखिका ने 'महात्मा गाँधी' कविता में सामाजिक और राजनैतिक जीवन मूल्यों को प्रतिष्ठा प्रदान की है।

'मौन के स्वर' कविता संग्रह की कविताओं में भी इन मूल्यों की प्रधानता परिलक्षित हुई है। 'बन्द द्वार के पीछे', 'भूख–1', 'भूख–2' में इन्हें बखूबी देखा जा सकता है।

'बंद द्वार के पीछे
छिपता सच घटते वैभव का
बहता क्षार नेत्र से मन का
लिखा जाता गत क्रंदन–हास
यथार्थ बनता भावी इतिहास।' [81]

'बन्द द्वार के पीछे' कविता में सामाजिक और राजनैतिक जीवन–मूल्यों को वाणी देते हुए लेखिका समाज मे हो रहे षड़यंत्रों का पर्दाफ़ाश कर देशद्रोही, आततायी जो हमारी मातृभूमि का सोदा करने से बाज़ नहीं आ रहे ओर इस स्वर्ग सी धरती को नर्क बना देना चाहते है के प्रति आक्रोश व्यक्त करती हुई समाज में चोरी छिपे हो रहे दुराचरण को उजागर करती है।

'भूख भूख है भले पेट की हो
या हो सत्ता की भूख

तन–मन–यश–धन की तो होती
कभी न पूरी भूख।' [82]

'भूख' कविता के माध्यम से लेखिका ने सामाजिक और राजनैतिक जीवन–मूल्यों को कुशलता पूर्वक प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया है। यह भूख ही है जो मनुष्य से सभी कर्म–अकर्म करवाती है।

'यश की भूख सृजन करवाती
ऊँचे–ऊँचे शिखर चढ़ाती
भूख ज्ञान की शोध कराती
अनसुलझे रहस्य सुलझाती।' [83]

लेखिका ने 'भूख' के दूसरे पहलू पर ध्यानाकर्षित कर सामाजिक और राजनैतिक जीवन मूल्यों को प्रतिष्ठित किया है।

लेखिका ने तीसरे कविता संग्रह–'मुक्ताकाश में' की कविताओं में भी सामाजिक और राजनैतिक जीवन मूल्यों को उकेरा हैं। जो निम्नांकित काव्यांशों में वर्णित है।

'साँसों का आवागमन
शीतल छाँह और धूप की तपन
अनुभव की धुरी पर
सुख–दुःख का परिभ्रमण।'[84]

'संधान' कविता में जीवन का सार प्रस्तुत कर सामाजिक जीवन–मूल्यों को परिभाषित करने का प्रयास किया गया है।

'अट्टालिका के नीचे खड़ीं हैं
परिवारों से अधिक गाड़ियाँ
निकट ही उठ रहे भवन में
सूखतीं हैं पैबंद लगी साड़ियाँ।'[85]

इस पद्यांश में समाज के दो वर्गों सामन्त वर्ग एवं निम्नवर्ग के लोगों की जीवन शैली में अन्तर को स्पष्ट किया गया है। लेखिका ने समाज के निम्नवर्गीय लोगों के प्रति अपनी संवेदना प्रकट करते हुए सामाजिक, राजनैतिक, जीवन मूल्य को जीवन्तता प्रदान की है।

'संसद
वोटों का पहाड़ा
भाषणों का अखाड़ा।'[86]

लेखिका ने बहुत कम शब्दों में राजनैतिक जीवन मूल्यों को व्यक्त किया है। संसद वास्तव में वोटों का पहाड़ा है, नेता वोट प्राप्त करने के लिए लम्बे–लम्बे भाषणों द्वारा भोली–भाली जनता को मोहरा बना राजनैतिक खेल खेलते है।

'शब्द की अनुगूँज' कविता संग्रह की 'रेट', 'सारे शहर', 'अनुपात', 'सब चलता है', 'हुंकार भर सके', आदि कविताओं में सामाजिक और राजनैतिक जीवन–मूल्यों की अनुगूँज सुनाई देती है।

'नेता के
चमचे ने
फुटपाथिए को बुलाया
बिना इज़ाज़त
जगह घेरते हो
उसे जोर से धमकाया
चुनाव
आ रहे है
आकर नारे लगाओ
वरना अपना
बोरिया बिस्तर
फुटपाथ से हटाओ
फुटपाथिया
मुस्काया और बोला
दस रूपये नारे का रेट है
क्योंकि
मेरे हर तरफ
केवल पेट ही पेट है।'[87]

इस कविता में मार्क्सवादी विचारधारा मुखरित हुई है। हमारे देश के नेताओं द्वारा गरीब जनता का शोषण किया जाता है। यहाँ राजनैतिक मूल्यों को बहुत ही सटीक भाषा में प्रतिष्ठित किया गया है।

'भावों–अनुभावों का होता है व्यापार यहाँ
अलग–अलग मूल्यों में बिकते विचार यहाँ।' [88]

'सारे शहर' कविता में समाजिक और राजनैतिक जीवन मूल्यों की झाँकी प्रस्तुत की गई है।

2.4.2 कहानी के सन्दर्भ में –

लेखिका ने प्रत्येक विधा में मूल्यों की आभा बिखेरी है। इनके कहानी संग्रह 'काम्या', 'नेपथ्य का सच', 'तृष्णा तू न गई.....' तथा 'नए सूरज की तलाश' में भी सामाजिक और राजनैतिक जीवन मूल्यों को प्रतिष्ठा प्राप्त है।

'मैंने जो त्यागा, यह मैं जानती थी। पति का सुख, शरीर की चाहत, हँसना–बोलना, चहचहाना जो किशोरावस्था में मेरा और राज का अभिन्न अंग था, सभी तो त्यागा मैंने, राज के देह के त्याग से कही ज्यादा। रात–दिन एक करके मैंने घर को संभाला, कीर्ति को बड़ा किया, मदन के माता–पिता की बेटे की तरह सेवा की और लोग कहते है, 'राज सती थी'। क्या यह सही है? धर्म के चक्करों में पड़े समाज से मैं यह प्रश्न पूछना चाहती हूँ पर किस–किस से पूछूँ ?'[89]

मानवीय संवेदना विशेषकर नारी संवेदना की चितेरी डॉ. उषा किरण सोनी ने 'प्रश्न' कहानी में नारी संवेदना जगाते हुए सामाजिक और राजनैतिक जीवन मूल्यों को व्यक्त किया है। समाज में विधवा स्त्री के त्यागमयी जीवन का इतना महत्व नही, जितना पति के साथ देह त्याग करने वाली स्त्री को सम्मान व महत्व प्राप्त है। रीता का यही प्रश्न समाज के, धर्म के ठेकेदारों से है। राज सती थी। क्या यह सही है ? यह समाज का कटु सत्य है जिसका जवाब कोई नहीं देना चाहता।

'शुभदीप अपने बेटे संभ्रांत पर जान छिड़कता था अतः वह समझकर भी नासमझ बना रहता। आयुशी को भी पति के संबंध में इस प्रश्न से दो–चार होना पड़ता। धीरे–धीरे दोनों ने लोगों से मिलना–जुलना कम कर दिया। इस विषय में कई बार उनकी झड़प भी हो जाती। शुभदीप का पौरुष कभी–कभी आहत होकर उसे सब कुछ छोड़कर कहीं जाने को कहता पर पत्नी–पुत्र के मोह में बँधा शुभदीप शांत हो जाता।'[90]

वर्तमान समाज में सामाजिक और राजनैतिक जीवन मूल्यों में आ रहे बदलाव को लेखिका ने 'निष्कृति' कहानी के माध्यम से व्यक्त किया है। आज स्त्री व पुरुष दोनों ही समान रूप से जीविकोपार्जन के साधन जुटाते है। परन्तु पुरुष प्रधान समाज में परिवार का भरण–पोषण करने का दायित्व पुरुष का होता है। ऐसे में अगर पुरुष स्त्री पर आश्रित हो तो उसका पौरुष आहत होता है। कहानी में पौरुष से हताश शभुदीप की वेदना को अभिव्यक्ति प्रदान की गई है।

'एक दिन वह अन्य लड़कियों के साथ गोटियाँ खेल रही थी कि रोती हुई दादी आई और उसे छाती से लगाकर और ज़ोर–ज़ोर से रोने लगी। उसकी रंग–बिरंगी काँच की चूड़ियाँ फोड़ दी गईं और उसे सफेद दुपट्टा उढ़ा दिया गया। उसे बताया गया कि उसके पति को साँप ने काट लिया जिससे उसकी मृत्यु हो गई। सभी को रोते देख वह भी रो पड़ी । मात्र नौ साल की उम्र में वह विधवा भी हो गई।'[91]

'नेपथ्य का सच' कहानी संग्रह की कहानी 'खाली हाथ' में समाज की सबसे बड़ी कुरीति बाल–विवाह और उसके दुष्परिणाम पर संवेदना जाग्रत करते हुए सामाजिक और राजनैतिक जीवन–मूल्यों की प्रतिष्ठापना की गई है।

'अब इस पैसे से मैं ज़रूरतमंद लोगों की सहायता करने लगा जिससे प्रभावित होकर लोग मुझे और अधिक ईमानदार मानने लगे हैं तथा वे अधिक धन दे जाते हैं। वे सोचते हैं कि उनका पैसा किसी ज़रूरतमंद की ज़रूरत समय पर पूरी करेगा। तुम्हीं कहो, मैं कहाँ फेंकूँ इस पैसे को ? यह सच है कि इस आते पैसे के बहुत थोड़े भाग का उपयोग मैंने स्वयं और अपने बच्चों के लिए भी किया है, पर अधिकतम भाग जनसेवा में ही लगाया है।' इतना कहकर सुधाकर चुप हो गया और प्रश्न भरी दृष्टि से प्रभास की ओर देखने लगा।'[92]

जरूरतमंद लोगों की सहायता करना हमारा नैतिक दायित्व है। सुधाकर मामूली सी नौकरी करने वाला अच्छी शानो–शौक़त से रहने लगे तो स्वाभाविक है कि उसने गलत तरीके से धन कमाया होगा। प्रभास के इसी संशय को दूर करते हुए सुधाकर अपनी ईमानदारी व सच्चाई से अवगत कराता है सामाजिक और राजनैतिक जीवन मूल्यों की प्रतिष्ठा सुधाकर की सच्चाई से बयाँ हो रही है।

'भूमिका को आशा थी कि नए बच्चे के आगमन की सूचना से सभी प्रसन्न हो जाएँगे और रजत सब कुछ भुलाकर दौड़ा चला आएगा पर ऐसा हुआ नही। सामाजिक मान्यता है कि लड़की के माता–पिता का समाज में लड़के के माता–पिता से निम्न स्थान होता है अतः भूमिका के माता–पिता ने भूमिका को लेकर उसकी ससुराल जाने का निर्णय किया क्योंकि भूमिका को माँ के घर आए लगभग एक महीना हो चुका था और लोग पूछने लगे थे कि वह कब ससुराल जाएगी?'[93]

'भूमिका' कहानी में लेखिका द्वारा सामाजिक और राजनैतिक जीवन मूल्यों को अभिव्यक्ति प्रदान की गई है। समाज में विवाह के बाद लड़की को ससुराल में ही रहना पड़ता है। किसी कारणवश अगर वह मायके में ज्यादा दिन रुक जाती है तो सभी लोग पूछने लग जाते है। पति व ससुराल से तिरस्कृत भूमिका पीहर आ जाती है और यहीं अपने

बच्चे को जन्म देती है। परन्तु तब भी पति व ससुराल वाले नहीं आते तो भूमिका के माता–पिता को चिंता होना स्वाभाविक है और लोगों के प्रश्नों का जवाब उनके पास नहीं होता । लोग उसके पीहर में रहने की मज़बूरी नहीं समझ सकते।

'मनोहर बाबू ! आज मेरी बेटी के पाँव खराब हो गए है, वह लँगड़ी हो गई है तो आप दूसरे विवाह की बात सोच रहे हैं पर यदि ईश्वर न करें आपके साथ हुआ होता, आप लँगड़े हो जाते तो क्या मेरी बेटी भी दूसरे विवाह की बात कहती ? दुःखी व क्रोधित पिता ने प्रश्न किया।

अब मनोहर बाबू ने दृष्टि उठाई और धन व यौवन के दंभ मे कहा, मैं क्या आपकी बेटी को छोड़ रहा हूँ ? उसे निकाल रहा हूँ ? अरे ! वह भी रहेगी और दूसरी भी रहेगी।'[94]

सामाजिक और राजनैतिक जीवन–मूल्यों को वाणी देती कहानी 'लेकिन यह सच है..... ' के माध्यम से लेखिका ने समाज में नारी की स्थिति के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त की है।

'यही तो नहीं समझ सकी तुम; जब कोई पुरुष अनायास बार–बार किसी युवती, जो पढ़ी–लिखी और सुन्दरी भी हो, की प्रशंसा करे तो समझ लेना चाहिए की निश्चय ही उसके मन में कलुष है।' माता जी पुनः समझाते हुए बोली, देखों! यदि वह, बच्चों की शिक्षा संबंधी तुम्हारे विचारों को पसन्द करता था तो उसे तुमसे व मृदुल से बात करके तुम्हें अपने स्कूल के स्टाफ से मिलवाना चाहिए था, गोष्ठियाँ करवानी चाहिए थी ताकि सभी तुम्हारें विचारों का लाभ उठाते पर उसने ऐसा नही किया और यही उसकी कलुषित मनोवृत्ति का प्रमाण है।'[95]

'नए सूरज की तलाश' कहानी संग्रह की कहानी 'शुभदृष्टि' में लेखिका द्वारा समाज में पुरुष की कलुषित मनोवृत्ति को उजागर कर स्त्री को सचेत करते हुए सामाजिक और राजनैतिक जीवन–मूल्यों की प्रतिष्ठापना की गई है।

'सुनो नीता! यदि किसी प्रश्न में संभावना हो तो आधा अंक बढ़ा दो; वह अन्त में पूरा होकर सत्ताईस अंक पूरे कर देगा। जन्मेजय का भविष्य बर्बाद होने से बच जाएगा। वह इस वर्ष उत्तीर्ण होकर बारहवीं में चला जाएगा। यदि फिर भी न सुधरा तो बोर्ड की परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो जाएगा पर मेरा विचार है कि उसे सुधरने का हमें एक और अवसर देना चाहिए शायद उसका जीवन सँवर जाए।' अशेषा ने समझाया।'[96]

'मोड़ के बाद' कहानी में परीक्षा में आधा अंक बढ़ा देना जन्मेजय का भविष्य सँवार देता है।

2.4.3 बालगीत संग्रह के संदर्भ में –

ड़ॉ. उषा किरण सोनी के बालगीत संग्रह 'टिम टिम तारे' में सामाजिक, राजनैतिक जीवन–मूल्यों की झलक देखी जा सकती है।

'यश अमन हर्षित और भारत
दोस्त मेरे जब घर आते हैं
खेल–खिलौने छोड़ के सारे
मछलीघर पर घिर आते है
होते देख विभोर मछलियाँ
ज्यों जल में हो मोर मछलियाँ।'[97]

'मछलीघर' बालगीत में बाल समूह द्वारा मछलीघर देखकर प्रसन्न व भावविभोर होना सामाजिक राजनैतिक जीवन मूल्यों को दर्शाते हैं।

'सुन ओ भारत के बाल–लाल
फिर से जागृत तुम करो ज्वाल
फैलाओ ज्ञान प्रभा दिशि–दिशि
उन्नत हो भारत का भव्य भाल।' [98]

प्रस्तुत बालगीत के माध्यम से लेखिका बालकों में देशभक्ति का भाव जाग्रत कर सामाजिक, राजनैतिक जीवन मूल्यों की प्रतिष्ठापना करना चाहती है।

2.4.4 बालोपयोगी यात्रावृतांत के संदर्भ में –

लेखिका द्वारा बालोपयोगी यात्रा वृतांत 'द्वार से धाम तक' तथा 'मेरी यूरोप यात्रा' में सामाजिक और राजनैतिक जीवन–मूल्यों को उकेरा गया है ।

'प्रशासन का पुलिस व सेना की सहायता से सभी गाड़ियों व यात्रियों को सुरक्षित निकालने का प्रयास ज़ारी था। गहराती रात के साथ वर्षा भी तेज़ होती जा रही थी। चींटी से भी धीमी चाल में हर आधे घंटे के बाद हमारी गाड़ी दो–चार फुट खिसक जाती। पता चला कि कल शाम से ही निरन्तर चल रही वर्षा के कारण एक नहीं चार–पाँच जगह पहाड़ों से पत्थर व मिट्टी खिसक कर नीचे आ गई है जिससे सड़क मार्ग अवरूद्ध हो गया है।'[99]

बद्रीनाथ की कठिन यात्रा का वर्णन कर सामाजिक और राजनैतिक जीवन मूल्यों की प्रतिष्ठा लेखिका द्वारा की गई है।

''नीदरलैण्ड (हॉलेण्ड़) का द्वितीय विश्वयुद्ध के काल मे विशेष महत्व रहा है । यहीं के एम्स्टडर्म में तानाशाह हिटलर द्वारा यहूदियों पर अत्याचार की 'पराकाष्ठा' पार की गई।

एम्स्टडर्म में ही एनी फ्रेंक ने उन अत्याचारों का जीवन्त दस्तावेज़ अपनी डायरी में अंकित किया और यह डायरी विश्व भर मे चर्चा का विषय बनी।'[100]

'मेरी यूरोप यात्रा' यात्रावृतांत बालकों को देश–विदेश की जानकारी के साथ ही द्वितीय विश्वयुद्ध का काल अर्थात् हिटलर के अत्याचारों की जानकारी भी प्रदान करता है।

2.4.5 बालकथा के संदर्भ में –

'घरौंदा' बालकथा संग्रह की कहानियों में सामाजिक और राजनैतिक जीवन–मूल्यों की प्रतिष्ठापना निम्नांकित गद्यांशों में देखने को मिल जाती है।

'मौज मस्ती को ही जीवन समझने वाले गिरिराज को अब जीवन का यह नया रूप देखने को मिला। पिता की बीमारी, पैसों की कमी, माँ व भाई–बहन का भविष्य सब कुछ प्रश्नचिह्न बन कर उसे घेरे खड़े थे। उनके पास तो हर सप्ताह होने वाली डायलिसिस के लिए लगने वाले थोड़े से खर्च का भी जुगाड़ नही है। पिता जी के वेतन के अलावा और कोई आमदनी नहीं है। माँ के दो–चार गहनों से क्या होना है?'[101]

परिस्थितियाँ इन्सान को समय से पहले बड़ा बना देती है। मौज–मस्ती को ही जीवन समझने वाले गिरिराज को पिता की बीमारी कच्ची उम्र में ही दायित्व–बोध करवा देती है।

'अरे ओ कमला के बापू, सुन ओ कमला के बापू
तुम तो खाओ सो जाओ, नहिं चिंता मन में लाओ
मेरी कमला भई सयानी, सुंदर लगती ज्यों रानी
तुम बेटी का ब्याह रचाओ, मेरी चिंता दूर भगाओं
सबकी बिटियाँ हुई पराई, कब कमला की होगी सगाई।'[102]

आज भी समाज में बेटी के थोड़ी सयानी होते ही माता–पिता को विवाह की चिंता सताने लगती है। लेखिका ने लघु नाटिका के माध्यम से शिक्षा का महत्व बताते हुए सामाजिक और राजनैतिक जीवन मूल्यों को महत्व प्रदान किया है। पहले शिक्षा बाद में विवाह करने की प्रेरणा प्रदान की है।

2.4.6 निबंध संग्रह के सन्दर्भ में –

निबंध संग्रह 'अक्षर से 'अक्षर' तक' में लेखिका द्वारा सामाजिक और राजनैतिक जीवन–मूल्यों को अभिव्यक्ति प्रदान की गई है।

'राजा को चाहिए कि वह प्रजा का पालक हो, सबको समान दृष्टि से देखे लोकहित के कार्य करे तथा लोकमत को आदर दे। राम द्वारा सुग्रीव को किष्किन्धा का राजा तथा बालिपुत्र अंगद को युवराज के पद पर अभिषिक्त करना लोकमत को आदर देना

था। लोकमत के कारण सीता को वनवास दिया जाना संसार जानता है । राजा सभी को सम्मान देते हुए न्यायोचित कार्य करे तभी आदर पाता है।'[103]

समाज में लोकमत को महत्व प्रदान करते हुए लेखिका द्वारा राजा के दायित्व बोध 'तुलसी की लोकोन्मुखी चेतना' निबंध के माध्यम से प्रस्तुत कर सामाजिक और राजनैतिक जीवन–मूल्यों को प्रतिष्ठापित किया है।

'शिक्षा और ज्ञानार्जन द्वारा अपनी विचार शक्ति को जाग्रत करो और युगों से सोई पड़ी अपनी क्षमताओं का विकास करो। पुरुष को अंहकार है कि वह नारी को माँ बना कर उसके जीवन को सार्थकता प्रदान करता है तो नारी भी तो पुरुष को पिता बनाती है। बीज के बिना यदि धरती बंध्या है तो धरती के बिना बीज से भी नवांकुर नहीं फूटता दोनों का ही होना अनिवार्य है। यदि तुम उसकी अर्धांगिनी हो तो वह भी तुम्हारा अर्धांग है। दोनों का एक–दूसरे के बिना अस्तित्व ही नहीं है।'[104]

लेखिका ने 'पहचान' निबन्ध के माध्यम से स्त्री को अपनी क्षमताओं, शक्तियों के प्रति समझ विकसित कराने में शिक्षा व ज्ञानार्जन को महत्व प्रदान किया है। स्त्री–पुरुष दोनों का समान महत्व है। दोनों का एक–दूसरे के बिना अस्तित्व ही नही है। निबंध में सामाजिक और राजनैतिक जीवन–मूल्यों को प्रतिष्ठा प्राप्त हुई है।

निष्कर्ष –

डॉ० उषा किरण सोनी के साहित्य की मूल्यपरक मीमांसा करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि लेखिका मूल्यों की पारखी है। इन्होंने साहित्य की प्रत्येक विधाओं में, चाहे कहानी विधा हो, या कविता विधा, या हो बाल–साहित्य या निबंध सभी विधाओं में आध्यात्मिक और दर्शनपरक, सांस्कृतिक, सामाजिक, और राजनैतिक जीवन–मूल्यों की प्रतिष्ठापना बहुत ही आकर्षक ढ़ंग से की है।

हमारा देश विश्वगुरु जैसी महानतम् उपाधि से विभूषित रहा है। मूल्य ही मानव को मानव बनाता है तथा जीवन को नई दिशा प्रदान कर जीवन जीने का मार्ग प्रशस्त करता है। हमारे प्राचीन धर्मग्रन्थों (वेद–पुराण, महाभारत, रामायण, भगवत गीता, जैन धर्मग्रन्थ, बौद्धधर्म ग्रन्थ) सभी में मानव जीवन जीने की व्यवस्थाओं का वर्णन देखने को मिलता है।

आज भारतीय संस्कृति जिस विशिष्टता के कारण विश्व में महानतम् तथा श्रेष्ठतम् है उसका मूल कारण वे जीवन–मूल्य है जो समाज व्यवस्था का आधार है। जीवन का अंतिम लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति माना गया है परन्तु इसे प्राप्त करने के लिए सात्विक गुणों का होना अनिवार्य है। सत्य, अहिंसा, बंधुत्व, सदाचरण, दया, क्षमा, परोपकार, त्याग वे शाश्वत, मूल्य हैं जो चिरकाल से भारतीय मानस में समाये हुए हैं। परम्परा से प्राप्त ये मूल्य हमारे

भीतर संस्कार रूप में समाहित है। ये जीवन के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, आध्यात्मिक समस्त पक्षों में विद्यमान है। मूल्यों की अवधारणा के कारण ही हम समाज में व्यक्ति के व्यवहार को उचित तथा अनुचित ठहराते है।

ड़ॉ. रामधारी सिंह 'दिनकर' आचरण के सिद्धान्तों को मूल्य कहते है। इसी प्रकार साहित्य मनीषी ड़ॉ. मनीषा शर्मा लिखती है –'मूल्य' वे मान्यताएँ है जिन्हें मार्गदर्शक, ज्योति मानकर सभ्यता चलती रहती है और जिनकी उपेक्षा करने वालों को अनैतिक, उच्छृंखल या बागी कहते है। चूँकि मूल्यों का सम्बन्ध मनुष्य जीवन व मानवीय संवेदनाओं से है। अतः जीवन–मूल्य और जीवनादर्श अथवा मानव मूल्य समानार्थी है। वस्तुतः जीवन मूल्य मानवीय अन्तरात्मा के महान गुण का उच्चादर्श है जो मनुष्य के जीवन को मानव हित के महानतम् संकल्पों की ओर प्रेरित करते है, जिनके माध्यम से मानव–जीवन की सार्थकता का मूल्याकंन और मानवता का पोषण होता है।[105]

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि लेखिका ने समस्त मूल्यों की परख कर उनका जीवन में महत्व एवं सार्थकता को साहित्य द्वारा अभिव्यक्ति प्रदान की है। वर्तमान समाज की कुण्ठा, पीड़ा, राग–द्वेष, छल–छद्म, विसंगतियाँ, विद्रूपता व मानवीय दुर्बलताएँ आदि सभी बुराइयाँ कहीं न कहीं मूल्यों के हनन का ही परिणाम है। इन्होंने समाज के प्रत्येक कोने को झाँका और चुन–चुनकर मूल्यों को साहित्य में स्थान दिया, जो आगे भी मानव जीवन का मार्गप्रशस्त करते रहेंगे।

सन्दर्भ –

1. संस्कृत हिन्दी कोश– वामन शिवराम आप्टे, पृ.सं. 812
2. द डाइमेशंन ऑफ वेल्यूज– डॉ. राधाकृष्ण मुखर्जी, पृ.सं. 9
3. मानव मूल्य और साहित्य– डॉ. धर्मवीर भारती, पृ.सं. 56
4. सोशियोलोजी– जोसेफ एच.फिचर, पृ.सं. 294
5. आधुनिक बोध – रामधारी सिंह 'दिनकर', पृ.सं. 12
6. ऋग्वेद, पृ.सं. 3/62/10
7. रामचरित मानस – गोस्वामी तुलसीदास, पृ.सं. 251
8. The Random House of dictionary of the English Language-Random, P.No. 704
9. Principal Ethica – G.E.Moor, P.No. 56
10. A manual of Ethics – J.S.Mackenzie, P.No. 219
11. आधुनिक काव्य में नवीन जीवन मूल्य – हुकुमचन्द राजपाल, पृ.सं. 70
12. Fundamantal of Ethics- W.M.Urban, P.No. 161-162

13. अक्षरों की पहली भोर – डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 13
14. अक्षरों की पहली भोर – डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 69
15. मौन के स्वर – डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 57
16. मौन के स्वर – डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 64
17. मौन के स्वर – डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 75
18. मौन के स्वर – डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 77
19. मुक्ताकाश में – डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 11
20. मुक्ताकाश में – डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 14
21. मुक्ताकाश में – डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 28
22. मुक्ताकाश में – डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 41
23. शब्द की अनुगूँज– डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 12
24. शब्द की अनुगूँज– डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 43
25. शब्द की अनुगूँज– डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 52
26. काम्या – डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 25
27. काम्या – डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 26
28. काम्या – डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 52
29. नेपथ्य का सच– डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 19
30. नेपथ्य का सच– डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 80
31. तृष्णा तू न गई– डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 35
32. तृष्णा तू न गई– डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 56
33. नए सूरज की तलाश – डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 21
34. नए सूरज की तलाश – डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 29
35. नए सूरज की तलाश – डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 50
36. टिम टिम तारे – डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 15
37. टिम टिम तारे – डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 18–19
38. द्वार से धाम तक – डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 03
39. द्वार से धाम तक – डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 16
40. मेरी यूरोप यात्रा – डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 16
41. मेरी यूरोप यात्रा – डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 33
42. मेरी यूरोप यात्रा डॉ. उषा किरण सोनी पृ सं 35

43. घरौंदा, डॉ. उषा किरण सोनी पृ. सं 18
44. अक्षर से अक्षर' तक, डॉ. उषा किरण सोनी पृ. सं 12
45. अक्षर से 'अक्षर' तक, डॉ. उषा किरण सोनी पृ. सं 31
46. अक्षर से 'अक्षर' तक, डॉ. उषा किरण सोनी पृ. सं 63
47. अक्षरों की पहली भोर, डॉ. उषा किरण सोनी पृ. सं. 14
48. अक्षरों की पहली भोर, डॉ. उषा किरण सोनी पृ. सं. 50
49. मौन के स्वर, डॉ. उषा किरण सोनी पृ. सं. 28
50. मौन के स्वर, डॉ. उषा किरण सोनी पृ. सं. 88
51. मुक्ताकाश में, डॉ उषा किरण सोनी पृ. सं. 35
52. मुक्ताकाश में, डॉ. उषा किरण सोनी पृ. सं. 39
53. मुक्ताकाश में, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 79
54. शब्द की अनुगूँज, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 74
55. शब्द की अनुगूँज, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 94
56. काम्या, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 16
57. काम्या, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 33
58. काम्या, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 64
59. नेपथ्य का सच, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 13
60. नेपथ्य का सच, डॉ. उषा किरण सोनी,पृ. सं. 60
61. नेपथ्य का सच, डॉ उषा किरण सोनी, पृ. सं. 76–77
62. तृष्णा तू न गई..... डॉ उषा किरण सोनी पृ. सं. 12
63. तृष्णा तू न गई....... डॉ उषा किरण सोनी पृ. सं. 33
64. नए सूरज की तलाश, डॉ उषा किरण सोनी, पृ. सं. 65
65. नए सूरज की तलाश, डॉ उषा किरण सोनी, पृ. सं. 74–75
66. टिम टिम तारे, डॉ उषा किरण सोनी,पृ. सं. 4
67. टिम टिम तारे, डॉ उषा किरण सोनी, पृ. सं. 27
68. द्वार से धाम तक, डॉ उषा किरण सोनी, पृ. सं. 7
69. द्वार से धाम तक,डॉ उषा किरण सोनी,पृ. सं. 9
70. मेरी यूरोप यात्रा, डॉ उषा किरण सोनी, पृ. सं. 11–12
71. मेरी यूरोप यात्रा, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 17
72. मेरी यूरोप यात्रा, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 25

73. घरौंदा, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 8
74. घरौदा, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 22–23
75. 'अक्षर से 'अक्षर तक', डॉ उषा किरण सोनी, पृ.सं. 13
76. 'अक्षर से अक्षर तक', डॉ उषा किरण सोनी, पृ.सं. 25
77. 'अक्षर से अक्षर तक', डॉ. उषा किरण सोनी,पृ.सं. 66
78. अक्षरों की पहली भोर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 24
79. 'अक्षरों की पहली भोर',डॉ. उषा किरण सोनी,पृ. सं. 26
80. 'अक्षरों की पहली भोर', डॉ उषा किरण सोनी,पृ. सं. 41
81. मौन के स्वर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 33
82. मौन के स्वर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 81
83. मौन के स्वर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 82
84. मुक्ताकाश में, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 22
85. मुक्ताकाश में, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 47
86. मुक्ताकाश में, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 80
87. शब्द की अनुगूँज, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 71
88. शब्द की अनुगूँज, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 72
89. काम्या, डॉ. उषा किरण सोनी पृ. सं. 20
90. काम्या, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ. सं. 74
91. नेपथ्य का सच, डॉ. उषा किरण सोनी,पृ. सं. 23
92. नेपथ्य का सच, डॉ. उषा किरण सोनी,पृ. सं. 73
93. तृष्णा तू न आई,डॉ. उषा किरण सोनी,पृ. सं. 13
94. तृष्णा तू न गई, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 34
95. नये सूरज की तलाश, डॉ उषा किरण सोनी,पृ.सं. 13–14
96. नये सूरज की तलाश, डॉ उषा किरण सोनी,पृ.सं. 63
97. टिम टिम तारे, ड़ॉ उषा किरण सोनी, पृ.सं. 21
98. टिम टिम तारे, ड़ॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 24
99. द्वार से धाम तक,डॉ. उषा किरण सोनी, पृ. सं. 35
100. मेरी यूरोप यात्रा, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ. सं. 7
101. घरौंदा, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ. सं. 33
102. घरौंदा, डॉ. उषा किरण सोनी, पृत्र सं. 38

103. अक्षर से 'अक्षर' तक, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 40

104. अक्षर से 'अक्षर' तक, ड़ॉ. उषा किरण सोनी,पृ. सं. 89

105. पिनाक–जन– से मार्च 2010 – ड़ॉ. मनीषा शर्मा,पृ. सं. 21

अध्याय तृतीय

डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य में सामाजिक चेतना

अध्याय तृतीय

डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य में सामाजिक चेतना

साहित्य और समाज का घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। समाज में घटित प्रत्येक घटना का प्रभाव साहित्य में झलकता है। चाहे वह सामाजिक क्षेत्र हो या सांस्कृतिक, चाहे राजनैतिक हो या आर्थिक, या हो आध्यात्मिक सभी क्षेत्र साहित्य को प्रभावित करते है। आदि–अनादि काल से ही साहित्य में मानव के क्रिया–कलाप, आचार–व्यवहार, रहन–सहन, भाषा–भूषा, धर्म–कर्म आदि की झलकियाँ स्पष्ट नजर आती रही है। साहित्य और समाज एक ही सिक्के के दो पहलू है। समाज से भिन्न साहित्य की कल्पना नहीं की जा सकती।

साहित्य की परिभाषा अत्यन्त व्यापक है। क्योंकि साहित्य की परिभाषा के अन्तर्गत मनुष्य की सम्पूर्ण भावना और बोधन चेष्टाओं को अन्तर्भूत किया जा सकता है। साहित्य के विषय में मुंशी प्रेमचन्द कहते है कि – ''साहित्य उसी रचना को कहेंगे जिसमें कोई सच्चाई प्रकट की गई हो, जिसकी भाषा प्रौढ़ परिमार्जित और सुन्दर हो, और जिसमें दिल और दिमाग़ पर असर डालने का गुण हो और साहित्य में यह गुण पूर्णरूप से उसी अवस्था में उत्पन्न होता है, जब उसमें जीवन की सच्चाइयाँ और अनुभूतियाँ व्यक्त की गई हो।''[1]

मेथ्यु अर्नाल्ड – ''कविता या साहित्य जीवन की व्याख्या है।''[2]

हड़सन– ''साहित्य मूलतः भाषा द्वारा जीवन की अभिव्यक्ति है।''[3]

समाज की विविध प्रकार की गतिविधियों का ही साहित्य में अंकन किया जाता है। इसलिए साहित्य और समाज दोनों एक–दूसरे के पूरक है। डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य में जो सामाजिक चेतना के बिम्बों की झलक देखने को मिलती है, उसमे देशकाल, ग्रामीण एवं महानगरीय जीवन, पारिवारिक वातावरण, सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक वर्ग चेतना, नारी चिंतन, भू–मण्डलीकरण, वैयक्तिक चेतना और उत्तर आधुनिकता का प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है।

लेखिका अपनी साहित्य यात्रा का आरम्भ 'अक्षरों की पहली 'भोर' कविता संग्रह से करती हुई यथार्थ जीवनानुभूतियों को पाठक के समक्ष बड़ी शिद्दत के साथ प्रस्तुत करती है। इन्होंने अपने साहित्य की सभी विधाओं में समाज के वर्तमान दौर की पाठकीय जरूरतों को पूरा करने का सफल प्रयास किया है। इनके कहानी संग्रह 'काम्या', 'नेपथ्य का सच', 'तृष्णा तू न गई...', 'नए सूरज की तलाश' में समाज के प्रतिक्षण टूटते बिखरते सामाजिक सम्बन्धों को रचना रूप में प्रस्तुत कर समूचे समाजशास्त्र का आधार हमारे समक्ष उपस्थित किया गया है।

डॉ. उषा किरण सोनी के कहानी संग्रह 'नेपथ्य का सच' के विषय में मदन सैनी लिखते हैं कि–'नेपथ्य का सच' की कहानियों में मानवीय दुर्बलताएँ भी है, तो जीवन मूल्यों का उपस्थापन भी है! यहाँ स्वार्थपरता, छल–कपट, लोभ–मोह, ईर्ष्या–द्वेष, वैर–विरोध और घात–प्रतिघात भी हैं, तो परदुःख–कातरता, परोपकार, दया, क्षमा, वचन–पालन, सहनशीलता और स्वाभिमान की प्रतिष्ठा भी है।'' इनके साहित्य में दाम्पत्य प्रेम के विविध आयामों में नारी मन के उद्वेलन, मर्यादा–बंधन, आडम्बरहीनता आदि बिम्बों को नेपथ्य के झीने आवरण के भीतर झिलमिलाते हुए देखा जा सकता है, वहीं पुरुष–मन के छल–छद्म एवं स्वार्थपरता के बिम्ब भी दृष्टिगोचर होते दिखाई देते है।

लेखिका अपने जेहन में घुमड़ते विचारों को व्यक्त करते हुए यथार्थ के अनुभवों को व्यावहारिकता के धरातल पर प्रतिष्ठित कर यथार्थ को भिन्न–भिन्न कोणों से उजागर करती है। निम्नांकित बिन्दुओं के माध्यम से इनके साहित्य में सामाजिक चेतना की विस्तृत व्याख्या की जा रही है।

3.1 साहित्य और सामाजिकता के पारिस्परिक सम्बन्ध –

समाज में रहकर मनुष्य अपने अन्तः व बाह्य परिवेश के सम्पर्क में आता है और परिवेश से सम्पर्क स्थापित करता हुआ गतिशील होता है। गति चाहे उर्ध्व हो या सम अथवा अधः पर गति हमेशा होती है। क्योंकि गति ही जीवन है या यूं कहे कि जीवन ही गति है। मनुष्य की क्रिया प्रतिक्रिया से उत्पन्न ऊर्जा उसमें संवेदना को जन्म देती है और संवेदना बुद्धि से संचालित हो सृजन को प्रेरित करती है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी होने के नाते सभी के सुख–दुःख से सुखी व दुःखी होता है। यह कालातीत है किसी भी युग के संवेदनशील कवि या लेखक के लिए यह त्याज्य नहीं है। बात चाहे वर्तमान की हो रही हो लेकिन वह अपने भूत एवं भविष्य को भी समेटे रहता है। जैसे रामकथा या कृष्णगाथा, महाभारत गाथा हर काल में कही गई है, लेकिन प्रत्येक काल में हर एक रचनाकार द्वारा अलग–अलग रूपों में प्रस्तुत की जा रही है।

समय–समय पर संवेदनशील एवं चिंतनशील साहित्यकारों ने साहित्य के माध्यम से अपनी जीवनशैली व सुकर्मों द्वारा सामान्य–जन को मानवोचित मार्ग दिखाने का प्रयास किया है ताकि संसार भर में फैली एवं फैल रही संस्कारहीनता व सभ्यता के नाम पर किये जा रहे असभ्य व भ्रष्ट आचरण जैसी दुष्प्रवृत्तियों पर अंकुश लग सके।

डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य में साहित्य और सामाजिकता के पारस्परिक सम्बन्धों की अटूट शृंखला को देखा जा सकता है।

'अक्षरों की पहली भोर' कविता संग्रह की कविता 'नारी शक्ति' द्वारा नारी को समाज में अपना सम्मान तथा आत्म गौरव किस प्रकार से प्राप्त करना है, कविता से स्पष्ट हो जाता है।

'मत निर्भर हो अपनी कृति पर,
तुझ पर निर्भर है जग सारा।
अबला का चोला दे उतार,
मुट्ठी में होगा जग सारा।'[4]

नारी को अबला का चोला उतार कर आत्म निर्भर बनने का आह्वान कविता में किया गया है।

लेखिका ने समाज के प्रत्येक कोण को अपनी लेखनी से स्पर्श किया है। कोई भी कोना समाज का अनछुआ उनकी लेखनी से नहीं रहा। 'मौन के स्वर' कविता संग्रह की कविता 'बंद द्वार के पीछे' द्वारा समाज का सच उजागर करती कविता की पंक्तियाँ दृष्टव्य है।

'बंद द्वार के पीछे
बोली लगती यौवन धन की
हत्या होती कोमल मन की
होता अनाचार कलियों पर
ममता रोती तड़प–तड़प कर।'[5]

समाज में हो रहे अनाचार, भ्रष्टाचार, देशद्रोह पर लेखिका ने तीखा प्रहार किया है।

'सालता है मुझे
वर्षों से एक यक्ष प्रश्न
क्या है जो खड़ा है
मानवों के बीच दीवार बन।'[6]

'मुक्ताकाश में' कविता संग्रह की कविता 'यक्ष प्रश्न' में समाज में हो रहे मानवता के हनन की गाथा मुखरित हुई है।

'शब्द की अनुगूँज' कविता संग्रह की – 'अज़ब व्यवहार', 'कल–आज', 'ऐसे बनी नारी', ऐ नारी', 'पहचान', 'सृष्टि की धुरी', 'आदमी', आदि कविताओं में साहित्य और समाज के पारस्परिक सम्बन्धों को वाणी प्रदान की गई है।

'उस प्रकाशवृत्त के नीचे था घना अंधकार
बैठ गए वृद्ध जनक वही अपने मन को मार

लगे सोचने – है कैसा अज़ब व्यवहार

अपने ही अंश से नहीं सम्मान का अधिकार'।[7]

'अजब व्यवहार' कविता में वर्तमान समाज में आ रहे रिश्तों में बदलाव, माता–पिता की उपेक्षा का वर्णन हुआ है, जो कटु सत्य है। आज संतान माता–पिता को वो सम्मान नहीं दे पा रही, जिनके वे अधिकारी है। समाज का सत्य उजागर करती, संवेदना जाग्रत करती यह कविता बहुत ही मार्मिक है।

'धुरी न हो तो
चक्र चले ना
जीवन ही रुक जाएगा
चक्र रुका तो
गति न होगी
सृष्टि क्रम थम जाएगा।'[8]

'सृष्टि की धुरी' कविता में नारी के प्रति सम्मान की भावना जाग्रत करते हुए उसे समाज निर्माण में सहायक सृष्टि की धुरी माना गया है। साहित्य और समाज के पारस्परिक सम्बन्ध को उद्घाटित करती इनकी कविताएँ सामाजिक चेतना जाग्रत करती है।

'कैसी अज़ीब है यह समाज जो किसी लड़की का विवाह करने के बाद इस बात से कोई सरोकार नहीं रखता कि वह सुखी भी है या नहीं। यदि सुखी होती है तो श्रेय सभी ले लेते है और सुखी नही होती तो कुछ दिनों तक तो वह सहानुभूति की पात्र होती है फिर व्यंग्य बाणों की और श्रेय जाता है लड़की के भाग्य को।'[9]

लेखिका ने 'काम्या' कहानी संग्रह की कहानी 'चाँदनी के फूल' के माध्यम से समाज के कटु सत्य को उजागर किया है। इस कहानी की नायिका सीता के माध्यम से समाज के सच को लेखिका ने पाठक के समक्ष रखा है तथा भारतीय नारी के आदर्श को उद्घाटित किया है।

'विवाह के बाद यदि पूरे परिवार का स्नेह मुझे न मिल सका तो आजीवन विवाह का सुख अधूरा ही रहेगा। तुम्हारे माता–पिता ने ठीक ही कहा है। हमें उनकी इच्छा व स्नेह का आदर करना चाहिए सिद्धार्थ। मैं जानती हूँ, यह कठिन तो होगा पर असंभव नहीं। हम जीवन को केवल अपने लिए नहीं, सभी के लिए जिएँगे।'[10]

'नेपथ्य का सच' कहानी संग्रह की कहानी 'समाधान' में अन्तर्जातीय विवाह समाज में अस्वीकार्य है। अवंतिका की दूरदृष्टि, समाज में संबन्धों की महत्ता प्रदान करने वाली सोच सराहनीय है। सिद्धार्थ के माता–पिता दूसरी जाति में विवाह करना समाज के नियमों

के खिलाफ मानते है। ट्रेन में मिले जज साहब द्वारा इसका समाधान अवंतिका के निर्णय द्वारा होता है। लेखिका समाज में मान्य भारतीय हिन्दू विवाह परम्परा को महत्व प्रदान करती है विवाह एक पवित्र संस्कार होता है जो वंश परम्परा को आगे बढ़ाता है।

'चिंता चिता समान होती है। घृणा, क्रोध, क्षोभ और बेकारी सभी ने एक साथ आक्रमण कर अखिल को बिस्तर पकड़ा दिया। उसे टायफाइड़ हो गया। सुनंदा मौन बनी प्राण पण से उसकी सेवा में लगी रहती। पास ही डोलता निखिल उसे प्यार से तोतली भाषा में पापा कह कर पुकारता तो उसके तन–बदन में आग लग जाती।'[11]

समाज में पति–पत्नी का रिश्ता बहुत ही कोमल और पवित्र होता है। अखिल विदिशा नामक स्त्री से प्रेम करता है और आजीवन अपनी पत्नी को स्पर्श न करने की शर्त पर सुनंदा से विवाह कर लेता है। पहले तो सुनंदा सोचती है कि सुन्दर पत्नी को पाकर अखिल पर–स्त्री को छोड़ उसे अपना लेगा लेकिन वह असफल रही किन्तु उसकी सहेली के सहयोग से डॉक्टरी जाँच के बहाने अखिल के अंश को सुनंदा में प्रवेश करवाकर वह अपना अधिकार प्राप्त करने में सफल रही। लेखिका ने 'अधिकार' कहानी के माध्यम से साहित्य और समाज के पारस्परिक सम्बन्ध को बखूबी अभिव्यक्ति प्रदान की है।

'आज सुबह कपड़े बदलते समय दोनों लाटरी के टिकट उसके हाथ लगे। उसे याद आया कि इनका परिणाम तो कल ही निकल गया होगा यानि आज के अखबार में होगा। मन में आया कि आज का अखबार माँग कर देखूँ फिर अपनी फूटी किस्मत का विचार आते ही उसने टिकट वापस जेब में रख लिए पर हाय रे मानवमन! उसके मन में आशा का एक अंकुर उग आया था।'[12]

पुरुष प्रधान समाज में पुत्र के जन्म पर खुशी और पुत्री के जन्म पर दुःख प्रकट किया जाता है। 'नए सूरज की तलाश' कहानी संग्रह की कहानी 'वाह रे मानुष मन' के माध्यम से लेखिका ने समाज के घटना चित्र, मानसिक सच को पाठक के समक्ष रख साहित्य और समाज के पारस्परिक सम्बन्ध को अभिव्यक्ति प्रदान की है।

3.2 डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य में देश और काल की व्याप्ति –

प्राचीन काल से ही साहित्य में देश और काल का चित्रण होता आया है। अपने लिए लिखने को साहित्य नहीं कहते है, साहित्य में सम्पूर्ण देश–काल, परिस्थिति, परिवेश का कलेवर समाहित होता है। आदिकाल से ही समाज में हो रहे बदलाव को साहित्य के द्वारा उद्घाटित किया जा रहा है। वैदिक कालीन साहित्य में वर्णित वर्णाश्रम व्यवस्था, रीति–रिवाज़, परम्परा, मूल्यों में आ रहे परिवर्तन को हम वर्तमान साहित्य में तुलनात्मक अध्ययन द्वारा जान सकते हैं। परिवर्तन समाज का नियम है तथा परिवर्तन नवीनता का

द्योतक भी है। इसलिए समय के साथ व्यवस्थाओं एवं विचारों में बदलाव आना स्वाभाविक है। वर्तमान समय की परिस्थितियाँ लेखक को कलेवर प्रदान कर साहित्य निर्माण में सहयोग करती है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल एवं अन्य साहित्येतिहासिक लेखकों का साहित्येतिहास इस बात की पुष्टि करता है कि समय व परिस्थितियाँ ही साहित्य में झलकती है। वह चाहे आदिकाल हो, या वीरगाथा काल, या हो रीतिकाल एवं आधुनिक काल। देशकाल की व्याप्ति प्रत्येक लेखक के साहित्य में दृष्टिगत होती है। कोई भी लेखक इससे परे साहित्य निर्माण की कल्पना भी नहीं कर सकता। समय एवं परिस्थितियों के अनुरूप समाज की संकल्पना भी बदल रही है। बहुत पहले प्राचीन काल में अरस्तु ने कहा था कि –''मनुष्य स्वभाव से ही सामाजिक प्राणी है और जो मनुष्य समाज में नहीं रहता, वह या तो ईश्वर है या जंगली पशु है।''

महावीर प्रसाद द्विवेदी ने साहित्य का लक्ष्य स्पष्ट करते हुए कहा है–''जो वाग्जाल मनुष्य को दुर्गतिहीनता और पर–मुखापेक्षिता से बचा न सके, जो उसकी आत्मा को तेजोदीप्त न बना सके, जो उसके हृदय को पर–दुःख कातर और संवेदनशील न बना सके, उसे साहित्य कहने में मुझे संकोच होता है।''[13]

साहित्य मानव की बौद्धिक चेतना को प्रखर कर उसे वैयक्तिक एवं सामाजिक जीवन मूल्यों की दिशा प्रदान करता है। उसे सफलतापूर्वक जीवन जीने के लिए प्रेरित करता है। साहित्य की उपज समाज की ही देन है। साहित्य समाज से निरपेक्ष नहीं वरन् साहित्य समाज सापेक्ष है। स्पष्ट है दोनों का गहरा सम्बन्ध है और आज तो साहित्य समाज का अभिन्न अंग बन चुका है। साहित्य में समाज की तमाम सांस्कृतिक, सामाजिक तथा अन्य गतिविधियों का सही चित्रण है, जो समाज को एक नई दिशा प्रदान करता है। साहित्यकार ने जिस परिवेश में अपना जीवन बिताया है, उसका ही अनुभव साहित्य में झलकता है।

डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य में भी देश और काल की व्याप्ति को देखा जा सकता है।

'गांभीर्य का पर्याय कहाता था जो सागर
उच्छृंखल हो तट पर आकर क्रोधित रत्नाकर
छीन कर ले गया सब खेल और खिलौने
धरातल पर बिछा गया शवों के नगीने
मानो शिव ने अपनी तीसरी आँख खोली है

अरे! यह कैसी होली है ?' [14]

प्रगति पथ पर अंधाधुंध बढ़ते हुए मनुष्य ने अनाचार को प्रश्रय दिया और बालक के बालपन को भी छीन लिया है। लेखिका ने वर्तमान समय में आ रहे बदलाव के प्रति अपनी गहरी संवेदना व्यक्त की हैं।

'लोक से फ़िल्म तक पहुँचे
नायकत्व से सीख
पूज्य पिता और माता श्री का
नर–मादा कह करवाती पहचान
कितनी बदल गई संतान?' 15

'मौन के स्वर' कविता संग्रह की कविता 'कितना बदल गया' में वर्तमान समय में पाश्चात्य संस्कृति के कारण आ रही मूल्यहीनता का वर्णन हुआ है। इस बदलाव ने हमारे पारम्परिक मूल्यों का हनन किया है।

इसी प्रकार कहानी संग्रह तथा अन्य निबन्ध संग्रह, बालोपयोगी यात्रावृतांत में भी देश और काल की व्याप्ति को देखा जा सकता है।

''विजय कहाँ है ?'' स्निग्धा ने प्रश्न किया।

''साहब तो सुतापा मैडम के साथ दो दिन के लिए खंड़ाला गए है''।

नौकर का जवाब सुन कर स्निग्धा के पैरों तले से जैसे ज़मीन खिसक गई। सुतापा चक्रवर्ती उसी की कम्पनी की पूना ब्रांच की अधिकारी थी, जो स्निग्धा के स्थान पर आई थी।

स्निग्धा ने अपने आप को एक ऐसी खौफ़नाक सड़क पर खड़ा पाया, जो दोनों तरफ से बंद थी आखिर इस रास्ते को उस ने खुद ही चुना था।[16]

सदियों से देवी रूप में प्रतिष्ठा पाने वाली नारी वर्तमान समय में स्वतन्त्र रूप से पुरुषोचित कामों में लिप्त हो अपने को भी पुरुष के समान स्वतन्त्र पर–पुरुष गामी बनाकर अपनी स्मिता को खो रही है। इस कहानी में पुरुष ही नहीं स्त्री भी दुष्प्रवृत्ति की शिकार हो अपने को उस स्थान पर खड़ा कर लेती है, जहाँ उसके लिए सारे रास्ते बन्द हो जाते है। इस भौतिकवादी पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव को 'काम्या' कहानी में दर्शाया गया है।

'रजिस्ट्रार के दफ्तर में तो इंटरनेट की सुविधा नहीं थी इसलिए वर वधू रजिस्ट्रार के सामने विवाह के हस्ताक्षर कर, वेब कैमरे के सामने खड़े होकर माला पहना रहे थे ताकि भारत में बैठे दोनों के परिजन भी उनके विवाह यानि वरमाला डालने की रस्म को आँखों से देख सकें।'[17]

सूचना और प्रौद्योगिकी के युग ने वर्तमान समय में काफी परिवर्तन ला दिया है और पाश्चात्य संस्कृति ने तो रही–सही कसर पूरी कर दी। आज रिश्तों में मात्र औपचारिकता रह गई है। 'एक शादी ऐसी भी......' कहानी देश और काल की व्याप्ति को इंगित करती है।

'प्रिंस ने 15वीं शताब्दी में स्पेन के तानाशाह से युद्ध कर नीदरलैंड को स्वतंत्रता दिलाई व देश में स्वतंत्रता, समानता और भाईचारे का प्रचार–प्रसार किया था। स्वतंत्रता के इस महानायक को स्पेन के तानाशाह की आज्ञा पर एक फ्रांसीसी क्रूर हत्यारे बल्थासर जेरार्ड ने गोली मार दी थी। बाद में यह हत्यारा पकड़ा गया और इसके शरीर के टुकड़े कर कुत्तों को खिला दिया गया तथा 'प्रिंस विलियम ऑफ़ ऑरेंज' को ससम्मान इस चर्च में दफ़नाया गया। नीदरलैंड के राष्ट्रगीत में कुल पंद्रह पंक्तियाँ हैं जो उनके राष्ट्रपिता अर्थात प्रिंस के नाम के पंद्रह वर्णों से प्रारंभ होती हैं। न्यू चर्च का मुख्य आकर्षण हैं– काँच की सत्रह विशाल खिड़कियाँ, जो संसार के श्रेष्ठ चित्रकारों द्वारा चित्रित की गई हैं।'18

लेखिका ने नीदरलैण्ड की विशेषता यथा प्राकृतिक सौन्दर्य, यातायात व्यवस्था, सड़कों की स्वच्छता वहाँ के योजनाबद्ध मकान, दुकान, द्वितीय विश्वयुद्ध का महत्व, एनी फ्रेंक की डायरी तथा वहाँ की कला संस्कृति का वर्णन अपने यात्रावृतान्त में कर देश और काल की व्याप्ति के दृश्यबिम्ब उपस्थित किये है।

'गोविंदा टूरिज़्म एक सूरीनामी कंपनी है, शायद इसीलिए बस के अधिकांश पर्यटक भारतीय या सूरीनामी थे। पर्यटकों की सुविधा व मनोरंजन के लिए बस में लगे सभी टेलीविज़नों पर हिन्दी गानों के वीडियो एल्बम, हिन्दी फ़िल्में या कार्टून फ़िल्में दिखाई जा रही थीं। बीच–बीच में गाइड–कम–केयरटेकर–कम–टिकट चेकर–कम–कंडक्टर, सुनीता नामक सूरीनामी महिला अपनी विशिष्ट भोजपुरी मिश्रित सूरीनामी हिन्दी, डच व अंग्रेजी में लगातार आवश्यक सूचनाओं के साथ–साथ अपने बोलने के अनूठे अंदाज़ से भी यात्रियों का मनोरंजन कर रही थी।'[19]

लेखिका 'मेरी यूरोप यात्रा' बालोपयोगी यात्रावृतांत में नीदरलैण्ड, डेन हॉग, फ्रांस की सांस्कृतिक विशेषताओं को अपनी लेखनी से लिपिबद्ध कर पाठक को यूरोप की जानकारी भी प्रदान करने में अहम भूमिका निभा रही है।

'हरिद्वार' अपनी प्राकृतिक सुषमा के कारण अकिंचन मानव को सचमुच हरि–हर के द्वार पर ला खड़ा करता है जहाँ वह कर्त्ता की कृपा के सौंदर्य के दर्शन करते नहीं अघाता। यहाँ प्रकृति उसे 'हर' के कल्याणकारी व 'हरि' के प्रेममय स्वरूप का प्रत्यक्ष दर्शन कराती है। पहाड़ उसे अपनी ओर बुलाकर मानो चुनौती सी देते लगते हैं कि आओ! पृथ्वी पर

स्वर्ग देखना है तो ऊपर आओ, जितने ऊपर आओगे उतना अधिक नैसर्गिक सौंदर्य अपनी झोली में भर सकोगे।'[20]

लेखिका द्वारा बालोपयोगी यात्रा वृतांत 'द्वार से धाम तक' के माध्यम से 'हरि' के द्वार हरिद्वार के नैसर्गिक सौन्दर्य की अनुपम सौन्दर्यानुभूति करवा कर देश और काल की व्याप्ति के बिम्बों की छटा बिखेरी गई है।

'चट्टी नाम से जुड़े स्थानों पर छोटे–छोटे होटल, ढाबे, गाड़ियों की मरम्मत के लिए गेराज़ तथा आवश्यक वस्तुओं की दुकानें खुलती गई। अब तो इन स्थानों पर छोटे–छोटे बाज़ार भी हैं और गाँव भी बसे हुए है। अब तो जानकीबाई चट्टी तक जीपें चलती है। अंतिम छह कि.मी. की दूरी पैदल या खच्चर पर पार की जाती है। पर्यटन विभाग भैरव मन्दिर तक सड़क बनाने का कार्य लगातार कर रहा है।'[21]

भारत के उत्तरी भाग में स्थित उत्तराखण्ड के चार धाम यमुनोत्री, गंगोत्री, केदारनाथ, बद्रीनाथ धाम का वर्णन अपनी पुस्तक 'द्वार से धाम तक' में कर इन स्थानों की जानकारी प्रदान की है। चट्टी का अर्थ होता है– ठहरने का स्थान जिन्हें अलग–अगल नामों से जाना जाता है। लेखिका ने अपने साहित्य में देश और काल का वर्णन कर बालमन की कुंदकली को खोलने का उपक्रम किया है।

'भारत के परतंत्रकाल में (1945 में) हुए द्वितीय विश्वयुद्ध में हुए भयंकर नरसंहार की प्रतिक्रिया स्वरूप दिनकर ने 'कुरूक्षेत्र' की रचना की जो 1946 में प्रकाशित हुआ। कथानक का मूल स्रोत महाभारत है, कथा शांतिपर्व से ली गई है। कवि ने अपनी मौलिक प्रतिभा से भीष्म और युधिष्ठिर के वार्तालाप द्वारा मानव समाज की समस्याओं की जड़–युद्ध की निंदा की है पर जब शत्रु द्वार पर आ जाए तो युद्ध करना अनिवार्य हो जाता है।'[22]

क्रान्ति के अमर गायक–राष्ट्रकवि 'दिनकर' निबन्ध में देश और काल की व्याप्ति को बख़ूबी देखा जा सकता है।

'भारत में पैर रखते ही उनके माथे पर सवर्ण न होने का ठप्पा वापस लग गया था। इतने बड़े पद पर आसीन होने के बावजूद सवर्ण चपरासी उन्हें एक गिलास पानी देना भी अपनी शान के खिलाफ समझता। अमरीका प्रवास के दौरान उन्होंने अपनी स्वतंत्रता व समानता का उपभोग किया था अतः इस प्रकार का व्यवहार अब उन्हें सहन न हुआ। उन्होंने बड़ौदा नरेश को अपनी दयनीय स्थिति से अवगत कराया पर कोई लाभ न हुआ अंत में भीमराव ने अपना त्यागपत्र दे दिया और मुम्बई वापस आकर 'सीडेन होम' कॉलेज में प्राध्यापक के रूप में अपना जीवन पुनः प्रारम्भ किया।' [23]

स्वतंत्रता से पूर्व हमारे देश में इसी प्रकार का जातिगत भेदभाव किया जाता था उस दंश को भारत के संविधान निर्माता बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर ने भी भोगा।

3.3 डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य में पारिवारिक चेतना –

परिवार ही वह धुरी है जिसके इर्द–गिर्द समाज फल–फूल रहा है। परिवार से ही समाज बनता है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। परिवार उसकी पहली आवश्यकता है, क्योंकि परिवार में जन्म लेकर ही वह समाज में अपनी पहचान व स्थान बनाता है। इसलिए परिवार के बिना समाज की कल्पना ही नहीं की जा सकती।

परिवार में रहकर ही व्यक्ति नैतिक मूल्य, आदर्श, रीति–रिवाज, परम्परा, आचार–व्यवहार सीखता है और सामाजिक जीवन जीने लायक उच्चादर्श प्राप्त करता है। समाज के नियमों का पालन प्रत्येक परिवार को करना होता है। अगर कोई नियमों को लाँघता है या नियम विरूद्ध कार्य करता है तो समाज में उसे सम्माननीय स्थान प्राप्त नहीं होता तथा समाज में उसका जीना दुष्कर हो जाता है। परन्तु कुछ नियमों, रूढियों, परम्पराओं को तोड़ने की आवश्यकता वर्तमान समय में महसूस की जा रही है।

'कविता की वैचारिक भूमिका' में डॉ॰ नरेन्द्र मोहन समझाते हुए कहते है कि– ''युग और आधुनिकता के प्रारम्भ में ही मनुष्य द्वारा अपनी स्थिति के प्रति असंतोष और विद्रोह करने तथा पुरानी मान्यताओं के विरोध में खड़े होने की संकल्प–मुद्रा दृष्टिगत होती है।''

आज मनुष्य अपने अधिकारों के प्रति अत्यधिक सजग, संघर्षशील तथा मुक्तिकामी बना हुआ है। परिणाम स्वरूप रूढ़ियों और परम्पराओं से लोहा लेने की इच्छा रखते हुए वह समाज में सामाजिक चेतना व पारिवारिक चेतना लाना चाहता है।

अनुभव के फलक की चितेरी डॉ॰ उषा किरण सोनी ने अपने साहित्य में पारिवारिक चेतना जाग्रत करने वाले बिम्बों को उकेरा है। प्राचीन काल से आज तक समाज के स्वरूप में बदलाव देखा जा रहा है। समय और उसके अनुरूप समाज की संकल्पना भी बदल रही है।

'भाव सारे सो गए, अर्थ सारे खो गए
शगुन सारे लुंठित हो, क्षत–विक्षत हो गए
पतझड़ के पातों सी झड़ गईं आशाएँ
अब तक के सारे विश्वास घायल हो गए ।'[24]

'मुक्ताकाश में' कविता संग्रह की कविता 'तब्दील हो गए', द्वारा समाज में फैल रही स्वार्थपरता, धनलोलुपता, अहंकार की अतिशयता से पारिवारिक रिश्तों में आ रही कटुता एवं

बदलाव की सत्यता को अभिव्यक्ति प्रदान कर पारिवारिक चेतना जाग्रत करने का प्रयास लेखिका द्वारा किया गया है। आज मनुष्य चन्द सिक्कों की भूख में रिश्तों को भूल चुका है।

'एक तो चाय अच्छी न होने की खीझ, दूसरे मित्र के सामने प्रशंसित व पढ़ी–लिखी सुन्दरी पत्नी का अनाड़ीपन प्रदर्शित हो गया था, तीसरे सुजाता का तुनककर बोलना, आदित्य को बिल्कुल पसन्द नहीं आया। उसने जरा जोर से और चिढ़े स्वर में कहा, ''आज पैसे है तो नौकर–चाकर है, कल न होंगे तो ? ऐसी भी क्या पत्नी जो एक कप चाय भी न बना सके।'' [25]

परिवार में पति–पत्नी का रिश्ता बहुत ही नाजुक होता है। ज़रा सी भूल, नासमझी रिश्तों में दरार पैदा कर देती है। झूठे अहंकार, नासमझी में साथी की भावना की कद्र ना करना सुजाता का जीवन बर्बाद कर पति–पत्नी का तलाक करा देता है। थोड़ी सी समझ और धैर्य यदि होता तो शायद यह नौबत कभी नहीं आती। लेखिका ने 'एक कप चाय' कहानी के माध्यम से पारिवारिक विघटन को रोकने के प्रति चेतना जाग्रत की है।

'नए जीवन के नए मित्रों और युवा चिड़ियों से तुलना करने पर उसे चिड़ा–चिड़ी और भी गंदे लगते। अब परिंदा पुराने घौंसले पर बिल्कुल नहीं आता, बस कभी–कभी हाल–चाल पूछ कर कर्त्तव्य का निर्वाह कर देता।' [26]

वर्तमान समय में पारिवारिक रिश्तों में आ रहा बिखराव 'परिंदा' कहानी के माध्यम से समझा जा सकता है। आज परिवार में बूढ़े माता–पिता का मित्रों से परिचय कराने में सन्तान को शर्म आती है वो यह भूल जाते है कि हमारे जन्मदाता ने हमें कितने कष्टों, मुसीबतों से पाल–पोसकर समाज में गर्व से जीने योग्य बनाया है, वो भी तो कभी बूढ़े होकर ऐसे ही दिखेंगे तब अगर उनकी सन्तान द्वारा भी इस प्रकार की उपेक्षा की जायेगी तब उन पर क्या बीतेगी ? लेखिका ने पारिवारिक रिश्तों के विघटन को 'परिंदा' कहानी के माध्यम से अभिव्यक्ति प्रदान की है जो नितान्त सत्य है।

'पंद्रह दिनों बाद वर पक्ष से अस्वीकृति का पत्र पाकर दिवाकर ने राहत की साँस ली। सलोनी का दिल बैठ गया। वह अब भली–भाँति समझ गई थी कि उसके जीवन में कभी बहार न आयेगी। वह अक्सर अपनी भैरवी भाभी को याद करती। भैरवी उसके दूर के चाचा श्रीराम के पुत्र धीरेन्द्र की पत्नी थी। जब स्कूल जाना बन्द किया था तब उसे भैरवी भाभी ने बहुत समझाया था।' [27]

वर्तमान समय में प्रत्येक रिश्ता स्वार्थ से बँधा है। परिवार में कुछ माता–पिता भी इससे अछूते नहीं, सलोनी को घर के काम–काज में रूचि होने के कारण उसने स्कूल जाना बंद कर दिया। भाई को शादी के बाद उसकी पत्नी अपने धनी पिता के व्यवसाय में

लगा अपने साथ ले गई। सलोनी पूरा घर सँभालने लगी तो माता–पिता भी मन से बेटी को विदा नहीं करना चाहते थे। उम्र के इस पड़ाव पर सलोनी को अपनी भाभी के वचन याद आते है। आज अगर वह पढ़–लिख जाती तो स्वयं फैसला लेकर अपने जीवन में खुशियाँ ला सकती। परन्तु स्वार्थी माता–पिता ने उसके सारे सपने चूर–चूर कर उसे मरणशय्या पर ला दिया। कहानी के माध्यम से लेखिका द्वारा पारिवारिक चेतना जाग्रत की गई है।

'अनमोल के रूसी नागरिकता ग्रहण कर, रूसी तरूणी से विवाह कर लेने की सूचना भारतीय दूतावास की सहायता से भारत भेज दी गई। सरकारी तंत्र ने यह सूचना अहमदाबाद में उसके परिवार को दी। कुछ दिनों तक तो अनमोल भयभीत रहा कि उसकी प्रथम पत्नी और स्वयं उसके माता–पिता कोई बखेड़ा खड़ा करेंगे पर ऐसा कुछ न हुआ।'[28]

लेखिका ने 'छाती में जमी बर्फ़' कहानी के द्वारा भारतीय नारी के आदर्श को प्रस्तुत कर समाज में पारिवारिक चेतना जाग्रत करने का प्रयास किया है। सुहासिनी अनमोल के द्वारा किये गए छल को उसके माता–पिता से भी छुपाती है कहीं उन्हें पता चलेगा तो दुःख होगा। परन्तु उन्हें पता चल ही जाता है। अनमोल की करतूत से उन्हें पीड़ा होती है। सुहासिनी उनसे आगे की पढ़ाई जारी रखने का आशीर्वाद प्राप्त कर अपने पैरों पर खड़ी हो समाज में अपनी पहचान बनाती है। सुहासिनी जैसा दृढ़ चरित्र व देवत्व केवल भारत में ही देखने को मिलता है।

'तत्कालीन समाज में परिवार विघटित हो रहे थे। पति–पत्नी के बीच समर्पण का भाव घट रहा था। मुगल शासकों के अनुकरण में, पत्नी के रूप में भी, स्त्री मात्र भोग्या बन कर रह गई थी और पुरुष स्त्री का पूरक नहीं स्वामी बन गया था। ऐसी परिस्थिति में पति–पत्नी के सहयोगी व पूरक भाव को प्रश्रय देना, पत्नी का पति को समय–समय पर सुझाव देना व सेवाभावी होना, पति द्वारा पत्नी व अन्य परिजनों का सहायक व संरक्षक होना आदि को अपनी कृतियों में स्थान देकर तुलसी ने परिवार के आदर्श रूप की प्रतिष्ठा की।'[29]

रामचरित मानस के रचयिता गोस्वामी तुलसीदास ने समय की माँग को पहचानते हुए पारिवारिक आदर्श प्रस्तुत किये। लेखिका अपने निबन्ध 'तुलसी की लोकोन्मुखी चेतना' द्वारा समाज में पारिवारिक चेतना लाना चाहती है। लेखिका अपनी कलम कूँची से लोकानुभव तथा यथार्थ जीवनानुभवों को प्रश्रय देकर समाज में पारिवारिक जाग्रति लाने तथा समाज को नई दिशा प्रदान करने का प्रयास करती है। इनके सम्पूर्ण साहित्य में पारिवारिक चेतना के स्वरों की गूँज सुनाई देती है।

3.4 डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य में ग्रामीण और नगरीय जीवन –

हमारा भारत देश गाँवों का देश रहा है। इस देश की संस्कृति सर्वाधिक गाँवों में ही फली–फूली है। बढ़ती जनसंख्या, मशीनीकरण, भू–मण्डलीकरण ने गाँवों को नगरों में तब्दील कर दिया। रोजगार की तलाश में लोग नगरों की ओर बढ़ने लगे। ग्रामीण और नगरीय जीवन में जमीन–आसमान का अन्तर पाया जाता है। दोनों की जीवन–शैली, आचार–विचार, रीति–रिवाज, परम्पराएँ, धर्म–कर्म तथा उत्पादन के साधनों पर स्वामित्व प्रत्येक क्षेत्र में भिन्नता देखने को मिलती है।

डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य की चर्चा हम करें तो पाते है कि इन्होंने भिन्न–भिन्न कोणों से ग्रामीण एवं नगरीय जीवन को अभिव्यक्ति प्रदान की है। तुलनात्मक अध्ययन द्वारा ग्रामीण एवं नगरीय जीवन की व्याख्या बहुत ही मार्मिक एवं संवेदना जाग्रत करने वाली है।

'देखा था
कुछ दिन पहले गाँव की
बाहरी बड़ी सड़क के किनारे
खेतों की माटी में
नई इमारतों के बीजों का प्रस्फुटन
देखते–देखते
उग आई खेतों में
बहुमंज़िली इमारतों की फ़सल।'[30]

भोगवादी संस्कृति ने प्रकृति से छल कर गाँवों को अपने स्वार्थवश नगरों में तब्दील कर दिया। गाँवों की मिट्टी में अब फसलों की जगह बड़ी–बड़ी इमारतें उग आई हैं। इस प्रकार प्राणी वस्तुओं, वाहनों, विचारों की भीड़ में अपने घर का सपना पूरा कर रहा है।

'छोड़ कर खुली हवा और परिश्रम
भाग रहा भ्रमित युवा शहर की ओर
प्रदूषित जल, वायु और खाद्यों से
भोग रहा अनजाने अनगिन रोग।'[31]

पाश्चात्य संस्कृति ने समाज में जीवन के तौर–तरीकों, रीति–रिवाज़, रहन–सहन आदि में काफी बदलाव ला दिया है। यही कारण है कि मानव गाँवों की खुली हवा छोड़ शहरों में घुटन भरा जीवन जीने को मजबूर है और इसे ही वह गाँवों का विकास मान रहा है। प्रदूषित जल, वायु और खाद्यों से कई रोगों का शिकार होता जा रहा है। जो छाछ

गाँवों में यूँ ही मिल जाया करती थी शहरों में पैसों में बिकती है। मक्के–बाजरे की रोटी की जगह डबल रोटियाँ, चिप्स, पेप्सी–कोला, नूडल्स की दुकानें सज गई है। आज जो ग्रामीण व नगरीय जीवन शैली में अन्तर देखा जा रहा है, वह पाश्चात्य संस्कृति तथा भोगवादी संस्कृति की देन है जिसे लेखिका ने 'विकास' कविता में अभिव्यक्ति प्रदान की है।

हर रस्म के समय नीहारिका और षोडसी भी वहाँ उपस्थित रहते घर की वृद्ध व प्रौढ़ महिलाएँ रस्सों को पूरा करने के लिए नीहारिका को हर बार आमंत्रित करतीं पर षोडसी को इस प्रकार का आमंत्रण न मिलता। षोडसी चुपचाप एक ओर बैठी देखती रहती या नंदिनी द्वारा सौंपे गए किसी साधारण से काम के निष्पादन में लगी रहती। उसे अपनी अवहेलना अच्छी न लगती। 'परिवार में आई हुई, पाश्चात्य वस्त्रों में सजी–धजी किशोरियाँ व अविवाहित युवतियाँ षोडसी को उपहास की दृष्टि से देखतीं और प्रौढ़ाएँ तिरस्कार की दृष्टि से।'[32]

'षोडसी' कहानी में ग्रामीण एवं नगरीय जीवन का अन्तर स्पष्ट किया गया है। षोडसी का पाश्चात्य शैली के वस्त्राभूषण, रहन–सहन नंदिनी व आस–पड़ोस की महिलाओं को बड़ा अज़ीब लगता, खासकर ग्रामीण परिवेश में एक शादी–शुदा महिला को सुहाग चिह्नों को धारण न करना अच्छा न लगता। यहाँ तक कि वह उसे सधवा भी नहीं मानती। कुमार साहब के बड़े पौत्र की शादी में प्रौढ़ महिलाएँ उसे तिरस्कार की दृष्टि से देखती विवाह की विभिन्न रस्मों को निभाने के लिए वह उसे पास न बुलाती। उनकी व्यंग्यात्मक मुस्कान व महिलाओं की फुसफुसाहट से चोटिल हो षोडसी अलमारी में सहेज कर रखी विवाह की पोशाक तथा हल्का साज–श्रृंगार कर माथे पर बिन्दी लगा जब वह नीचे आकर नीहारिका व नंदिनी के चरण स्पर्श करती है तो महिलाएँ पूँछती है यह नई बहू कौन है। फिर विवाह की सारी रस्में उसी के हाथों करवाती और षोडसी मुस्कराती हुई उनके साथ चल पड़ती है। यहाँ लेखिका ने बहुत खूबसूरत तरीके से ग्रामीण जीवन और नगरीय जीवन की व्याख्या की है।

'नहीं दिखती खेतों में सजी मोम सी ओस
मेड़ों पर चरते–बतियाते हिरन–खरगोश
सुख–दुःख में भाई या हितैसी पड़ोस
हरियाया तन–मन और मुख पर संतोष
टेरते हे मुझको माँझी के गीत और नदिया में नाव
फ़िसल गया न जाने कहाँ मेरा प्यारा गाँव।'[33]

'मौन के स्वर' कविता संग्रह की कविता 'ऐसा उलझा पाँव' में लेखिका वर्णन कर कहती है कि महानगरीय जाल में मानव ऐसा उलझ गया है कि उसका गाँव छूट गया। यहाँ ग्रामीण व नगरीय जीवन की व्यंजना बहुत ही आकर्षक एवं रोचक ढ़ंग से की गई है।

3.5 डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य में महानगरीय चेतना –

वर्तमान समय की माँग ने गाँवों को नगर तथा नगरों को महानगरों में परिवर्तित कर दिया। वर्तमान युग वैज्ञानिक एवं तकनीकी युग है। गाँवों में जीवकोपार्जन के सीमित साधन होने के कारण लोगों को महानगरों की ओर पलायन करना पड़ रहा है, जिससे उनकी जीवन शैली में भी परिवर्तन आ रहा है। साहित्य समाज में सीधे तौर पर बदलाव नहीं लाता, पहले यह पाठकों की चेतना को बदलता है फिर उस चेतना के बल पर समाज में चेतना जाग्रत करता है। क्योंकि रचनाकार की समाज के प्रति गहरी संवेदना होती है। वह समाज की अच्छाइयों और बुराइयों पर अपनी लेखनी से ध्यानाकर्षित कर समाज में जाग्रति का शंखनाद करता है।

अनुभव फ़लक की चितेरी डॉ. उषा करण सोनी ने भी अपने साहित्य में महानगरीय चेतना को अभिव्यक्ति प्रदान की है। इन्होंने अपने कविता संग्रह, कहानी संग्रह, बालोपयोगी साहित्य यात्रावृतांत तथा निबन्ध संग्रह में महानगरीय चेतना के बिम्बों को उकेरा है।

'नगरों और महानगरों के पंचतारा अंचल के
मखमल पर टाट सा पैबंद लगाती झोपडियाँ।'[34]

नगरों व महानगरों में निम्नवर्ग के लोगों की जीवन–शैली पर लेखिका ने गहरी संवदेना प्रकट की है। महानगरों में दलित वर्ग, कमजोर निम्न वर्ग की दुर्दशा का मार्मिक चित्रण 'झोपड़ियाँ' कविता में हुआ है। लेखिका महानगरों में निम्न, कमजोर वर्ग के बिलबिलाते जीवन के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त कर महानगरीय चेतना लाना चाहती है। यहाँ उच्चवर्गीय जीवन और निम्नवर्गीय जीवन में कितना भेद है, यह भेद पाठक के समक्ष रख चेतना का उद्घोष करना चाहती है।

'ठरी–ठरी है
आकुलता अधरों पर
मन के ही नहीं
घर के किवाड़ तक बंद हैं।' 35

लेखिका ने महानगरों में एकांकी जीवन बिता रहे लोगों की स्थिति को 'महानगर और बूढ़े', कविता के द्वारा व्यक्त कर मार्मिक संवेदना प्रकट की है। वर्तमान समय में महानगरों की स्थिति ऐसी है कि यहाँ पैसा कमाने के चक्कर में मानव रात–दिन

लगा रहता है। अपने माता–पिता तो बालकनी में सजे गमलों की तरह है, उसे उनके पास बैठने का तक वक्त नहीं, बेचारे विवश है गूँगे मकानों में रहने को।

'बनावटी प्रसन्नता
झूठी संवेदना
न ममता न समता
बस द्वेष और विषमता
सब मैं और सब मेरा
कुछ नहीं तेरा
वैचारिक भिन्नता
गलाकाट प्रतियोगिता
सब कुछ है यहाँ संकर
ये है अज़गर सा महानगर।'[36]

लेखिका ने महानगरीय जीवन शैली के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त की है। महानगरों में लोग मशीन की तरह दौड़ते रहते है, चारों तरफ शोर बस काम और पैसा कमाना ही मुख्य है बाकी सब व्यर्थ है। सब कुछ बनावटी चाहे खुशी हो या गम। 'सब मेरा है' का भाव, वैचारिक भिन्नताएँ, गला काट प्रतियोगिताएँ मानों अज़गर सा सब लीलना चाह रहा हो।

'दूरदर्शन पर देख रहे, घास में वीर बहूटियाँ
जी रहे हैं खा–खाकर, सूखी डबल रोटियाँ।'[37]

'बूढ़े लाचार चेहरे' कविता भी महानगरीय जीवन को उद्घाटित करती सी नजर आती है। आपा–धापी के इस युग में मनुष्य की संवेदनाएँ मर गई है। अपनों के पास बैठने का वक्त उसे नहीं और ना ही उनके लिए स्वागत का भाव है। अब तो वह दूरदर्शन पर ही घास में वीर बहूटियाँ देख इच्छा कों शांत करता है, खाने में अब पाश्चात्य शैली के व्यंजन खाकर जीवन बिताने को मज़बूर है, उन बूढ़े लाचार–चेहरों को जो साँसे गिन रहे है आँखे मूँद टूटते विश्वासों को देख रहे है। लेखिका ने ऐसे बूढ़े लाचार लोगों के प्रति संवेदना प्रकट की है।

'नौकरों की अनुपस्थिति में स्वाभाविक है कि चाय सुजाता ने बनाई। चाय में पत्ती दूध व चीनी का तालमेल ठीक न था जिसे महसूस करते हुए भी दोनों ने चुपचाप चाय पी ली और अपने–अपने कमरों में सोने चले गए। आदित्य ने शयनकक्ष में आकर थोड़े खीझे

हुए स्वर में सुजाता से कहा, ''क्या यार! तुमने इतनी रद्दी चाय पिलाई कि सारा मूड़ खराब हो गया।'[38]

वर्तमान दौर में महानगरों मे निवास करने वाले पूँजीपति लोगों के घरों में सारा काम नौकर–चाकर द्वारा किया जाता है। यही कारण है कि सुजाता ठीक से चाय भी नहीं बना पाती और धन के अंहकार में वह गलती स्वीकार भी नहीं कर पाती है। थोड़ी सी झिड़क दोनों के रिश्ते को तोड़ देती है। लेखिका अपनी कहानी 'एक कप चाय' के माध्यम से महानगरीय चेतना जाग्रत करने का अथक प्रयास कर रही है।

'उदय और पुनीता क्रमशः दिल्ली और बँगलोर में रहने वाले थे और केलीफोर्निया विश्वविद्यालय में पढ़ने विदेश गए थे। पढ़ाई के साथ–साथ उन्होंने प्रेम की पींगे भी बढ़ा ली और अंत में एक दूसरे के हो जाने का निर्णय ले लिया। दोनों के ही माता–पिता अपने–अपने व्यावसायिक कारणों से केलीफोर्निया जाने की स्थिति में नहीं थे और बच्चे जल्दी शादी करना चाहते थे।'[39]

'तृष्णा तू न गई......' कहानी संग्रह की कहानी 'एक शादी ऐसी भी' में कम्प्यूटर एवं इंटरनेट के युग ने महानगरों, विदेशों में रह रहे युवक–युवतियों की इच्छाओं, आकांक्षाओं को पूरा करने में सुगमता कर दी है। केलीफोर्निया में हो रहे विवाह को बैंगलोर में समारोह के रूप में कम्प्यूटर पर वर–वधू पक्ष के लोग शामिल हो आनन्द लेकर आशीर्वाद प्रदान करते है और शादी सम्पन्न हो जाती है। ऐसी शादियाँ आमतौर पर महानगरों में होने लगी है, सभी रिश्ते मात्र औपचारिक रह गये है। वैज्ञानिकीकरण व तकनीकीकरण से महानगरीय जीवन शैली में आ रहे बदलाव को कहानी के माध्यम से अभिव्यक्ति प्रदान की गई है।

3.6 डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य मे नारी–चिंतन –

प्राचीन काल से ही नारी को देवी स्वरूप माना गया है। परन्तु वर्तमान समाज में नारी इस स्थान से पदच्युत कर दी गई है या फिर अपनी महत्वाकांक्षा ने इसे इस पद से गिरा दिया है। नारी और पुरुष दोनों ही एक–दूसरे के पूरक है। नारी के बिना पुरुष का कोई अस्तित्व नहीं और न ही पुरुष के बिना नारी का। दोनों का संबंध अभिन्न, अखण्ड तथा अनादि है। इतिहास गवाह है कि आदिकाल से लेकर आज तक नारी किस प्रकार जीवन क्षेत्र में पुरुष की सहधर्मिणी, सहयोगिनी के रूप में अपने नारीत्व को देदीप्यमान किए हुए है। नारी की इसी प्रतिभा से पराजित हो प्रसाद जी की श्रद्धा फूट पड़ी।

'नारी तुम केवल श्रद्धा हो
विश्वास रजत नग पग तल में

पीयूष स्रोत सी बहा करो
जीवन के सुंदर समतल में।'[40]

वैदिक काल भारतीय संस्कृति का उज्ज्वल काल था। उस समय नारी का समाज में आदर था, वह पुरुष के साथ ही जीवन के हर क्षेत्र में कंधे से कंधा मिलकार कार्य करती थी। उसे पुरुष के समान अधिकार प्राप्त थे। गार्गी, मैत्रेयी, विश्ववारा उस युग की ऐसी नारियाँ थी जिन्होंने ऋषियों का पद प्राप्त किया। परन्तु समय के साथ–साथ नारी के गुणों में बदलाव आने लगा रीतिकाल तक आते–आते नारी ने रूप सौंदर्य के मद में मातृत्व रूप खो दिया और वासना रूप धारण कर लिया अब नारी मात्र भोग्या रह गई और आज इस प्रतिस्पर्धा के युग में नारी पुरुष होने की होड़ में अपने इस स्वरूप को भी खोती जा रही है। इस स्थिति का कारण सिर्फ नारी ही नहीं है पुरुष प्रधान समाज ने उसे इस स्थिति तक पहुँचाया है, उसे भुलावे में लाकर रूप सौन्दर्य के लोभी, कामी पुरुष ने भी उसे छलने में कसर नहीं छोड़ी है। पैरों की जूती समझने वाले पुरुष प्रधान समाज ने उसे कदम–कदम पर छला है।

लेखिका एक स्त्री है और स्त्री होने के कारण नारी–चिंतन पर इनके साहित्य में भिन्न–भिन्न नजरिएँ से समाज में नारी की स्थिति का आँकलन किया गया है। एक माँ, बेटी, बहिन, पत्नी, प्रेयसी हर रूप में नारी–चिन्तन मुखरित हुआ है।

'देवी, रानी, प्रिया, दासी, माँ, पत्नी उसके हजारों नाम है,
सब कुछ है औरत जग में, बस नहीं एक इंसान है।'[41]

आज भी समाज में नारी का स्थान सिर्फ़ पायदान अर्थात् पैरों की जूती के समान है। हजारों नामों से जानी जाने वाली नारी सब कुछ है, परन्तु इन्सान नहीं है। लेखिका ने 'सिर्फ़ पायदान है' कविता के माध्यम से नारी की समाज में दयनीय स्थिति पर गहरी संवेदना व्यक्त की गई है। कहीं वह नारी के इस दयनीय स्थिति का कारण स्वयं नारी को मानते हुए लिखती है।

'देह प्रदर्शन की होड़ा–होड़ी में,
नारी ने अपनी छवि तोड़ी।
स्वतः स्खलित होती पद से,
कहाँ जा रही दौड़ी–दौड़ी ?'[42]

'अक्षरों की पहली भोर' कविता संग्रह की कविता 'कहाँ जा रही ?' में लेखिका ने निष्पक्ष भाव से नारी की कमियों को भी उजागर करके रख दिया। अब तक नारी की दयनीयता पर जो संवेदना व्यक्त की गई थी, अब वही नारी अपने देवत्व स्वरूप से खुद ही

पदच्युत होती हुई सी नज़र आ रही है। उसने अपनी मर्यादा, गरिमा को देह प्रदर्शन की होड़ा–होड़ी में खो दिया और वह अपने देवीय स्वरूप को भूल पता नहीं कहाँ जा रही है। कुछ हद तक वह स्वयं भी अपने को गिराने में जिम्मेदार रही है।

'अनाधिकृता, उपेक्षिता
निर्बुद्धि, मानवंचिता
भोग सामग्रियों के ढेर सारे
सामानों में मात्र एक सामान है औरत।'[43]

सृष्टि का श्रेष्ठ वरदान कही जाने वाली औरत पुरुष को मुफ़्त में मिला माल है। अपनी इच्छाओं का दमन कर आज्ञापालक है– औरत। जन्मदात्री, दायित्वों को निभाने वाली औरत आज उपेक्षिता सी स्वयं पर भी जिसका अधिकार नहीं है निर्बुद्धि, मानवंचिता, भोग सामग्रियों के ढेर में मात्र सामान सी है। कहानी में लेखिका की नारी के प्रति गहरी संवेदना जाग्रत हुई है।

'काम्या' कहानी संग्रह के बारे में भवानी शंकर व्यास 'विनोद' लिखते है कि– ''ये सभी कहानियाँ नारी मन की कहानियाँ है पर नारी विमर्श के बहाव में आकर नारी और पुरुष को अलग–अलग खाँचों में बाँटने की नहीं है। अच्छाइयाँ है तो नारी–पुरुष दोनों में है। चाहे आहत पुंसत्व हो या आहत नारीत्व हो, दोनों के अपने–अपने अहं हो, उड़ान व महत्वाकांक्षाएँ हो, संबंधों में खिंचाव की जिम्मेदारियाँ हो, या फिर मानसिक द्वन्द्व व संदेह की स्थितियाँ हो, इन कहानियों का रचाव कहीं पर भी यह नहीं दिखाता कि कही कोई पक्षधरता है। नारी के प्रति संवेदना अवश्य है पर उसकी कमियों के बचाव के प्रपंच कहीं नहीं है।''

लेखिका के कहानी साहित्य में इनका नारी–चिंतन बख़ूबी देखा जा सकता है।

'सोचते–सोचते साँझ ढ़ल गई। रात के भोजन के समय भी वे घर नहीं लौटे तो वह उनका भोजन कमरे में ही ले आई और प्रतीक्षा करने लगी। ''मैं सीता हूँ! भारतीय नारी का आदर्श! मैं उनका इलाज कराऊँगी, सेवा करूँगी और उनके मन से शर्म व कुंठा दूर कर दूँगी'' उसने निर्णय लिया।'[44]

'काम्या' कहानी संग्रह की कहानी 'चाँदनी के फूल' कहानी की नायिका सीता को विवाह के बाद पति परेस का उससे दूर रहना खलता है यहाँ भारतीय नारी–आदर्श प्रस्तुत किया गया है।

'हमीदा बी किसी से क्या कहती ? वह उन लोगों से तो रूपए ऐंठ कर ले गया था पर उनसे तो उनका कुँवारापन, उनकी जिंदगी, उनके एहसास सबकुछ लूट कर ले गया

था। उन्होंने मुराद के साथ पुलिस स्टेशन के भी कई चक्कर लगाए पर कोई फ़ायदा न हुआ। भाई भी अब अपने काम–धन्धों की ओर ध्यान देना चाहते थे इसलिए अपनी–अपनी पत्नियों के साथ उन्होंने बहन को इंतज़ार करने का झूठा दिलासा दिया और अपनी दुनिया में लौट गए।'[45]

'नेपथ्य का सच' कहानी संग्रह की कहानी 'भूकम्प के बाद' में पुरुष की लंपटता, छल–कपट तथा नारी संवेदना जाग्रत हुई है। रहमानुल्लाह हमीदा बी से शादी कर उसे अकेला छोड़, रूपये ऐंठ कर तथा सब कुछ लूट कर चला गया। उसे फोन पर ही तीन बार तलाक कह कर उससे रिश्ता तोड़ लेता है। यहाँ नारी–चिंतन की भावना पराकाष्ठा पर है। क्या ? सारे हक पुरुष के ही पास है वह जब चाहे नारी से रिश्ता जोड़ ले और जब चाहे रिश्ता तोड़ ले। आखिर स्त्री का भी कोई वजूद है या नहीं, समाज में क्या स्त्री को अपनी जिंदगी अपने तरीके से जीने का अधिकार नहीं है ? लेखिका ने कहानी के माध्यम से नारी–चिंतन की भावना को व्यंजित किया है।

'चल भीतर' चोटी पकड़ कर धक्का देते हुए अखिल कह रहा था और उसकी नवविवाहिता पत्नी उसकी पकड़ से छूटने का प्रयास करती हुई रोती–चीखती उससे छोड़ने को कह रही थी। दूर खड़े पास–पड़ोस के क्वार्टरों में रहने वाले अखिल के सहकर्मी व उनके परिजन कुछ देर तक तो मौन खड़े देखते रहे फिर आगे बढ़ कर लक्ष्मी ने उन्हें समझाया।'[46]

प्राचीन काल से ही इस पुरुष प्रधान समाज में नारी पर जुल्म और अत्याचार होते आये है। पुरुष पत्नी के होते हुए भी परस्त्रीगामी होकर अपनी पत्नी को दुःख पहुँचाता है। लेकिन भारतीय नारी भी अपना हक प्राप्त करने में कहाँ पीछे रहती है। अपनी डॉ. सखी की मदद से सुनन्दा अपना हक प्राप्त करने में सफल हो जाती है। 'तृष्णा तू न गई....' कहानी संग्रह की कहानी 'अधिकार' में लेखिका नारी–मन की परत–दर–परत खोलते हुए नारी–चिन्तन को वाणी प्रदान करती है।

'सच ही तो है; वह' शेखर से बात शुरू कर मेरी व्यक्तिगत पसंद व रूचियों की चर्चा करने लगता था। एक–दो बार जब भी वह प्रिंसीपल ऑफिस में उससे मिली थी तब भी बातों–बातों में वह श्वेता की बुद्धि के साथ–साथ उसके सौन्दर्य व वस्त्रों की प्रशंसा कर चुका था। वह वर्तमान में लौट आई। माता जी कह रहीं थी, 'बेटी! अपने प्यार करने वाले पति की बात का बुरा न मानो, इस घटना को भुला दो। शेखर को अच्छे संस्कार दो ताकि उसके जीवन की दिशा उत्कर्षोन्मुखी हो। अपने पति के साथ चण्ड़ीगढ़ जाकर अपना नया नीड़ बसाओ जिसमें खुशियाँ ही खुशियाँ हों।'[47]

'नए सूरज की तलाश' कहानी संग्रह की कहानी **'शुभदृष्टि'** के माध्यम से लेखिका ने नारी को पुरुष की कलुषित मनोवृत्ति को पहचानने तथा अपने दाम्पत्य जीवन में खुशियों को विश्वास के साथ जीने की समझ विकसित करने का प्रयास किया है। इन्होंने नारी–चिंतन के ऐसे चित्र उकेरे है जिसमें नारी–जीवन से जुड़ी घटनाओं को आयाम दिया गया है।

3.7 भू–मण्डलीकरण का समाज पर प्रभाव –

भू–मण्डलीकरण या वैश्वीकरण ने विश्व व्यवस्था को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। भू–मण्डलीकरण ने समाज में सांस्कृतिक नैतिक मूल्यों का क्षरण किया है। बाज़ारवाद के संकट ने 'अब सब चलता है' की सैद्धांतिकी अपनाकर भारतीय समाज को मरूस्थल में ला पटका है। हमारे सभी जीवन–मूल्य भू–मण्डलीकरण की पाश्चात्य थ्योरी के कारण संकटग्रस्त हो गए है। यह रोग इतना विकाराल हो गया है कि थामें नहीं थम रहा। अरविन्द, विवेकानन्द, तिलक, गाँधीजी ने स्वाधीनता आन्दोलन के दौरान जो आत्मविश्वास जगाया था उसे स्वाधीनता प्राप्ति के बाद मार्क्स, माओ, मेक्समूलर, मैकाले, नीत्से ने अपने विचारों से तोड़ डाला और भारतीय जीवन–मूल्यों के प्रति हिकारत का भाव नई पीढ़ी में जाग्रत कर दिया है। आज गाँधीवादी विचारधारा को ठुकराकर हमने विश्वयारी में उदारवाद, नवउदारवाद, नवपूँजीवाद, देहभोगी उपभोक्तावाद को अपना लिया है। परिणाम यह हुआ कि हमारी कला, संस्कृति, धर्म, साहित्य दर्शन में हर ओर सांस्कृतिक क्षरण, मूल्यांधता फैल रही है। समाज में भारतीय परम्परा के मूल स्वरों का लोप हो रहा है।

'अज्ञेय जी ने जिस स्वाधीनता, आत्मान्वेषी सृजनात्मक समाज–संस्कृति का जो स्वप्न देखा था वह आज आधुनिकता की अंधी दौड़ में उत्तर–संरचनावाद, सांस्कृतिक अध्ययनों सबाल्टर्न चिन्तनों में जलकर खाक हो रहा है। यह संस्कार क्रांति का डिजिटल युग हैं। भारत तथा भारतीय समाज 'ग्लोबल कल्चर' को अपनाने की ठसक में है। वैज्ञानिक तकनीकी की ताकत के प्रयोग ने भू–मण्डलीकरण संस्कृति को जन्म दिया है। भू–मण्डलीकरण की प्रक्रिया पर विशाल बहुराष्ट्रीय निगमों का नियंत्रण है। मीडिया क्रांति, संचार परिवहन क्रांति, बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ अपने स्वार्थों की पूँजी के लिए कार्य कर रही है। माल बेचने के लिए बाजार को तलाश कर, एडवरटाइजमेंट और ब्रांड का सहारा ले रही हैं।'[48]

भारत के पुराने अनुभव साक्षी है कि जब कभी भी विदेशी सत्ता, विदेशी संस्कृति, विदेशी व्यापार, का वर्चस्व बढ़ा है देश के उद्योग–धन्धें, व्यापार आदि चौपट हुए हैं और गुलामी के राक्षस ने पैर फैलाए है।

डॉ. उषाकिरण सोनी के साहित्य में भू–मण्डलीकरण के समाज पर प्रभाव को देखा जा सकता है। 'अक्षरों की पहली भोर' कविता संग्रह की कविता 'बदलती परिभाषाएँ' की निम्न पंक्तियाँ दृष्टव्य है–

'प्रगतिशीलता का प्रतीक
अर्धनग्न वेश–भूषा।
यह है चक्रीय परिवर्तन ?
या मूल्यों की बदलती परिभाषा।'[49]

प्रस्तुत पंक्तियों में समाज पर भू–मण्डलीकरण के प्रभाव को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। पाश्चात्य संस्कृति ने तो हमारे भारतीय सांस्कृतिक–नैतिक मूल्यों की परिभाषा ही बदल दी है।

'रे मूर्ख मनुज! रे मूर्ख मनुज,
तुझको क्यों इतना अहंकार ?
करना चाहे है कह तो क्यों,
भूमण्डल पर एकाधिकार ?'[50]

'धरती की चेतावनी' कविता के माध्यम से लेखिका ने मनुष्य को सावधान किया है। अगर उसने अहंकारवश सम्पूर्ण भू–मण्डल पर एकाधिकार का स्वार्थ नहीं त्यागा तो इसका दुष्परिणाम उसे भविष्य में भोगना पड़ेगा। प्रस्तुत कविता में भू–मण्डलीकरण के प्रभाव को देखा जा सकता है। लेखिका भविष्य के विषय में चिंतित है और वह समाज का इस ओर ध्यानाकर्षित कर भविष्य के दुष्परिणाम को रोकना चाहती है।

'आज जीवन शैली की
रच रहे हैं नई परिभाषा,
सब कुछ 'चलता है यार'।'[51]

वर्तमान भू–मण्डलीकरण के दौर में 'सब कुछ चलता है यार' की परिभाषा ने मानव जीवन की परिभाषा ही बदल दी। मनुष्य भारतीय संस्कृति, मूल्यों का महत्व ही खोता जा रहा है। वर्तमान जीवन–शैली, जीवन मूल्यों में बदलाव भू–मण्डलीकरण का ही परिणाम हैं। हमारी सभ्यता व संस्कृति का नाश होता जा रहा है, मनुष्य इसके दुष्परिणामों से परिचित होकर भी अनजान है और भविष्य को विनाश के गर्त में ले जा रहा है।

'कथक, ओडिसी, बिहू, भरतनाट्यम
कथकली, घूमर, नूपुरों की छन–छन
न तो बिरजू महाराज, न यामिनी कृष्णमूर्ति

युवा नर्तकों का आदर्श बना माइकल जैक्सन,

क्या यह संस्कृति और परम्परा की क्षति नही ?'[52]

भू–मण्डलीकरण ने हमारी सभ्यता और संस्कृति का ह्रास कर डाला है निम्न पंक्तियों में वर्तमान दौर में भू–मण्डलीकरण के कारण हमारी संस्कृति, परम्परा में आ रहे बदलाव को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। अगर यही हाल आगे रहा तो आने वाली पीढ़ियाँ हमारी संस्कृति व परम्पराओं को भी नहीं जान पायेंगी।

'मात्र भोग के लिए श्रम करती

विदेशी जीवन शैली ही श्रेय

भूला अतीत और अंदेखा भविष्य

केवल वर्तमान ही प्रिय और प्रेय।'[53]

विदेशी जीवन शैली तथा बाज़ारवादी, भोगवादी संस्कृति ने मनुष्य का अतीत गौरव भुला दिया है। आज हर इंसान वर्तमान में जीना पसन्द करता है। अपने सांस्कृति गौरवमय परम्परा को अनेदखा करता हुआ मात्र भोग विलास के लिए ही मेहनत करता है। उसे लगता है अपनी पुरानी संस्कृति से ज्यादा श्रेष्ठ विदेशी जीवन शैली है। अपना अतीत भूलकर तथा भविष्य को किसने देखा बस वर्तमान में जीना ही उसे प्रिय और प्रेय बन गया है। भू–मण्डलीकरण का प्रभाव वर्तमान समय में हर जगह देखा जा सकता है।

'मातृ देवो भव' के देश में

दूरभाष पर 'हैप्पी मदर्स डे' का

संदेश देख, सोचा क्या दूँ प्रतिक्रिया

धन्यवाद ? आशीर्वाद ? या चेतावनी ?'[54]

आज वैज्ञानिकीकरण तथा बाजारवादी संस्कृति और भू–मण्डलीकरण ने मानव को यंत्रवत बना दिया है तथा इस अंधी दौड़ में रिश्ते–नाते मात्र औपचारिक रह गए है। तकनीकी विज्ञान ने माँ के देवी स्वरूप को मात्र दूरभाष द्वारा 'हेप्पी मदर्स डे' कहकर इति कर ली है। मानव रोबोट बन गया है और आने वाले समय में ये रोबोटी संतान ही उपजेगी जो हमारी संस्कृति को खत्म कर देगी। लेखिका ने भविष्य में होने वाले सांस्कृतिक ह्रास की ओर ध्यानाकर्षित किया है।

'बढ़ती जनसंख्या और बढ़ता औद्योगिकीकरण

कर रहा पल–पल श्रेष्ठ संस्कृति का क्षरण।'[55]

बढ़ती जनसंख्या और बढ़ते औद्योगिकीकरण ने हमारी श्रेष्ठ संस्कृति को नष्ट कर डाला है। मानव ने स्वार्थवश प्रकृति का दोहन कर भविष्य के लिए संकट खड़ा कर लिया

है। अगर समय रहते मनुष्य नहीं समझा तो हमारी सभ्यता–संस्कृति लुप्त हो जायेगी और सिर्फ स्मृति शेष रहेगी तथा आने वाली पीढ़ियाँ कहानियाँ मात्र ही सुन सकेंगी। उन अमराइयों, झूलों, कोयल की कूक, झींगुरों की शहनाई सब भावी पीढ़ी नेट पर ही प्रकृति को देख पायेगी, नीम, पीपल, गेंदा, गुलाब, बेला, जूही, चम्पा और पारिजात लुप्त हो जायेंगे। हमें इस पर्यावरण को प्रेम व स्नेह से बचाना है। लेखिका ने अपने साहित्य में भू–मण्डलीकरण के प्रभाव को समाज के सामने रख इसके प्रति जागरूक होने तथा भविष्य को इसके दुष्परिणामों से बचाने का संदेश दिया है। इनकी कहानियों में भी भू–मण्डलीकरण का प्रभाव देखा जा सकता है।

'सुनीता से ज़ेवर माँगने पर इन्कार सुनकर प्रभाकर के पैरों तले से जमीन निकल गई। जिसके लिए इतना रुपया ग़बन किया वही उसकी न हुई ? वह उठा और सुनीता को तीन–चार तमाचे जड़कर बोला, "मैं तुम्हारा मुँह भी न देखूँगा और गंगा में जाकर डूब मरूँगा।"[56]

'काम्या' कहानी संग्रह की कहानी 'मोहभंग' में भू–मण्डलीकरण का प्रभाव बख़ूबी देखा जा सकता है। प्रभाकर अपनी पत्नी को खुश करने के लिए नित नए उपहार, गहने उसे लाकर देता और पत्नी भी इन अमूल्य गहनों को पाकर तथा प्रभाकर जैसा पति पाकर अपने भाग्य को सराहते नहीं थकती। प्रभाकर द्वारा चोरी व हेरा–फेरी का पता जब सेठजी को लगता है तो वह बहुत क्रोधित होते हैं। अपने साथ किये गए विश्वासघात के लिए उसे पुलिस के हवाले करने की बात कहते है। तब वह अपना सब कुछ बेचकर सेठजी का पैसा चुकाने का वचन देता है और पत्नी से जेवर माँगता है। पत्नी के मना करने पर उसके पैरों तले से जमीन खिसकती नज़र आती है क्योंकि जिसके लिए गबन किया वही उसकी न हुई। वर्तमान में वैज्ञानिक एवं भौतिकतावादी, बाज़ारवादी संस्कृति ने इंसान की इंसानियत को ही निगल लिया है।

'सुक्रांति का पति मुम्बई में फिल्मों का सेट बनाने वाली कम्पनी में मजदूर था जहाँ उसे अच्छा पैसा मिलता। वह जब भी स्वप्ननगरी से आता तो पत्नी के लिए एक्स्ट्रा कलाकारों द्वारा पहने गये भड़कीले वस्त्र (जो बहुत सस्ते दामों में मिल जाते थे), क्रीम–पाउडर, लिपिस्टिक और न जाने क्या–क्या चीजें लाता। सुक्रांति उनका उपभोग कर स्वयं को किसी अभिनेत्री से कम न समझती। मायके जाने पर अपने पति द्वारा लाई गई वस्तुओं का खुला प्रदर्शन उसे, उस गरीब बस्ती में ओरों से विशिष्ट बना देता।'[57]

'नीयत और नियति' कहानी की पात्रा सुक्रांति द्वारा अपने पति द्वारा फिल्मी कलाकारों के भड़कीले वस्त्र पहनकर खुला प्रदर्शन भोगवादी संस्कृति का प्रभाव दर्शाते हैं।

दमयंती का बहिन को देखकर लालायित होना तथा रिश्तों का टूटना सभी कुछ भू–मण्डलीकरण के दुष्प्रभाव को इंगित करते हैं।

'क्या फिर किसी रिश्ते के लिए स्वीकृति माँगी है ? मेरा प्रश्न सुनकर वह चिढ़ते हुए बोली।

'और नहीं तो क्या! अबकी बार एक सुपरवाइज़र का रिश्ता भेजा है; (जले हुए स्वर में फिर बोली) दीदी की शादी इतने बड़े धनी–मानी जौहरी के बेटे से और मेरे लिए टुच्चे से क्लर्क, टीचर या सुपरवाइज़र ही मिले हैं इन्हें; मैं तो हाँ नहीं करूँगी, मैं तो किसी आई ए एस अफ़सर, इंजीनियर या डॉक्टर से ही शादी करूँगी।'[58]

उच्च महत्वाकांक्षा एवं भोगवादी विचारधारा ने अनुपमा को अविवाहित रहने को मजबूर कर दिया। अनुपमा की उच्चाकांक्षा ही उसके विवाह का रोड़ा बन जाती है। 'नेपथ्य का सच' कहानी में लेखिका ने भू–मण्डलीकरण, भोगवादी संस्कृति के प्रभाव को वाणी प्रदान की है। वर्तमान में पुरातन सभ्यता एवं संस्कृति के हो रहे ह्रास का प्रमुख कारण भू–मण्डलीकरण ही है, जिसे इनकी कहानियों में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

भू–मण्डलीकरण ने विश्व बाज़ारवादी व भौतिकवादी संस्कृति को जन्म देकर हमारी भारतीय संस्कृति को नष्ट कर दिया है। आज के समय में विदेशी शिक्षा, रहन–सहन खान–पान जीवन के तौर–तरीके सब विदेशी संस्कृति की देन है। मानव विदेशी संस्कृति अपनाने में गर्व का अनुभव करने लगा है तथा भारतीय संस्कृति को हेय समझने लगा है। तकनीकी विकास तथा इन्टरनेट की सुविधा ने सारी रही सही कसर पूरी कर दी। अगर यही स्थिति रही तो आने–वाले समय में सारे रिश्ते–नाते परम्परा, रीति–रिवाज संस्कृति, सभ्यता नष्ट हो जाएगी। लेखिका ने समाज पर भू–मण्डलीकरण के प्रभाव पर गहरी संवेदना प्रकट करते हुए इसके दुष्परिणामों की ओर ध्यानाकर्षित किया है।

'चंदन के पिता कृष्णमोहन वर्मा रेल्वे में एक साधारण स्टोरकीपर थे साधारण परिवार की कन्या मृणालिनी से विवाह होने पर उन्होंने जाना कि मृणलिनी ऐसे धनी–मानी व्यक्ति से विवाह करना चाहती थी जिसकी समाज में खूब मान–प्रतिष्ठा हो परंतु साधारण मध्यवर्गीय परिवार में जन्म लेने के कारण उसकी शादी भी साधारण हैसियत वाले कृष्णमोहन से हुई थी। महत्वाकांक्षी पत्नी की इच्छा व प्रोत्साहन से कृष्णमोहन ने कोई व्यवसाय करने का विचार किया ताकि अधिक धन कमाया जा सके।' [59]

'तृष्णा तू न गई......' कहानी संग्रह की कहानी 'आधी छोड़ सारी को....' में भू–मण्डलीकरण, बाज़ारवाद, भोगवादी संस्कृति का प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित है। आज स्वार्थवश ज्यादा पैसा, सुख–सुविधा पाने की चाह ने परम्परागत आदर्शवादी मूल्यों, मानवीय

मूल्यों को ताक़ पर रख दिया है। चारों ओर ज्यादा पाने की चाह में व्यक्ति मशीन की तरह दौड़ रहा है। अकर्ण्य को ही अपना उत्स मान रहा है और इंसानियत खोता जा रहा है। पैसों के दम्भ में वह खुद को ही सबकुछ मान बैठा है। लेखिका ने इसके परिणामों को समाज के सम्मुख रख भविष्य में इससे बचने के लिए प्रेरणा प्रदान की है।

'अनमोल को विदेश आए लगभग आठ माह हो चुके थे। साईबेरिया की हाड़ कँपा देने वाली ठंड, मुक्त स्त्री–पुरुष सम्बन्ध और वोडका के प्रवाह में एकाकी अनमोल बिना मोल के बिक गया। उसने एक रूसी तरूणी वेलेन्तिका से प्रेम की पीगें लगानी प्रारम्भ कर दी। स्थिति कुछ ऐसी बिगड़ी कि दो वर्ष पूरा होते ही उसने रूसी नागरिकता स्वीकार कर गौरांगी वेलेन्तिका से विवाह कर लिया। अब भारत से उसका सम्बन्ध पूरी तरह टूट गया।'[60]

पाश्चात्य संस्कृति की अंधी दौड़ तथा वैश्वीकरण ने इंसान को भारतीय संस्कृति के गौरवमय अतीत से पदच्युत कर दिया है। अनमोल विदेश में जाकर वहीं वेलेन्तिका से शादी कर लेता है। ज्यादा पाने की चाह में वह झूठ का सहारा लेकर स्वयं को अविवाहित बताकर नौकरी हासिल कर लेता है। ऐसा कर वह अपनी पत्नी सुवासिनी तथा माता–पिता को धोखा देता है। विदेशी नागरिकता स्वीकार कर वेलेन्तिका से विवाह कर भारत से पूरी तरह संबन्ध विच्छेद कर लेता है। लेखिका ने कहानी 'छाती में जमी बर्फ़' के माध्यम से भू–मण्डलीकरण के प्रभाव पर प्रकाश डाला है।

'तुम कहो' तो 'सेरोगेसी' पद्धति द्वारा किसी अन्य महिला से सन्तान उत्पन्न करने की जानकारी प्राप्त करूँ, अन्यथा दो साल तक और प्रतीक्षा कर हम अनाथालय से एक कोई बच्चा गोद ले लेगें। दीपंकर ने प्रस्ताव रखा।

'नहीं! दोनों ही स्थितियों में बच्चा हमारा तो न होगा। अनाथालय से लाया गया बच्चा तो एकदम पराया होगा और 'सेरोगेसी' से उत्पन्न बच्चा केवल तुम्हारा होगा, मेरा नहीं। षोडसी ने सहमति दर्शाई।[61]

वैज्ञानिक तकनीक के भौतिकवादी युग में भोगवादी संस्कृति का वर्चस्व है। षोडसी विदेशी रीति–रिवाज़ रहन–सहन, पहनावा अपनाती हैं। जिसे भारतीय दृष्टि में या हमारी संस्कृति में उचित नहीं माना जाता। बच्चा न होने पर वह विदेशी डॉ. की सलाह लेने को दीपंकर से कहती है लेकिन सेरोगेसी तथा अनाथालय से लिया गया बच्चा अपना नहीं मानती। लेखिका ने षोडसी कहानी के माध्यम से भू–मण्डलीकरण के प्रभाव को दर्शाते हुए हमारी भारतीय संस्कृति को प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया हैं।

'एफिल टावर के शिखर पर पहुँचकर हम भौचक्के रह गये क्योंकि शाम के समय

धुंध फैल चुकी थी और ऊपर से नीचे केवल बादल और धुंध ही दिख रहे थे। हमें लगा कि हम बादलों से भी ऊपर कहीं उस सुने हुए स्वर्ग के कदमों में खड़े है। तृप्त मन व गहराती शाम के साथ जब सभी पर्यटक, जिनमें पन्द्रह हमारी बस के भी थे, नीचे पहुँचे तो पता लगा कि हमारी टूरिस्ट बस हमें छोड़कर नोवोतेल होटल जा चुकी है जहाँ हम सभी के लिए कमरे बुक है।'[62]

भूमण्डलीकरण ने सारे विश्व को एक सतह पर ला खड़ा किया है। आज संसार भर के सभी देशों से सम्पर्क स्थापित है। वैज्ञानिक एवं तकनीकी युग ने दूरी को समाप्त कर दिया।

आज घर बैठे हम देश–विदेश की यात्राओं का आनन्द ले सकते है। हम जहाँ चाहे वहाँ यात्राएँ कर वहाँ के पर्यटक स्थलों की सैर कर सकते है। लेखिका ने अपनी यूरोप यात्रा का वर्णन 'यात्रावृत्त' में कर बालकों को यात्राओं से होने वाले लाभ की जानकारी देते हुए उन्हें प्रेरणा प्रदान की है। पूँजीवाद व बाजारवाद की होड़ ने व्यक्ति को विलासिता का जीवन जीने की ओर उन्मुख कर दिया है। आज सुख–सुविधा, भोग–विलासिता मनुष्य का उत्स हो गया है।

3.8 डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य में वर्ग चेतना –

(अ) उच्च वर्ग

(ब) मध्यम वर्ग

(स) निम्न वर्ग

समाज में उत्पादक तथा उपभोक्ता वर्ग ने पूँजीवादी व्यवस्था को उच्चवर्ग, मध्यमवर्ग, निम्नवर्ग में विभाजित कर दिया। उच्च वर्ग के लोगों का उत्पादन के साधनों पर अधिकार होता है तथा निम्न वर्ग के लोग श्रमिक होते है जो सबसे ज्यादा मेहनत करने पर भी अपने द्वारा उत्पादित वस्तुओं का उपभोग नहीं कर पाते। इन्हीं शोषक–शोषित वर्ग के बीच का वर्ग मध्यम वर्ग होता है। जो न तो ज्यादा पूँजीपति होता है न ही ज्यादा गरीब।

मार्क्सवादी साहित्य में इसका उदय प्रगतिवाद के रूप में हुआ। यह समाज को शोषक और शोषित या पूँजीपति और सर्वहारा के रूप में देखता है। प्रगतिवाद शोषक वर्ग के खिलाफ शोषित वर्ग में चेतना लाने तथा उसे संगठित कर शोषण मुक्त समाज की स्थापना का पक्षधर है। यह पूँजीवादी, सामंतवादी, धार्मिक संस्थाओं को शोषक के रूप में चिह्नित कर इन्हें उखाड़ फैंकने की बात करता है।

डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य में भी वर्ग चेतना पूर्ण शिद्दत के साथ मुखरित हुई है। जो निम्नांकित पंक्तियों में वर्णित है।

'सर्दियों की रात में, कुहासे का कंबल ओढ़
दुबक, घुटने मोड़, ठिठुरतीं, दाँत बजाती झोपड़ियाँ।'[63]

लेखिका यहाँ गरीब, निर्धन वर्ग के जीवन की व्याख्या करती हुई संवेदना जाग्रत कर कविता के माध्यम से समाज में वर्ग चेतना लाने का पुरजोर प्रयास करती सी जान पड़ रही है। लेखिका ने 'झोपड़ियाँ' कविता में झोपड़ियों में जीवन जीने वाले निर्धन, ग़रीब लोगों का मर्मस्पर्शी वर्णन किया हैं।

'प्रगति का मानदण्ड, नग्नता और असुरत्व
देवत्व से स्खलित मनुज, अपना रहा पशुत्व।'[64]

वर्तमान समय में प्रगतिवादी चेतना ने मनुष्य को सर्वाधिक पाने की चाह में पशु तुल्य बना दिया है। पाश्चात्य संस्कृति ने हमारे मूल्यों को नष्ट कर दिया और यही कारण है कि अर्धनग्न वेशभूषा धारण करना, मानव प्रगति का मानदण्ड मान बैठा है आज वह देवत्व को छोड़ पशुत्व को अपनाने लगा है। वर्ग चेतना जाग्रत करती 'युग' कविता में युगबोध को जीवंतता प्रदान की गई हैं।

'बस गए इमारती कोटरों में
ढेर के ढेर प्राणियों के नीड़
वस्तुओं, वाहनों और विचारों की भीड़
पूरा वे कर रहे अपने घर का सपन।'[65]

प्रगतिवादी भावना ने वर्तमान समय में वर्ग संघर्ष को बढ़ावा दिया है। आज मनुष्य ज्यादा पाने की चाह में प्रकृति से छेड़खानी कर रहा है। बड़ी–बड़ी इमारतों में लोग बस गए है और हर सुख–सुविधा, वस्तुओं, वाहनों तथा विचारों का अम्बार लगा है। इन इमारती कोटरों में रहना मनुष्य शान समझ रहा है।

लेखिका ने पूँजीपति वर्ग की जीवन शैली में आ रहे बदलाव की ओर संकेत करते हुए वर्ग चेतना जाग्रत करने का प्रयास किया है। इसी प्रकार इन्होंने 'लेखा' कविता में भी निम्न–वर्गीय लोगों के जीवन पर गहरी संवेदना प्रकट की हैं।

जीवन में जिनके अभाव ही अभाव
जानते है मात्र वे भूख का भाव
पुरते हैं कैसे भला उनके चाव ?
नहीं जानती दूध और मलाई।'[66]

निर्धन वर्ग जिसके जीवन में अभाव ही अभाव हैं उनकी मजबूरी, बेबसी को भला पूँजीपति वर्ग क्या जाने ? लेखिका ने कविता के माध्यम से वर्ग–चेतना लाने का प्रयास किया हैं।

'समुद्र को पाट कर
उगाए है तरतीबवार
वृक्ष और इमारतें
सीना ताने खड़ा है
मनुज हर विपरीत
परिस्थिति के विरूद्ध
कर लिया है उसने
ताप और वर्षा को
अपनी मुट्ठी में बंद।'[67]

सर्वाधिक पाने की चाह में मानव प्रकृति से खिलवाड़ कर रहा है जिसके दूरगामी परिणाम से वह अनभिज्ञ है। लेखिका अपनी कविता के माध्यम इन दुष्परिणामों के प्रति सावचेत करना चाहती है।

इसी प्रकार 'काम्या' कहानी संग्रह की कहानी 'मोहभंग' तथा 'नीयत और नियति' में भी वर्गचेतना की झलकियाँ दिखाई देती हैं।

'प्रभाकर ने तेज़ी से फाइलें अलमारी में रख, ताला बंद किया फिर जेब में हार की डिब्बी को टटोल कर देखा, उसे सुरक्षित पा संतुष्ट हो गया। सेठ जी के दफ़्तर में जा उन्हें चाबियाँ संभलाई और तेज़ी से स्कूटर चलाता घर की ओर चल पड़ा। वह, सुनीता को, जो उसके घर की ही नहीं दिल की भी रानी थी, नया हार पहनाने को बैचेन था।'[68]

प्रभाकर द्वारा लाए गए उपहारों, गहनों के प्रति सुनीता का व्यामोह फिर इनसे बिछोह की पीड़ा ने परिवार की दुर्गति कर दी और प्रभाकर कर्ज़ न चुका पाने के कारण आत्महत्या का प्रयास करता है। अन्त में मृत्यु को प्राप्त हो जाता हैं। कहानी में लेखिका ने प्रभाकर के माध्यम से समाज में पनप रही मोहांधता की स्थिति को उजागर किया है।

इसी प्रकार 'नीयत और नियति' की दमयंती के लिए बहन सुकांति का यह कहना कि– 'सच दम्मों! सोने–चाँदी में खेलेगी, वह शौक़ीन मिज़ाज सरकारी अफ़सर है, ने ऐसा व्यामोह सृजित किया कि पति के रहते हुए भी दमयंती ने विधुर राघव की पत्नी बनना स्वीकार कर लिया जो उसे वस्त्राभूषण पर्यटन, मौज़–मस्ती व शान–शौकत का जीवन दे

सकता था। परिणामः फिर वहीं टूटन पति राम खेलावन की मृत्यु राघव के प्रति अवहेलना फिर उसकी भी मृत्यु और अन्त में उपेक्षा व एकाकीपन की त्रासदी।'[69]

'रिक्शों के रूकने पर भी मोहनसिंह को बाहर आया न देख शुभंकर को बड़ी झुँझलाहट हुई। मधुकर ने गेट खोला और लॉन पार कर बरामदे में जाकर भीतर की घंटी बजाई। कोई उत्तर न पाकर उसने पुनः ज़ोर से घंटी दबाई। अबकी बार एक सिंधी चेहरे ने दरवाज़ा खोलकर पूछा, 'क्या है ?'[70]

'निर्णय' कहानी में वैयक्तिक चेतना मुखरित हुई है। मेजर साहब सेवानिवृत्त होने के बाद घर में बेटे–बहुओं के व्यवहार को समझ कर उनके व्यवहार का करारा जवाब देने हेतु उन्हें भी तरक़ीब से घर से बेदखल कर देते है। वर्तमान समय में बेटे बहूएँ माता–पिता को, सास–ससुर को अपनी स्वतन्त्रता में बाधा मानते है और इसे भाँपते हुए ही मेज़र साहब भी उन्हें सबक सिखाने में कोई क़सर नहीं छोड़ते। जो बेटे–बहु माँ–बाप को गेराज में जगह देते है उनके साथ ऐसा ही होना चाहिए।

''चीखो मत।'' शीना ने जोर से कहा मनीष हत्यारा नहीं हैं गोली धोखे से चली थी और कौन पिता ? किसका पिता ? मैं सब जानती हूँ कि मैं आप दोनों की संतान नहीं हूँ। आप माँ नहीं बन सकती थी इसलिए अस्पताल में पैदा हुई मुझ अनाथ को आपने दया करके पाल लिया क्योंकि मुझे जन्म देते ही मेरी माँ मर गई थी। मुझे अब आपकी दया नहीं चाहिए मैं मनीष से विवाह कर एक बड़े घर की बहू बनकर सुख से जीवन बिताना चाहती हूँ।'[71]

समाज में लोभ–लालच वश ज्यादा पाने की चाह से जो दुष्परिणाम सामने आ रहे है लेखिका ने इसके प्रति गहरी संवेदना प्रकट करते हुए वर्ग चेतना लाने का प्रयास कहानी के माध्यम से किया हैं। परवरिश चाहे कितनी भी अच्छी क्यूं न हो खून अपना असर दिखा ही देता है।

'कृष्णमोहन अधपागलों की तरह व्यवहार करते और मृणालिनी एक ओर बैठी चुपचाप आँसू बहाती रहती। पाँच वर्षीय विष्णुमोहन रोती हुई मृणालिनी के पास आकर आँसू पोछने लगता और अनेक भावों से घिरी मृणालिनी सोचने लगती– ''काश! पहले सोचा होता।''[72]

सजातीय एवं विजातीय भेदभाव के कारण माता–पिता कई बार बच्चों के साथ न्याय नहीं कर पाते 'आधी छोड़ सारी को' कहानी में मृणालिनी तथा कृष्णमोहन भी अपने बच्चों के साथ न्याय न कर पाने के कारण अन्ततः उन्हें अपनी सन्तान से हाथ धोना पड़ा।

काश! समय रहते समझ पाते। लेखिका समाज में जातीय भावना के प्रति चेतना जाग्रत करने का पुरजोर प्रयास करती है।

'दीदी! जब हमारे पास कुछ नहीं होता तब अपनी असमर्थता के कारण और अपने अभावों से दुःखी होकर हम अपना आक्रोश व्यक्त करते है, सिद्धान्तों व औचित्य का गीत गाते है पर जब हमें पद और सामर्थ्य मिल जाती है तो क्यों न हम उसका लाभ उठाएँ ? आखिर इतना संघर्ष करके ही तो हम इस पद पर पहुँचे हैं; दूसरों ने अपनी बारी आने पर सत्ता और पद का लाभ उठाया था अब हमारी बारी है तो हम क्यों पीछे रहें ? हमने जो संघर्ष किया, वह हमारे बच्चे क्यों करें ? क्यों वे अभावों से लड़ें ? क्यों न वे भी बड़े आदमी के बच्चे कहलाएँ और सारे भोगों के अधिकारी बनें ? यदि मैं पद और अधिकारों का लाभ न उठाऊँ तो किसी को कोई अन्तर नहीं पड़ेगा पर मेरे बच्चों को अभावग्रस्त जीवन बिताना पड़ेगा। क्या उन्हें सुखी होने का अधिकार नहीं है ? आप ही बताइए।'[73]

वर्ग संघर्ष हर युग में सनातन चला आ रहा है। लेखिका अपनी कहानी के माध्यम से वर्ग चेतना के बिम्बों की झलकियाँ पाठक के समक्ष रखकर समाज में वर्ग चेतना लाना चाहती हैं। सत्ता व पद के मद में जीवन की परिभाषाएँ कितनी बदल जाती है कहानी से स्पष्ट हो जाता है। कैसे एक ईमानदार दीपक भ्रष्टाचार में आकण्ठ डूबकर गलत को अपना लेता हैं। यहाँ अमीर–ग़रीब का वर्ग संघर्ष जीवन की दिशा ही परिवर्तित कर देता है।

लेखिका ने अपने साहित्य के माध्यम से समाज में वर्ग चेतना लाने का अथक प्रयास किया है। समाज में तीन वर्ग हमेशा रहे है, और रहेंगे। हर व्यक्ति अपने को उच्च्य स्तर का बनाने की चाह में संघर्ष करता है। लेखिका ने समाज में आ रहे बदलाव व रिश्तों में आ रहे टकराव के प्रति गहरी संवेदना प्रकट की हैं।

3.9. डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य में वैयक्तिक चेतना और उत्तर आधुनिकता का प्रभाव –

साहित्य में वैयक्तिक चेतना और उत्तर आधुनिकता का महत्वपूर्ण स्थान है। वैयक्तिक चेतना वह शक्ति है, जो व्यक्ति को आदेश देकर कर्त्तव्य–पालन का बोध कराती हैं। व्यक्ति पूर्ण सावधान और सचेत होकर निष्ठापूर्वक कर्म में प्रवृत्त होता है। मनोविज्ञान के अन्तर्गत मानव के तीन मनःपटल होते है। अन्तर चेतना (इड़), अहंचेतना (ईगो) और नैतिक बुद्धि (सुपर ईगो)।

अहंभाव से आत्मबोध होता है किन्तु चेतना उसे आत्मनियंत्रित कर क्रियाशीलता की ओर प्रवृत करती है और साथ ही वासनाजन्य विकारों का परिष्कार कराने में सहायक बनकर उचित, अनुचित का ज्ञान कराती है। चेतना का स्वकेंद्रित रूप ही आत्मचेतना या

वैयक्तिक चेतना है। व्यक्ति द्वारा किये गये कार्य और उस कार्य के अभिप्राय का बोध भी चेतना द्वारा ही होता है।

'प्रसिद्ध दार्शनिक 'कांट' ने 'आत्मचेतना' को व्यक्ति चेतना मानते हुए इसे एकांगी कहा है और निषेध परक चेतना स्वीकार किया है। इसके विपरीत वह चेतना जो शुद्ध रूप से तर्कनिष्ठ, वस्तुनिष्ठ और सर्वव्यापी होगी, वह विधिपरक चेतना कही जाएगी। कांट ने प्रत्येक ज्ञान के लिए समीक्षात्मक प्रणाली को श्रेयस्कर माना।'[74]

व्यक्ति मन के विचारों को तर्क़ से खण्डन–मण्डन करता हुआ उन तथ्यों को तलाशने का प्रयास करता है जो स्वयं के लिए तथा सभी के लिए महत्वपूर्ण हैं। यह व्यक्ति का अभीष्ट होता हैं, जिसके लिए वह प्रयत्न पूर्वक कर्म करता है, यह व्यक्ति की जागरूकता चेतनता है। चेतनता ही जीवन को उदात्त बनाती है। साहित्य में वैयक्तिक चेतना ही समष्टि चेतना का स्वरूप धारण कर समाज को नई राह दिखाती है।

आधुनिकता शब्द संस्कृत के 'अधुना' शब्द से बना है। जिसका अर्थ है – अब, अभी अर्थात् वर्तमान। इस प्रकार अधुना से निर्मित आधुनिकता शब्द वर्तमान का भाव प्रकट करता है। आधुनिकता को कतिपय विद्वानों ने अनेक प्रकार से परिभाषित करने का प्रयास किया है। अज्ञेय की दृष्टि में 'आधुनिकता' एक अनगढ़ चीज़ है। वह एक सिद्ध स्थिति नही, एक प्रक्रिया है।'

डॉ. नामवर सिंह के विचार में 'आधुनिकता' सभ्यता के विभिन्न स्तरों पर कायाकल्प का नाम है।' डॉ. नगेन्द्र के शब्दों में 'आधुनिकता' का सम्बन्ध वर्तमान से है और चूँकि वर्तमान की धारणा समय–सापेक्ष है अतः आधुनिकता का रूप प्रत्येक युग में बदलता रहता हैं।'

विद्वानों ने आधुनिकता को भिन्न–भिन्न दृष्टिकोणों में प्रस्तुत किया हैं परन्तु सभी ने आधुनिकता में नव्यता के बोध को प्रच्छन्न अथवा प्रकाशित की स्थिति में स्वीकारा है। नवीनता, नूतनता, अद्यतनता, फैशन, अधुनातनता, समसामयिकता इसके पर्याय हैं या समानार्थी शब्द हैं।

बौद्धिक जागरूकता से उत्पन्न विवेकपूर्ण वैज्ञानिक दृष्टिकोण आधुनिकता का सहायक तत्व है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण ही परम्परा और रूढ़ि के मध्य विभाजन रेखा खींचता है और समाज को आधुनिकता की ओर अग्रसर करता है। वर्तमान आधुनिकता तो इससे भी आगे बढ़कर उत्तर आधुनिकता की ओर अग्रसर हो रही है। जिसका प्रभाव डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य में बख़ूबी देखा जा सकता है।

'कश्मीर में धमाके सुन
आँसू और शव देख

खोजने लगा पुत्र एटलस में
भारत–पाक सीमा रेख।'[75]

लेखिका ने वर्तमान आधुनिक युग में हो रहे विकास, उन्नति, प्रगति से विनाशकारी दुष्परिणामों की ओर ध्यानाकर्षित करते हुए संवेदना व्यक्त की है। आज मनुष्य प्रकृति को चुनौती देने की कोशिश कर रहा है।

'यूरोप है गर्मी और लू की चपेट में
हलचल है हो रही धरती के पेट में
घट रहे तुंग शिखर सागर तल उठ रहा
प्रकृति में पल–पल, अघट है घट रहा
प्रगति कह मनुज ने स्वयं अवनति की राह खोली है
अरे! यह कैसी होली है ?'[76]

वैयक्तिक चेतना तथा उत्तर आधुनिकता ने आज प्रकृति में काफी उथल–पुथल कर दी है। लोभ–लालचवश मनुष्य ने अपने पतन की राह खुद चुनी है। प्रकृति में निरन्तर हो रहे बदलाव, मौसम में परिवर्तन, आपदाएँ, बाढ़, सूखा, भू–स्खलन इसी उत्तर आधुनिक और वैयक्तिक चेतना का परिणाम है, जिसका दूरगामी फल आने वाली पीढ़ियाँ भोगेंगी।

'मूल्य है मूर्खता
उच्छृंखलता ही संस्कार
आत्मा का अस्तित्व ही करता अस्वीकार
नश्वर देह के भोग को ही मानता भव–सार
कितना बदल गया इंसान ?'[77]

वैयक्तिक चेतना व उत्तर आधुनिकता के फेर में इंसान कितना बदल गया है। आज मानव ने अपने परम्परागत मूल्यों, संस्कृति–सभ्यता को तिलांजलि देकर नश्वर देह के सुख, भोग–विलास को ही जीवन का सार मान लिया है। 'कितना बदल गया ?' कविता में इस प्रभाव को देखा जा सकता है। मनुष्य जल, थल, नभ सभी जगह अपनी प्रगति का परचम फहराता हुआ अपने सांस्कृतिक मूल्यों तथा परम्पराओं को भुलाकर भौतिकतावादी संस्कृति एवं विकासवादी परम्परा को अपनाने में गर्व का अनुभव करने लगा है।

'पालनाघर के पृष्ठों पर
या डी एन ए जाँच द्वारा
सत्य का संधान कर भी लिया तो
स्नेह, ममत्व और

वात्सल्य से वंचित संतान

क्या जन्मदाता को स्वीकार कर पाएगी ?'[78]

'मुक्ताकाश में' कविता संग्रह की कविता 'रोबोटी संतान' में उत्तर आधुनिकता का प्रभाव दृष्टिगत होता है। सच ही है यांत्रिक क्रिया से जन्मी संतान यंत्रवत ही होगी उसमें स्नेह, ममत्व, वात्सल्य से वंचित होने के कारण संस्कार कहाँ से जन्मेंगे।

इसी प्रकार 'तृष्णा तू न गई...' कहानी संग्रह में भी वैयक्तिक–चेतना तथा उत्तर–आधुनिकता का प्रभाव देखा जा सकता है।

'सबका ध्यान टी.वी. स्क्रीन की ओर केन्द्रित हो गया। स्क्रीन पर धीरे–धीरे संदेश उभरने लगा। दूल्हे उदय के मित्र का इन्टरनेट से संदेश था कि उदय और पुनीता अदालत में शादी करने के लिए घर से रवाना हो रहे हैं।'[79]

'एक शादी ऐसी भी' कहानी में उत्तर–आधुनिकता का ही परिणाम है कि शादी समारोह का आनन्द लड़के व लड़की वाले इंटरनेट पर ही देखकर ले लेते है और वर–वधू को आशीर्वाद प्रदान करते हैं। विदेशी संस्कृति तथा अधिक धन कमाने की चाह ने हमारी सभ्यता–संस्कृति को हानि पहुँचाई है। आज सारे काम इंटरनेट के जरिये होने लगे है। भागम–भाग भरी जिंदगी में रिश्ते निभाने का काम मात्र औपचारिक रह गया है।

''माँ! तुम एक बेटे को तो जीते जी मरा मान चुकी हो यदि इसी जिद् पर अड़ी रहीं तो तुम दूसरे बेटे से भी हाथ धो लोगी'', नंदन बोला और दीवाली की शाम होने से पहले ही बैग उठाकर वापस लखनऊ लौट गया।''[80]

कृष्णमोहन और मृणालिनी ने अपने बेटों की पढ़ाई–लिखाई पर खूब पैसा खर्च किया, उन्हें लायक बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। मृणालिनी शादी के नाम पर बेटों को पढ़ाई, नौकरी पर खर्च की कीमत वसूलने के फेर में अपने दोनों बेटों को खो बैठी। लोभ–लालच, अंहकार के वशीभूत हो आधी छोड़ सारी को पाने की चाह में अपना अहित कर बैठी। वैयक्तिक–चेतना व उत्तर–आधुनिकता का प्रभाव कहानी में दृष्टिगोचर होता है।

'राम–राम की कोठरी' नामक इस आश्रम में इनका कार्य दिन–रात घर के बाहरी चबूतरे पर बैठ कर, राम–राम जपना था ताकि अधिक से अधिक लोग श्रद्धा और आदरवश उन्हें दान स्वरूप भोजन–वस्त्र या वस्तुएँ भेंट कर सकें। वह नौकरनुमा युवक वास्तव में तो उनकी देखभाल के लिए रखा गया था पर वह उनके साथ अच्छा व्यवहार न करता।'[81]

'नए सूरज की तलाश' कहानी संग्रह की कहानी 'राम–राम का सच' में एक ऐसा सच सामने आता है जिसे जानकर आश्चर्य, दुःख, क्षोभ व घृणा के भाव एक साथ मन में जाग्रत हो जाते है। आश्रम की देखभाल से सम्बद्ध अधिकारी स्वयं अपनी माँ को आश्रम में

डाले है और घर में माँ की तस्वीर शोभायमान है। इतने बड़े अधिकारी के घर में माँ के लिए जगह नहीं है। उत्तर–आधुनिकता के दुष्प्रभाव वर्तमान समाज में हर जगह देखे जा सकते है।

'उन वृद्धजनों ने वेदांत व नीरजा को सत्य से परिचित तो करा दिया था पर डर के कारण उन्होंने पति–पत्नी से चुप रहने का भी आग्रह किया। उन्हें डर था कि वह नौकर उन्हें और तकलीफ़ें देगा। परिजनों से मिली उपेक्षा व उनसे मिले कष्टों से घबराकर तो वे यहाँ आये थे; अब यहाँ भी मार पड़ेगी तो कहाँ जाएँगे?'[82]

लेखिका ने 'राम–राम का सच' कहानी के माध्यम से समाज का सच उजागर करते हुए गहरी संवेदना प्रकट की है। उत्तर आधुनिकता ने हमारे मूल्यों, संस्कारों को नष्ट कर दिया है।

इसी प्रकार बालगीत संग्रह एवं बालोपयोगी यात्रावृत्तांत में भी वैयक्तिक चेतना व उत्तर आधुनिकता का प्रभाव देखा जा सकता है। 'टिम टिम तारे' बालगीत संग्रह में प्रकृति में घटने वाली आश्चर्यजनक घटनाओं को वैज्ञानिक व दार्शनिक ढंग से परिचित कराने से बालकों में मानवीय गुणों का विकास होगा और वह पूर्ण मानव बनने की ओर अग्रसर होगें। 'द्वार से धाम तक' बालोपयोगी यात्रावृत्तांत के माध्यम से जो बालक वैज्ञानिक उपलब्धियों के इस युग में कम्प्यूटर पर एक क्लिक से सारे ब्रह्माण्ड की सूचनाएँ पा लेते है उन्हें भी मॉनीटर पर उभरे चित्रों की यथार्थता से परिचय प्राप्त करने की ललक मन में जाग्रत होगी।

'आजकल अगस्त्य मुनि से सीधे केदारनाथ धाम तक जाने के लिए पवनहंस के हेलीकॉप्टर की सुविधा है; यही नहीं यात्री चाहें तो आगे जाकर फाटा से भी एक अन्य कम्पनी द्वारा दी जा रही हेलीकॉप्टर की सुविधा उठा सकते है।'[83]

पहाड़ों को काटकर रास्ता बनाना, हेलीकॉप्टर सुविधाओं का लाभ उठाना उत्तर आधुनिकता का ही प्रभाव है। आज वैज्ञानिक क्रांति ने मानव के लिए सभी साधन सुलभ करवा दिए हैं।

'मेरी यूरोप यात्रा' बालोपयोगी यात्रा वृतांत में भी यूरोप के ही फ्रांस नामक देश में फैशन व कला की नगरी पेरिस और पेरिस का प्रसिद्ध 'एफिल टावर' जो विश्व के सर्वाधिक ऊँचे टावरों में गिना जाता है। समुद्र को पाटकर बसाये गए शहर एवं प्रदूषण मुक्त शहर बनाने हेतु साईकिलों का प्रयोग तथा यातायात नियमों की दृढ़ता से पालना आदि वैयक्तिक –चेतना व उत्तर–आधुनिकता का ही प्रभाव है।

'कुछ देर बाद सीट बैल्ट बाँधने की उद्घोषणा हुई और विमान ने धीमी गति से रनवें पर दौड़ लगानी प्रारम्भ कर दी। कुछ ही क्षणों में विमान ने पर तौल लिए और देखते ही देखते नीचे धरा पर जुगनुओं के झुण्डों से जगमगाते दिल्ली शहर को पीछे–नीचे छोड़ हम लगभग 11000 मीटर की ऊँचाई पर उड़ने लगे।'[84]

इस यूरोप यात्रा में विमान द्वारा यात्रा सुविधा प्राप्त होना वर्तमान वैज्ञानिक तकनीकी विकास के द्वारा आ रहा बदलाव, सुविधाओं, साधनों की प्रचुरता आज उत्तर–आधुनिकता की ओर बढ़ रहे मानव के कदमों का ही प्रभाव है। आज सम्पूर्ण विश्व एक सतह पर खड़ा है, पलक झपकते ही मानव कहाँ से कहाँ पहुँच जाता है।

बालकथा संग्रह 'घरौंदा' की कहानी 'सफलता का स्वाद' में भी वैयक्तिक चेतना और उत्तर आधुनिकता का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

'तीन वर्षों बाद अचानक मेरे फोन पर रचित का संदेश आया, ''मैडम! मेरा चयन आई.आई.टी.दिल्ली में हो गया है। मैं अब मेकेनिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई करूँगा और हाँ, वह साईकिल अब भी मेरे पास है।''[85]

रचित जो पढ़ने में ध्यान नहीं देता था लेकिन प्रतियोगिता में जीती गई साईकिल ने उसे पढ़ने–लिखने की ओर ध्यान देने हेतु प्रेरणा दी और आज उसका आई.आई.टी. दिल्ली में चयन हो गया। यह सच है कि एक बार जिसने सफलता का स्वाद चख लिया हो वह व्यक्ति फिर परिश्रम से किसी भी सफलता को प्राप्त कर सकता हैं। जीवन में उन्नति की ओर बढ़ते कदम आधुनिकता से उत्तर–आधुनिकता की ओर अग्रसर होने की निशानी हैं।

निबंध संग्रह 'अक्षर से 'अक्षर' तक' के द्वारा शिक्षा के महत्व को समझाया गया हैं, जीवन निर्माण का अर्थ मात्र सुख–साधन जुटाना ही नहीं बल्कि मानवीय गुणों से सिक्त होना भी है। यांत्रिक जीवन जीते–जीते मानव मन भी यंत्रवत विचार करने लगा है। वह सुख और सुविधा में भेद न करते हुए आसक्ति में डूबा रहना चाहता है। संस्कारों पर कुहरा छाया हुआ है तथा अपसंस्कृति ही प्रगति व आधुनिकता का मापदण्ड बनती जा रही है। यही उत्तर–आधुनिकता का प्रभाव है। इस आधुनिकता से उत्तर–आधुनिकता की ओर प्रयाण के फेर में मानव हमारे भारतीय जीवन–मूल्यों तथा सांस्कृतिक परम्पराओं को भूलता जा रहा है। यह निबन्ध संग्रह समाज में फैल रही संस्कारहीनता और सभ्यता के नाम पर किये जा रहे असभ्य व भ्रष्ट आचरण पर अंकुश लग सके ऐसे उद्देश्य को लेकर लेखिका द्वारा रचा (लिखा) गया है।

3.10 डॉ. उषा किरण सोनी की सामाजिक दृष्टि –

साहित्य समाज की गतिविधियों का दस्तावेज है। दोनों में घनिष्ठ सम्बन्ध है। समाज का प्रतिबिम्ब साहित्य रूपी दर्पण में देखा जा सकता है। साहित्य में मानव–जाति की आत्मा का स्पंदन ध्वनित होता है; साहित्य समाज की चेतना में साँस लेता है। साहित्य जीवन की व्याख्या करता है। साहित्य मानव की अनुभूतियों, कलाओं, भावनाओं का साकार रूप है।

साहित्यकार समाज की एक इकाई है। उसका जन्म समाज में ही होता है। समाज ही उसका भरण–पोषण, संरक्षण करता है। साहित्यकार के ज्ञानार्जन की विभिन्न प्रक्रियाएँ भी सामाजिक जीवन का ही एक हिस्सा होती है। समाज में होने वाली उथल–पुथल एवं क्रांतिकारी आन्दोलन का प्रभाव भी साहित्य में दृष्टिगत होता है। जहाँ एक ओर वह समाज की मानसिक बुभुक्षा की तृप्ति के लिए अपने साहित्य के रूप में उसे पोषण आहार प्रदान करता है वहीं दूसरी ओर अपने अभावों, त्रुटियों, अक्षमताओं के निराकरण का प्रयत्न भी करता है। उसके निवारण की प्रेरणा देते हुए साहित्य में कांति सम्मत उपदेश भरता है। दुष्ट वृत्तियों पर करारा व्यंग्य करता है। उसके दुःख, दैन्य, वैमनस्य, अत्याचार, अनाचार, भ्रष्टाचार के निराकरण के लिए बैचेनी अनुभव करता हुआ संसार का आह्वान करता है।

साहित्य समाज का संस्कार, परिष्कार कर उसके उन्नयन में योगदान करता है। साहित्य जिस समाज का वह अभिन्न अंग है, उसके नैतिक आदर्शों की स्थापना में उसे एक नई दिशा प्रदान करता है।

डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य में जो सामाजिक चेतना के बिम्बों की झलक देखने को मिलती है, उसमें देश–काल, ग्रामीण एवं महानगरीय जीवन पारिवारिक वातावरण, सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक वर्ग चेतना, नारी चिन्तन, भूमण्डलीकरण, वैयक्तिक चेतना और उत्तर आधुनिकता का प्रभाव स्पष्ट नजर आता है। लेखिका अपनी यात्रा का आरम्भ 'अक्षरों की पहली भोर' कविता संग्रह से करती हुई यथार्थ जीवनानुभूतियों को पाठक के समक्ष बड़ी शिद्दत के साथ प्रस्तुत करती है।

शब्द को रचनारूप देने वाली यह घटक अपने परिवेश की बहुरंगी दृश्यावली से उल्लासित, रोमांचित, व्यथित तथा प्रेरित होती रही है। अपने ज़ेहन में घुमड़ते विचारों, भावों को व्यक्त करते हुए लेखिका यथार्थ के अनुभवों को व्यावहारिकता के धरातल पर प्रतिष्ठित कर यथार्थ को भिन्न–भिन्न कोणों से उजागर करती है। पाठक इन रचनाओं को पढ़कर कभी उल्लासित तो कभी रोमांचित होता हुआ भावों के सागर में डुबकियाँ लगाता हुआ आनन्दानुभूति करता है।

संवेदना जगाने वाले समाज के निर्धन, ग़रीब, बेबस झोपड़ियों में रहने को लाचार वर्ग का चिंतन लेखिका ने बहुत ही मार्मिक रूप में किया है।

'गंदे नाले के पास, पुल के नीचे, पटरी के किनारे
गंधाती बातास बीच, उगी हुई झोंपड़ियाँ।'[86]

तो कहीं मनुष्य द्वारा किए गये जुल्मों, अत्याचारों और प्रकृति से किए गये खिलवाड़ पर धरती की चेतावनी का सुन्दर वर्णन हुआ हैं।

'ब्रह्माण्ड का मैं कण मात्र एक
फिर तेरी हस्ती की क्या बिसात ?
चेतावनी पर धरता न कान
करता ही जाता दुराचार।'[87]

पुरुष प्रधान समाज में नारी की स्थिति बड़ी सोचनीय है। 'सिर्फ पायदान है' कविता की पंक्तियों से यह भली–भाँति स्पष्ट हो जाता है–

'हर युग में, हर देश में, औरत के लिए विधान है
हर काल में, हर हाल में, वह सिर्फ़ पायदान है।'[88]

समाज में स्त्री की दयनीय दशा पर लेखिका ने अपनी मार्मिक संवदेना व्यक्त की है।

'मौन के स्वर' कविता संग्रह की कविताएँ अन्तः करण के उन्मेष की कविताएँ है। समस्त कविताओं में यथार्थ की चिंतनपरक अनाविल अभिव्यक्ति है। संग्रह की अनेक कविताओं में गहरी व्यथा के साथ कवयित्री ने उन्हें अनावृत्त किया है। जीवन के अनुभवों में पकी कविताएँ अनुचिंतन, आलोड़न, निसर्ग शीर्षकों के त्रिकोण में बँधी है। भारतीय समाज में स्त्री होना अभिशाप रहा है 'बेटी' कविता में पिता का ग्लानि बोध मुखरित हुआ है।

'कुल तारक समझा था
मैंने जिसको निज कंठ का हार
कुल बोरन कर न सका
वह अपना भी उद्धार।'[89]

समाज में वृद्ध दम्पत्ति की दयनीय स्थिति पर भी लेखिका ने गहरी संवेदना प्रकट की है। कलयुगी संतानों का उनके साथ किया जा रहा बर्ताव बहुत ही मार्मिक, कारूणिक है। पुत्र, पुत्र–वधुओं के लिए वह व्यर्थ है, उनका महत्व नहीं है। 'वृद्ध जनक दम्पति' कविता की पंक्तियों में स्थिति स्पष्ट झलक रही है।

'पुत्र के खेत में उगे ज्यों व्यर्थ के खर–पतवार

अनुत्पादक पशु मान विवश वधू डालती आहार।'[90]

इसी प्रकार समाज का सच उजागर करती कविता 'मतलबी' की पंक्तियाँ देखिए –

'जरूरत पड़ती है तब तो

वे बिछा देते हैं आँखें

मतलब निकल जाता हैं

तो ये फेर लेते हैं आँखें।'[91]

'शब्द की अनुगूँज' कविता संग्रह की कविता 'मतलबी' में वर्तमान समाज का सच उजागर हुआ है। आज समाज में अपना मतलब और अपना सुख ही महत्वपूर्ण हो गया है। कोई किसी का नहीं। मतलब हो तो सर आँखें बिछा देते है और मतलब निकलने पर आँखे फेर लेते है।

'हर पल ये ओढ़ लेता है चेहरे पे नया चेहरा

चेहरों की इसी भीड़ में छिप जाता है आदमी।'[92]

वर्तमान समाज में आदमी की असलियत बयां करती कविता 'आदमी' में आदमी के हर पल बदलते व्यवहार को लेखिका ने बहुत ही आकर्षक ढंग से प्रस्तुत किया है। लेखिका की सामाजिक दृष्टि बड़ी पैनी है, इनकी दृष्टि ने समाज के प्रत्येक कोने को स्पर्श किया है।

कविता ही नहीं बल्कि अन्य विधाओं को भी अपनी लेखनी का विषय बनाकर समाज में वर्तमान दौर की पाठकीय जरूरतों को पूरा करने का सफल प्रयास किया है। इनके कहानी संग्रह 'काम्या', 'तृष्णा तू न गई ...', 'नेपथ्य का सच', 'नए सूरज की तलाश' तथा निबन्ध संग्रह 'अक्षर से 'अक्षर' तक, बाल कथा संग्रह 'घरौंदा' एवं बालोपयोगी साहित्य 'टिम टिम तारे', यात्रावृत्त आदि में अपनी सामाजिक दृष्टि से समाज के प्रतिक्षण टूटते बिखरते सामाजिक सम्बन्धों को रचना रूप में प्रस्तुत कर समूचे समाजशास्त्र का आधार हमारे समक्ष उपस्थित किया है।

समाज की हर स्त्री मातृत्व सुख की चाह रखती है। मातृत्व सुख की चाह उसके पेट की भूख से भी बढ़कर होती है। 'सृजन की चाह' कहानी से – 'राजम्मा को नर्स के शब्द किसी नैसर्गिक संगीत से कम न लगे। उसने तुरन्त नर्स की ओर उन्मुख हो, हाथ जोड़कर विनती की, 'मेरा तुरन्त ऑपरेशन कर दें ताकि मैं पुनः माँ बनने का सुख पा सकूँ।'[93]

डॉ. उषा किरण सोनी की सभी कहानियाँ सार्थक है। संवेदना के व्यापक फलक की रचयिता को इस प्रक्रिया में कष्ट, पीड़ा और वेदना को निमंत्रण देना पड़ता है। वह चरित्रों के सुख–दुःख, आशा–आकांक्षा, द्वन्द्व, कुण्ठा सभी का बारीक अवलोकन करती है। समाज में पारिवारिक रिश्तों की समझ, विश्वास, रिश्तों के टूटने की पीड़ा आदि को लेखिका ने अपनी लेखनी से जीवन्तता प्रदान की है।

'घर लौटे पिता के उदास चेहरे को देखकर शारदा को कुछ भी पूछने की आवश्यकता न रही। उसने इसे अपना भाग्य लेख मान लिया और सोचा; 'यदि पति को दूसरी पत्नी से सुख मिल सकता है तो वे अवश्य पाएँ। मैं तो अब यहीं पिता के घर रहूँगी।'[94]

किस प्रकार पिता की मृत्यु के बाद बालकों पर कहर आता है। माँ मन का साथ न दे पाती है और पिता बदल जाते है। ऐसे में एक लड़की का जीवन कैसा होगा, कौन उसकी परवाह करेगा, विवाह की बात कौन करेगा, 'अनोखा सूर्यास्त' कहानी की मार्मिक अभिव्यक्ति से पता चल जाता है।

'वे दिन भी क्या दिन थे, जब जीवन का दूसरा नाम ही खुशी था। हर ओर कलियाँ ही कलियाँ। उन्मुक्त विचरण ही लक्ष्य। चिन्ता, ईर्ष्या, कुण्ठा कुछ भी नहीं। गुडिया सी गुडिया लिये फिरती रहती थी। एकाएक एक दिन समय ने पंख फैलाकर अपने नीचे पापा को समेटा और उड़ गया, फिर सब कुछ बदल गया। घर से खुशी कपूर हो गई।'[95]

भारतीय समाज में आज भी लड़के–लडकियों के रिश्ते अपने ही समुदाय में किये जाते है। अन्य समुदाय में विवाह करने पर उत्पन्न संतान उस वंश की नहीं मानी जाती। वंश अपने समुदाय में विवाह करने पर ही चलता है अन्य समुदाय में विवाह, संस्कार के विरूद्ध माना जाता है।

'तुम इन तस्वीरों को देखों, यदि पसंद नहीं आती तो मैं अन्य अच्छे परिवारों से सम्पर्क करूँगा पर तुम्हें, अन्य समुदाय की किसी लड़की से विवाह की अनुमति नहीं दूँगा।'[96]

समाज में लड़की की सुन्दरता और उसके सौंदर्य की प्रशंसा, कैसे उसकी सोच पर पत्थर डाल देती है ? और उसका जीवन नर्क बना देती है 'रति–विरति' कहानी के माध्यम से स्पष्ट हो जाती है। रति अवस्थी बस ड्राईवर के साथ भागकर शादी कर अपने जीवन को नर्क़ बना लेती है। 'बस जिंदगी की सज़ा भोग रही हूँ भाई रमाकांत; यहाँ दस वर्षों से हूँ, अब तो जीने की इच्छा ही समाप्त हो रही है, जी नहीं रही हूँ, समय को कन्धों पर लादकर घसीट रही हूँ।'[97]

समाज में महिलाओं पर घर–परिवार की जिम्मेदारियों को निभाने का दायित्व होता है साथ ही आने वाली पीढ़ी को भी अपना दायित्व बोध करवाने का भार उन पर होता है। बचपन से ही माँ एवं दादी के द्वारा विशेष रूप से लड़कियों को दायित्व बोध कराया जाता है, उन्हें घर सजाने सँवारने के गुर, तथा अनुपयोगी वस्तुओं का प्रयोग सजावटी वस्तुओं के निर्माण में करना सिखाया जाता है। बालकथा 'घरौंदा' की पंक्तियाँ दृष्टव्य है –

''फैंकने योग्य वस्तुओं ढ़ेरों सजावटी चीजें बनाने की कला को याद कर मुस्करा पड़ी। अपने दैनिक कार्य से निवृत्त हो उसने घरौंदे को उठाकर पास की मेज पर रखा ही था कि माँ रचिता भीतर आई और बेटी को जगा देख, उसे बाहर आकर पिता के साथ नाश्ता करने को कहा।''[98]

'कमला का ब्याह' कठपुतली नाटिका के माध्यम से शिक्षा के महत्व को बताया गया है। शिक्षा ही समाज की सोच को बदलने में सहायक सिद्ध होगी।

'माँ – मेरी प्यारी कमला रानी, मेरी बिटिया कमला रानी
तू सचमुच बड़ी सयानी, तेरी हर बात है मैंने मानी
अभी करूँ न तेरी सगाई, तू जी भरके करना पढ़ाई
पढ़–लिख कर डॉक्टर बनना और सबकी सेवा करना
फिर पढ़े–लिखे लड़के से, मैं करूँगी तेरी सगाई।'[99]

लेखिका ने यथार्थ जीवनानुभूतियों को अपनी लेखनी का विषय बनाकर समाज के ऐसे सच को उजागर किया है, जो आज भी समाज में फल–फूल रहा है। लेकिन आवश्यकता है तो नारी को इस बारे में समझने की, कि पुरुष के द्वारा की गई प्रशंसा के भुलावे में न आकर अपनी क्षमताओं और शक्तियों को पहचाने वह अक्षम नहीं है, अपने सक्षम होने का प्रमाण पुरुष प्रधान समाज में प्रस्तुत करें। 'पहचान' निबन्ध की पंक्तियाँ दृष्टव्य है।

'नारी तुम केवल श्रद्धा हो' खूब भुनाया है पुरुष ने नारी को श्रद्धा की देवी बना कर, उसे प्रशंसा की मदिरा पिला कर। जब भी अपने किसी स्वार्थ के लिए उसने नारी से अपने पक्ष में वोट माँगा तो उसे देवी कह कर अपना भला करवा लिया और स्वार्थ पूरा होने के बाद ? 'अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी, आँचल में है दूध और आँखों में पानी' – कहने वाला भी यही पुरुष होता है, सच तो यह है कि इस कहानी का लेखक भी पुरुष ही होता है।'[100]

इसी प्रकार 'वर्चस्व' की खोज में हाशिए पर खड़ी नारी' निबन्ध में भी समाज में नारी की स्थिति मुखरित हुई है। 'नारी के वर्चस्व की खोज को स्पष्ट करते हुए डॉ. गिरीश

रस्तोगी लिखते है – 'नारी पत्नी भी बनना चाहती है और नारी का स्वतन्त्र व्यक्तित्व भी चाहती है। वह अपनेपन की तलाश भी करती है और अधिकार एवं शासन भी चाहती है। वह स्थिरता और गति दोनों की कामना करती है। वह बंधन भी चाहती है और मुक्ति भी।'[101]

लेखिका ने 'वर्चस्व की खोज में हाशिए पर खड़ी नारी' निबन्ध के द्वारा समाज में नारी की स्थिति को स्पष्ट किया है। 'राष्ट्र निर्माण में स्त्रियों की भूमिका' निबन्ध में उन्हें राष्ट्र–गौरव से महिमा–मण्डित किया है। समय व परिस्थियाँ हमेशा एक समान नहीं रहती। वास्तव में एक समय ऐसा था कि वह देवीय रूप में पूज्य तथा पुरुष की अर्धांगिनी के रूप में अपनी भूमिका निभाती थी। राष्ट्र निर्माण में भूमिका को निम्न पंक्तियों में स्पष्ट किया गया है।

'जेवर भी पहनतीं थीं वो, करतीं थीं वो शृंगार भी
लेकिन सदा बँधी रहीं उनकी कमर कटारियाँ
दुनियाँ में बेमिसाल थीं, भारत की वीर नारियाँ।'[102]

लेखिका की सामाजिक दृष्टि ने समाज के प्रत्येक पक्ष की समस्या को अपने विचारों की कसौटी पर कसा और अपनी संवेदना प्रकट करते हुए समाधान भी प्रस्तुत किया है। वर्तमान समाज में बढ़ रहे भ्रष्टाचार, निम्न वर्गीय लोगों की स्थिति रिश्तों में आ रहे टकराव, नारी शोषण आदि के प्रति संवेदना जाग्रत करते हुए समाजिक चेतना लाने का प्रयास किया है।

निष्कर्ष –

लेखिका ने सम्पूर्ण समाज की यथार्थ जीवनानुभूतियों को अपनी कलम–कलवार से साकार दृश्यावलियों के रूप में अभिव्यक्त किया है। इनकी सामाजिक दृष्टि समाज में एक नई चेतना जाग्रत करने का उपक्रम है। इन्होंने अपनी कविताओं, कहानियों, निबन्धों में समाज की हर बुराई पर प्रकाश डालते हुए, शिक्षा का महत्व बतलाते हुए समाधान भी प्रस्तुत किये है, जो इन्हें अन्य लेखक–लेखिकाओं से हटकर साहित्य क्षेत्र में स्थान निर्धारित करवाने में महत्वपूर्ण सिद्ध हुए है। संवेदनाओं के व्यापक फ़लक की चितेरी लेखिका की सामाजिक दृष्टि पैनी एवं समाज के प्रति जागरूक है, वो समस्याएँ ही नहीं गिनाती बल्कि उनके प्रति संवेदना जाग्रत कर समाज में जागरूकता लाने का पुरजोर प्रयास अपनी लेखनी के बल पर करती है। कोई भी पाठक इनकी कविताओं, कहानियों को पढ़कर प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। इन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से भावों–विचारों के अथाह सागर

में पाठक को सोचने–विचारने पर मजबूर कर दिया है। इनका साहित्य सामाजिक सरोकारों से लबरेज़ है।

किसी भी कहानी की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि पाठक से कितना जुड़ पाता है ? लेखिका स्वयं कहती है कि मैं मृदुला गर्ग के इस कथन से सहमत हूँ कि –कहानी वह जो बीच में छोड़ी न जा सके।' कहानी में निरन्तर उत्सुकता बनी रहे जिज्ञासा बढ़े और जिसका समाधान पाने पर पाठक के हृदय को तृप्ति का अनुभव हो वही कहानी सार्थक होती है। इनकी सभी कहानियाँ इस कसौटी पर खरी उतरती है। इन्होंने वर्तमान दौर की समस्याओं को समाज के सामने रख समाज सुधार का मार्ग प्रशस्त किया है। स्वच्छन्द अर्थ सम्पन्नताओं के इस काल–खण्ड में जब शक्ति और साधनों के सबल–क्रूर पंजे मानवता का गला घोटने को आतुर दिखते हों तथा मानव, आदिमानव की भाँति तमाम प्रकार की हिंसाओं में संलिप्त हो रहा हो, ऐसे में सामाजिक बिखराव व वैचारिक शून्यता का प्रभाव दैनन्दिनी जीवन एवं सांस्कृतिक परिदृश्य पर होना लाज़मी है।

इनकी कहानियाँ सामाजिक समरसता का मार्ग प्रशस्त करती है। व्यवस्था के कुचक्रों और नैराश्य के अंधे कुएँ में डूबती–उतराती लेखिका संयत जाँच पड़ताल के साथ पुख्तगी से अपने नाम के अनुरूप जिजीविषा की जूझ व जीवट की उषा किरणों से साक्षात् करवाती है। इनका साहित्य समाज से रू–ब–रू करवाता है, जो मौजूदा सामाजिक चरित्र से संवाद सदृश है।

सन्दर्भ सूची –

1. साहित्य का उद्देश्य (लेख) साहित्य शिक्षा–संपा–पदुमलाल बख़्शी, हेमचन्द मोरी हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर मुम्बई, 1947 पृ.सं. 5
2. Literature is a criticism of life – M.Arnald.
3. It is Fundamentally an expression of life through the medium of language.
4. अक्षरों की पहली भोर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 46
5. मौन के स्वर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 33
6. मुक्ताकाश में, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 79
7. शब्द की अनुगूँज, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 66
8. शब्द की अनुगूँज, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 82
9. काम्या – डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 35–36

10. नेपथ्य का सच – डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 41–42
11. तृष्णा तू न गई, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 26
12. नए सूरज की तलाश, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 54
13. मधुमती, डॉ. धर्मपाल मैनी, पृ.सं. 15
14. अक्षरों की पहली भोर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 21
15. मौन के स्वर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 40
16. काम्या, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 80
17. तृष्णा तू न गई, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 52
18. मेरी यूरोप यात्रा, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 9–10
19. मेरी यूरोप यात्रा, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 20
20. द्वार से धाम तक, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 5
21. द्वार से धाम तक, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 13
22. अक्षर से 'अक्षर' तक, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 57
23. अक्षर से 'अक्षर' तक, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 104
24. मुक्ताकाश में, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 52
25. काम्या, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 43
26. नेपथ्य का सच, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 15
27. तृष्णा तू न गई, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 44
28. नए सूरज की तलाश, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 40
29. अक्षर से 'अक्षर' तक, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 39
30. मौन के स्वर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 37
31. मुक्ताकाश में, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 54
32. नए सूरज की तलाश, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 66
33. मौन के स्वर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 89
34. अक्षरों की पहली भोर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 26
35. अक्षरों की पहली भोर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 64
36. मौन के स्वर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 36
37. मौन के स्वर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 50
38. काम्या, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 43
39. तृष्णा तू न गई, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 52

40. कामायनी, जयशंकर प्रसाद, पृ.सं. 73
41. अक्षरों की पहली भोर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 47
42. अक्षरों की पहली भोर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 48
43. मुक्ताकाश में, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 64
44. काम्या, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 36–37
45. नेपथ्य का सच, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 32
46. तृष्णा तू न गई.... डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 22
47. नए सूरज की तलाश, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 14
48. समकालीन भारतीय साहित्य, जुलाई–अगस्त 2011,पृ.सं. 203
49. अक्षरों की पहली भोर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 25
50. अक्षरों की पहली भोर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 28
51. मौन के स्वर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 35
52. मौन के स्वर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 41
53. मुक्ताकाश में, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 57
54. मुक्ताकाश में, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 71
55. मुक्ताकाश में, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 77
56. काम्या, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 29
57. काम्या, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 47–48
58. नेपथ्य का सच, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 77
59. तृष्णा तू न गई, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 72
60. नए सूरज की तलाश, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 39–40
61. नए सूरज की तलाश, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 66
62. मेरी यूरोप यात्रा, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 23
63. अक्षरों की पहली भोर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 26
64. अक्षरों की पहली भोर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 27
65. मौन के स्वर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 37
66. मौन के स्वर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 46
67. मुक्ताकाश में, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 35
68. काम्या, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 27
69. काम्या, डॉ. उषा किरण सोनी, भूमिका से.....

70. नेपथ्य का सच, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 64
71. तृष्णा तू न गई, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 20
72. तृष्णा तू न गई, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 80
73. नए सूरज की तलाश, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 28
74. मानव मूल्य व्याख्या कोष, भाग–1, धर्मपाल मैनी, पृ.सं. 125
75. अक्षरों की पहली भोर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 40
76. अक्षरों की पहली भोर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 21
77. मौन के स्वर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 40
78. मुक्ताकाश में, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 71
79. तृष्णा तू न गई, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 51
80. तृष्णा तू न गई, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 80
81. नए सूरज की तलाश, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 22
82. नए सूरज की तलाश, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 22
83. द्वार से धाम तक, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 22
84. मेरी यूरोप यात्रा, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 4
85. घरौंदा, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 07
86. अक्षरों की पहली भोर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 26
87. अक्षरों की पहली भोर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 28
88. अक्षरों की पहली भोर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 47
89. मौन के स्वर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 24
90. मुक्ताकाश में, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 73
91. मुक्ताकाश में, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 79
92. शब्द की अनुगूँज, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 70
93. शब्द की अनुगूँज, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 84
94. काम्या, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 55
95. तृष्णा तू न गई, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 34
96. नेपथ्य का सच, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 17
97. नेपथ्य का सच, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 38
98. नए सूरज की तलाश, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 15
99. घरौंदा, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 10

100.घरौंदा, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 40
101. अक्षर से 'अक्षर' तक, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 85–86
102. अक्षर से 'अक्षर' तक, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 92
103. अक्षर से 'अक्षर' तक, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 95

अध्याय चतुर्थ

डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य में रसानुभूति

अध्याय चतुर्थ
डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य में रसानुभूति

रस शब्द अनेकार्थी है। वैदिक साहित्य में 'रस' शब्द का प्रयोग जल, द्रव, सुरा, शौणित आदि अर्थों में किया जाता था। काव्यशास्त्र में रस शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग 'वात्स्यायन' ने अपने ग्रन्थ 'कामसूत्र' में किया है। वहाँ रस से अभिप्राय 'कामभाव या अनुराग' था।

रस अभिव्यक्ति का विषय न होकर आस्वादन का विषय है, इसे अनुभूत तो किया जा सकता है, किन्तु शब्दों के बन्धन में बाँधना अतीव दुष्कर कार्य है। रस शब्द आनन्द का पर्याय है; जो काव्य के पठन अथवा श्रवण अथवा नाटक के दर्शन से सहृदय सामाजिक को प्राप्त होता है। रस केवल शास्त्रीय वस्तु ही नही, वरन् व्यावहारिक अनुभवगम्य वस्तु है। जिस प्रकार बहुविध व्यंजन के भोजन का पूर्ण आनन्द पाने के लिए भूख और स्वादविवेक आवश्यक है, उसी प्रकार रसानुभूति की पूर्णता के लिए सहृदयता, संवेदनशील संस्कारों और विवेक की आवश्यकता रहती है।

'तैत्तिरीयोपनिषद्' की मान्यता है 'रसो वै सः'। रस आनन्द स्वरूप ब्रह्म है। रस की धारणा बहुत प्राचीन है और महिमा बड़ी व्यापक। रस की आवश्यकता और महत्ता के सम्बन्ध में चाहे हम जागरूक न हों, पर जीवन की गति यह प्रकट करती है कि रस जीवन का सार है और जीवन रस के लिए हैं। जीवन के जितने भी क्रिया–कलाप हैं उनकी प्रेरणा और लक्ष्य, उनका प्रारम्भ और अन्त रस में ही है, चाहे उसके मध्य में हम बहक भले ही जाएँ।'[1]

जीवन को जीवन बनाने के लिए रस अनिवार्य है। इसके बिना जीवन का कोई उद्देश्य नही। शास्त्रीय दृष्टि से विभाव, अनुभाव और संचारी भावों के संयोग से परिपुष्ट स्थायी भाव रस कहलाता है। प्रारम्भ में रसों की संख्या नौ ही मानी गई थी। परन्तु आगे चलकर इनकी संख्या एकादश हो गई। आचार्य मम्मट ने, जिन्हें 'रतिर्वेवादिविषया' सूत्र में भाव कहकर टाल दिया था, वे हिन्दी साहित्य की भक्ति काव्यधारा के प्रवाह से सरसित होकर वात्सल्य और भक्ति रस के रूप में प्रतिष्ठित हुए। ध्वन्यालोक में रस को ही काव्य की आत्मा माना है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल तो रस की स्थिति को हृदय की मुक्तावस्था के रूप में मानते है और काव्य उसी के लिए किया हुआ शब्द विधान है, ऐसा प्रतिपादित करते हैं।

डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य में भी नवरस सरिता की अजस्र धारा प्रवाहमान है। इनके साहित्य को पढ़कर पाठक भावलोक में विचरण करता हुआ आनन्दानुभूति प्राप्त करता है। जिसे विस्तारपूर्वक निम्नांकित बिन्दुओं के माध्यम से हृदयांगम किया जा सकेगा।

4.1 रस का स्वरूप और काव्य में स्थान –

रस काव्य की आत्मा व प्राणतत्व है। रस के अभाव में कोई भी रचना काव्यत्व से च्युत् हो जाती है। रस ही कविता को प्राणवान बनाता है। वही पाठक या श्रोता को आनन्दमग्न कर भाव समाधि की स्थिति में पहुँचा देता है।

रस पर सर्वप्रथम आचार्य भरतमुनि ने अपने ग्रन्थ 'नाट्यशास्त्र' में विचार किया और लिखा – "**विभावानुभावव्यभिचारि संयोगाद्रस निष्पत्ति।**"

अर्थात् विभाव, अनुभाव और संचारी भावों के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है। कालान्तर में साहित्य दर्पणकार आचार्य विश्वनाथाचार्य ने इसमें संशोधन करते हुए लिखा –

"विभावेनानुभावेन व्यक्तः संचारिणी तथा।
रसतामेति रत्यादिः स्थायीभावः सचेतसाम्।।'

अर्थात् सहृदय के हृदय में स्थित विभावानुभावों द्वारा व्यक्त और संचारी भावों द्वारा परिपुष्ट रति आदि स्थायीभाव 'रस' कहलाते है।

रस के स्वरूप पर विचार करते हुए आचार्य विश्वनाथ लिखते है –

"सत्त्वोद्रेकादखण्ड स्वप्रकाशानन्द चिन्मयः।
वेद्यान्तर स्पर्शशून्यो ब्रह्मास्वाद सहोदरः।
लोकोत्तर चमत्कारप्राणः कश्चित्प्रमातृभिः।
स्वाकारवदभिन्नत्वेनायमास्वाद्यते रसः।।"

उक्त सूत्र के आधार पर रस के स्वरूप के सम्बन्ध में निम्नाकिंत बिन्दु सामने आते है।

1. रस की अनुभूति सहृदय सामाजिक के हृदय में सत्त्वगुण के उद्रेक होने पर ही होती है; रजोगुण, तमोगुण की उपस्थिति में रसानुभूति नहीं हो पाती।
2. रस अखण्ड हैं – अर्थात् रसानुभूति के समय स्थायी भाव, विभाव, अनुभाव और संचारी भाव आदि की पृथक सत्ता नहीं होती अपितु वे सभी समन्वित होकर रसानुभूति कराते है।
3. रस स्वप्रकाशानन्द है – अर्थात् रसानुभूति ब्रह्मानन्द न होकर आत्मानन्द है जिसकी उपस्थिति व्यक्ति के हृदय में होती है।
4. वेदान्तर शून्य है– रस लौकिक ज्ञान से परे अलौकिक आनन्द है अर्थात् रसानुभूति की अवस्था में व्यक्ति ममत्व, परत्व या रागद्वेष से परे होकर आत्मलीन हो जाता है।

5. रस ब्रह्मानन्द सहोदर है अर्थात् रसानुभूति की अवस्था में व्यक्ति लौकिक ज्ञान व विषय–वासनाओं से दूर व असंपृक्त होता है।
6. रस लोकोत्तर चमत्कार है – अर्थात् काव्य के पठन अथवा श्रवण से प्राप्त आनन्द लौकिक ज्ञान से भिन्न पारलौकिक आनन्द हैं।
7. रस सुखात्मक या दुःखात्मक न होकर आनन्दात्मक है – अर्थात् रसानुभूति की अवस्था में शोक जैसा दुःख की कोटि का भाव भी सामाजिक को आनन्द प्रदान करता है।
8. रस आस्वाद्य है।

4.1.1 रसावयव –

जिस प्रकार मनुष्य के व्यक्तित्व निदर्शन के लिए उसके शारीरिक सौष्ठव व आन्तरिक गुणों का जानना आवश्यक है, उसी प्रकार रस को पूर्णतः समझने के लिए उसके अवयवों का ज्ञान होना आवश्यक है।

भारतीय काव्यशास्त्र के जनक आचार्य 'भरतमुनि' ने रसावयवों पर अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'नाट्यशास्त्र' में सर्वप्रथम विचार प्रकट किया।

''विभावानुभावव्यभिचारि संयोगाद्रस निष्पत्ति।''

उक्त सूत्र के आधार पर रसावयवों की संख्या तीन निर्धारित की जाती है। स्थायीभाव की कोई चर्चा नहीं की गई किन्तु स्थायीभाव के अभाव में किसी भी रस की कल्पना नहीं की जा सकती है। अतः अन्तिम निष्कर्ष के रूप में रसावयवों की संख्या चार निश्चित की जाती है। (1) स्थायी भाव (2) विभाव (3) अनुभाव (4) संचारी भाव।

4.1.1.1 स्थायी भाव –

मानव हृदय में जन्म से ही संस्कार रूप में विद्यमान भावों को 'स्थायी भाव' कहते है। स्थायी भाव जन्म–जात होते है। अर्थात् मनुष्य जन्म से ही इन्हें लेकर पैदा होता है और मृत्युपर्यंत मानव हृदय में सुषुप्तावस्था में विद्यमान रहते है। यह स्थायी भाव ही विभावादि कारणों द्वारा जाग्रत होकर, संचारी भावों द्वारा परिपुष्ट होकर व अनुभावादि द्वारा व्यक्त होकर रसदशा में परिणत हो जाते हैं।

स्थायी भावों की संख्या 'नौ' मानी गई है। प्रत्येक रस एक स्थायी भाव का कारक होता है। इस आधार पर रसों की संख्या भी 'नौ' ही स्वीकार की जाती हैं। स्थायी भावों व रसों के अन्तर्सम्बन्ध को निम्न तालिका द्वारा समझा जा सकता है–

क्र.सं.	स्थायी भाव	रस
1.	रति	श्रृंगार
2.	हास	हास्य
3.	उत्साह	वीर
4.	क्रोध	रौद्र
5.	जुगुप्सा	वीभत्स
6.	निर्वेद	शान्त
7.	शोक	करूण
8.	भय	भयानक
9.	विस्मय	अद्‌भुत

कुछ विद्वान श्रद्धा व वत्सलता को स्थायी भावों के रूप में मान्यता देते हुए भक्ति व वात्सल्य रस की कल्पना करते है। किन्तु इन्हें श्रृंगार रस में ही समाविष्ट मानना चाहिए। क्योंकि श्रद्धा से तात्पर्य–ईश्वर विषयक रति और वत्सलता से तात्पर्य सन्तान विषयक रति है।

4.1.1.2 विभाव –

विभाग का शाब्दिक अर्थ है–कारण, जो मानव हृदय में सुषुप्तावस्था में विद्यमान स्थायी भावों को जाग्रत करते हैं, इनके दो प्रकार है– (i) आलम्बन विभाव (ii) उद्दीपन विभाव

(i) आलम्बन विभाव – आलम्बन का अर्थ है–सहारा, जिनके सहारे हृदय के स्थायी भाव जाग्रत होते है।

(ii) उद्दीपन विभाव – स्थायी भावों की जाग्रतावस्था को उद्दीप्त या उत्तेजित करने वाली परिस्थितियाँ या आलम्बन भी चेष्टाएँ उद्दीपन विभाव कहलाती है।

4.1.1.3 अनुभाव का तात्पर्य है – स्थायी भावों का अनुभव या ज्ञान कराने वाली आश्रय की चेष्टाएँ। अनुभाव 'चार' प्रकार के हैं– (i) कायिक (ii) वाचिक (iii) सात्विक (iv) आहार्य।

4.1.1.4 संचारी भाव से आशय है – वे भाव जो जल के बुलबुलों की भाँति उत्पन्न होकर नष्ट हो जाते हैं, इनका किसी भी रस से स्थायी सम्बन्ध नहीं होता, इसलिए इन्हें व्यभिचारी भाव भी कहा जाता है।

डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य में भी नवरस सरिता पूर्ण वेग में प्रवाहमान हैं जिसे निम्नाकिंत बिन्दुओं में स्पष्ट रूप से समझा जा सकेगा।

4.2 डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य में विभिन्न रस –

रस एक प्रकार का विशेष आनन्द हैं जो काव्य के पठन, श्रवण अथवा नाटक के अभिनय देखने से सामाजिक को प्राप्त होता है। डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्यानुशीलन से प्राप्त आनन्दानुभूति पाठक को भाव–विभोर कर आत्मलीन कर देती है। इनके साहित्य में नवरस सरिता अपने पूर्ण यौवन में प्रवाहित हुई है, जिसे विस्तार से निम्नांकित बिन्दुओं के माध्यम से समझा जा सकता है।

4.2.1 शृंगार रस –

इस रस–राज में सभी तैंतीस संचारी भाव आ जाते है और यह रस ही अपने आप में परिपूर्ण हैं जिसकी प्रतीति मानव और मानवेत्तर प्राणियों को शीघ्रता से हो जाती हैं यह सहजता से हृदयग्राही है, शृंगार रस का क्षेत्र व्यापक है। इसके दो रूप हैं– 1. संयोग शृंगार 2. वियोग शृंगार। भक्ति और वात्सल्य आदि रस भी इसी के अंग हैं, जो शृंगार के रस राजत्व के स्वयं सिद्ध प्रमाण है।

परिभाषा –

विभाव, अनुभाव और संचारी भावों के संयोग से परिपुष्ट रति नामक स्थायी भाव शृंगार रस कहलाता हैं। शृंगार रस के दो भेद है–(1) संयोग शृंगार (2) वियोग शृंगार।

1. संयोग शृंगार – संयोगकाल में नायक और नायिका की पारस्परिक रति को संयोग शृंगार रस कहा जाता है। इसमें संयोग का अर्थ है– सुख की प्राप्ति करना। इसका स्थायी भाव है– रति।

'अक्षरों की पहली भोर 'कविता संग्रह की कविता 'आया बसंत', 'फाल्गुन', 'मधुमास मानों आ गया है', सावन की साँझ' आदि में शृंगार रस की छटा बिखरी हुई है। प्रकृति के उल्लास, उमंग भरे मौसम ने स्थायी भाव रति की अलौकिक कल्पना नायिका के हृदय में जाग्रत कर दी है।

'फागुनी बयार मोसे करत ठिठोली
तरसत जिय सुन कोयल की बोली
उड़त गुलाल देख लागे जी में गोली
पिया घर आके रंग डारो मोरी चोली।'[2]

'मधुमास मानो आ गया है' कविता की पंक्तियों में भी शृंगार रस की व्याप्ति है।

'पी के आगमन का उल्लास चहूँ दिशि छा गया है।
छोड़ सबको घर मेरे मधुमास मानो आ गया है।'[3]

इसी प्रकार 'मौन के स्वर' कविता संग्रह की कविताएँ 'नैन खुले,' 'सुप्रभात', 'होली', 'तो जानाः बसंत आ गया है' में भी श्रृंगार रस की मदमस्त लहरियाँ रोमांचित कर देती हैं।

'समीर ने उषःकाल,
खटखटाया द्वार जा मुकुल का
सलज्ज सुगंधा ने,
पंखुरी की झिरी खोल झाँका।
खींच बाहर आलिंगनबद्ध कर,
ले चला संग प्रिया को
पुलक उठी वसुधा,
प्राणों में अनुराग जागा।'[4]

प्रस्तुत पंक्तियों में मानवीकरण अलंकार से सुसज्जित, आकर्षक छवि बहुत ही रोचक है, प्रकृति ही नहीं बल्कि नायक–नायिका के ह्रदय में भी मादकता छा गई हैं, यहाँ श्रृंगार रस पूर्ण यौवन के साथ परिलक्षित हुआ है।

इसी तरह 'वसंत' कविता की पंक्तियों में संयोग श्रृंगार की छटा देखी जा सकती है।

'अंग–अंग राग जगा, मन में अनुराग जगा
मधुबन में फाग जगा, सजनी का भाग जगा
साजन संग द्वार पर आया वसंत।' 5

संयोग श्रृंगार का दृश्य 'वसंत' कविता में बहुत ही आकर्षक बन पड़ा है।

2. आचार्य केशव ने वियोग श्रृंगार रस के बारे में विचार व्यक्त करते हुए कहा है –

'बिछुरत प्रीतम की प्रीतिमा, होत जु रस तिहिं ठौर।
विप्रलम्भ तासों कहै, केसव कवि सिरमौर।'

वियोग श्रृंगार – जहाँ नायक–नायिका की वियोगावस्था वर्णित हो, वहाँ वियोग श्रृंगार रस होता हैं। इनके चार प्रकार है (i) पूर्वराग (ii) मान (iii) प्रवास (iv) करूण आदि।

'शब्द की अनुगूँज' कविता संग्रह की कविताएँ 'सुनो! सावन है आया', 'रसवंती निशा', 'नाच उठा प्यार', 'ओ ऋतुराज', 'वसंत' में श्रृंगार रस की अनुगूँज हैं। 'ओ ऋतुराज' कविता में वियोग श्रृंगार की छटा दृष्टव्य है –

'सुरभित बयार ने उठाया मनोदधि में हर्षज्वार
मौसम ने अंगड़ाई ले झटक दिए खर–पतवार
कुहुक उठी कोयलिया अमवा की डार – डार
जुड़े प्रिय की स्मृति से विरहिन के मन के तार।' [6]

4.2.2 करूण रस –

इस रस में किसी अपने का विनाश या अपने का वियोग, द्रव्यनाश या प्रेमी से सदैव के लिए बिछुड़ जाने या दूर चले जाने से जो दुःख या वेदना उत्पन्न होती है। यद्यपि वियोग श्रृंगार रस में भी दुःख का अनुभव होता है। लेकिन वहाँ पर दूर जाने वाले से पुनः मिलन की आशा बँधी रहती है। इस रस का स्थायी भाव शोक है। जहाँ पुनः मिलन की आशा समाप्त हो जाती है, करूण रस कहलाता है। इसमें निःश्वास, छाती पीटना, रोना, भूमि पर गिरना आदि भाव व्यक्त होता है।

'अक्षरों की पहली भोर' कविता संग्रह की कविता 'तर्पण' में करूण रस की व्याप्ति हुई हैं।

'सद्यः जात सुत का शव, तिरोहित करते बीच धार।
गंगधार से करती थी होड़, दोनों की नयन धार।' [7]

'शब्द की अनुगूँज' पुस्तक लेखिका की सहोदरा ब्रह्मलीन अनुजा को समर्पित है। इस कविता संग्रह की कविता 'करती हूँ कामना' में 'करूण रस' की बूँदे छिटकती सी जान पड़ती है। लेखिका की 'आत्मजा' की असमय मृत्यु साथ ही अपनी सहोदरा 'निशा' के परलोक गमन के शोक ने उन्हें करूण रस में डुबो दिया है। इन्हीं स्मृतियों को शब्दों में पिरोती लेखिका कहती है–

'अकस्मात ही
चली गईं तुम
तुम्हारी प्रतिच्छाया
अब भी है
मेरी आत्मा पर
तुम्हारी अनुभूति
अब भी है
सारी प्रकृति पर
अब भी अक्षुण्ण है
तुम्हारी स्मृति
तुम्हारा स्पर्श।' [8]

'मुक्ताकाश में' कविता संग्रह की कविताएँ 'स्वगत' व 'भवगत' दो खण्ड़ों में विभक्त हैं। इन कविताओं में दार्शनिक आध्यात्मिक अन्तर्मन की पुकार के साथ ही यथार्थ जीवनानुभूतियों का सच्चा दस्तावेज हैं। 'वृद्ध जनक दम्पत्ति' कविता में वर्तमान समय में

रिश्तों में आ रहे बदलाव, 'वृद्ध जनक दम्पत्ति' की उपेक्षा बहुत ही मार्मिक संवेदना जाग्रत करने वाली है–

'स्मृति की कंथा को रहते पल–पल बुनते–उधेड़ते
उल्लसित पलों के शव देख कर रोते–सिसकते।' [9]

'मुक्ताकाश में' कविता संग्रह की कविता 'वृद्ध जनक दम्पत्ति' में भी करूण रस व्याप्त है।

इसी प्रकार 'शब्द की अनुगूँज' कविता संग्रह की कविता 'टूटे हैं तार फूटा सितार' में भी करूण रस की प्रधानता है –

'सपनों की सरगम बिखर गई
छूटा माँ का वह मधुर प्यार
कैसे फिर लय स्वर संगम हो
जब टूटे हैं तार फूटा सितार।' [10]

4.2.3 वीर रस –

विभाव, अनुभाव और संचारी भावों के संयोग से परिपुष्ट उत्साह नामक स्थायी भाव वीर रस है। इस रस में युद्ध अथवा कठिन कार्य को करने के लिए मन में जो उत्साह की भावना विकसित होती है, उसे ही वीर रस कहते है।

डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य में भी वीर रस प्रधान कविताएँ है।
'घोषणा', कविता की पंक्तियों में वीर रस की व्याप्ति है

'घोषणा करता हूँ मैं
ले हाथ में शमशीर।
हमारा था, हमारा है,
हमारा ही रहेगा, सर्वदा कश्मीर।' [11]

'शब्द की अनुगूँज' कविता संग्रह की कविता 'राणा प्रताप' और 'हल्दी घाटी' में वीर रस की सुन्दर अभिव्यंजना हुई है।

'लेकर मुट्ठी भर वीर, गगन भर धीर ह्रदय में, किया
स्पूतों का था राणा ने आह्वान, जगी रजपूती माटी
ले हाथ में खड्ग बाँकुरे, उतर पड़े तब समरांगण में
उनके हुंकारों और झंकारों से थी गूँज उठी हल्दीघाटी।' [12]

'शब्द की अनुगूँज' कविता संग्रह की कविता 'पुरुषार्थी' में भी वीर रस की सुन्दर अभिव्यंजना हुई है।

पुरुषार्थी
समय की
बिसात पलट सकता है
विधि का
लिखा हुआ
विधान पलट सकता है
क्योंकि
पुरुषार्थी का
लहू होता है बहुत गर्म
इसलिए
रचाव ही उसका
होता है एकमात्र धर्म।' [13]

4.2.4 वात्सल्य रस –

संस्कृत साहित्याचार्यों ने वात्सल्य रस को स्वतन्त्र रस न मानते हुए, श्रृंगार रस का ही उपभेद माना हैं। क्योंकि इसका भी स्थायी भाव रति है, जिसे संतान विषयक रति या वात्सल्य के नाम से जाना जाता है।

इसके भी दो उपभेद है।

(1) संयोग वात्सल्य

(2) वियोग वात्सल्य

डॉ. उषा किरण सोनी के कविता संग्रह 'मुक्ताकाश में' की कविताओं 'मेरे शिशु', 'चंचल किशोर', 'कल की बात है', 'विभोर करता है' में वात्सल्य रस की सलिला पूर्ण वेग में प्रवाहित होती सी जान पड़ती है।

'अधर युगल खोल जब वह मुस्कुराता हैं
हृदय पर आनन्द की बरसात करता हैं
हुमक कर बाँहें पसारे निकट आने को लपकता हैं
शुष्क मनोदधि में मेरे अनुराग की रसधार भरता हैं।' [14]

'मेरे शिशु' कविता में भी वात्सल्य रस की सरिता प्रवाहमान है।

'तुम्हारा यह कोमल स्पर्श
है भरता रोम–रोम में हर्ष
गुलाबी अधरों की मुस्कान

मिटाती मन की सारी थकान।' [15]

'मुक्ताकाश में' संग्रह की कविता 'कल की बात है' भी वात्सल्य रस की छटा बिखरी पड़ी है।

'दृष्टि मिलते ही
तेरा खिल उठना
गोद में सिमट
सुख से भर उठना
मधुरिम बोलों से
घर–आँगन गुँजा देना
अभी कल की ही तो बात है।' [16]

'शब्द की अनुगूँज' कविता संग्रह की कविता 'यही बच्चे' में भी वात्सल्य रस की सुन्दर अभिव्यंजना हुई है।

'भोली अदाओं और तोतली बातों से
मन को लुभाते है यही बच्चे
नाचते –गाते और घर को गुँजाते
अमरावती लजाते हैं यही बच्चे
सपनों की दुनिया में सोते और जागते
कल्पना लोक बसाते हैं यही बच्चे
परिचित–अपरिचित स्नेही के कंठ लग
प्रेम सुरभि फैलाते हैं यही बच्चे।' [17]

4.2.5 हास्य रस –

विभाव, अनुभाव और संचारी भावों के संयोग से परिपुष्ट हास नामक स्थायी भाव हास्य रस कहलाता है। जहाँ किसी विचित्र परिस्थिति या स्थिति के कारण हास्य की स्थिति बनती है; वहाँ हास्य रस होता है।

'अक्षरों की पहली भोर' कविता संग्रह की कविता 'महानगर और बूढ़े' में वर्तमान जीवन–शैली बड़ी ही हास्यास्पद हैं यहाँ व्यंग्य रूप में शहरी जीवन का वर्णन हुआ हैं, जिसमें हास्य रस की झलक मिलती हैं।

'गमलों के बगीचे
सजे हैं बालकनी में
जगह–जगह टँगे है

झुर्रियों भरे चेहरे।' [18]

इसी तरह 'मौन के स्वर' कविता संग्रह की कविता 'महानगर', 'बूढ़े लाचार चेहरे' में भी महानगरीय जीवन का व्यंग्य रूप में हास्यास्पद वर्णन दृष्टव्य है।

'सजी दुकानें
भागते लोग
घूमते पहिए
कर्ण–कटु शोर
भागम–भाग
जैसे लगी हो आग।' [19]

इसी तरह 'बूढ़े लाचार चेहरे' कविता में भी हास्य रस की अभिव्यंजना हुई हैं।

'बालकनी में सजे हैं, गमलों के बगीचे
टँगे है बीच–बीच, बूढ़े लाचार चेहरे।' [20]

'शब्द की अनुगूँज' कविता संग्रह की कविता 'हम भी होते', 'सब चलता है' में भी व्यंग्य रूप में हास्य रस के छींटे बहुत ही मनोहारी हैं।

'अब बापू ने भैंस खरीदी और रस्सी हमें थमाई
खूब कर चुके मस्ती, अब तुम कुछ तो करो कमाई
गोबर, घास, चारे की चिंता अब हमें सताती जागते–सोते
हाय! पढ़ाई की होती तो हम भी डॉक्टर–इंजीनियर होते।' [21]

'सब चलता है' कविता में चौकीदार के माध्यम से वर्तमान व्यवस्था पर करारा व्यंग्य किया गया है, जो हास्यास्पद हैं।

'ऊँघते हुए चौंका वह, सुन साहब ने थी घंटी बजाई
ठीक उसी समय अचानक उसकी तबीयत घबराई
भीतर जाकर साहब को तब उसने सलाम बजाया
जाकर बाबू से फाइल ले आओ, साहब ने फ़रमाया।' [22]

इसी कविता की अन्तिम पंक्तियाँ –

'घड़ी की सूई पाँच बजने से थी थोड़ी सी ही पीछे
सीढ़ियाँ उतरते साहब को, चढ़ते घसीटा जी दीखे
हैं–हैं–हैं–हैं! साहब जी हमको थोड़ी सी देर हो गई
दरअसल रास्ते में पुराने साहब जी से भेंट हो गई।' [23]

4.2.6 शान्त रस –

जहाँ संसार की नश्वरता, तत्त्व ज्ञान की प्राप्ति अथवा संसार से विरक्ति होने पर, परमात्मा के वास्तविक रूप का ज्ञान होने पर, मन को जो शांति मिलती है; वहाँ शांत रस

की उत्पत्ति होती है। शांत रस का स्थायी भाव निर्वेद है। जहाँ न दुःख होता है, न द्वेष होता है, मन सांसारिक कार्यों से मुक्त हो जाता है और मनुष्य वैराग्य प्राप्त कर लेता हैं, वहाँ शान्त रस होता है।

लेखिका के कविता संग्रह 'अक्षरों की पहली भोर' की कविता 'रेल का संदेश' में शान्त रस ध्वनित हुआ है।

'चला–चल, चला–चल, ये तेरी नियति है।
क्योंकि गति ही है जीवन व जीवन ही गति है।' [24]

'मौन स्वर' कविता संग्रह की कविता 'आवरण–अनावरण' में भी संसार की नश्वरता के बारे में बताया गया हैं इसलिए यहाँ भी शांत रस की व्यंजना हुई है।

'वांछा की तृप्ति पर
खिलखिलाता आवरण
मुक्ति की है छटपटाहट
विदीर्ण कब हो आवरण।' [25]

लेखिका के कविता संग्रह 'मुक्ताकाश में' की कविता 'द्वन्द्व' में सत्य का ज्ञान कराते हुए संसार की नश्वरता के बारे वर्णन किया गया है। इसलिए इसमें भी शान्त रस की व्याप्ति है।

'जन्म से मृत्यु तक अनवरत
रहते द्वंद्वरत मन और आत्मा
जयी मन चढ़ाता फिर चाक पर
आत्मजयी को मिलता परमात्मा।' '[26]

इसी तरह इनके कविता संग्रह 'शब्द की अनुगूँज' की कविता 'पुण्य–पाप', 'सबसे बड़ा सच', एवं 'जब कमा लिया' में शांत रस की अनुगूँज सुनाई देती हैं।

'जो आया है आकार में
उसे जाना है संसार से
है सबसे बड़ा सच
अचरज यही महान है।' [27]

'जब कमा लिया' कविता में उस परमात्मा परम तत्व को प्राप्त कर जो मन को शान्ति मिलती है, वह धन, दौलत, शोहरत से नहीं मिलती है। इस कविता की मूल संवेदना शान्त रस को अभिव्यक्ति प्रदान करती है।

'एक दिन आई जीवन की शाम
लगा सब निरर्थक है
जीवन में सार्थक है बस एक राम
कमाए दोनों दाम और नाम
पर शान्ति मिली तब जब कमा लिया राम।' 28

'प्रवृत्ति' में भी शांत रस की व्याप्ति हुई है–

'जगेगी जब वृत्ति से
निवृत्ति की प्रवृत्ति
बढ़ेगी तब प्रज्ञा में दीप्ति
छँटेगा तभी अंतर का तम
मिलेगी चित्त को दिशा
और मन को तृप्ति।' 29

4.3 आधुनिक काल में उद्भूत रस –

प्राचीन काल से ही साहित्य में नवरस सरिता लहरी के प्रवाह में पाठक रससिक्त हो आनन्दानुभूति करते हुए आत्मलीन होते रहे है, परन्तु आधुनिक काल की स्थिति, परिस्थिति में आ रहे बदलाव के कारण नवीन रसों का उद्भव आधुनिक परिदृश्य में देखा जा रहा है। वर्तमान परिस्थितियों की माँग के कारण कुछ आधुनिक काल में उद्भूत रसों का विवेचन डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य में बख़ूबी देखा जा सकता है। जो निम्न प्रकार से है –

4.3.1 देशभक्ति रस –

देश के प्रति समर्पण का भाव तथा उत्साह, त्याग, बलिदान का भाव जहाँ हो, वहाँ देशभक्ति रस होता है। इसका स्थायी भाव भी उल्लास ही हैं। इसे वीर रस के अन्तर्गत ही माना जा सकता है।

डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य में 'वीररस' एवं 'देशभक्ति रस' से ओत–प्रोत कविताएँ पाठक हृदय में ओज–भाव जाग्रत करती है।

'बंदी माँ की इक पुकार पर
तन अपने केसरिया धर कर
उतर पड़े जो समरांगण में
जीवन के हर सुख को तजकर,
उन वीरों को नमन करें हम।' [30]

लेखिका के 'अक्षरों की पहली भोर' कविता संग्रह की कविता 'प्रहरी', 'स्वातन्त्र्य गाथा', 'घोषणा', 'महात्मा गाँधी', 'इन्दिरा प्रियदर्शिनी' में देशभक्ति रस की अभिव्यंजना हुई है।

'मात्र पाखी मत समझ, प्रहरी हूँ मैं
शत्रु पर जो जा गिरे, बिजली हूँ मैं
है परों में शक्ति मेरे और स्वर में धार
नाभि से आकंठ भरा है मातृभू का प्यार।' [31]

इसी संग्रह की कविता 'छब्बीस जनवरी' में भी देशभक्ति रस ध्वनित हो रहा है।

'अक्षुण्ण हो व स्वतंत्र रहे
गणतंत्र यही मेरा अरमान।
युगों–युगों तक इस वसुधा पर
रहे तिरंगा अमिट निशान।' [32]

'मुक्ताकाश में' कविता संग्रह की कविता 'आर्यावर्त के लाल' में देशभक्ति रस की अनुगूँज सुनाई पड़ती है।

'जननी का कष्ट मिटाने को
उजड़े गुलशन को सजाने को
घर छोड़ सिंह बाहर निकले
धर प्राण हथेली पर वे चले
जग गूँज उठा ललकारों से
वन्दे मातरम् के नारों से।' [33]

'शब्द की अनुगूँज' कविता संग्रह की कविता 'भाग्य–विधाता बन सके', 'राणा प्रताप' और 'हल्दी घाटी', 'मातृवन्दना', 'मिल गया इंसाफ़', में देशभक्ति रस की अभिव्यंजना हुई है–

'अंधकार छँट जाए मन का, सन्मार्ग पर वे चल सके
पाकर दिशा निज राष्ट्र के वे भाग्य विधाता बन सकें।' [34]

'मातृ–वन्दना' कविता में भी देशभक्ति की गूँज ध्वनित हो रही हैं –

'माँ भारती के चरणों में, कोटि–कोटि वन्दना हमारी
प्रलय तक हो स्थिर स्वतंत्रता, यही है प्रार्थना हमारी।' [35]

'मिल गया इन्साफ़' कविता में भी देशभक्ति रस की अभिव्यंजना हुई हैं।

'तेरे घर में घुस, कर डाले हमने सारे आतंकी साफ़
उरी में हुए सभी शहीदों को अब मिल गया इंसाफ़।' [36]

4.3.2 सत्य रस (यथार्थ रस) –

जहाँ वर्तमान सत्य अर्थात् यथार्थ को उजागर किया जाता है, वहाँ सत्य रस होता है। डॉ. उषा किरण सोनी का साहित्य, यथार्थ जीवनानुभूतियों का सृजनशील उपक्रम है। इन्होंने पाठक को यथार्थ से रूबरू होने का अवसर प्रदान किया है। 'अक्षरों की पहली भोर' कविता संग्रह की अधिकांश कविताएँ जैसे – 'अरे ये कैसी होली है, 'झोपड़ियाँ, 'युग', 'आधुनिक रिश्ते',
'नारी शक्ति', 'कहाँ जा रही ?' 'हमारा ताज', 'भूख', 'सत्य', 'फिर न जाने', 'मानवता का क्रंदन' आदि में सत्य रस की गूँज सुनाई देती है।

'रूखी पथरीली मन की भूमि पर
जीवन बिता रहे हैं किश्तों में।
इसलिए रिश्तों के नाम तो हैं
मगर गर्मी नहीं है रिश्तों में।' [37]

'युग' कविता में भी 'सत्य रस' उद्भूत है –

'कलियुग के मनु का, प्रजा ही है आहार।
श्रद्धा है कर रही, देह का व्यापार।' [38]

'मौन के स्वर' कविता संग्रह की कविताएँ – 'बेटी', 'नई पौध', 'बचपन से पचपन', 'बंद द्वार के पीछे', 'चलता है यार', 'महानगर', 'अपने घर का सपन', 'हाल–बेहाल', 'कितना बदल गया', 'कहाँ आ गए है', 'क्यों करते है वे ऐसा ?', 'प्रत्याक्रमण', 'सब कुछ बिकता है', 'स्खलन', बूढ़े लाचार चेहरे', 'दलित और धन्य धरा', 'लड़की', 'पोषण', 'महत्वपूर्ण', 'देह में विदेह', 'भूख–1', 'भूख–2', 'ऐसा उलझा पाँव' आदि में सत्यरस की अभिव्यंजना हुई है।

'अवसर से
महत्वपूर्ण हो गया
आडम्बर
आशीर्वाद से
महत्त्वपूर्ण हो गया
स्वाद
आगमन से
महत्त्वपूर्ण हो गया
लिफ़ाफ़े का वजन।' [39]

'मुक्ताकाश में' कविता संग्रह की कविताएँ, 'विश्वास', 'महत्ता', 'दृष्टिकोण', 'मूल', 'भाव–अनुभाव', 'अनचीन्हा पथ', 'प्रकृति से युद्ध', 'मुखौटा', 'दर्पण', 'रोटियाँ', 'तब्दील हो गये', 'विकास', 'प्राप्य–दुष्प्राप्य', 'संस्कृति–विकृति', 'कौन किसका विधाता है', 'बचा पाएँगे हम ?, 'औरत', 'शक्ति पुंज', 'रोबोटी संतान', 'वृद्ध जनक दम्पत्ति', 'नेता', 'स्पर्धा', 'पड़ोसी', 'संसद' आदि में सत्यरस की प्रधानता है।

'नहीं है आज किसी के पास
दूसरों के लिए तनिक भी समय
निजी स्वार्थ पूर्ति हेतु करते
औरों का अधिकार हनन निर्भय।' [40]

इसी तरह इनके चतुर्थ कविता संग्रह 'शब्द की अनुगूँज' की कविताओं– 'कामना', 'शब्द–अर्थ और कवि', 'सिमट गया है', 'सम्बन्ध', 'स्तम्भ', 'अज़ब व्यवहार', 'सब चलता है', में 'सत्य रस की अनुगूँज सुनाई दे रही है।

'कमरों और
बालकनी के
फ्लैटनुमा
पिंजरों में बंद
बहुमंजिली इमारतें
नहीं रखतीं
कोई संबंध
किसी के
अवतरण से
और न ही
किसी के
जीवन–मरण से।' [41]

'शब्द की अनुगूँज' कविता संग्रह की कविता 'सम्बन्ध' की इन पक्तियों में सत्य रस की अनुगूँज सुनाई दे रही है।

'रोशन काँच दिखाता है
वीर बहूटियां
जग–बुझ, बुझ–जग के साथ ही
दिखती हैं

सूखी डबल रोटियाँ।' [42]

'महानगर और बूढ़े' कविता में भी सत्य रस की व्याप्ति है।

'पोषण
जवानी में
माँ–बाप का फ़र्ज
बुढ़ापे में
माँ–बाप पर कर्ज़।' [43]

'मौन के स्वर' कविता संग्रह की कविता 'पोषण' में भी सत्य रस को अनुगूँज सुनाई दे रही है।

4.3.3 बुद्धिरस और बौद्धिक चिन्तन –

जहाँ बौद्धिक चिन्तन, विचार, दर्शन की प्रधानता हो, वहाँ बुद्धि रस होता है। कोई भी साहित्यकार बिना बौद्धिक चिन्तन के साहित्य सर्जना नहीं कर सकता। डॉ. उषा किरण सोनी ने भी समाज की हर स्थिति, परिस्थिति को देखा, भोगा और मानसिक भावभूमि की कसौटी पर कसने के बाद ही पाठक को अपना साहित्य समर्पित किया। इनके साहित्य में जो आध्यात्मिकता, दार्शनिकता की छटा देखने को मिलती है वह बौद्धिक चिन्तन का ही परिणाम हैं। बौद्धिक चिन्तन प्रधान रचनाओं में बुद्धिरस की अभिव्यंजना हुई है।

'अक्षरों की पहली भोर', कविता संग्रह की कविताओं 'शब्द', 'सहस्राब्दी महोत्सव', 'जीवन', 'कर सृजन' में बुद्धि रस और बौद्धिक चिन्तन की प्रधानता है।

'कौन पल आता पलटकर
कौन कल आता पलटकर।
समय गणना से परे है
तारे ज्यों अगणित हैं गगन पर।' [44]

'कर सृजन' में भी 'बुद्धि रस' की व्यंजना हुई है–

'कौन सा है कल नया
और कौन सा है पल नया
साक्षी है ब्रह्माण्ड सारा
घट रहा पल – पल नया।' [45]

'मौन के स्वर' कविता संग्रह में 'आलोड़न' की कविताएँ दार्शनिक भाव की कविताएँ इसमें बुद्धि रस और बौद्धिक चिन्तन की प्रधानता है।'जागरण', 'मुक्ताफल', 'नाद', 'अमी क्या है' में इसकी गूँज सुनाई देती है।

'करता, प्राणी
स्थानान्तरण
देह से मन को
होता जागरण
बनता, मन–अ–मन।' [46]

'अमी क्या है' कविता में भी बुद्धि रस की प्रधानता हैं।

'सुख क्या है ?
हृदय में तृप्ति का ठहराव।
दुःख क्या है ?
असीमित तृषा का जुड़ाव।।' [47]

इसी संग्रह से,

'ज्यों–ज्यों राग छूटता जाता
त्यों–त्यों अनुरागी होता मन
छेड़े है सब राग मुरलिका
वैरागी हो जाता जीवन।' [48]

'मुक्ताकाश में' कविता संग्रह के 'स्वगत' भाग की कविताओं में बुद्धिरस और बौद्धिक चिन्तन की प्रधानता दृष्टिगत होती हैं।

'जीव का देह से प्रयाण
अपेक्षाओं, उपेक्षाओं और
समस्त कष्टों से मुक्ति
पर; कितनी देर का आनंद।' [49]

इसी संग्रह की 'उत्सव' कविता में भी बुद्धि रस की प्रधानता है।'

'छूटेगा ममकार, चूर होगा अहंकार
न भय न इच्छा, जीवन बस उत्सव
भू–नभ मध्य होगा सुख दुःखाभास सम
बन जाएगा मरणपल तब मिलनोत्सव।' [50]

'अवरोध' कविता में भी बौद्धिक रस का परिपाक देखा जा सकता हैं।

'उससे अपेक्षा है
इसलिए क्रोध है
असंबद्धता के आवरण

में छिपा स्वार्थ बोध है
पदार्थ की या सम्मान
की रंच मात्र वांछा भी
मुक्ति के मार्ग में आया
पर्वत सा अवरोध है।' [51]

'शब्द की अनुगूँज' कविता संग्रह की 'अन्तर्नाद' भाग की कविताओं में बुद्धिरस और बौद्धिक चिन्तन की अनुगूँज हैं –

'क्षण की आयु
सदा क्षण ही है
क्षण–क्षण कर
युग जाते बीत।' [52]

इसी संग्रह की कविता 'पल' में भी बुद्धिरस प्रधान है।

'साहस का पल श्रीफल बन जाता
भयकारक पल छल कर जाता
पल–पल के अनुभव को चिनकर
जीवन एक महल बन जाता।' [53]

निष्कर्ष –

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि 'रस जीवन है, प्राणतत्व है। रस के अभाव में कोई भी काव्य, काव्य नहीं वरन् नीरस सा, उबाऊ शब्द जाल मात्र रह जाता है। काव्यास्वादन से प्राप्त आनन्द ही काव्य का मुख्य तत्व है। रसवादी आचार्यों ने इसी आनन्द को रस की संज्ञा दी है। इसलिए आचार्य विश्वनाथ ने काव्य की परिभाषा में कहा है कि –

"वाक्यम् रसात्मकम् काव्यम्।"

उक्त परिभाषा में रस को काव्य का प्राण तत्त्व माना गया है, और उसी से चिर् आनन्द की प्राप्ति होती है। यह आनन्द पाठक को अतीन्द्रिय जगत में ले जाता है, और सहृदय व्यक्ति उसमें डूब जाता हैं। रस को ब्रह्मानन्द सहोदर भी कहा गया है। हमारे जीवन के जितने भी क्रिया कलाप है उनकी प्रेरणा और लक्ष्य, आरम्भ और अन्त रस में ही है। रस जीवन का सार है।

सर्वप्रथम भारतीय काव्य शास्त्र में रस का विवेचन आचार्य भरतमुनि ने अपने ग्रन्थ नाट्यशास्त्र में किया था। आगे चलकर साहित्य की विभिन्न विधाओं में और विशेषकर काव्य में रस की ही सत्ता को स्थापित किया गया है।

डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य में मुख्य रूप से शृंगार, वीर, करूण, वात्सल्य, हास्य, भक्तिरस की प्रधानता चारों कविता संग्रह 'अक्षरों की पहली भोर', 'मौन के स्वर','मुक्ताकाश में', 'शब्द की अनुगूँज' में बख़ूबी देखी गई हैं। इसके अलावा लेखिका के साहित्य में आधुनिक काल में उद्भूत रस यथा– 'देशभक्ति रस', 'सत्य रस', तथा बुद्धि रस और बौद्धिक चिन्तन जैसे रसों की रसलहरी विद्यमान है। राष्ट्रीय भाव धारा की कविताओं में देशभक्ति रस है, तो यथार्थ भाव बोध की कविताओं में सत्यरस की प्रधानता है और तार्किक चिन्तन प्रधान दार्शनिक भाव भूमि पर लिखी गई कविताओं में बुद्धिरस और बौद्धिक चिन्तन की रसधारा प्रवाहमान है।

वर्तमान समय, स्थिति, परिस्थिति की माँग के अनुरूप लेखिका ने आधुनिक काल में उद्भूत रसों की कल्पना कर रस क्षेत्र को और अधिक विस्तृतता प्रधान की हैं। जो इनके विशाल हृदय, असीमित विचार, चिन्तन–मनन का परिचय देते है। अपने नाम के अनुरूप ही इन्होंने साहित्य जगत को भी अपनी उषा की किरणों से नहला कर रससिक्त किया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

1. काव्य शास्त्र, भागीरथ मिश्र, पृ.सं. 235
2. अक्षरों की पहली भोर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 18
3. अक्षरों की पहली भोर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 19
4. मौन के स्वर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 87
5. शब्द की अनुगूँज, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 94
6. शब्द की अनुगूँज, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 95
7. अक्षरों की पहली भोर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 80
8. शब्द की अनुगूँज, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 47
9. मुक्ताकाश में, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 73
10. शब्द की अनुगूँज, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 57
11. अक्षरों की पहली भोर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 40
12. शब्द की अनुगूँज, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 85
13. शब्द की अनुगूँज, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 62
14. मुक्ताकाश में, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 67
15. मुक्ताकाश में, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 68
16. मुक्ताकाश में, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 72

17. शब्द की अनुगूँज, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 63
18. अक्षरों की पहली भोर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 64
19. मौन के स्वर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 36
20. मौन के स्वर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 50
21. शब्द की अनुगूँज, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 69
22. शब्द की अनुगूँज, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 75
23. वहीं से
24. अक्षरों की पहली भोर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 34
25. मौन के स्वर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 64
26. मुक्ताकाश में, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 21
27. शब्द की अनुगूँज, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 22
28. शब्द की अनुगूँज, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 48
29. मुक्ताकाश में, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 42
30. अक्षरों की पहली भोर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 38
31. अक्षरों की पहली भोर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 35
32. अक्षरों की पहली भोर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 39
33. मुक्ताकाश में, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 74
34. शब्द की अनुगूँज, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 61
35. शब्द की अनुगूँज, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 86
36. शब्द की अनुगूँज, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 88
37. अक्षरों की पहली भोर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 24
38. अक्षरों की पहली भोर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 27
39. मौन के स्वर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 54
40. मुक्ताकाश में, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 62
41. शब्द की अनुगूँज, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 46
42. अक्षरों की पहली भोर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 65
43. मौन के स्वर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 54
44. अक्षरों की पहली भोर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 32
45. अक्षरों की पहली भोर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 69
46. मौन के स्वर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 62

47. मौन के स्वर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 71
48. मौन के स्वर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 84
49. मुक्ताकाश में, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 24
50. मुक्ताकाश में, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 27
51. मुक्ताकाश में, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 41
52. शब्द की अनुगूँज, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 50
53. शब्द की अनुगूँज, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 51

अध्याय पंचम

डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य में भाषा

अध्याय पंचम

डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य में भाषा

भाषा भावों–विचारों के सम्प्रेषण का सशक्त माध्यम है। जिसके द्वारा मानव समुदाय आपस में अपने विचार–विनिमय करता है। भाषा शब्द 'भाष्' धातु के संयोग से निर्मित हुआ है, जिसका अर्थ है – बोलना या कहना अर्थात् भाषा वह है जो बोली और कही जा सके, उसमें ध्वन्यात्मकता हो। मानव अपने विचारों का आदान–प्रदान कभी शब्दों द्वारा करता है तो कभी संकेतों से भी काम चला लेता है। भाषा को विभिन्न विद्वानों ने परिभाषित कर अपने मत व्यक्त करने का प्रयास किया है। डॉ. श्याम सुन्दरदास कहते है कि –''विचारों की अभिव्यक्ति के लिए व्यक्त ध्वनि संकेत के व्यवहार को 'भाषा' कहते है।'' प्रसिद्ध दार्शनिक प्लेटो ने 'सोफिष्ट' में विचार और भाषा के समन्वय में लिखते हुए कहा है कि –''भाषा और विचार में थोड़ा सा अन्तर हैं, विचार आत्मा की मूक या ध्वन्यात्मक बातचीत है, पर वही जब ध्वन्यात्मक होकर होंठों पर प्रकट होती है तो उसे भाषा की संज्ञा देते है।''[1]

स्वीट के अनुसार– ''ध्वन्यात्मक शब्दों द्वारा विचारों को प्रकट करना ही भाषा हैं।''[2] दोनों ही परिभाषाओं में ध्वन्यात्मक शब्दों को महत्त्व प्रदान है। विचारों के आदान–प्रदान के लिए ध्वन्यात्मक शब्दों का होना आवश्यक है।

कामताप्रसाद गुरु भाषा को परिभाषित करते हुए लिखते है कि – ''भाषा वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचारों को, दूसरों पर भली–भाँति प्रकट कर सकता है, और दूसरों के विचार स्पष्टता को ग्रहण करने में सक्षम हो सकता है।''

इस प्रकार भाषा की अधिक व्यवस्थित और सर्वसमावेशी परिभाषा हुई– ''भाषा मानव–उच्चारणावयवों से उच्चरित यादृच्छिक ध्वनि–प्रतीकों की वह संरचनात्मक व्यवस्था है, जिसके द्वारा समाज विशेष के लोग आपस में विचार–विनिमय करते है, लेखक, कवि या वक्ता अपने–अपने अनुभवों एवं भावों आदि को व्यक्त करते है तथा अपने वैयक्तिक और सामाजिक व्यक्तित्व, विशिष्टता तथा अस्मिता (Identify) के सम्बन्ध में जाने–अनजाने जानकारी देते है।'' [3]

भाषा के दो रूप है – मौखिक भाषा और लिखित भाषा। मौखिक भाषा को स्थायी व चिर्काल तक जीवन्त बनाये रखने के लिए लिखित भाषा का प्रचलन प्रारम्भ हुआ। हम अपने पूर्वजों के अनुभव व ज्ञान को उत्तराधिकार में प्राप्त करते हैं जो भाषा के अभाव में संभव नहीं हो पाता और ना ही हम आविष्कार कर पाते, ना ही हमारा चिन्तन का क्षेत्र

विस्तृत होकर साहित्य सर्जना कर पाता। भाषा की उपलब्धि के कारण ही आज मानव सभी प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ व शक्तिशाली बन पाया है। हमारी सभ्यता और संस्कृति के विकास के लिए भाषा वरदान सिद्ध हुई है।

हिन्दी भाषा का विकास विभिन्न चरणों से होकर गुजरा है– वैदिक संस्कृत → लौकिक संस्कृत → पालि → प्राकृत → अपभ्रंश → खड़ी बोली हिन्दी। सम्पूर्ण प्राचीन साहित्य संस्कृत भाषा में रचित है उस समय बोल–चाल की भाषा लौकिक संस्कृत थी। इस तरह समय के साथ–साथ भाषा में परिवर्तन होता चला गया और विभिन्न चरणों से गुजर कर आज भाषा का जो रूप हमें देखने को मिलता है वह खड़ी बोली हिन्दी है, जो वर्तमान में प्रचलित है।

सम्पूर्ण जगत में साहित्य सर्जना गद्य भाषा एवं पद्य भाषा (काव्य भाषा) में होती रही हैं। छन्दरहित सामान्य सार्थक शब्दावली वाली भाषा गद्य भाषा है तथा छन्दोबद्ध, गेय रूप में प्रयुक्त शब्दावली वाली भाषा काव्य भाषा है।

अज्ञेय ने अपने भाषा सम्बन्धी विचारों में शब्द के प्रयोग पर विशेष बल दिया। सार्थक, सुसंस्कृत, परिमार्जित एवं परिनिष्ठित शब्द साहित्यिक भाषा के लिए आवश्यक है। बोलचाल की भाषा जब व्याकरण के नियमों से अलंकृत होकर तथा परिमार्जित होकर अपनी परिपक्व अवस्था की ओर अग्रसर होने लगती है तभी वह साहित्य–सृजन का माध्यम बनने लगती है और साहित्यिक भाषा कहलाती है।

डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य में भाषा का परिष्कृत परिमार्जित, सुसंस्कृत परिनिष्ठित रूप देखने को मिलता हैं। इन्होंने अपनी भाषा शब्दावली में संस्कृतनिष्ठ तत्सम शब्द, हिन्दी, उर्दू–फ़ारसी भाषा के शब्द और कहीं–कहीं अंग्रेजी, प्रांजल भाषा के शब्दों का प्रयोग किया है। इनके अलग–अलग भाषा–भाषी प्रान्तों में रहने के अवसरों के लाभ–अलाभ के क्षणों ने लेखिका के अनुभवों को लम्बे समय तक अपने भीतर रख पाने में समर्थ बनाया और यही घटक अपने परिवेश की बहुरंगी, दृश्यावलियों को देखने समझने में सक्षम बनाती है। पद्य की भाषा में कहीं इन्हें लगा कि छन्दबद्धता कहीं न कहीं अनुभव की सहज अभिव्यक्ति में बाधक है, तो इन्होंने छन्दमुक्त शब्दावली की भाषा का प्रयोग किया। लेखिका की भाषा पर पकड़ मजबूत है। संवेदना जगाती मार्मिक भाषा के साथ ही यथार्थ का तीखापन भी हैं।

5.1 भूमिका–कथ्य और भाषा का सामंजस्य –

किसी भी रचनाकार के मर्म का उद्घाटन एवं रचनाकार की रचनाधर्मिता तथा

रचनागत भावों के उद्घाटन के लिए कई प्रणालियाँ विकसित हुई है। समालोचनात्मक रूप से विधा से विधा तक के मापदण्ड़ों का अनेक प्रकार से निर्धारण हुआ है। परन्तु यह निर्विवाद है कि प्रत्येक रचना एक 'कथ्य' को लेकर चलती है और 'कथ्य' को ही रचनाकार अपने भाषा–शिल्प के माध्यम से सम्प्रेषित करता है।

अतः हमें 'कथ्य' और 'भाषा' की अवधारणा से परिचित होना अनिवार्य है। सर्वप्रथम हम 'कथ्य' शब्द को समझने का प्रयास करते है। विभिन्न शब्द कोशों में इस शब्द की व्युत्पत्ति, अर्थ और व्यंजना पर प्रकाश डाला गया है।

'मानक हिन्दी कोश' में कथ्य शब्द के सम्बन्ध में बताया गया है – ''संस्कृत की 'कथ्' धातु में 'यत्' प्रत्यय जोड़ने से कथ्य शब्द की व्युत्पत्ति हुई है।'' [4]

'कथ् का सामान्य अर्थ है, कहना तथा इस प्रकार कथ्य का अर्थ हुआ कहने योग्य।' [5]
अर्थात् जो कहने योग्य है वही कथ्य हैं।

डॉ. श्याम सुन्दर दास ने 'योग्य' शब्द को उचित शब्द के अर्थ में ग्रहण किया है। उनके अनुसार 'जो कहना उचित हो, वह कथ्य है।'[6]

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि कहना ही कथ्य नहीं बल्कि जो कहने योग्य हो अथवा उचित हो, वही कथ्य है। साहित्यकार का लक्ष्य अपने पाठक तक उचित और योग्य को ही प्रेषित करना है।

अस्तु; स्थूलतः साहित्य में कथ्य का अर्थ लेखक अथवा साहित्यकार के संप्रेषणीय अर्थ से है। परन्तु इसे संप्रेषणीय बनाने के लिए भाषा के साथ सामंजस्य होना अनिवार्य है।

'हिन्दी में कथ्य शब्द के लिए अनेक पर्यायवाची शब्द मिलते है, यथा वर्णनीय, कथ, कथनीय, कह्य, वचनीय, वर्ण्य आदि।'[7] इनके अतिरिक्त और भी शब्द है, जो इसके समानार्थी रूप में प्रयुक्त होते है। जैसे– संदेश, अभिप्राय, अभिप्रेत, अभिप्रेतार्थ, लक्ष्य, मन्तव्य आदि। प्रस्तुत सभी पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग कहने के अर्थ में ही होता है और अन्त में विषय और विषय–वस्तु अपने कथ्य में सिमट जाते है।

उपर्युक्त सभी परिभाषाओं के विश्लेषण से यह स्पष्ट हो जाता है कि कथ्य के अर्थ के विषय में सभी विद्वान एकमत है कि किसी भी रचना का उद्देश्य उसका कथ्य कहलाता है। साहित्यकार जिस विषय को अपनी रचना के माध्यम से अभिव्यक्ति प्रदान करता है, उसको उसका कथ्य, विषय, उद्देश्य आदि कुछ भी कहा जा सकता है।

स्पष्टतः हम कह सकते है कि रचना में निहित संदेश अथवा उद्देश्य को कथ्य के नाम से अभिहित किया जाता है। कथ्य तीन प्रकार के होते है – 1. वैज्ञानिक कथ्य 2. दार्शनिक कथ्य 3. साहित्यिक कथ्य। साहित्यकार कथन मात्र ही नहीं करता बल्कि भावों

की सुन्दर अभिव्यंजना के द्वारा अपने कथ्य को अधिक मार्मिक, आकर्षक एवं संप्रेषणीय भी बनाता है। वह वैज्ञानिक तथ्य और दार्शनिक सत्य को ग्रहण करके उसमें अपनी कल्पना के रंग भरता है।

अतः साहित्यकार के कथ्य में सत्य एवं यथार्थ के साथ–साथ कल्पना और भावना का मणिकांचन मिश्रण होता है। जिसे साहित्यकार भाषा के माध्यम से संप्रेषित करता है। साहित्यकार अपने नव अर्जित कथ्य को अपनी रचना के माध्यम से, घटनाओं और विशिष्ट पात्रों के आधार पर नियोजित एवं संप्रेषित करता है। यह कार्य इतना सरल नही होता। उसे अपनी भाषा में वैशिष्ट्य लाना पड़ता है। क्योंकि भाषा के अर्थ शब्द कोश के आधार पर नहीं खुलते बल्कि सन्दर्भ के माध्यम से सामने आते है तभी उनका अर्थ भावपूर्ण होता है और यह सब कार्य कथ्य और भाषा के सामंजस्य द्वारा ही सम्भव हो पाता है।

सामंजस्य का सामान्य अर्थ है – तालमेल अर्थात् मेलजोल, समझौता, सुलह आदि। एक सफल एवं सार्थक जीवन के लिए समझौता जरूरी है। जीवन में अगर समझौतावादी दृष्टिकोण न हो तो जीवन बिखर जाता है। यदि व्यक्ति समझौता करना नहीं जानता, उसका किसी दूसरे व्यक्ति के साथ तालमेल नहीं बैठ पाता है, तो छोटी–छोटी घटनाएँ भी विकराल रूप धारण कर लड़ाई–झगड़ा, युद्ध, महायुद्ध का कारण बन जाती है। ठीक उसी प्रकार अगर 'कथ्य' और 'भाषा' में कोई तालमेल, सामंजस्य नहीं होगा तो साहित्यकार तथा उसकी रचना परिहास का हेतु बन जाएगी।

साहित्यकार को बहुत सजग एवं जागरूक रहना पड़ता है तभी उसका कथ्य सार्थक एवं संप्रेषणीय बन पाता है। साहित्यकार के कथ्य, विषय, उद्देश्य को पाठक तक पहुँचाने का माध्यम भाषा ही है। इसलिए कथ्य और भाषा का सामंजस्य होना नितांत आवश्यक है।

इस विषय में डॉ. उषा किरण सोनी बहुत ही सतर्क एवं जागरूक है। उनके साहित्य में कथ्य और भाषा का सामंजस्य इनकी सफलता की कहानी आप ही हैं। हम आगे के बिन्दु छः में इसको विस्तार से समझने का प्रयास करेंगे।

5.2 काव्य भाषा का स्वरूप –

सामान्य बोलचाल में कहा कथन भावों व विचारों के सम्प्रेषण का कार्य भले ही करता है, लेकिन काव्य–भाषा अर्थात् कविता की भाषा में प्रत्येक वर्ण, शब्द, वाक्य अपना अलग अस्तित्व रखते हैं। संस्कृत साहित्य शास्त्र में काव्य के लिए 'वाक्यम् रसात्मक काव्यम्' कहा गया तो 'रस गंगाधर' में पं.राज जगन्नाथ लिखते है –

'रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्द काव्यम्'। अर्थात् रमणीय अर्थ का प्रतिपादन करने वाले शब्द ही काव्य है। यह विशेषता काव्य की भाषा में स्पष्ट दिखाई देती है। जीवन की मार्मिक अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम काव्य भाषा ही है।

काव्य भाषा के स्वरूप पर विचार करें तो हम पाते है कि समस्त साहित्यिक विधाओं में कविता की भाषा अपनी भाषिक संरचना के कारण ही विशिष्ट है। अपनी कलात्मकता, सौन्दर्यबोध, रूमानियतता, मर्मान्तक व्यंग्य परकता एवं शब्द व अर्थ का आकर्षण तथा भावगांभीर्य के कारण कविता की भाषा सामान्य भाषा से अलग है। डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी 'भाषा और संवेदना' नामक पुस्तक में लिखते है कि– ''कविता उत्कृष्टतम् शब्दों का उत्कृष्टतम क्रम है।'' इस कथन के सन्दर्भ में काव्य समीक्षा का आधार काव्य भाषा ही बताया गया है। चतुर्वेदी जी के अनुसार –''काव्य भाषा का उपादान ही एक मात्र विश्वसनीय माध्यम रह गया है जिससे हम युग विशेष के काव्य सर्जन की क्षमता को समझ सकते है।''[8] इस तरह इन्होंने काव्य सर्जन के लिए काव्य भाषा का महत्व स्थापित किया है।

श्री सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' ने काव्य भाषा के विषय में लिखा है कि –''काव्य के जो भी गुण बताये जाते या बताये जा सकते है, अंततोगत्वा भाषा ही के गुण है।'' अपनी इसी धारणा को उन्होंने 'तारसप्तक' के द्वितीय संस्करण में और अधिक स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त किया है।

वह लिखते है –''काव्य सबसे पहले शब्द है और सबसे अन्त में भी यही बात बच जाती है कि काव्य शब्द है। सारे कवि–कर्म इसी परिभाषा में निःसृत होते है। शब्द का नाम, शब्द की अर्थवत्ता की सही पकड़ ही कृतिकार की कृति बनाती है। ध्वनि, लय, छन्द आदि के सभी प्रश्न इसी में से निकलते है और इसी में विलय होते है। इतना ही नहीं सारे सामाजिक सन्दर्भ भी यही से निकलते है। इसी में युग–संम्पृक्ति का और कृतिकार के सामाजिक उत्तरदायित्व का हल मिलता है या मिल सकता है।''[9]

अज्ञेय ने ऐसा कहकर शब्द सौन्दर्य व अर्थ सौन्दर्य के भेद को मिटाकर भाषा में शब्द भी महत्ता प्रतिपादित की है। डॉ. नामवर सिंह के अनुसार, ''प्रयोगशील कवि की दृष्टि में भाषा अभिव्यक्ति के साथ जानने का भी साधन है। उनके अनुसार किसी की भाषा–शक्ति उसकी बोध शक्ति का प्रमाण है। व्यक्ति का अपना भाषा–संसार अनुभव का संसार है। इसलिए अनुभव संसार के विस्तार के लिए भाषा–संसार का प्रसार अनिवार्य शर्त है। आगे वह यह भी लिखते है यदि भाषा कवि के अनुभव और ज्ञान का साधन है तो

कविता की भाषा का विश्लेषण करके इसके अनुभव की शक्ति को भी मापा जा सकता है।''[10]

इस प्रकार काव्य भाषा के लिए 'अज्ञेय' शब्द को और नामवर सिंह 'बौद्धिकता व अनुभव' को आवश्यक मानते है। मेरे विचार से अनुभूति और चिन्तन भी काव्य भाषा का स्वरूप निर्धारित करते है। हृदय की संवेदनशील वृत्तियाँ विशिष्ट छन्द, स्वर, लय, ताल, गति, यति, ध्वनि प्रवाह के आधार पर मूर्त होकर काव्य में सौष्ठव ला देती है। शब्दों में नाद सौन्दर्य आ जाता है और शब्द कोमलता, मधुरता, सरलता परूषता में बँधकर थिरक उठते है। संवेदनात्मक वृत्तियों की अभिव्यक्ति काव्य भाषा द्वारा ही संभव है।

डॉ. उषा किरण सोनी का साहित्य मानवीय, सामाजिक संवदेनात्मक, रागात्मक वृत्तियों को साथ लेकर चला हैं। इनकी अनुभूति प्रधान चेतना काव्य भाषा में सहज एवं सरलतम रूप में अभिव्यक्त हुई हैं। इनके चारों कविता संग्रह– 'अक्षरों की पहली भोर', 'मौन के स्वर', 'मुक्ताकाश में' तथा 'शब्द की अनुगूँज' में भाषा का स्वरूप मानवतावादी, सामाजिक–सांस्कृतिक, आध्यात्मिक–दार्शनिक चेतना प्रधान रहा है। इनकी काव्य भाषा में छायावादी एवं प्रगतिवादी काव्य भाषा जैसा पुट (स्वरूप) देखने को मिलता है।

'बंद मुकुल अब मंद–मंद
है खोल रहे दृग कोर।
शीत सुवासित पवन पथी
सुमनों से मलयज ले
विचर रहा हर ओर ।'[11]

इन पंक्तियों की तत्सम प्रधान भाषा शब्दावली में 'मंद–मंद' साधारण बोलचाल का प्रांजल शब्द कली के धीरे–धीरे खुलने का प्रतिनिधित्व कर रहा है। दृग कोर, पवन पथी शब्दों द्वारा प्रकृति का मानवीकरण रूप प्रस्तुत किया है।

'मौन के स्वर' कविता संग्रह की कविताओं में भाषायी गरिमा और अनुभवों व अनुभूतियों की प्रभावोत्पादक अभिव्यक्ति का सुन्दर संयोजन है। इनकी मूल प्रवृत्ति गीतात्मक है। कविता संग्रह में 'सपन सलौने', 'सार', 'भूख–1' 'अरूणिम व्योम दमक उठता है,' 'तो जाना! बसंत आ गया' की भाषा में गीत की कोमल राग–व्यंजना शब्द–शब्द से फूट पड़ी है। इस संग्रह की कविताओं में कोमल संवेदनाओं से युक्त प्रश्नानुकूलता है। 'अनुचिन्तन', 'आलोड़न', निसर्ग के त्रिकोण में बँधी कविताओं की भाषा सहज, सरल शब्दावली युक्त है।

अनुचिन्तन, आलोड़न खण्ड की छोटी–छोटी कविताओं की भाषा अत्यन्त अर्थपूर्ण

है। नाविक के तीर की तरह वे मारक तो है, ही साथ ही लेखिका का कम शब्दों में कहने के रचना कौशल की साक्षी भी है। आध्यात्मिक भाव वाली कविताओं की भाषा में जैन दर्शन की शब्दावली प्रयुक्त हुई है तथा निसर्ग खण्ड में प्राकृतिक सौन्दर्य प्रधान रचनाओं की भाषा पर छायावादी काव्य भाषा का प्रभाव दृष्टिगत होता है। इनकी सत्वधर्मी, सूत्रात्मक परिभाषा मूलक, बीज मंत्र, उद्धरण मूलक, हाइकू जैसी कविताओं में इनके भाषायी कुशलता का परिचय प्राप्त हो जाता है।

'प्यार दिखाकर, गले लगाकर
मुँह में बातें मन में घातें
क्यों रखते हैं लोग ?'[12]

लेखिका ने धारदार मर्मान्तक व्यंग्य भाषा में आधुनिक सभ्यता के सामने एक विराट प्रश्न खड़ा कर दिया है। भाषा सहज एवं सरल है।

'नभ सा
विराट मानव मन
अधिकांश
देहों में वामन।'[13]

मात्र चार पंक्तियों की कविता में लेखिका ने भावगांभीर्य भर दिया है।

'नवजीवन झाँकने लगा
किसलय की कोर से
तरूओं की डालियाँ भी
लद गईं बौर से
चल पड़ी मीठी सुरभित बयार
तो जाना! वसन्त आ गया है।'[14]

पंक्तियों में गेय भाषा की प्रधानता है। 'झाँकना', 'कोर', 'बौर' में साधारण बोलचाल के शब्दों की व्यंजना है। प्रकृति अपने जीवन्त रूप में मानवीकरण के साथ उपस्थित है। छायावादी काव्य भाषा का प्रभाव दृष्टिगत है।

'मुक्ताकाश में' कविता संग्रह की कविताएँ 'स्वगत' व 'भवगत' खण्डों में विभाजित है। इनके चिन्तन का क्षेत्र बहुत ही विस्तृत है, जिसे इन्होंने अपनी भाषा के माध्यम से विस्तार प्रदान किया है। मन में घुमड़ते विचारों–भावों का सूक्ष्म निरीक्षण कर अभिव्यक्ति प्रदान की है। 'मुक्ताकाश में' संग्रह की भाषा उस मनोरम चित्रावली के समान प्रतीत होती है, जिसके अल्प कलेवर में समग्र अंगों का विन्यास झलकता सा नजर आता है। अतः

उसके पठन मात्र से पूरे अर्थों की झलक एक साथ ही पाठक के मानस–पटल पर अंकित हो जाती है। इनकी काव्य भाषा कोमल एवं प्रसाद गुण युक्त है। कई स्थानों पर तो इनकी भाषा व्यंजना–प्रधान होने के साथ–साथ वक्रता लिए हुए है जो किसी अनैतिक आचरण के परिमार्जन हेतु स्वाभाविक भी है और वांछनीय भी । उदाहरण –

'स्वार्थ की शिला पर
अंहकार के घोटे तले
दबते, टूटते, पिसते, बिखरते
माँ–बाप, रक्त संबंध
गुरु–शिष्य, प्रेम बंध सब
सिक्कों में तब्दील हो गए रिश्ते।'[15]

व्यंजना प्रधान भाषा में संस्कृतनिष्ठ, तत्सम प्रधान साधारण बोलचाल की वक्र शब्दावली है।

'शब्द की अनुगूँज' कविता संग्रह में संकलित तेंतालीस कविताएँ 'अंतर्नाद' व 'अनुनाद' दो भागों में विभक्त हैं। दोनों भागों की कविताएँ जीवन के शाश्वत सत्यों, दार्शनिक व आध्यात्मिक भाव–भूमि के समीप जाकर भूलोक के सांसारिक विषयों का भ्रमण बहुत ही सरल एवं सहज भाषा में करवा रही है। इनकी तत्सम बहुला शब्दावली में कहीं साधारण बोल–चाल की भाषा, तो कहीं प्रांजल भाषा के शब्दों के साथ–साथ उर्दू भाषा के शब्दों की निराली छटा बिखरी हुई है –

'ऐ नामुराद झुक औ शुक्र कर 'उस शहंशाह' का
जितना दिया है उसने तुझे, तेरी हैसियत नहीं।'[16]

'असलियत नहीं' कविता में आदमी की औकात बताती उर्दू शब्दावली वाली भाषा के द्वारा लेखिका ने परम सत्ता का महत्त्व एवं शाश्वत सत्य से आदमी को परिचित करवाया है। इनका हिन्दी भाषा पर ही नहीं उर्दू भाषा पर भी पूर्ण स्वामित्व रहा है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि लेखिका के काव्य भाषा का स्वरूप भावानुकूल भावाभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम रहा है। इनकी काव्य भाषा में तत्सम प्रधान संस्कृतनिष्ठ शब्द, प्रांजल व साधारण बोल–चाल के शब्दों के साथ ही अंग्रेजी व उर्दू भाषा के शब्दों की प्रधानता रही है। शाश्वत सत्यों, दार्शनिक एवं आध्यात्मिक भावों को इन्होंने बहुत ही सारगर्भित शब्दावली वाली भाषा में व्यक्त किया है। सांसारिक जीवनानुभव, मानवीय संवेदना जाग्रत करने वाली कविताओं की भाषा में कहीं व्यंग्य परकता एवं वक्रता है, तो कहीं प्रश्नानुकूलता हैं। अल्प शब्दों में गहरे अर्थ इनके भाषायी कुशलता के साक्षी हैं। कोमलकान्त पदावली युक्त प्रसादगुणमयी रचनाओं तथा प्राकृतिक सौन्दर्य के मानवीकरण में

छायावादी काव्य भाषा का प्रभाव हैं तथा मंत्र कविताओं में जैन दर्शन का प्रभाव दृष्टिगत होता है।

इनकी काव्य भाषा में भाव सौन्दर्य, कोमलता व मधुरता के साथ सहज एवं सरल भाषा में अभिव्यक्त हुआ हैं। लेखिका शब्द–शिल्पी हैं, इनकी भाषा के प्रत्येक शब्द सार्थक एवं प्रभावोत्पादक हैं, जो इनकी भाषा पर पकड़ को मजबूत साबित करते हैं।

5.3 कहानी साहित्य में भाषा का स्वरूप –

हिन्दी साहित्य में कथा या कहानी का जन्म मानव जाति की उत्पत्ति तथा सृष्टि के साथ ही हुआ है। पुराणों में मानव की उत्पत्ति को ही कथा माना गया है। कथा शब्द की व्युत्पत्ति 'कथ्' धातु से हुई हैं, जिसका साधारण अर्थ है – कहना। जिसे प्राचीन काल से ही बुजुर्ग लोग अपनी आने वाली पीढ़ी को सुनाते आ रहे हैं। प्रत्येक कहानी अतीत को व्यक्त करती है और भविष्य को कुछ देना चाहती है। कहने तथा सुनने की परम्परा प्राचीन काल से ही चली आ रही है। वैदिक साहित्य से लेकर आधुनिक कथा साहित्य तक कथा–कहानियों का प्रसार तथा नित–नित बदलता स्वरूप हम देख रहे है। प्राचीन काल में मौखिक रूप से कथा या कहानी पीढ़ी–दर–पीढ़ी हस्तांतरित होती रही परन्तु आधुनिक काल में इसे लिपिबद्ध कर इन्हें संरक्षित किया जाने लगा।

उपनिषदों, बौद्ध और जैन साहित्यों, पौराणिक युग के उपाख्यानों तथा परवर्ती युग के संस्कृत कथा–साहित्य 'कथासरित्सागर', 'वृहत् कथाश्लोक संग्रह', 'पंचतंत्र', 'हितोपदेश', 'सिंहासन बत्तीसी', 'जातक–कथाएँ', दशकुमारचरितम् के रूप में भारत का प्राचीन साहित्य बिखरा पड़ा है। हिन्दी कहानी की स्वरूप रचना 1900 ई. में सरस्वती पत्रिका के प्रकाशन के साथ हुई।

इस रचना में कई प्रकार के प्रयोग किए जा रहे थे। इन प्रयोगों में शेक्सपियर के नाटकों के इतिवृत्त के आधार पर वर्णनात्मक शैली में लिखी गयी कहानियाँ, स्वप्न कल्पनाओं के रूप में रचित कहानियाँ[2], सुन्दर देश के काल्पनिक चरित्रों को लेकर लिखी गई संवेदात्मक कहानियाँ[3], काल्पनिक यात्रा–वर्णन की कहानियाँ[4] आत्मकथा रूप में प्रस्तुत कहानियाँ[5], संस्कृत नाटकों की आख्यायिकायें[6], 'घटना–प्रधान सामाजिक संवेदनात्मक कहानिय़ाँ[7], प्रमुख है।' [17]

कथाकार कहानी के माध्यम से जीवन के सभी मार्गों को दिखाता हुआ नये जीवन की गुंजाइश पैदा करते हुए भविष्य के प्रति आँखे खोलता है, इसी बदलाव में समाज को ऊपर उठाने की कोशिश भी है। कहानी जीवन की किसी एक घटना, संवेदना का घनीभूत रूप है जिसे पढ़कर पाठक की चेतना के तार झनझना उठे। कहानी में जीवन–जगत की

किसी एक समस्या, किसी एक विसंगति, किसी एक मानव विरोधी कृत्य को प्रस्तुत किया जाता है, जिसकी तह में पूरी सामाजिक विड़म्बना दबी रहती है।

हिन्दी साहित्य कोश के अनुसार, ''कथा का विशिष्ट अर्थ हो गया हैं, किसी ऐसी घटना का कहना, वर्णन करना जिसका निश्चित परिणाम हो।''[18]

उन्नीसवीं शताब्दी से हिन्दी साहित्य में गद्य का आविर्भाव हुआ उसी के साथ–साथ कथा साहित्य का भी विकास हुआ है। कहानी को कथा, गल्प, आख्यायिका आदि भी कहा जाता है। निःसंदेह कहानी सृजन की नींव भारतेन्दु युग में ही पड़ गई थी, परन्तु द्विवेदी युग में उत्कृष्ट कहानियों का शुभारम्भ हुआ। आधुनिक काल तक आते–आते कहानियाँ और परिष्कृत, परिमार्जित रूप में जीवन–जगत के यथार्थ से रू–ब–रू करवाने लगी। समय के साथ–साथ कहानी की भाषा के स्वरूप में भी निरन्तर परिवर्तन आने लगा।

कहानी के विकास–क्रम एवं इस परिवर्तन के विषय में कमलेश्वर का मानना है – ''कहानी की जरूरत उसी समय सिद्ध हो गयी थी, जब हिन्दी में आचार्यगण खड़ी बोली को साहित्य की मुख्य भाषा के रूप में विकसित और स्थापित करने के लिए संघर्ष कर रहे थे। वास्तव में उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त और बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ की कड़ी में हिन्दी भाषा के उन्नयन और गद्य विधाओं के सूत्रपात ने जिस भाषायी जनतांत्रिकता का निर्वाह करते हुए साहित्य–रचना की नींव रखी, उसका ध्वन्यार्थ आज की रचनाओं में भी अनुगुंजित है। उत्तर भारतेंदुयुग जिस रचनात्मकता के संक्रमण का दौर था, उसमें भले ही किसी एक कालजयी रचना का जन्म नही हो सका, किन्तु रचना का उन्मेष हो चुका था। देवकीनन्दन खत्री, गोपालराम गहमरी इत्यादि ने तिलिस्मी ताने–बाने का गल्प तैयार कर कथा–सृजन की अच्छी वृतांतमूलक जमीन तैयार कर दी थी। साथ ही इनकी रचनाओं ने हिन्दी का एक बहुत बड़ा पाठक वर्ग भी तैयार कर दिया था। उस समय तक उत्तर भारत में सरकारी स्तर पर फ़ारसी भाषा और लिपि का ही वर्चस्व था, पर वह जन सामान्य की भाषा नहीं थी।

तत्कालीन कथा–लेखन की जुबान खत्री–गहमरी के भाषाई तिलिस्म के इर्द–गिर्द बनती दिखाई देने लगी थी। परन्तु बीसवीं सदी की हिन्दी कहानी का कथ्य दूसरे ही आस्वाद पर विकसित हुआ। कहानी में जमीन और समय के यथार्थ से जुड़ने की कोशिश आरम्भ से ही दिखाई देने लगी। हाँलाकि भारतेन्दु युग की कविताओं, नाटकों, निबन्धों ने हिन्दी साहित्य को तिलिस्मी वायवीयता और अतिरसिक प्रियता से मुक्ति पहले ही दिला दी थी। उसका परिवर्द्धित विस्फोट द्विवेदी युग के साहित्य में भी दिखाई देता है।'[19]

साहित्यकार मुंशी प्रेमचन्द, जयशंकर प्रसाद, चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी', विश्वम्भरनाथ 'कौशिक', गिरिजा कुमार घोष प्रमुख कहानीकार है।

मुंशी प्रेमचन्द ने कहानी को स्पष्ट करते हुए कहा है – ''वर्तमान आख्यायिका मनोवैज्ञानिक विश्लेषण और जीवन के यथार्थ स्वाभाविक चित्रण को अपना ध्येय समझती है। उसमें कल्पना की मात्रा कम, अनुभूतियों की मात्रा अधिक होती है; वरन् अनुभूतियाँ ही रचना–भावना से अनुरंजित होकर कहानी बन जाती है।''[20]

साहित्य जगत में पुरुष कथाकार ही नहीं, बल्कि महिला कथाकार के रूप में महादेवी वर्मा, मैत्रेयी पुष्पा, कृष्णा सोबती, ममता कालिया, मन्नू भण्डारी जैसी अनेक महिला लेखिकाओं ने भी साहित्य में अभिवृद्धि की। ऐसे ही उषा की किरणों से साहित्याकाश को देदीप्यमान करती हुई, डॉ. उषा किरण सोनी अपने यथार्थ जीवनानुभवों से समाज को एक नई दिशा प्रदान कर रही हैं। जीवन और जगत के सत्य को बयां करती इनकी कहानियाँ बहुत ही मार्मिक एवं संवेदना जाग्रत करने वाली है। इनके कहानी संग्रह–'काम्या', 'नेपथ्य का सच', 'तृष्णा तू न गई......', 'नए सूरज की तलाश' में भाषा का स्वरूप बड़ा अनूठा है, जो पाठक को सहज रूप से हृदयांगम हो जाता है। इनकी भाषा में वो धारा–प्रवाह है, जो मार्मिक स्थलों की पहचान कर पाठक को सोचने–समझने पर मज़बूर कर देता है।

लेखिका साधारण शब्दों में सारगर्भित रूप से अपनी बात कहने में माहिर है। इनकी सभी कहानियाँ आँखों के सामने घटित घटनाओं सी प्रतीत होती है। भाषा में कहीं दुराव–घुमाव नहीं यह सीधे–सीधे शब्दों में सपाट बयानी में अपने भावों को वाणी प्रदान कर देती है। सभी कहानियों की भाषा, सरल, सहज, परिष्कृत, परिनिष्ठित, परिमार्जित है। इनकी भाषा शब्दावली में हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, उर्दू, पंजाबी तो कहीं प्रांजल भाषा के शब्दों का भी प्रयोग है। भाषा में बनावटीपन कहीं नज़र नहीं आता।

समाज की ज्वलंत समस्याओं, विशेष रूप से स्त्री–पुरुष सम्बन्धी समस्याओं पर इन्होंने अपनी संवेदना जाग्रत करते हुए समाज को प्रेरित कर मार्ग प्रशस्त किया है।

'काम्या' कहानी संग्रह की सभी कहानियाँ नारी मन की कहानियाँ है, पर नारी विमर्श के बहाव में आकर नारी और पुरुष को अलग–अलग बाँटने की नहीं है। अच्छाइयाँ है तो नारी–पुरुष दोनों में हैं, कमियाँ है तो नारी–पुरुष दोनों में है।' [21]

'काम्या' कहानी संग्रह में कुल तेरह कहानियाँ संग्रहीत हैं। सभी कहानियों में सामाजिक समस्याएँ तथा स्त्री–पुरुष के जीवन–चरित्र की घटनाओं में यथार्थ एवं कल्पना का सुन्दर समायोजन हैं। कहानियों को पढ़ने पर ऐसा कदापि नहीं लगता कि केवल मनोरंजन एवं समय बिताने के लिए कहानी हैं। इनकी प्रत्येक कहानी में कोई–न–कोई उद्देश्य निहित है, जिसे दर्शाने में वह सफल रही हैं। इन्होंने समाज तथा जीवन–जगत का प्रत्येक कोना छुआ है, मन के छोटे–से–छोटे भाव को भी बड़ी सहज एवं सरल भाषा में

अभिव्यक्ति प्रदान की। मधुरिमा सिंह का इनकी कहानियों के विषय में मानना है –''जहाँ स्त्री–पुरुष के बाह्य शारीरिक सौन्दर्य का वर्णन है, वहीं मन की आंतरिक भावनाओं का, सुन्दर विचारों का, पछताने का, अन्तःकरण टूटने का तथा इन्द्रधनुषी कल्पनाओं में गोते लगाने का वर्णन भी सरल व सीधी भाषा में किया है।''

'एक बारगी उसे देखकर लगा मानों किसी मूर्तिकार ने अनुपम मूर्ति गढ़कर आँधी और तूफान में बिना रखवाली के छोड़ दी हो। अपनी देर को अपूर्वा एक पल के लिए भूल उसे निहारने लगी –''उसकी सुतवाँ नाक हल्की ठंड से सिहर रही थी, भूरे बाल मानों सँवारे जाने की प्रतीक्षा में थें, आँखों में भय मिश्रित सूनापन था, होंठ, हौले–हौले काँप रहे थे।'' [22]

'कठबपवा' कहानी में दूध देने आई बालिका का रेखाचित्रात्मक मार्मिक भाषा में व्यंजनाप्रधान वर्णन किया गया है। भाषा–शब्दावली, भावाभिव्यक्ति, कथ्यानुरूप सरल, सहज है। भाषा में यथार्थ एवं कल्पना का सुन्दर संयोजन है।

'नेपथ्य का सच' कहानी संग्रह की सभी कहानियों के कथानक की बुनावट में भाषा की सहज संप्रेषणीयता के साथ–साथ आत्मीय स्पर्श तथा मानव–मनोविज्ञान का सरलतम प्रयोग भाषा प्रवाह को बनाये रखने में सहायक हैं। भाषा विचारानुकूल एवं भावानुरूप है।

'एकाकीपन और व्यर्थता का बोध, पर क्या करें ? मजबूरी थी प्रश्नचिह्न फिर सामने था। इधर उम्र ने अपना असर दिखाना शुरू कर दिया था। देह सुगबुगाती पर वह उसे थपक कर सुला देती। एक दिन बासंती बयार से मन में स्फुरण हुआ, लगा कि उसके जीवन में भी बसंत आएगा पर कैसे ? कब ? क्योंकि घर में तो उसके विवाह की कोई चर्चा न थी। घर में तो वह मात्र सेविका का स्थानापन्न थी।'[23]

प्रस्तुत पंक्तियों की भाषा का स्वरूप विचार–प्रधान, आत्मपरक एवं प्रश्नात्मक शैली का हैं। 'देह सुगबुगाती', थपक कर सुला देती, 'बासंती बयार' तथा 'जीवन में भी बसंत आएगा' में भाषा लाक्षणिक एवं व्यंजना प्रधान है। सीधी, सरल, परिष्कृत, काव्यात्मक भाषा में मार्मिक भावाभिव्यक्ति बहुत ही आकर्षक है।

'तृष्णा तू न गई ....' कहानी संग्रह में लेखिका भाषा के विषय में अपना मत देते हुए लिखती है कि – ''भाषा का प्रवाह और कथ्यानुरूप सार्थक शब्दों का प्रयोग ही किसी कहानी को जीवन्त बनाता हैं। कथ्य की काया भाषा के वस्त्राभूषण पहनती है तब जाकर कहानी आकार लेती है और इस आकृति में मानवीय अनुभूति के प्रश्नों से जूझकर खोजे गए उत्तरों द्वारा लेखक प्राण डालने का महत् कार्य करता है।' [24]

इनकी कहानियों की भाषा में ये सारी विशेषताएँ परिलक्षित होती हैं। अपनी लेखनी के बल पर यह सभी दुर्भावनाओं को दूर करके सदाचारी व मर्यादित जीवन अपनाने के लिए आगाह करती है। इन्होंने कहानियों में जिन ज्वलंत समस्याओं का चित्रण किया है उन्हें थोड़ी सी सूझबूझ और सहनशीलता, सुसंस्कार को आत्मसात कर समस्त परिवार एवं समाज का कल्याण किया जा सकता हैं। आज के युग की नारियों की मानसिकता, उनके द्वन्द्व–फंद, उनके चरित्र को कोई भली–भाँति न समझ सकता न ही समझा सकता है। इस दुरूह कार्य को लेखिका ने अपनी सपाट–बयानी में कर दिखाया।

''उठ कुलवंत! पुत्तर रस्म पूरी कर, मैं बहू को सफ़ेद कपड़ों में नहीं देख सकता; उठ–उठ उसके सर पर चुन्नी डाल दे,'' अब ताऊजी ने खुद उठकर कुलवंत भाई साहब से कहा पर वह न उठा।' [25]

पंक्तियों में पंजाबी भाषा शब्दावली का प्रयोग बहुत ही आकर्षक हैं। सफेद कपड़ों में नहीं देख सकता में लाक्षणिकता हैं। भाषा, सहज, सरल, रौचक तथा भावानुकूल हैं।

इनके चौथे कहानी संग्रह – 'नए सूरज की तलाश' में कुल तेरह कहानियाँ संग्रहित हैं। सभी कहानियों में भाषा का स्वरूप सरल, सहज है। भाषा सुसंस्कृत, परिनिष्ठित, परिमार्जित कथ्य के अनुरूप है। समाज के यथार्थ का कहानियों में साकार चित्रांकन है, जो समाज में घट रहे भ्रष्टाचार और दुराचार के प्रति आँखे खोल नई दिशा प्रदान करता है।

'साब, साब! आपकी लॉटरी लग गई। साब! आप एक लाख रुपये जीत गए' चमकते चेहरे और चीखते स्वर में लड़का बोला, 'साब! ये देखिए, ये रहा अखबार; आपका टिकट कहाँ है? मिला लीजिए नम्बर।' उसने अखबार हाथ में हिलाया।' [26]

'वाह रे! मानुष मन' कहानी की पंक्तियों में लेखिका की साधारण भाषा में लॉटरी के टिकट बेचने वाले लड़के द्वारा साब की जीत की खुशी की खबर के साथ ही साब के प्रति कृतज्ञता के भाव छुपे है। जिन्हें लेखिका ने रहस्यमयी भाषा में प्रभावशाली ढंग से व्यक्त किया है। 'चमकते चहरे' और 'चीखते स्वर' शब्दों में लाक्षणिक रूप से भावाभिव्यंजना बहुत ही आकर्षक है।

इनके बाल कथा संग्रह 'घरौंदा' में दस बाल कथा संग्रहीत है। सभी कहानियाँ शिक्षाप्रद हैं, जो नई पीढ़ी को संस्कारित करने तथा प्रेरणा देने के उद्देश्य से लिखी गई है, ताकि बालक स्वयं की शक्तियों का विकास कर सफलता के शिखर को छू सके। भाषा का स्वरूप आकर्षक एवं रोचक है।

(संगीत–चिकछिम, चिकछिम, चिकछिम–संकेत से कमला का इंकार फिर माँ से)

कमला – ना–ना मेरी प्यारी अम्मा, मेरी भोली–भाली अम्मा

मेरी टीचर जी कहती हैं, वे सच–सच ही कहती हैं
अनपढ़ अंधा सम होता, उसको शिक्षित है राह दिखाता
यदि लड़का है पढ़ जाता, वो बस रोटी कमा कर लाता
जब लड़की है पढ़ जाती, सबको सही–गलत समझाती
सबको अच्छी बातें सिखलाती, हर घर को स्वर्ग बनाती
तू सुन मेरी प्यारी अम्मा, मेरी सीधी–सादी अम्मा
पहले मैं खूब पढ़ूँगी, पढ़–लिख कर डॉक्टर बनूँगी
फिर खूब पढ़े–लिखे लड़के से मैं अपना ब्याह करूँगी।' [27]

'घरौंदा' बाल कथा संग्रह की अंतिम कथा (कठपुतली नृत्य नाटिका) 'कमला का ब्याह' में भाषा संगीतमय भावानुकूल सरल, सहज प्रवाहमयी है। साधारण बोलचाल की भाषा शब्दावली में भावगांभीर्य, प्रेरणात्मक स्वरूप में मुखरित हुआ है।

5.4 यात्रावृतांत में भाषा का स्वरूप –

जब लेखक अपनी किसी यात्रा का साहित्यिक और कलात्मक ढ़ंग से वर्णन करता है, तो उसे यात्रावृतांत कहा जाता है। मनुष्य अनादिकाल से यात्राएँ करता आ रहा है। निश्चय ही वह अपने यात्रा–वृतांतों को अपने सम्पर्क में आने वाले, जिज्ञासुओं को सुनाता भी रहा होगा, किन्तु भारतीय साहित्य में इन वृतांतों को लिखने अर्थात् लिपिबद्ध करने की परम्परा नहीं मिलती। हिन्दी साहित्य में भारतेन्दु हरिशचन्द्र' ने अपनी 'हरिद्वार यात्रा' और 'बेजनाथ की यात्रा' का विवरण लिखकर इस विधा का सूत्रपात किया। बालकृष्ण भट्ट विरचित– 'कातिक का नहान' प्रतापनारायण मिश्र कृत– 'मेरी विलायत यात्रा' इस कोटि की प्रारम्भिक रचनाएँ हैं। भारतेन्दु हरिशचन्द्र ने 'सरयूपार की यात्रा' तथा 'मेरी लखनऊ यात्रा' आदि यात्रावृतांतों का बड़ा ही रोचक और सजीव वर्णन कर इस परम्परा को आगे बढ़ाया।

'मध्यकालीन संस्कारों से प्रभावित भारतीय पंडित मण्डली समुद्रपार की यात्राओं का विरोध करती रही है। इन संस्कारों से मुक्त होकर जिन विद्वानों, यायावरों और परिव्राजकों ने यूरोप तथा अन्य पाश्चात्य देशों की यात्राएँ की वे निश्चय ही नये भारत की रचना करने वाले उदार और कर्मठ व्यक्ति थे। हिन्दी प्रदेश में शिक्षा के विकास और अखिल भारतीय स्तर पर यातायात के साधनों की वृद्धि के साथ यात्रा के प्रति लोगों की रूझान बढ़ती गयी।'[28]

सत्यदेव परिव्राजक ने 'मेरी जर्मन यात्रा', 'यूरोप की सुखद स्मृतियाँ'', 'अमेरिका प्रवास की मेरी अद्भुत कहानी' शीर्षक से यात्रावृतांत लिखे। रामवृक्ष बेनीपुरी रचित– 'पैरों में पंख बाँधकर' तथा काका कालेलकर कृत– 'हिमालय यात्रा', मोहन राकेश कृत–

'आखरी चट्टान तक' यशपाल कृत– 'लोहे की दिवारों के दोनों ओर' राहुल सांस्कृत्यायन प्रणित– 'मेरी लद्दाख यात्रा', 'मेरी तिब्बत यात्रा', 'यात्रा के पन्ने', 'मेरी यूरोप यात्रा', 'घुमक्कड़ शास्त्र', अज्ञेय कृत –'अरे यायावर रहेगा याद', 'एक बूँद सहसा उछली' आदि हिन्दी के प्रमुख यात्रावृतांत है।

'महिला यात्रावृतांतकारों में हिन्दी, उर्दू, फ़ारसी, पश्तों, अंग्रेजी आदि कई भाषाओं की जानकार प्रसिद्ध कथा लेखिका नासिरा शर्मा, ईरानी साहित्य, कला, संस्कृति एवं राजनीति की भी विशेषज्ञ हैं। उनका 435 पृष्ठों का वृहत् यात्रावृत 'जहाँ फव्वारे लहू रोते हैं' (2003 ई.) प्रकाशित हुआ है। इसमें उनके 17 यात्रावृत संग्रहीत है।'[29]

इसी क्रम में बाल मनोविज्ञान की ज्ञाता डॉ. उषा किरण सोनी ने अपनी चार धाम की यात्रा तथा यूरोप यात्रा का संबोधन शैली में रिपोर्टर की भाँति वर्णन कर यात्रावृतांत साहित्य में अभिवृद्धि की हैं।

'सुविधा व साधन सम्पन्न घरों के बालकों के मन में, अपने दादा–दादी, नाना–नानी आदि को तीर्थ यात्रा पर जाते देख, अक्सर यह प्रश्न उठता है कि सब कुछ होते हुए भी ये वरिष्ठ जन नदी तटों, पहाड़ों, समुद्र तटों, ग्रामों, नगरों व महानगरों में बने तीर्थों में क्या ढूँढने जाते हैं ? मध्यम वर्गीय परिवारों के बच्चे भी सोचते हैं कि हमारे वरिष्ठ जन भी अपने जीवन– भर की कमाई का एक बड़ा भाग तीर्थ–दर्शनों की यायावरी पर खर्च कर देते हैं पर क्यों ?'[30]

बालमन के इन्हीं प्रश्नों की तुष्टि हेतु लेखिका ने 'द्वार से धाम तक' यात्रावृत्त की रचना की। इस कृति में लेखिका ने हरिद्वार से प्रारम्भ होने वाली अपनी चार धाम की यात्रा का बहुत ही सहज सम्प्रेषणीय वर्णन किया है। वर्णन की भाषा अत्यन्त सरल व प्रवाहवान हैं। लेखिका ने विशिष्ट स्थानों की यात्रा का वर्णन करते हुए उन स्थानों की तथ्यात्मक जानकारी भी साथ–साथ दी हैं, इससे न केवल बच्चों का बल्कि सामान्य पाठकों का सामान्य ज्ञान भी समृद्ध होगा। लेखिका ने मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण रखते हुए यात्रा के उन प्रसंगों पर अधिक जोर दिया है, जिनमें मार्ग की कठिनाइयों पर आत्मशक्ति द्वारा विजय प्राप्त की जाती है। लेखिका सहजता से बच्चों में संस्कार सिंचन करती हुई उन्हें भीतर से मज़बूत बनाती हुई तथा बच्चों के ज्ञान में अभिवृद्धि करती हुई, कहानी सी रोचकता लिए उन्हें अपनी यात्रा की झाँकियाँ दिखाती है।

भारत के उत्तरी भाग में स्थित उत्तराखण्ड के चार धाम–यमुनोत्री, गंगोत्री, केदारनाथ, बद्रीनाथ के प्राकृतिक सौन्दर्य, मन्दिरों की कलात्मकता और भव्यता का वर्णन आकर्षक एवं सजीव भाषा शैली में किया है। यात्रा का वर्णन संबोधन शैली एवं रेखा

चित्रात्मक शैली में ऐसा लगता है कि मानों लेखिका बालकों को साथ लेकर यात्रा कर रही हो। यात्रा प्रारम्भ का समय, स्थान तथा वस्तुएँ जो यात्रा के दौरान आवश्यक है उसका भी उल्लेख इन्होंने आरम्भ में किया है। प्रत्येक दृश्य का छायाचित्र और उसी के नीचे कठिन शब्दों को छाँटकर शब्दार्थ लिखे गये है ताकि बालकों या पाठकों को पढ़ते समय अर्थ स्पष्ट हो सके।

'हम आ पहुँचे, यमुनोत्री मंदिर। कल–कल बहते भीड़ के रेले और पैरों के नीचे छल–छल बहती जल धाराओं ने भय को न जाने कहाँ खदेड़कर मन में असीम आनन्द भर दिया। उछलती जल–धाराओं को पार कर हमने मुख्य मन्दिर में प्रवेश किया और नीली यमुना जी, पीली–सुनहरी गंगा जी तथा श्वेत सरस्वती जी की मूर्तियों के दर्शन कर कृतार्थ हुए।'[31]

प्रस्तुत पंक्तियों के 'कल–कल' तथा 'छल–छल' शब्दों में नाद सौंदर्य के साथ ही भाषा की लाक्षणिकता परिलक्षित हो रही है। 'कृतार्थ' अर्थात् संतुष्ट पर्वतों के बीच लहराती यमुना जी के छायाचित्र के नीचे ही इस शब्द का अर्थ दिया गया है। भाषा सहज, सुस्पष्ट तथा आकर्षक है।

'मेरी यूरोप यात्रा' बालोपयोगी यात्रा वृतांत की भाषा का स्वरूप भी बिल्कुल 'द्वार से धाम तक' यात्रावृत जैसा ही है। इसमें यूरोप महाद्वीप की भौगोलिक स्थिति के साथ ही यहाँ के प्रसिद्ध नगरों के भौगोलिक वातावरण, प्राकृतिक सौंदर्य, शालीन संस्कृति, व्यापार–वाणिज्य, यातायात के नियमों के पालना की अनिवार्यता का सजीव एवं प्रभावकारी सचित्र वर्णन किया गया है। इस यात्रावृतांत में यूरोप के तीन देशों नीदरलैंड, फ्रांस, बेल्जियम की यात्रा के माध्यम से लेखिका इन तीनों देशों की संस्कृति, इतिहास एवं पर्यटन से जुड़े प्रमुख स्थानों का जीवन्त परिचय करवाती है।

भाषा का प्रवाह, भावाभिव्यक्ति, शब्दों का प्रयोग, रेखाचित्र शैली में सम्बोधन के साथ वर्णन बहुत ही आकर्षक बन पड़ा हैं। देखिए–

'चलो! तुम्हें यूरोप के तीन देशों नीदरलैंड, फ्रांस और बेल्जियम की यात्रा पर ले चलूँ। इन देशों के कुछ शहरों में व मुख्य स्थानों पर तुम भी मेरे साथ घूमो और आनन्द का अनुभव करो फिर मुझे बताना कि तुम्हें कैसा लगा ? तो चलें।'[32]

भाषा की संवाद शैली एवं आदेशात्मक भाषा में बालकों को यूरोप भ्रमण हेतु ले चलना बहुत ही सहज, सरल तथा रोचक है। लेखिका की भाषा का अन्दाजेबयां अपनी मिसाल आप ही है। भाषा सहज संप्रेषणीय है।

'पूरे ऐतिहासिक नगर का भ्रमण कर सायं पाँच बजे हम वापस एम्स्टर्डम सेन्ट्रल स्टेशन के निकट ही डैम स्क्वायर पर बस से उतरे। सामने था रॉयल पैलेस और बाई ओर था मैडम तुसाद के मोम के पुतलों का अनोखा संसार जो एक संग्रहालय की शक्ल में हमें भीतर आने की दावत दे रहा था। टिकट लेकर भीतर घुसते ही हमारी मुलाक़ात हुई अमरिका के राष्ट्रपति बराक ओबामा से; जिसे देख एक बार तो हम हक्का–बक्का रह गए। कुछ क्षणों बाद ही समझ में आया कि यह एक मोम का पुतला है। म्यूज़ियम के सभी पुतले इतने वास्तविक और सजीव लगते है कि कोई भी धोखा खा जाए।'[33]

रिपोर्ताज भाषा शैली में मुहावरेदार शब्दों का प्रयोग अनूठा है। नीदरलैंड के संग्रहालय का सजीव एवं वास्तविक वर्णन आकर्षक भाषा शैली में किया गया है। हिन्दी भाषा के शब्दों के साथ उर्दू भाषा के शब्दों का प्रयोग तथा 'हक्का–बक्का' मुहावरेंदार शब्दावली से कथ्य की रोचकता और भी बढ़ गई है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि लेखिका की दोनों बालोपयोगी यात्रावृतांत कृतियों की भाषा का स्वरूप सहज सम्प्रेषणीय, रोचक तथा आकर्षक है। संजय आचार्य 'वरूण' का इन यात्रा वृतांतों के विषय में मानना है कि –''यह यात्रा वृतांत भले ही बाल पाठकों को दृष्टि में रखकर लिखा गया है किन्तु निःसंन्देह यह सबके लिए पठनीय एवं संग्रहणीय पुस्तक है। जितना प्रभावशाली लेखन है उतना ही आकर्षक पुस्तक का प्रस्तुतीकरण है। प्रत्येक पृष्ठ पर प्रसंग के अनुसार स्वयं उषा किरण जी के कैमरे से लिए गए छायाचित्र पाठक को उसी परिवेश में ले जाते है। भाषा के प्रवाह में यत्र–तत्र आने वाले कठिन शब्दों के सरलार्थ नीचे दिये गए है ताकि बाल पाठकों को पढ़ने में दिक्कत न हो साथ ही उनका शब्द भण्डार भी समृद्ध हो।'' निश्चय ही डॉ. उषा किरण सोनी प्रथम महिला है, जिन्होंने बालोपयोगी यात्रावृतांत इतनी गम्भीरता से मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण रखते हुए रोचक एवं प्रभावशाली भाषा में लिखा है, वरना आज तक बाल साहित्य के नाम पर कपोल–कल्पित कहानियाँ, अतुकान्त अर्थहीन कविताएँ ही परोसी जा रही हैं। इनके पास भाषा का समृद्ध कोश है तथा कथ्य का अनोखा अंदाज़ जो पाठक को सहज ही ग्राह्य हो जाता है।

5.5 निबन्ध में भाषा का स्वरूप –

''गद्य कविनाम् निकषं वदन्ति'' संस्कृत की इस उक्ति में 'गद्य को कवियों की कसौटी' कहा गया हैं, तो आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने निबन्ध को गद्य की कसौटी माना है। निबन्ध भाव सम्प्रेक्षण की सहजतम व सरलतम विधा है। निबन्ध का अर्थ है– एक सूत्र में बाँधना, पिरोना। अर्थात् विषय और विचारों को सूत्रबद्ध करना ही निबन्ध है।

निबन्ध को गद्य का निकष मानते हुए डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कहा था –"भाषा की पूर्ण शक्ति का विस्तार सबसे अधिक निबन्ध में ही सम्भव हो सकता है।" हिन्दी की अन्य गद्य विधाओं के समान हिन्दी निबन्ध की विकास यात्रा का सूत्रपात भी भारतेन्दु युग से ही माना जाता है। इस विकास यात्रा को चार भागों में विभक्त किया गया है।

(1) भारतेन्दु युग (2) द्विवेदी युग (3) शुक्ल युग (4) शुक्लोत्तर युग।

भारतेन्दु युग के निबन्धकारों में विषय की व्यापकता व विविधता है। इनकी भाषा शैली में हास्यव्यंग्य व मनोरंजन की प्रधानता है। इन निबन्धों का प्रमुख उद्देश्य राजनीतिक विषमताओं और सामाजिक कुरीतियों पर चोट करना है। पं. बालकृष्ण भट्ट, बालमुकुन्द गुप्त, बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन', प्रतापनारायण मिश्र, राधाचरण गोस्वामी, अंबिकादत्त व्यास आदि इस युग के प्रमुख निबन्धकार है।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने "बेकन" के निबन्धों को आदर्श मानते हुए 'बेकन विचार रत्नावली' के नाम से उनका अनुवाद किया। 'कवि और कविता', 'कवि कर्त्तव्य', 'साहित्य की महत्ता', 'लोभ', 'मेघदूत' इनके प्रसिद्ध निबन्ध है। चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी', 'सरदार पूर्णसिंह, बाबूश्यामसुन्दर दास आदि द्विवेदी युग के प्रमुख निबन्धकार है। इस युग में विचार–प्रधान निबन्धों की रचना हुई। इस युग के रचनाकारों की भाषा–शैली में प्रौढ़ता दिखाई देती है। इनकी भाषा व्याकरण सम्मत और परिमार्जित है।

शुक्ल युग हिन्दी निबन्ध साहित्य का 'स्वर्णकाल' कहा जाता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जैसे सुधी समालोचक का सानिध्य प्राप्त कर हिन्दी निबन्ध साहित्य अपने चरमोत्कर्ष पर जा पहुँचा। इनके निबन्ध भाव व विचार प्रधान अर्थात् हृदय व बुद्धि का अद्भुत समन्वय मिलता है। 'तुलसी का भक्ति मार्ग', 'कविता क्या है ?', 'उत्साह', 'लज्जा और ग्लानि', 'करूणा', 'श्रद्धा और भक्ति', 'क्रोध' आदि प्रमुख निबन्ध है। जिनमें गहन विचार वीथियों के साथ–साथ रसपूर्ण छींटे सर्वत्र बिखरे हुए है। बाबू गुलाबराय, पदुमलाल पन्नालाल बख्शी, वियोगी हरि, रायकृष्ण दास, वासुदेव शरण अग्रवाल, शांतिप्रिय द्विवेदी, माखनलाल चतुर्वेदी आदि इस युग के प्रमुख निबन्धकार है। इस युग के निबन्धों का विषय–क्षेत्र अधिक व्यापक है, जिसमें चिन्तन की गम्भीरता व विवेचन की सूक्ष्मता भाषा को मौलिक विश्लेषण की सूक्ष्मता व शैली की प्रौढ़ता प्रधान करती है।

शुक्ल युग के पश्चात् हिन्दी निबन्धों का विविधोन्मुखी विकास हुआ। विषय, भाषा, शैली सभी दृष्टियों से हिन्दी निबन्ध ने नए आयाम तय किये। इस काल में न केवल समीक्षात्मक अपितु विचारात्मक और ललित निबन्धों की भी पर्याप्त मात्रा में रचना की गई। हजारी प्रसाद द्विवेदी, नन्ददुलारे वाजपेयी, डॉ. नगेन्द्र, रामधारी सिंह 'दिनकर', जयशंकर

प्रसाद, इलाचन्द जोशी, जैनेन्द्र, प्रभाकर माचवे, डॉ. भगीरथ मिश्र, डॉ. रामविलास शर्मा, डॉ. विद्यानिवास मिश्र, कुबेरनाथ राय, कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर आदि प्रमुख निबन्धकार हुए।

वर्तमान काल में भी इस विधा ने उत्तरोत्तर विकास किया है क्योंकि निबन्ध इतिहास –बोध परम्परा की रूढ़ियों से मनुष्य के व्यक्तित्व को मुक्त करता है। निबन्ध लेखक स्वतन्त्र रूप से अपने विचार प्रकट कर सकता है। डॉ. उषा किरण सोनी भी इसी कड़ी में अपनी ऊर्जस्वी लेखनी से निसृत निबन्ध साहित्य सम्पदा 'अक्षर से 'अक्षर' तक' पाठकों को सौंपते हुए निबन्ध संग्रह के प्रथम निबन्ध 'अक्षर' की व्याख्या चिन्तन प्रधान भाषा शैली में करती हैं। 'अक्षर' अर्थात् सृष्टि के नियामक 'ब्रह्म' से वर्णमाला के प्रत्येक वर्ण अक्षर को तुल्य (समान) मानती हुई 'अक्षर' से ही निबन्ध साहित्य का प्रारम्भ करती है।

'अक्षर से 'अक्षर' तक' निबन्ध संग्रह में कुल बाईस निबन्ध संग्रहीत है; सभी निबन्धों में भाषा का स्वरूप सारगर्भित एव सहज संप्रेषणीय है। निबन्ध की भाषा के विषय में भवानीशंकर व्यास 'विनोद' का मानना है कि–''भाषा के स्तर पर यह संग्रह विशेष ध्यान आकर्षित करता है। भाषा में रंजकता है, लालित्य है, प्रवाह है, शब्द छवियाँ और अर्थ छवियाँ भी हैं, साथ ही शब्द–राग, पद–विन्यास, अनुप्रास, प्रत्यय, ध्वन्यात्मकता अलंकारिकता और बिम्बात्मकता के कारण पूरे संग्रह की भाषा जीवंत बन पाई है।'' [34]

इनके निबन्धों में शब्दों की अद्‌भुत कसावट है। अपनी बात को सारगर्भित रूप से कहने में लेखिका पारंगत है। इन्होंने निबन्ध विधा की कई कोटियों को समाहित कर जहाँ जिसकी जरूरत हुई वहाँ उसका रूप ग्रहण कर लिया– वर्णनात्मक, विचारात्मक, विवरणात्मक, भावात्मक, लालित्यपूर्ण, विश्लेषणात्मक आदि।

भाषा में वैचारिकता, सांस्कृतिकता, चिन्तन–परकता के साफगोई तथा कथ्य संयम, व्यंग्य का पैनापन है तो परिवेश का चौकन्नापन भी है। इनकी भाषा में कल्पना, यथार्थ, प्रतिभा का मिश्रण प्रवाहमान है। देखिए–

'भावनाओं को शब्दों में ढ़ाल, उनका सम्प्रेषण कर सम्बन्धों को आकर देती है भाषा। सम्बन्ध दो प्रकार के होते है– स्व से स्व का सम्बन्ध और स्व से पर का सम्बन्ध। दोनों ही प्रकार के सम्बन्धों में भाषा की महती भूमिका है। स्व–स्व सम्बन्ध में भाषा मानस मंथन का माध्यम है और स्व–पर सम्बन्धों में भाषा दोनों को जोड़ने का माध्यम। आदान–प्रदान के स्वार्थपूर्ण सिद्धान्त पर आधारित स्व–पर सम्बन्ध एक समय बाद जाल की भाँति उलझने लगते है और व्यक्ति स्व की ओर लौट कर शांति के मार्ग का संधान करने लगता है। संधान की यह प्रक्रिया उसे अक्षर के निकट लाती है।'[35]

चिन्तन प्रधान विचारात्मक भाषा–शैली में लेखिका ने अक्षर से भाषा के निर्माण की प्रक्रिया को बहुत ही सहज रूप में स्व–स्व व स्व–पर के सम्बन्ध रूप में समझाया है। भाषा में प्रवाह है, चिन्तन है, शब्दों की कसावट है जो इसे आकर्षक सौन्दर्य प्रदान करती है। भावाभिव्यक्ति सरल, सहज एवं बोधगम्य है।

'गर फिरदौस बररूए ज़मीं अस्त, हमीनस्तो, हमीनस्तो, हमीनस्त' यदि धरती पर कहीं स्वर्ग है तो वह यहीं है, यहीं है, यहीं है – पहली बार कश्मीर के बेपनाह सौन्दर्य को देख, मुगल बादशाह जहाँगीर के मुँह से अमीर खुसरो की ये पंक्तियाँ बरबस ही निकल पड़ीं थीं। जहाँ एक बादशाह को कश्मीर की वादियों में स्वर्ग दिखा वहीं कवि सेठिया की दृष्टि को मरूधरा के धोरों का सौन्दर्य स्वर्ग से भी मोहक लगा और वे कह उठे–

'धरती धोरां री
आ तो सुरगां ने सरमावै
ई पर देव रमण नै आवै
ई रो जस नर–नारी गावै
धरती धोरां री।' [36]

प्रस्तुत पंक्तियों में वर्णन प्रधान भाषा शैली में तुलनात्मक समीक्षा बहुत ही आकर्षक, प्रभावकारी है। भाषा में उर्दू, फ़ारसी के शब्दों का पैनापन जहाँ अमीर खुसरो की पंक्तियों में कश्मीर के बेपनाह सौन्दर्य का वर्णन करता है वहीं राजस्थानी भाषा शब्दावली में कवि कन्हैयालाल सेठिया ने राजस्थान की धरती अर्थात् मरूधरा के धोरों के सौन्दर्य में स्वर्ग से भी मोहक सौन्दर्य का वर्णन 'धरती धोरां री' कविता में अभिव्यक्त किया। राजस्थानी, उर्दू, फ़ारसी, हिन्दी भाषा के शब्द सौन्दर्य की छटा सरस, रोचक आकर्षक है। भाषा में काव्यात्मकता की झलक है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि लेखिका का अनुभव फ़लक जितना व्यापक है, उतना ही अभिव्यक्ति कौशल परिमार्जित व प्रौंढ है। उसमें कही भी बौद्धिकता की झौंक नहीं है हाँ तर्क चातुर्य है, शब्द छल नहीं, सूक्ष्मता और संजीदापन है जो पाठक को सम्मोहित करता है। भाषा सरल, सहज लालित्य पूर्ण एवं रोचक हैं।

5.6 डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य में भाषा और कथ्य का सामंजस्य –

भाषा और कथ्य का सामंजस्य ही रचनाकर्म की सार्थकता है। डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य में भाषा और कथ्य का सामंजस्य उत्कृष्ट कोटि का हैं। भाषा इनके भावों–विचारों की अनुगामी रही है और यही कारण है कि लेखिका ने अपनी बात को सहज

रूप से सरल भाषा में पाठक तक पहुँचाने में सफलता प्राप्त की। इनकी सभी विधाओं यथा कविता, कहानी, निबंध, यात्रावृत्त आदि में भाषा और कथ्य का सामंजस्य है।

इनकी भाषा शब्दावली के बारे में 'अक्षरों की पहली भोर' कविता संग्रह की भूमिका में रवि पुरोहित लिखते है कि – ''सहजग्राह्यता का पक्षधर वर्ग शायद भाषाई प्रांजलता से प्रतिध्वनित बौद्धिकता को संप्रेषण में बाधक माने परन्तु शब्द–दर–शब्द आकार लेती चित्र संवेदना काव्य–निर्झर का स्वतः प्रस्फूटित कल–कल नाद एवं बूढों, बच्चों और जवानों के चेहरों पर पसरा व्यावसायिक विषाद उन्हें बरबस ही अपने प्रभाव के बहाव में बहा ले जाता है। पाठक का यही बहाव इस संग्रह की कविताओं को ताकत और मुकम्मल पहचान प्रदान करता है।''[37]

रवि पुरोहित जी का कथन बिल्कुल सत्य है। इनके कविता संग्रह की भाषा सरल, सहज और आकर्षक है। इसलिए इनके कथ्य का भाव पाठक को सहजता से ह्रदयांगम हो जाता है। उदाहरण देखिए–

'पथराई छाती पर
दुःखों की दरारें बढ़ती जाती हैं
स्मित के बिन बरसे बादल को टेर दो
सालते दर्द पर अँजुरी भर नेह दो।' [38]

'अँजुरी भर नेह दो' कविता की पंक्तियों से स्पष्ट हो जाता है कि इनके भाषा और कथ्य का कितना सामंजस्य है।

पंक्तियों की भाषा शब्दावली में लाक्षणिक शब्दों – पथराई छाती, 'दुःखों की दरारें', 'सालते दर्द', का प्रयोग मार्मिक अभिव्यंजना में सहायक हैं। जो कथ्य को सम्प्रेषणीयता के साथ–साथ आकर्षक और रोचक भी बनाते है। इनकी भाषा तत्सम प्रधान, मुहावरेदार हैं जो पाठक को आमंत्रण देती सी जान पड़ती है।

'मौन के स्वर' कविता संग्रह में भी भाषा और कथ्य का सामंजस्य देखने को मिलता है। साहित्यिक सृजनशीलता की अवधारणा में भाषा और कथ्य का सामंजस्य होना नितान्त आवश्यक है। साहित्य सृजन का माध्यम ही भाषा है।

'कवयित्री के पास परम्परा–प्राप्त और स्वार्जित भाषा का समृद्ध मुहावरा है साथ ही अध्ययन और अवलोकन से प्राप्त ज्ञान और विभिन्न जीवनानुभव स्मृति कोष में संचित संग्रहीत है। वह दृष्टि मति सम्पन्न है। अपने आस–पास और बहिरंग पर जिस पैनेपन से दृष्टिपात करके काव्य वस्तु चुनती है, उसी प्रखर चेतना से बहुत दूर आगत–अनागत और अंतरंग में विद्युत कौंध की तरह प्रविष्ट होकर उन मणि–मुक्ताओं को गहराई से निकाल

लाती है, जिनसे व्यक्तियों व समाजों का वैयक्तिक–सामाजिक व सांस्कृतिक जीवन समृद्ध था। समृद्ध शास्त्रीय भाषा और समृद्ध जीवनानुभवों के द्वन्द्वात्मक रिश्ते से जन्मी हैं ये कविताएँ और इनके केन्द्र में है मनुष्य–जीवन मूल्यों से सम्पन्न भी, भौतिकता की चकाचौंध में भ्रांत भी और क्रमशः मूल्यहीनता और विपन्नता की ओर अग्रसर होता हुआ भी।'' [39]

लेखिका की भाषा के शब्द कथ्य को सुस्पष्ट सारगर्भित बनाते है, जो इनकी बात को पाठक व श्रोता तक पहुँचाने में सफल सिद्ध हुए है।

'मौन के स्वर' कविता संग्रह तीन खण्ड़ों में विभक्त है। अनुचिंतन, आलोड़न, निसर्ग। इन शीर्षकों से इनका कथ्य स्पष्ट हो जाता है। अनुचिंतन खण्ड की कविताओं का यथार्थ सोचने को विवश करता हैं तो आलोडन खण्ड की कविताओं में तत्व चिन्तन एवं दार्शनिक चिन्तन है जिनके शीर्षकों से ही दार्शनिक शब्दावली का आभास होता है। जैसे–देह में विदेह, आवरण–अनावरण, भूली हर देशना, भिन्न–अभिन्न, प्रक्षालन आदि। निसर्ग खण्ड की कविताओं में प्रकृति अपने जीवन्त रूप में मानवीकरण की छटा बिखेरती हुई मन को आकर्षित करती है। इनकी कविताओं में भाषा और कथ्य का सामंजस्य अनुपम है।

'पछुआ ने आँधी सा आकर
दिशा बदल दी हित चिन्तन की
है उषा काल या सांध्य लालिमा
भ्रम में हैं नन्हें पौधे।'[40]

'नन्हें पौधे' कविता में लेखिका ने भारतीय संस्कृति पर पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव को लाक्षणिक भाषा में अभिव्यक्ति प्रदान की है। 'पछुआ' शुद्ध साधारण बोलचाल की भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ है पश्चिम।

'मुक्ताकाश में' कविता संग्रह की कविताएँ 'स्वगत' और 'भवगत' दो खण्ड़ों में विभक्त है। स्वगत की कविताओं में जहाँ आध्यात्मिक एवं दार्शनिक चिंतन की प्रधानता है, वहीं 'भवगत' में वर्तमान यथार्थ का चेहरा साफ नज़र आता है।

'हँसते–गाते बिता दिया था
प्रथम प्रहर जीवन का
रहा भागता सारी दुपहर
लिए भार पीठ पर सबका।' [41]

लेखिका ने 'नाता' कविता की इन पंक्तियों में जीवन के सत्य को लाक्षणिक, व्यंजना प्रधान शब्दावली में बहुत ही सहज रूप से कविता को संप्रेषणीय

बना दिया है। यह इनके भाषा कौशल की कारीगरी है अर्थात् भाषा और कथ्य का सामंजस्य है।

'शब्द की अनुगूँज' कविता संग्रह में कुल तियासी कविताएँ 'अन्तर्नाद' और 'अनुनाद' खण्ड़ों में विभक्त है। सभी कविताओं में भाषा और कथ्य का सामंजस्य दृष्टिगत होता है। देखिए –

'मौन के गलीचे पर
आ गिरे भाव बीज
समय मेघ से बूँद झरी
परिवेश से प्रकाश पा
जगे शब्द, उगे शब्द
खुले शब्द, खिले शब्द
लेखनी ने चुने शब्द
बिखेर दिए पत्रक पर
विधाओं में सजे शब्द
फैली दिशि–दिशि महक
नैनों से अन्तर तक
पोर–पोर गया गमक
चिन्तन की लहर उठ
भिगों गई तन–मन को
डूबा फिर मनन में मौन।' [42]

'मौन से मौन तक' कविता में लेखिका ने धारा–प्रवाह भाषा में अपने मन के भावों का शब्द संधान बहुत ही आकर्षक शैली में किया है। लेखिका शब्द शिल्पी है, इन्होंने अपनी कविताओं में एक–एक शब्द को तराशकर भावानुकूल अभिव्यक्ति प्रदान की है। सम्पूर्ण संग्रह में भाषा और कथ्य का सामंजस्य हैं।

बालोपयोगी कविता संग्रह– 'टिम टिम तारे' में सीधी, सरल एवं सहजग्राह्य भाषा में प्रेरक एवं शिक्षाप्रद बालगीत हैं। जो बालमन को दृष्टि में रखकर लिखी गई है।

'चीटीं की बात' कविता प्रेरणास्पद भाषा शैली में कथ्य को छायाचित्र में दर्शाते हुए निरन्तर प्रयास करने का संदेश देती हैं। बालकों को चित्र बहुत भाते हैं और चित्र को देखकर वह तुरन्त कविता का भाव भी समझ जाते है।

'आज सवेरे बैठ धूप में
नन्हीं सी इक चींटी देखी

चढ़ने की कोशिश में मैंने
बार–बार वह गिरती देखी।' [43]

कविताएँ ही नहीं कहानियों में भी भाषा और कथ्य का सामंजस्य बेमिसाल है। इनकी लेखनी में वो जादू है, जो सरल भाषा में सहज रूप से अपना मन्तव्य प्रकट कर देती है। 'काम्या' कहानी संग्रह की सभी कहानियाँ स्त्री–पुरुष संबंधों को लेकर है। लेखिका सामाजिक समरसता का मार्ग प्रशस्त करती हुई सी जान पड़ती है। व्यवस्था के कुचक्रों और निराशा के अंधे कुँए में डूबती–उतराती लेखिका संयत पड़ताल के साथ पुश्तगी से अपने नाम के अनुरूप जिजीविषा की जूझ व जीवट की उषा किरणों से साक्षात् करवाती है। इनकी भाषा और कथ्य का सामंजस्य ही कहानियों को संप्रेषणीय, प्रभावोत्पादक बनाता है।

'यह कैसी विडम्बना है ? मैं अपराधी हूँ, दण्डित हूँ, पर अपराध क्या है ? मैं नहीं जानती'' वह सोचती। वह शीशे के सामने जा खड़ी होती और स्वयं से प्रश्न पूछती।

''आखिर क्या कमी है मुझमें ? सुंदर नहीं तो कुरूपा भी नहीं हूँ, देह सौष्ठव भी गर्व के योग्य है, फिर वे मेरी ओर देखते क्यों नहीं ?'' उसे कोई उत्तर न मिलता।'[44]

प्रस्तुत पंक्तियाँ 'चाँदनी के फूल' कहानी की हैं। पंक्तियों में नारी मन की व्यथा मुखरित हुई है। भाषा और कथ्य का सामंजस्य होने के कारण ही कहानी इतनी मार्मिक और आकर्षक बन सकी है।

इनके दूसरे कहानी संग्रह 'नेपथ्य का सच' की कहानियों में भी भाषा और कथ्य का सामंजस्य दृष्टिगत होता है। 'नेपथ्य का सच' कहानी संग्रह को यथार्थ जीवनानुभूतियों का सृजनशील उपक्रम मानते हुए मदन सैनी कहते है कि –''संग्रह की सभी कहानियाँ जीवन के यथार्थ को भिन्न–भिन्न कोणों से उजागर करती है। कथानक की बुनावट और भाषा की सहज संप्रेषणीयता पाठक के मन को अपने आत्मीय संस्पर्श से न केवल सरोबार ही करती है, बल्कि यहाँ पात्रों के आचरण में मानव–मनोविज्ञान को परत–दर–परत अनावृत होते हुए भी देखा जा सकता है।'[45]

'कल्याणी का परिवार रहता जरूर दक्षिण भारत में था पर घर के भीतर अभी भी जैसलमेरी रीति–रिवाज़, क़ायदा, छोटे–बड़े का अदब, बात करने का सलीका चलता था। बहुएँ घर के बाहर नहीं निकलती थीं, घर के भीतर भी घूँघट निकालती थीं। वे घर के ज़रूरी मामलों में दखल नहीं देती थीं, हाँ उनकी रसोई में ज़रूर दक्षिण भारतीय व्यंजनों ने थोड़ा–बहुत स्थान पा लिया था। यही था कल्याणी राजपूत का परिचय। हमारा परिचय दिन पर दिन प्रगाढ़ होता गया, एक–दूसरे के दिल तक।'[46]

'मरुपुष्प' कहानी की पंक्तियों में कल्याणी के राजपूत परिवार का वर्णनात्मक भाषा शैली में परिचय उर्दू–फ़ारसी शब्दावली के प्रयोग से बहुत ही आकर्षक बन गया है। लेखिका का शब्दकोश समृद्ध है तथा अनुभव क्षेत्र विस्तृत और कहने का तरीका तारिफ़े काबिल है। यही तो इनके भाषा और कथ्य के सामंजस्य का कमाल है, जो कहानी को इतनी रोचकता प्रदान करता है।

'तृष्णा तू न गई....' संग्रह की कहानियों की समीक्षा करते हुए देवकिशन राजपुरोहित ने लिखा है– ''सभी कहानियों को पढ़ने पर लगता है कि ये सत्य कथाएँ है तथा अपने अनुभवों और कलम के मिश्रण से इन्हें सुपाठ्य बनाया गया है।''[47]

निश्चय ही लेखिका के पास अनुभवों का खज़ाना है और लेखनी दमदार है, जो इनके अनुभवों को रेखाचित्रात्मक भाषा शैली में अभिव्यक्ति प्रदान करने में सक्षम है। इनकी भाषा और कथ्य का सामंजस्य ही कहानियों को जीवन्तता प्रदान करता है।

'रेल्वे के स्टोरों में से रद्दी माल को छाँटकर निकालना फिर उसकी नीलामी करवाकर पैसे विभाग को सौंपना उनके विभाग का काम था। कृष्णमोहन को यह व्यवसाय उचित लगा। उसने अपनी पत्नी के नाम से यह कारोबार प्रारम्भ कर दिया। भाग्य की बात है कि उनके घर चाँदी बरसने लगी। चतुर कृष्णमोहन रद्दी व पुरानी वस्तुओं के साथ कुछ अच्छी व नई वस्तुएँ भी रद्दी में छिपा कर बाहर निकाल देता, फिर उन्हें ऊँचे दाम पर बेच देता। कुछ दिनों बाद कृष्णमोहन ने अपनी साली के पति को भी इस व्यवसाय में खींच लिया। वह तेज़–तर्रार आदमी था अब तो दोनों खुलकर खेलने लगे।'[48]

'आधी छोड़ सारी को ....' कहानी की भाषा शब्दावली मुहावरेदार हैं। लेखिका ने ''चाँदी बरसने'' एवं 'खुलकर खेलने' जैसे मुहावरों द्वारा चोरी और भ्रष्टाचार में लिप्त होकर धन कमाने की प्रवृत्ति को बहुत ही आकर्षक रूप में अभिव्यक्ति प्रदान की है। यही इनके भाषा और कथ्य का सामंजस्य है, जो भावों–विचारों को संप्रेषणीयता के साथ–साथ रोचकता प्रदान करने में भी समर्थ बनाता है।

इनका चौथा कहानी संग्रह 'नए सूरज की तलाश' में भी भाषा और कथ्य का सामंजस्य बहुत ही आकर्षक है। इसमें सामाजिक यथार्थ का प्रमाणिकता के साथ चित्रण किया गया हैं। 'भ्रष्ट आचरण आज किस क्षेत्र में नहीं हो रहा ? इक्के–दुक्के यदि भ्रष्टाचार के विरोध में यदि आवाज़ उठाते भी हैं तो उनकी आवाज़ नक़्क़ार खाने में तूती की आवाज़ की तरह खोकर रह जाती है परन्तु दुःख तो तब होता है जब कोई भ्रष्टाचार का प्रबल विरोधी, समय आने पर, शक्ति व सामर्थ्य पाकर न केवल भ्रष्टाचार करता है वरन् उसे सही भी ठहराता है।'[49]

'बदलती परिभाषाएँ' कहानी में मुहावरा 'नक़्क़ारखाने में तूती की आवाज़' भ्रष्टाचार के विरोध में उठी आवाज़ को न सुन पाने की व्यंजना प्रकट करता है। आत्मकथा शैली में भ्रष्टाचार के विषय में चिन्तन–मनन, द्वन्द्व जो सोचने को विवश करता है कि आधुनिक युग में मूल्यों की परिभाषाएँ कितनी बदल गई है।

बालकथा संग्रह 'घरौंदा' में कुल दस प्रेरक एवं शिक्षाप्रद कहानियाँ संग्रहीत हैं। बालकों के मनोभावों को दृष्टि में रखते हुए पुस्तक में चित्र सहित कहानियों का प्रस्तुतीकरण है। लेखिका की भाषा सरल एवं सहज है जो कथ्य को संप्रेषणीय बनाने के लिए उचित है।

''यह सूरज मुखी है बेटा। यह सुबह पूर्व में मुँह करके खिलता है। इसका मुख सूर्य के साथ–साथ घूमता है। अब तीसरे पहर में देखो, जिधर सूर्य है उधर ही इन फूलों का मुख है।'

''शायद इसीलिए इनका मुख सूरजमुखी है क्यों ठीक है न माँ ?'' बड़े–बूढ़े की तरह विराट बोला। माँ हँसी और पुत्र को गले लगाती हुई बोली, ''हाँ बेटे।''[50]

''सबसे प्यारा फूल' बालकथा में लेखिका ने संवाद शैली में बहुत ही सरल एवं सहज भाषा में फूलों के बारे में जानकारी दी है। भाषा और कथ्य का सुन्दर सामंजस्य कहानी को रोचकता प्रदान करता हैं।

बालोपयोगी यात्रावृतांत 'द्वार से धाम तक' एवं 'मेरी यूरोप यात्रा' में तो भाषा और कथ्य का सामंजस्य पराकाष्ठा पर है। लेखिका ने इतना आकर्षक रेखाचित्रात्मक भाषा शैली में यात्रा का वर्णन किया है कि पाठक घर बैठे ही यात्रा का आनन्द प्राप्त कर लेता हैं। देखिए –

'अब पहाड़ी सड़क पतली और खतरनाक हो चली थी। सड़क के एक ओर ऊँचे पहाड़, दूसरी ओर गहरी खाई और बीच में रेंगती टैक्सी में बंद हम। चालक की निगाह चूकी नहीं कि यमुनोत्री की जगह यमपुरी पहुँचने की आशंका। दोनों ओर चीड़ के पेड़ों की लम्बी कतारें जो वनों की शक्ल में घट–बढ़ रही थीं। चीड़ और बुरांज़ के अलावा बेर, आम, पाकड़ तथा अन्य अनेक प्रजातियों के पेड़ जिनके फूलों को देख सौन्दर्यानुभूति के साथ–साथ उनके बीच बसे सन्नाटे को महसूस कर भयानुभूति भी हो रही थी।'[51]

यमुनोत्री यात्रा के दौरान मार्ग की कठिनाइयों के साथ ही प्राकृतिक सौन्दर्य का वर्णन आकर्षक हैं। रेखाचित्रात्मक भाषा शैली में यात्रा का वर्णन बहुत ही रोचक है। लेखिका द्वारा वनों में पाये जाने वाले पेड़ों, चीड़, बुरांज़, बेर, आम, पाकड़ के नाम सहित वर्णन से यह पता चलता है कि इन्हें पेड़ों के बारे में जानकारी हैं और क्यूं न होगी

देश–विदेश के भ्रमण एवं रूचि, अभिरूचि और जिज्ञासु प्रवृत्ति जो है इनकी। भाषा और कथ्य का सामंजस्य बेजोड़ है।

''बादलों से बहुत ऊपर उड़ते हुए, गहराती रात को पीछे छोड़ आते प्रभात के साथ हम निरन्तर लक्ष्य की ओर बढ़ रहे थे। मैं खिड़की के पास बैठी बाहर का दृश्य देख रही थी। नीचे सलेटी रंग के बादल ऐसे दिख रहे थे मानों किसी बहुत पुराने गद्दे को उधेड़ कर, बँधी–बँधी सी गँठीली रूई बिछा दी गई हो जिसके बीच में बने गड्ढे झीलों व तालाबों का आभास करा रहे थे। टी.वी. पर बना मार्ग दिखा रहा था कि हम क़ाबुल के ऊपर से निकल चुके हैं और पास–दूर दिख रहे हैं– टार्टू, बुडापेस्ट, रीगा, पीटर्सबर्ग, कीव, सबीहा–गोकीन आदि। थोड़ी दूरी पर दिख रहे थे ताशकंद और मास्को।''[52]

लेखिका ने 'मेरी यूरोप यात्रा' यात्रावृतांत का वर्णन इतना आकर्षक रेखाचित्रात्मक भाषा शैली में किया है कि पाठक आत्मलीन हो यात्रा का आनन्द सहज ही प्राप्त कर लेता है। भाषा अलंकार प्रदान होने से प्राकृतिक परिदृश्यों का सौन्दर्य बहुगुणित हो गया है। यथार्थ और कल्पना का सुन्दर संयोजन है यथा 'बादलों से बहुत ऊपर उड़ते हुए', 'गहराती रात को पीछे छोड़', 'प्रभात के साथ' बहुत ही आकर्षक शब्द संयोजन है। भाषा और कथ्य का सामंजस्य अकथनीय हैं। बालक ही नहीं सामान्य पाठक भी भावविभोर हुए बिना नहीं रह सकता।

अन्त में निबन्ध संग्रह 'अक्षर से 'अक्षर' तक' की चर्चा करें तो, लेखिका के मन पाँखी ने उन्मुक्त उड़ान भर साहित्य क्षितिज का कोना–कोना नाप लिया हैं। इनका साहित्य क्षेत्र भिन्न–भिन्न रूचियों, अनुभूतियों, विचार सरणियों से गुजरता हुआ नए क्षितिज की तलाश में उत्तरोत्तर प्रगति पर है। निबन्ध संग्रह में अक्षर की साक्षरता, मध्यकालीन और अर्वाचीन साहित्यकारों के अवदान नारी संचेतना, युवा दायित्वबोध विविध विषयों के महारथियों की जीवनियों से सम्बन्धित निबन्ध संग्रहीत है।

'अकेली संज्ञा और अकेली क्रिया अर्थयुक्त शब्द तो हो सकते है परन्तु भाषा नहीं। दोनों के मिलने से ही भाषा को आकार व सार्थकता प्राप्त होती हैं। 'अक्षर' और अक्षर का अविच्छिन्न सम्बन्ध हैं। 'अक्षर' से उत्पन्न अक्षर मिलकर शब्द को जन्म देते है और शब्द मिलकर सार्थक वाक्य बनाते है, जो विचार सम्प्रेषण का माध्यम हैं।'[53]

प्रस्तुत पंक्तियों में भाषा की बहुत ही सरलतम रूप में व्याख्या की गई हैं। भाषा और कथ्य के सामंजस्य का कोई सानी नहीं अब तक के सारे साहित्य विधाओं का चक्कर काट लेने के बाद पुनः यही कहना पड़ेगा कि इनके साहित्य में भाषा और कथ्य का सामंजस्य लाजवाब हैं, इसमें कोई संदेह नहीं।

निष्कर्ष –

किसी भी साहित्य को पढ़ते या सुनते ही सबसे पहले सामना होता है भाषा से। भाषा मात्र शब्दों का संयोजन ही नहीं है बल्कि अभिव्यक्ति का पूरा रूपाकार होने के साथ ही अनुभूति और संवेदना का माध्यम भी होती है। भावों–विचारों के संप्रेक्षण का माध्यम भाषा ही है। भाषा ही भावों की वाहक होती हैं। लेखक की क्षमता का आधार यह है कि वह कितने प्रभावी ढ़ंग से अपने सर्जनात्मक अनुभव या शब्द को कहाँ तक सम्प्रेष्य बना पा रहा है। उसकी पूरी चेष्टा उस, भाषा की तलाश से है जो समाज के लोगों, स्थितियों, परिवेश वस्तुओं की अन्दरूनी शक्लों और अन्तर्दृष्टि से प्राप्त हक़ीकत को रू–ब–रू बयां कर सके। भाषा का स्वरूप ऐसा हो कि उसके शब्दों से अर्थ फूटकर फैले, जो कुछ भी लेखक कहना चाहता है, वह सुस्पष्ट और सारगर्भित हो।

डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य की भाषा में यह सभी गुण मौजूद है। कविता साहित्य में भाषा के स्वरूप पर चर्चा करें तो इनके चारों कविता संग्रह– 'अक्षरों की पहली भोर', 'मौन के स्वर', 'मुक्ताकाश में', 'शब्द की अनुगूँज', बालगीत संग्रह– 'टिम टिम तारे' आदि में भाषा का स्वरूप सुसंस्कृत, परिष्कृत, परिनिष्ठित, परिमार्जित एवं भावानुकूल मार्मिक एवं संवेदना जाग्रत करने वाली शब्दावली से परिपूर्ण हैं।

मंत्र बीज कविताओं की भाषा गागर में सागर भरने जैसी है नाविक के तीर के समान गम्भीर घाव करने वाली। प्राकृतिक सौन्दर्य तथा प्रकृति के मानवीकरण के वर्णन में इनकी भाषा छायावादी, माधुर्य एवं प्रसाद गुणों से ओत–प्रोत सरस, सहज एवं आकर्षक है। सामाजिक बुराइयों, कुरीतियों, भ्रष्टाचार का पर्दाफ़ाश करती कविताओं में लेखिका का व्यंग्य भाषा प्रहार बहुत ही प्रभावकारी है। आध्यात्मिक एवं चिंतनपरक कविताओं की भाषा सुसंस्कृत, सारगर्भित है।

लेखिका शब्दों की कारीगर हैं, शब्द इनके इशारे पर थिरकते हुए भावों के सम्प्रेषण में भाषा का माध्यम बन जाते हैं। बहुत ही सरलतम भाषा में कम से कम शब्दों में यह अपनी बात पाठक तक पहुँचा देती है। इनके साहित्य में भाषा का स्वरूप उच्चस्तरीय हैं।

काव्य भाषा ही नहीं गद्य भाषा में भी इनकी भावाभिव्यक्ति सरल एवं सहजग्राह्य रही है। कहानी साहित्य, निबन्ध साहित्य, यात्रावृत्त साहित्य में भी भाषा का स्वरूप इनकी अनुभूति और संवेदना को अभिव्यक्ति प्रदान करने में सहायक रहा हैं। इन्होंने संस्कृत, हिन्दी, उर्दू–फ़ारसी और कहीं–कहीं अंग्रेजी, राजस्थानी एवं पंजाबी के साथ–साथ साधारण

बोलचाल की भाषा के शब्द एवं प्रांजल शब्दों का प्रयोग भी साहित्य में किया हैं। सम्पूर्ण कहानी साहित्य की भाषा का स्वरूप बहुत ही मार्मिक एवं संवेदना जाग्रत करने वाला है।

समाज की बुराइयों, विशेष कर नारी–पुरुष के जीवन की समस्याओं को तथा भ्रष्टाचार, दुराचार के खिलाफ़ लेखिका ने अपनी लेखनी के बल पर चेतना लाने की कोशिश की है। वह इन बुराइयों को समाज से निकाल कर फैंक देना चाहती हैं। इनके अनुभव का संसार व्यापक है, जो यथार्थ के धरातल पर कल्पना के रंग से सरोबार हो भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त हुआ है।

इनके बालोपयोगी यात्रावृतांत पर बात करें तो यात्रावृत साहित्य क्षेत्र में बालोपयोगी शिक्षाप्रद, प्रेरक, सामान्य ज्ञान से लबरेज़ यात्रावृत्त साहित्य अगर किसी ने लिखा है तो वह है – डॉ. उषा किरण सोनी वरना आज तक बाल साहित्य के नाम पर अर्थहीन, अतुकांत कपोल–कल्पित बाल साहित्य मिलता है। इस क्षितिज की पहली महिला है जिन्होंने मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से सम्बोधन एवं रेखाचित्रात्मक भाषा शैली में रिपोर्टर की भाँति यात्रा की वस्तुस्थिति, परिस्थिति, स्थान की समयबद्ध तथ्यात्मक जानकारी देते हुए सजीव एवं आकर्षक भाषा शैली में यात्रा स्थल के छायाचित्र के साथ–साथ कठिन शब्दों का सरलार्थ देते हुए यात्रा का आनन्द स्वयं ने ही नहीं लिया बल्कि पाठक को भी इन स्थलों का भ्रमण करवा दिया। यात्रावृत का यह आनन्द संभव हो सका है तो वह है इनका भाषा कौशल, जिसके सहारे इन्होंने धारा–प्रवाह में प्रत्यक्ष रूप से रिपोर्ताज शैली में वर्णन को आकर्षक एवं रोचकता प्रदान की है।

इनके निबन्ध साहित्य की भाषा का स्वरूप विविध आयाम तय करता हुआ सा जान पड़ता हैं। 'अक्षर से 'अक्षर' तक' निबन्ध संग्रह में कुल बाईस निबन्ध है। चिन्तनपरक, विचारात्मक, भावात्मक, विवरणात्मक, ललित निबन्ध। सभी प्रकार के निबन्ध इसमें संकलित है।

लेखिका द्वारा साहित्य के आखरी में निबन्ध–विधा पर लेखनी चलाने के पीछे शायद कुछ हृदय के उद्गार, कुछ धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक भाव जिन्हें वह अन्य विधाओं में खुलकर व्यक्त न कर सकी उसे निबन्ध में स्वतन्त्र रूप से अभिव्यक्त कर सकने की इच्छा फलीभूत रही होगी। तभी इन्होंने अन्त में निबन्ध विधा को चुना।

अन्त में यही बात रह जाती हैं कि लेखिका ने अपने अनुभव तथा यथार्थ जीवनानुभव को इतने सरल एवं सहज रूप से कैसे व्यक्त कर दिया ? तो निःसंदेह कहा जा सकता है कि इनके भाषा संप्रेषण में कथ्य और भाषा का अनूठा सामंजस्य हैं, जो भावों–विचारों, अनुभवों को आकर्षक ढंग से पाठक तक पहुँचा देता है। इनकी भाषा में वो

आकर्षण हैं जो पाठक को उबाता नहीं वरन् उसमें जिज्ञासा जाग्रत करता है, यथार्थ से रू–ब–रू होने की।

शब्दों की कसावट एवं कथ्य को बयां करने का अन्दाज़ और भाषा का सामंजस्य ही इनको साहित्य क्षेत्र में विशिष्ट स्थान प्रदान करता हैं जो समाज को प्रेरित कर उसे एक नई दिशा प्रदान करने में सहायक सिद्ध होगा।

सन्दर्भ –

1. भाषा विज्ञान, भोलानाथ तिवारी, पृ.सं. 2
2. भाषा विज्ञान, भोलानाथ तिवारी, पृ.सं. 2
3. भाषा विज्ञान, भोलानाथ तिवारी, पृ.सं. 5
4. डॉ. रामचन्द्र वर्मा, मानक हिन्दी कोश, पृ.सं. 443
5. डॉ. कालिका प्रसाद, वृहत् हिन्दी कोश, पृ.सं. 242
6. डॉ. श्याम सुन्दर दास, हिन्दी शब्द सागर (भाग–2), पृ.सं. 767
7. डॉ. भोलानाथ तिवारी, वृहत् पर्यायवाची कोश, पृ.सं. 214
8. 'भाषा और संवेदना', डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी
9. कवि, वक्तव्यपुनश्च, तार सप्तक
10. कविता के नये प्रतिमान, डॉ. नामवर सिंह, पृ.सं. 105
11. 'अक्षरों की पहली भोर', डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 14
12. मौन के स्वर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 42
13. मौन के स्वर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 83
14. मौन के स्वर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 95
15. मुक्ताकाश में, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 50
16. 'शब्द की अनुगूँज' डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 83
17. हिन्दी का गद्य साहित्य, डॉ. रामचन्द्र तिवारी, पृ.सं. 293
18. हिन्दी साहित्य कोश–1, धीरेन्द्र वर्मा (सं.2000) पृ.सं. 158
19. कमलेश्वर (सं.)2005, (शक–1927), स्वातन्त्रोत्तर हिन्दी कहानियाँ, नेशनल बुक ट्रस्ट दिल्ली, पृ.सं. 7
20. प्रेमचन्द 2002, मानसरोवर, भाग–1 प्रकाशकः प्रकाशन संस्थान नई दिल्ली, पृ.सं. 5
21. काम्या डॉ. उषा किरण सोनी, भूमिका से
22. काम्या डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 39
23. नेपथ्य का सच, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 18

24. तृष्णा तू न गई.., डॉ. उषा किरण सोनी, 'मेरी बात' से
25. तृष्णा तू न गई.., डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 29
26. नए सूरज की तलाश, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 54
27. घरौंदा, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 38
28. हिन्दी का गद्य साहित्य, डॉ. रामचन्द्र तिवारी, पृ.सं. 409
29. हिन्दी का गद्य साहित्य, डॉ. रामचन्द्र तिवारी, पृ.सं. 413
30. द्वार से धाम तक, डॉ. उषा किरण सोनी, आमुख से –
31. द्वार से धाम तक, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 11
32. मेरी यूरोप यात्रा, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 3
33. मेरी यूरोप यात्रा, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 14
34. 'अक्षर से 'अक्षर' तक', डॉ. उषा किरण सोनी, प्राक्कथन से –
35. 'अक्षर से 'अक्षर' तक', डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 11–12
36. अक्षर से 'अक्षर' तक, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 66
37. अक्षरों की पहली भोर, डॉ. उषा किरण सोनी, प्राक्कथन–रविपुरोहित भूमिका से
38. अक्षरों की पहली भोर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 78
39. मौन के स्वर, डॉ. उषा किरण सोनी, भूमिका से –
40. मौन के स्वर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 29
41. मुक्ताकाश में, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 25
42. शब्द की अनुगूँज, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 33
43. टिम टिम तारे, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 17
44. काम्या, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 35
45. नेपथ्य का सच, डॉ. उषा किरण सोनी, प्राक्कथन से
46. नेपथ्य का सच, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 49
47. नया शिक्षक (अप्रेल–जून, 2012) देवकिशन राजपुरोहित, पृ.सं. 97
48. तृष्णा तू न गई.... डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 72
49. नए सूरज की तलाश, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 24
50. घरौंदा, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 22
51. द्वार से धाम तक, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 7
52. मेरी यूरोप यात्रा, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 5
53. 'अक्षर से 'अक्षर' तक', डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 11

अध्याय षष्ठम्

अन्य शिल्पगत विशेषताएँ

अध्याय षष्ठम्

अन्य शिल्पगत विशेषताएँ

शिल्प का शाब्दिक अर्थ है– निर्माण अथवा रचना के तत्त्व। शिल्प शब्द वस्तुतः वास्तुकला या मूर्तिकला से सम्बद्ध है। जहाँ इसका प्रयोग हस्त कौशल पर आधारित कलाओं में प्रयुक्त कारीगरी एवं कला के लिए होता हैं। साहित्य में जब रचना कौशल से सिद्ध सौन्दर्य की बात होने लगी तो वास्तुकला का यह शब्द साहित्य में प्रयोग किया जाने लगा। शिल्प का शाब्दिक अर्थ ''वृहद् हिन्दी कोश' (सं. कमला प्रसाद पृ. 1334) में इस प्रकार दिया गया है – ''किसी चीज के बनाने का, रचने का, ढ़ंग अथवा तरीका।'' अर्थात् वस्तु के रचने की जो विधियाँ या प्रक्रिया होती हैं, उनके समुच्चय को शिल्प कहा जाता है।

संस्कृत साहित्य में ''शिल्प'' कई रूपों में प्रयुक्त होता हैं। ''ऐतरेय ब्राह्मण'' में विधाता की रचना को 'देवशिल्प' और मनुष्य की सृष्टि के लिए 'एतोषाम् वैशिल्पनाम्' कहा गया।''[1]

वात्स्यायन ने शिल्प के अन्तर्गत ही 64 कलाओं का उल्लेख किया हैं। 'मनुस्मृति' में शिल्प का अर्थ 'कला–कौशल' के रूप में हुआ है।'[2] आचार्य भरतमुनि अपने ग्रन्थ 'नाट्य शास्त्र' में 'कलाओं' और 'शिल्प' को काव्य का अंगांगी मात्र कहते हैं।

इस प्रकार संस्कृत साहित्याचार्य शिल्प के दो रूपों को स्वीकार करते हैं – पहला कौशलपूर्ण रचना के अर्थ में, दूसरा–नृत्य, मृदंग–वादन, मूर्ति निर्माण आदि विभिन्न कलाओं के कार्यों के रूप में। संक्षेप में संस्कृत आचार्यों के अनुसार 'शिल्प' के मूलार्थ में 'रचना' और रचना में कुशलता हैं।

हिन्दी में 'शिल्प' को अंग्रेजी के (Technique) टेकनीक का रूपान्तरण माना गया हैं। इसका अर्थ रचना पद्धति से है।

मार्क शोरर लिखते है– ''The Difference between the content or experience and achieved content or act of its technique." अर्थात् कथ्य अथवा अनुभव तथा सिद्ध कथ्य अथवा कला के बीच का अन्तर ही शिल्प है।''[3]

ज्ञानमण्डल लिमिटेड, बनारस द्वारा प्रकाशित 'वृहत् हिन्दी कोश'में दी गई परिभाषा है– ''शिल्प से अभिप्राय हाथ से कोई वस्तु तैयार करने अथवा दस्तकारी या कारीगरी से है।'' जैसे वास्तुकार पत्थर को तराश कर सुन्दर मूर्ति का निर्माण करता हैं वैसे ही साहित्यकार अपने रचना कौशल से रचना को सौन्दर्य प्रदान करता हैं।

साहित्यकार के पास अपने मनोभाव अथवा विषय की प्रस्तुति के लिए श्रेष्ठ शिल्प का होना नितांत आवश्यक है, जिसके द्वारा वह अपने कथ्य को अक्षुण्ण रूप से पाठक तक संप्रेषित कर सके। शिल्प ही वह माध्यम हैं जिसके द्वारा लेखक अथवा साहित्यकार अपने अनुभव को रचनात्मकता का आधार बनाकर उसे कलात्मक मोड़ देता हैं। साहित्यकार के शिल्प की सफलता उसके द्वारा निर्मित शब्दचित्र (बिम्ब) की स्पष्टता एवं सजीवता पर निर्भर करती हैं।

डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य में यथार्थ जीवनानुभूतियों एवं मार्मिक संवेदनाओं को देखने के बाद उनके साहित्य में व्याप्त 'शिल्प' का अध्ययन करना आवश्यक हो जाता हैं। इन्होंने गद्य एवं पद्य दोनों ही विधाओं में अपने मनोभाव तथा कथ्य को बिम्बों द्वारा स्पष्टता एवं सजीवता प्रदान कर अद्‌भुत रचना–कौशल का परिचय दिया है।

उचित एवं सशक्त कथ्य के साथ ही 'शिल्प' का भी कलात्मक होना आवश्यक होता है। शिल्प की कमजोरी के कारण रचना बेअसर हो जाती है और उसका पाठक पर कोई असर नहीं होता। लेखिका कथ्य, के साथ शिल्प के प्रति भी सजग रही हैं, यही वजह है कि इनका साहित्य इतना आकर्षक एवं प्रभावकारी हैं। इनकी शिल्पगत विशेषताओं को निम्न बिन्दुओं के अन्तर्गत विश्लेषित किया जायेगा।

6.1 पात्रों की सृष्टि और विषयौचित्य –

पात्र ही कथानक की घटनाओं को उद्देश्य तक पहुँचाने का सशक्त माध्यम होते है। नियोजित घटनाओं के अनुरूप पात्रों की सृष्टि कर कहानीकार कहानी को विषयौचित्य प्रदान करता हैं। कथानक और चरित्र–चित्रण कहानी का विषय या सामग्री होते हैं। इन दोनों के अभाव में कहानी–रचना संभव नहीं हो सकती। कहानी में पात्रों का सजीव एवं स्पष्टतापूर्ण परिचय होना आवश्यक है।

चरित्र–चित्रण के अन्तर्गत पात्रों के गुण, दोष, रूप, रंग, व्यवहार, स्वभाव, योग्यता आदि सभी बातें आती हैं और इन विषयों पर जो भी कहानी विशेष प्रकाश डालती है वही अधिक प्रभावशाली होती है।

पात्रों की सृष्टि करने के लिए कहानीकार या लेखक को उसके परिवेश को जीना पड़ता है जिस परिवेश से पात्रों को कथावस्तु के लिए चुना गया है। लेखक के मस्तिष्क पर उसके व्यक्तित्व की छाप होनी चाहिए और वही छाप पाठक पर भी लगनी चाहिए तभी कहानी का विषयौचित्य पूर्ण हो पाता है। चरित्र–चित्रण के लिए किसी भी पात्र की विशेषताओं को तीन भागों में बाँटा जा सकता हैं – शारीरिक, मानसिक, आत्मिक या चारित्रिक। शारीरिक विशेषताओं के अन्तर्गत रूप, रंग, आकार, वेश–भूषा, गठन आदि गुणों

का वर्णन होता है ताकि उस पात्र का चित्र आँखों के समक्ष उपस्थित हो सके। मानसिक विशेषताओं के अन्तर्गत पात्र के बौद्धिक गुणों का परिचय प्राप्त होता है और आत्मिक एवं चारित्रिक विशेषताओं से उसके स्वभाव, सद्व्यवहार, सहृदयता के बारे में पता चलता हैं। इन सभी विशेषताओं के प्रति मनुष्य की स्वाभाविक जिज्ञासा रहती हैं और यही जिज्ञासा कुतूहल जगाती है। वह जानना चाहता है कि मनुष्य का व्यवहार किसी विशेष परिस्थिति में किस प्रकार का होता हैं।

डॉ. उषा किरण सोनी ने अपनी कहानियों के पात्रों की सृष्टि विषयौचित्य को ध्यान में रखते हुए की हैं।

इनकी कहानियों में ग्रामीण एवं शहरी दोनों ही परिवेश से पात्रों को चुना गया हैं और उस परिवेश के अनुरूप ही पात्रों का चरित्र–चित्रण किया गया हैं। इन्होंने समाज के यथार्थ को कहानियों में पात्रों के चरित्र–चित्रण के माध्यम से अनावृत्त किया हैं। कहानी में पात्रों की सृष्टि करना बहुत जटिल कार्य हैं। लेखिका इस विषय में कहती हैं कि –''कहानी को समाज से ग्रहण करके उसे अभिव्यक्त करने की प्रक्रिया लेखक के लिए बड़ी यंत्रणा भरी होती हैं, क्योंकि कहानी के पात्रों का चरित्र रचने के लिए लेखक को उस पात्र को देखना, समझना बल्कि यूँ कहे जीना पड़ता है। कहानी–रचना की इस प्रक्रिया में वह कष्ट, पीड़ा और वेदना को निमंत्रण देता है वह चरित्रों के सुख–दुःख, आशा–आकांक्षा, द्वंद्व–कुंठा सभी का बारीक अवलोकन करता है। उनकी सच्चाई को समझ कर संवेदनात्मक दृष्टि से उन्हें कागज़ पर उतारता है।''

निश्चय ही लेखिका पात्रों की सृष्टि करते समय इस दौर से गुजरी हैं जिसका प्रमाण है, उनका कथन। इन्होंने अपने चारों ही कहानी संग्रहों में पात्रों की सृष्टि और विषयौचित्य का पूरा ध्यान रखा है। 'काम्या' कहानी संग्रह के पात्रों की सृष्टि मनोवैज्ञानिक सोच रखते हुए की गई है। संग्रह की सभी कहानियाँ द्वंद्वों, उहापोहों, संशयों और विस्मयादिबोधक प्रश्नों का तनाव हृदय की ग्रंथियों पर चोट करता है।

'धान–पान सी सुरजा समय के साथ अब प्रौढ़ा हो चुकी थीं और थोड़ा मुटिया भी गई थी। श्रीकान्त विश्वविद्यालय में प्रोफ़ेसर हो गए थे और पुत्र सूर्यकान्त बी.एससी.प्रथम वर्ष में पढ़ रहा था। सब ठीक था पर सुरजा अशांत थीं। सुरजा को जेठ श्रीहरि व उनकी पत्नी का विशाल साम्राज्य और वैभव काँटे–सा चुभता। उनके राज–पाट के सामने स्वयं का धन–मान सुरजा को तुच्छ मालूम पड़ता। वह जानती थी कि अगला महंत परम्परानुसार श्रीहरि का पुत्र विष्णुकांत ही बनेगा। ऐसा नहीं कि यह सत्य उससे छुपा था पर ज्यों–ज्यों वह विष्णुकांत को जवान होते देखती, त्यों–त्यों यह सत्य उसे दंश मारता।'[4]

'अनुष्ठान' कहानी की नारी पात्र सुरजा की ईर्ष्या, वहशीपन, क्रूरता इतिबोध जाग्रत करता हैं जो कैकयी से लेकर आज तक समाज में अनेक बार घटित होता रहा हैं। श्रीहरि के बेटे की मृत्यु का अनुष्ठान उसके ही एक मात्र पुत्र की मृत्यु में परिणत हो जाता हैं। लेखिका ने विषयौचित्य पूर्ण पात्रों की सृष्टि कहानी में की हैं।

'नेपथ्य का सच' कहानी संग्रह की कहानियों में भी पात्रों की सृष्टि समाज के यथार्थ धरातल से की गई हैं, जो विषयौचित्य से परिपूर्ण है।

'ऐशोआराम में पली करूणा और नम्रता को मेजर साहब का बात–बात पर रौब झाड़ना बहुत बुरा लगता। वे फ़ौजी अनुशासन से मुक्ति चाहती थीं पर कोई उपाय न सूझता। मधुकर और शुभंकर दोनों की नौकरी व व्यवसाय इसी शहर में थे अतः शहर छोड़कर कहीं और रहना भी संभव नहीं था। वे पहले भी अवहेलना करने के प्रयास में एक–दो बार श्वसुर से डाँट खा चुकी थी अतः मुँह बंद कर अनिच्छा से ही उनकी आवश्यकताओं का ध्यान रखतीं पर भीतर ही भीतर उनसे मुक्ति का उपाय सोचतीं। सास–ससुर की उपस्थिति उन्हें अपनी आज़ादी में बाधक लगती।"[5]

लेखिका ने 'निर्णय' कहानी में मधुकर, शुभंकर, करूणा और नम्रता आदि पात्रों की सृष्टि वर्तमान में कलयुगी पुत्रों व पुत्रवधुओं के रूप में कर उनकी मनोवृत्ति को अनावृत किया हैं। साथ ही पिता मेजर साहब के रूप में ऐसे पुत्र एवं पुत्रवधुओं को सबक सिखाकर "जैसे को तैसा" कहावत चरितार्थ कर दी हैं। कहानी में विषयौचित्य प्रदान पात्रों की सृष्टि की गई हैं। शहरी परिवेश से पात्रों की सृष्टि हुई है। जहाँ एकल परिवार की मनोवृत्ति बलवती हैं वहाँ सास–ससुर को अपनी आज़ादी में बाधक माना जाता हैं और मुक्ति की छटपटाहट जिसे करूणा व नम्रता नारी पात्रों के माध्यम से उभारा गया हैं।

'तृष्णा तू न गई .....' कहानी संग्रह के पात्रों की सृष्टि ज्यादातर शहरी परिवेश से हुई हैं जो वर्तमान समाज की विसंगतियों को उज़ागर कर समाज का सच सामने लाते हैं।

'रजत के पिता अपना काला धन लगा कर इस कम्पनी को खोलने की बात कर रहे थे जिसमें रजत के जीजा व दीदी केवल अपना नाम देने वाले थे तथा रजत व भूमिका उसके वर्किंग पार्टनर होंगे। कुल पाँच हिस्सेदार होंगे जिनमें दीदी–जीजा जी को विदेशी निवेशक व परामर्श दाता प्रदर्शित किया जाएगा पर वास्तव में सारा धन (काला) रजत के अभियन्ता पिता लगाने वाले थे। भूमिका का स्वर्ण पदक विजेता होना व अध्ययन काल में ही अपने बनाए नक्शों के लिए पुरस्कृत होना उनके तुरूप का पत्ता था।"[6]

"तृष्णा तू न गई....."। कहानी संग्रह की कहानी 'भूमिका' का पात्र रजत शारीरिक गुणों से संपन्न है परन्तु आत्मीय एवं चारित्रिक गुणों से स्वार्थी, लोभी, दंभी, झूठा,

धोखेबाज़ है वही सुन्दरी, लावण्यमयी भूमिका का वैयक्तित्व पढ़ी–लिखी, समझदार, सुसंस्कारी स्वर्ण पदक विजेता नारी पात्र के रूप में वर्णित हैं।

कहानी के विषय में डॉ० काशीनाथ का कहना है– ''कहानी वह झूठ है जो समाज के सच को उजागर करता है।'' वाक़ई लेखिका ने भी अपनी कहानियों के माध्यम से समाज का सच उजागर किया हैं। इनके कहानियों के पात्रों की सृष्टि यथार्थ की भाव–भूमि पर की गई हैं, जो विषयौचित्य पूर्ण हैं।

'नए सूरज की तलाश' कहानी संग्रह में पात्रों की सृष्टि स्वयं के सत्य और जीवन मूल्यों पर आधारित दृष्टिकोण रखते हुए की गई हैं। लेखिका का कहानी के विषय में मानना है कि– ''कहानी दरअसल गद्य में लिखा गया जीवन के यथार्थ का दस्तावेज हैं। सभी वादों (इज़्मों) और विमर्शों को दरकिनार कर देखा जाए तो प्रत्येक सफल कहानी अपने आप में प्रमाणिकता के साथ यथार्थ का चित्रण करती है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति का, चाहे वह रचयिता हो या रचना का पात्र, अपना अलग दृष्टिकोण होता हैं।''

'राव साहब को समरेंदु का गायन बहुत पसंद आया था। उनके मन में विचार आया कि उनकी बेटी को यदि विधिवत संगीत की शिक्षा दी जाए तो उसकी संगीत सीखने की इच्छा पूर्ण हो जाएगी साथ ही यह गायक अपने गायन से कुछ अधिक दिनों तक उन्हें आनन्द दे सकेगा। इससे अन्य ठिकानेदारों में उनकी प्रतिष्ठा भी बढ़ेगी। उन्होंने समरेंदु शाह से कुँवरी सरस्वती बाई को संगीत सिखाने हेतु कुछ समय तक राज्य में रहने का अनुरोध किया जिसे उसने स्वीकार कर लिया।'[7]

'नए सूरज की तलाश' कहानी में पात्रों की सृष्टि राजस्थान के राजघराने सोहनगढ़ परिवेश से की गई हैं। इस कहानी में मुख्य रूप से चार पात्रों का चरित्र चित्रण हुआ है। राव साहब राजपूत घराने से हैं। इनके अलावा इनकी बेटी सुमधुर कंठी, नवयौवना, कोमलांगी व सुन्दरी कुंवरी सरस्वती बाई, जो समरेंदु के शिष्या के रूप में संगीत शिक्षा ग्रहण कर श्रेष्ठ ठुमरी गायिका के रूप में प्रतिष्ठित हुई हैं। समरेन्दु की मृत्यु शराब की लत के कारण हो जाने के बाद सरस्वती द्वारा उसके मातृ–पितृ विहीन भानजे चन्द्रभान को तबला वादन की शिक्षा दिलवाई और गुरु ऋण से मुक्त हुई। इसी संगीत परम्परा को जीवन्त बनाये रखने के लिए अपनी ब्राह्मण विधवा नौकरानी की बेटी ईसुरी को पालिता पुत्री के रूप में संगीत क्षेत्र में ठुमरी गायिका के रूप में प्रतिष्ठित किया। चन्द्रभान और ईसुरी का प्रेम प्रसंग दोनों ही पात्रों की सृष्टि धोखा, स्वार्थपरता के व्यक्तित्व को उजागर करते हैं। ईसुरी द्वारा पति रविकान्त को धोखा देकर चन्द्रभान के साथ भाग जाना फिर चन्द्रभान द्वारा भी ईसुरी को चालाकी से गहने, पैसे लेकर रास्ते में छोड़ भाग जाना। अन्त

में सरस्वती को अपने पिता का वह दर्द अनुभव हुआ जो उसने अपने पिता को दिया था क्योंकि वह भी तो समरेन्दु के साथ भागी थी। अब वह समझ गई कि ईसुरी के अँधेरे जीवन को प्रकाशित करने के लिए उन्हें नए सूरज की तलाश करनी होगी। कहानी में विषयौचित्य पूर्ण पात्रों की सृष्टि हुई हैं। कहानी में महान कथा साहित्यकारों की कहानियों की झलक देखने को मिलती है।

इसी क्रम में बाल कथा संग्रह की कहानियों के पात्रों की सृष्टि प्रेरणात्मक, ज्ञानवर्धक रूप से सफलता के सोपान तक बालकों को ले जाने के विषयौचित्य से की गई हैं।

'अब तक सात वर्ष के रमेश और आठ वर्ष के अनुपम में दोस्ती हो चुकी थी। अनुपम पास ही बने क्वाटरों में रहने वाले दीनदयाल माथुर का बेटा था। दीनदयाल जी नगर पालिका के दफ़्तर में क्लर्क थे। रमेश मैदान से कुछ दूरी पर स्थित झोपड़ पट्टी में रहता था। उसके माता–पिता दोनों ही मजदूरी करते थे। रमेश व छोटा भाई मुकेश दिन भर कचरे के ढ़ेर से प्लास्टिक की थैलियाँ चुन कर लाते थे। रमेश के पिता हर दूसरे–तीसरे दिन उन थैलियों को कबाड़ी को बेच कर घर के लिए जरूरी चीजें खरीद लाते। दो–तीन दिनों तक दोनों के साथ–साथ खेलते रहने से उनकी दोस्ती और मजबूत हो गई। अनुपम की माँ ने जब उसे झोपड़पट्टी में रहने वाले रमेश के साथ कई दिन खेलते देखा तो उन्हें अच्छा न लगा। उन्होंने अनुपम को रमेश के साथ खेलने से मना किया। अनुपम ने माँ को बताया कि रमेश बढ़िया क्रिकेट खेलता है इसलिए मुझे अच्छा लगता है।'[8]

'दोस्ती का कमाल' बालकथा में पात्रों की सृष्टि सुंदर नगर गाँव के परिवेश से की गई हैं। पात्र अनुपम एवं झोपड़पट्टी में रहने वाले रमेश की दोस्ती और उसका परिणाम रमेश का साफ–सफाई पर ध्यान देना तथा पढ़–लिख कर इंजीनियर बनना और सुन्दर नगर में स्वच्छता के प्रति जन–चेतना जाग्रत करना। अनुपम और रमेश की दोस्ती का ही कमाल हैं जो आज सुन्दरनगर में सरकार द्वारा शौचालय निर्माण के साथ ही प्राथमिक एवं माध्यमिक स्कूल और एक स्वास्थ्य केन्द्र भी खुल गया है। पात्रों की सृष्टि प्रेरणात्मक रूप से की गई हैं तथा कहानी में विषयौचित्य की प्रधानता है।

6.2 वातावरण की सृष्टि और उपयोगिता –

कहानी को वास्तविकता का आभास देने एवं यथार्थ पृष्ठभूमि प्रदान करने के लिए देश–काल अथवा वातावरण की सृष्टि की जाती है। कहानी में जितनी वास्तविक पृष्ठभूमि में चरित्रों को प्रकट किया जाएगा, उतनी ही गहरी विश्वसनीयता का भाव कहानी में जाग्रत

होगा। मनुष्य का सम्बन्ध अपने युग, समाज, देश और परिस्थितियों से रहता है अथवा मानव के चरित्र की पृष्ठभूमि के लिए उसके देशकाल अथवा वातावरण की सृष्टि आवश्यक अंग है। अगर कहानी में चित्रित घटनाएँ तथा पात्रों के अनुकूल वातावरण का चित्रण किया जाए तो वह कहानी सफल कहानी बन जाती है। अगर इस तत्त्व की कमी रह जाए तो वह कहानी की सामाजिक, राजनीतिक तथा ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से अपरिचित रह जाता हैं।

वातावरण की सृष्टि और उपयोगिता के अन्तर्गत सांस्कृतिक परम्पराओं, सामाजिक आचार–विचार, रहन–सहन तथा रीति–रिवाज़ आदि का भी चित्रण किया जाता है।

कहानी के कथाकाल और घटना क्षेत्र के अनुरूप वातावरण की सृष्टि करने से कहानी की विश्वसनीयता और प्रभावोत्पादकता बढ़ जाती है।

डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य में अर्थात् कहानियों में उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए वातावरण की सृष्टि की गई है। इनकी चारों कहानी संग्रहों एवं बालकथा संग्रह की कहानियों में वातावरण की सृष्टि वास्तविक भावभूमि से की गई है। सभी कहानियाँ युग सम्पृक्त हैं। देखिए –

'दिसम्बर की सुहानी सुबह, नागपट्टणम जिले के चंद्रपाडी गाँव में, जो कि समुद्र के किनारे बसा था, राजम्मा धुली–धुली रेत पर बैठी टोकरी बुन रही थी। बीच–बीच में वह पास लेटे किलकारी मारते शिशु की ओर ममत्व भरी दृष्टि डाल लेती। उसके कान पास ही खेल रहे अन्य तीन बच्चों की आवाज़ सुन रहे थे और मन समुद्र में मछली पकड़ने गए पति नागप्पा के आने की प्रतीक्षा कर रहा था। बस यही थी उसकी दुनिया, जिसके इर्द–गिर्द वह डोलती रहती और उसकी कुशलता की कामना करती रहती।''[9]

'सृजन की चाह' कहानी में वातावरण की सृष्टि, दक्षिण भारतीय क्षेत्र से की गई हैं। स्थान, परिवेश, परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए लेखिका ने नागपट्टणम जिले के चंद्रपाड़ी गाँव, जो समुद्र के किनारे बसा हुआ है की पृष्ठभूमि में वास्तविक एवं यथार्थ रूप से वातावरण की सृष्टि कर कहानी की विश्वसनीयता तथा उपयोगिता में वृद्धि की है। कहानी कुतूहल जाग्रत करती हैं। नागप्पा और राजम्मा के जीवन–चरित्र को वास्तविक भाव–भूमि पर चित्रित किया गया है।

'ओह! अपूर्व दृश्य था। सूर्य धरती से कई मीटर ऊपर तक उड़ रही रेत की झीनी चादर के पीछे छिप गया था। सच ही कहा था मेजर सुभाष ने कि सूर्यास्त का सौन्दर्य देखना है तो जैसलमेर के टिब्बों पर जाकर देखो। वापस मुड़ी तो निकट ही एक कम उम्र महिला को आकाश निहारते पाया। वे भी सूर्यास्त के सौन्दर्य से अभिभूत हो गई थीं।'[10]

'नेपथ्य का सच' कहानी संग्रह की कहानी 'मरुपुष्प' में जैसलमेर के टिब्बों पर सूर्यास्त के दृश्य द्वारा वातावरण की सृष्टि कर कहानी को विकास एवं गति प्रदान की गयी हैं। यथार्थता, विश्वसनीयता एवं उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए वातावरण की सृष्टि की गई है जो कुतूहल जाग्रत कर पाठक को बाँधे रखती है।

'तृष्णा तू न गई...' कहानी संग्रह की कहानी 'लेकिन यह सच है...' में वातावरण की सृष्टि और उपयोगिता आत्मकथा शैली में आकर्षक एवं वास्तविक भाव–भूमि की पृष्ठभूमि में की गई है।

'हम आजकल लीबिया में रहते हैं। मेरे पिता यहाँ एक कॉलेज में अर्थशास्त्र के प्रोफ़ेसर है। दस वर्ष पूर्व, तीन वर्ष के अनुबंध पर, वे इस दक्षिण अफ्रीकी देश में आए थे। तीन बार अनुबंध नया होने के कारण पिछले दस वर्षों से यहीं कार्यरत हैं। पिछले दस वर्षों में हम केवल दो बार भारत गए थे। पहली बार जब मैंने छठवीं. कक्षा पास की थी और दूसरी बार तब जब दादा जी की मृत्यु हुई थी उस समय मैं ग्यारहवीं कक्षा में पढ़ रही थी। पिछले तीन सालों से हम भारत नहीं जा सके थे। अब दो महीने बाद पिता के अनुबंध की समाप्ति पर हम अपने 'घर' भारत जा रहे थे। लीबिया सरकार व कॉलेज से संबंधित विश्वविद्यालय पिता को नए अनुबन्ध में, अधिक वेतन व सुविधाएँ देकर, बाँधना चाहते है परन्तु माँ अब विदेश में नहीं रहना चाहती। वे भारत जाने को उत्सुक थीं ताकि अपने बच्चों को अपने देश व परिवेश से परिचित करा सकें और फिर उनके शादी–विवाह कर सकें।'[11]

'लेकिन यह सच है ......' कहानी में वातावरण की सृष्टि लीबिया और भारत से कर लेखिका ने स्वदेश प्रेम की उपयोगिता सिद्ध की है। अपने देश व परिवेश के महत्त्व को स्थापित कर राष्ट्रीयता की भावना जाग्रत की है। कहानी का मुख्य तत्त्व कुतूहल यहाँ भी जाग्रत होता हैं, यही कहानी की सार्थकता है।

'जबलपुर में दो दिन रहकर दोनों पति–पत्नी वापस अहमदाबाद आ गए। दिल्ली जाने से पहले भागदौड़ कर अनमोल ने सभी प्रमाणपत्रों व पासपोर्ट सम्बन्धी कार्य पूर्ण किया फिर नियत समय पर साक्षात्कार के लिए दिल्ली पहुँचा। वहाँ जाकर उसे पता लगा कि उसकी डिग्री, अंकतालिकाओं व प्रमाणपत्रों के आधार पर कम्पनी उसका चुनाव कर चुकी है; यह साक्षात्कार तो मात्र औपचारिकता थी। साक्षात्कार के अन्त में कम्पनी के प्रतिनिधि ने उसे उसके मोटे वेतन की जानकारी दी जिसे सुन उसकी बाँछें खिल गईं।'[12]

कहानी की उपयोगिता इस बात पर निर्भर करती है कि कहानीकार ने कितनी वास्तविक एवं विश्वसनीय भाव–भूमि पर वातावरण की सृष्टि की हैं। लेखिका की कहानियाँ इस कसौटी पर खरी उतरती हैं।

'छाती में जमी बर्फ़' कहानी में जबलपुर व अहमदाबाद परिवेश से वातावरण की सृष्टि कर स्थिति, परिस्थिति का चित्रण कर कहानी को गति प्रदान की है।

लेखिका ने बाल कथा संग्रह घरौंदा' में भी वातावरण की सृष्टि और उपयोगिता का ध्यान रखकर कहानियों को वास्तविक भाव–भूमि प्रदान की है।

'हेमसिंह, डॉक्टर चौहान के बँगले का गार्ड था और बँगले के पीछे बने क्वाटर में अकेला रहता था। पत्नी व बेटी माँ के पास गाँव में रहते थे। पिछले माह उसकी माँ का देहान्त हो गया तो वह पत्नी व चौथी कक्षा में पढ़ रही बेटी की टी.सी. लेकर दोनों को शहर ले आया। मालकिन के कहने पर हेमसिंह ने बेटी शारदा को पास के सरकारी स्कूल में दाखिल करवा दिया।'[13]

'जीवन की दिशा' बाल कथा में शहरी परिवेश से कहानी की घटनाओं एवं चरित्रों की पृष्ठभूमि में वातावरण की सृष्टि की गई हैं। यथार्थता एवं प्रेरणास्पदता तथा उपयोगिता वातावरण की सृष्टि में कुतूहल जाग्रत कर कहानी को रोचकता प्रदान करते हैं।

लेखिका ने अपनी कहानियों में कहानी के तत्वों का विशेष ध्यान रखते हुए भावों के अनुरूप पात्रों की सृष्टि कर यथार्थ एवं वास्तविक परिवेश की स्थिति, परिस्थिति एवं घटनाओं का चित्रण कर वातावरण की सृष्टि को उपयोगी एवं महत्वपूर्ण बनाया हैं। इनकी कहानियों में कहानी का मुख्य तत्त्व 'कुतूहल' जाग्रत हुआ है, जो कहानी को सफल कहानी बनाता हैं।

इन्होंने कहानी ही नहीं कविताओं में भी वातावरण की सृष्टि और उपयोगिता का विशेष ध्यान रखा हैं। इनकी कविताओं में ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक वातावरण के साथ ही प्राकृतिक परिदृश्यों का मानवीकरण रूप में प्रस्तुतीकरण वातावरण की सृष्टि को वास्तविक एवं विश्वसनीय बनाता है।

'परतंत्र भारत में थी
उठ खड़ी हुई इक आँधी।
जब स्वदेश लौटा था
मोहनदास करमचंद गाँधी।'[14]

'अक्षरों की पहली भोर' कविता संग्रह की कविता 'महात्मा गाँधी' में भारत की राजनैतिक, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से वातावरण की सृष्टि कर देशभक्ति की भावना जाग्रत की गई हैं। यही देशभक्तिपूर्ण भाव कविता की उपयोगिता को सिद्ध करते हैं।

इसी प्रकार 'मौन के स्वर' संग्रह की कविताओं में भी वास्तविकता का आभास देने हेतु वातावरण की सृष्टि की गई हैं।

'नभ से हैं बरस रहे आतप और धूल
कर रहे स्नान देखो खेजड़ी, सिरिस, बबूल
रह गई न सीमा कोई धोरे और खेत में
झुलस रहे प्राणी सब भोभल सी रेत में।'[15]

'मरुधरा में ग्रीष्म' कविता में वातावरण की सृष्टि राजस्थान प्रांत से की गई है जो अपनी प्राकृतिक विशेषताओं के कारण 'मरुधरा' या 'मरुप्रदेश' के नाम से जाना जाता हैं। कविता में इस प्रदेश के ग्रीष्म ऋतु के प्राकृतिक परिदृश्य का चित्रण कर वातावरण की सृष्टि और उपयोगिता को महत्त्व प्रदान कर परिवेश की वास्तविक झाँकी प्रस्तुत की गई है।

'पल्लवित होने लगा हेमंती देह–तरु
असंख्य तारों सम न रहा सपनों का अंत
शक्ति नव दृष्टि नव कल्पना के पंख चढ़
जीवन में यौवन बन आया वसंत।'[16]

प्रस्तुत पंक्तियाँ 'मुक्ताकाश में' कविता संग्रह की कविता 'वसंत ही वसंत' में वातावरण की सृष्टि वसंत ऋतु से जीवन का सम्बन्ध जोड़ते हुए की गई हैं जो कविता की उपयोगिता को सिद्ध करती हैं।

'चूनर ओढ़ रात सजी
चाँद की बरात सजी
तारों के पग थिरके
द्वारों पर दीप जगे
मंदिरों में घंट बजे
आरती के बोल सजे
राही निज गृह पहुँचे
आनन पर पुष्प खिले
महकी रजनी गंधा
सजनी का मन बहका
नाच उठी रसवंती निशा
मुस्काई निकट आती उषा।'[17]

'शब्द की अनुगूँज' कविता संग्रह की कविता **'रसवंती निशा'** में प्राकृतिक वातावरण (रात्री परिवेश) का मानवीकरण कर वातावरण की सृष्टि की गई हैं। इसी प्रकार वसंत ऋतु के वर्णन में भी वातावरण की सृष्टि वास्तविक एवं आकर्षक बन पड़ी है।

'अवनी के बंद खुले, कानन में सुमन खिले
सुरभि के कपाट खुले, अधरों में छंद घुले
किरणों के रथ चढ़ के आया वसंत।'[18]

इस प्रकार लेखिका द्वारा कहानियों, कविताओं में वास्तविक एवं विश्वसनीय वातावरण की सृष्टि कर इनकी उपयोगिता को महत्व प्रदान किया है।

'रिमझिम के लयबद्ध स्वरों से
हो जाता है मन हरष–हरष
उग जाता हैं तब अति सुन्दर
भू–गगन मिलाता इन्द्रधनुष।'[19]

'टिम टिम तारे' बालगीत संग्रह की कविता 'इन्द्रधनुष' में वर्षा ऋतु से वातावरण की सृष्टि कर कविता की उपयोगिता बालकों को वर्षा ऋतु की जानकारी के रूप में महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुई हैं।

इसी प्रकार बालोपयोगी यात्रा वृतांत 'द्वार से धाम तक' एवं 'मेरी यूरोप यात्रा' में भी वास्तविक पृष्ठभूमि पर वातावरण की सृष्टि और उपयोगिता आकर्षक एवं रोचक रूप से पाठक को भावविभोर करती है।

'गंगोत्री मंदिर के द्वार तक सड़क मार्ग है जिस पर सुबह साढ़े पाँच–छह बजे से रात आठ–साढ़े आठ तक निरंतर बसें, ट्रक, निजी कारें और यात्रियों की टैक्सियाँ गतिमान रहती हैं। हमने देखा कि गंगोत्री के मार्ग में सड़क के किनारे व पर्वतीय ढलानों पर देवदार के घने वन हैं जबकि यमुनोत्री के मार्ग में चीड़ के पेड़ों की बहुतायत थी। कदम–कदम पर पहाड़ों से गिरते दूधिया झरने व जलधाराएँ, बंदरों व रंगीन पक्षियों से भरे देवदार के वन मन को लुभा रहे थे तो पहाड़ों की परतदार चट्टानों के बीच से लटके पत्थर अभी गिरे–अभी गिरे से लग, मन में भय उत्पन्न कर रहे थे।'[20]

'द्वार से धाम तक' यात्रावृतांत की पंक्तियों में वातावरण की सृष्टि तीर्थ स्थल गंगोत्री से की गई है।

6.3 उद्देश्यपरकता और भटकाव –

साहित्यकार की प्रत्येक साहित्य सर्जना के पीछे कोई न कोई उद्देश्य अवश्य होता हैं। साहित्य केवल मनोरंजन के लिए ही नहीं होता बल्कि उसका उद्देश्य वास्तविक जीवन की झाँकी प्रस्तुत करना होता हैं। साहित्यकार भाषा के माध्यम से अपने भावों–विचारों को पाठक को अनुभव कराता हैं। उद्देश्य चाहे स्पष्ट न हों परन्तु व्याप्त अवश्य रहता हैं।कई बार उद्देश्य स्पष्ट न होने की स्थिति में पाठक को भटकाव तथा रचना में अरुचि होने

लगती है। अगर भाषा–कौशल का ध्यान रखते हुए साहित्य सर्जना की जाए तो उद्देश्य के प्रति कुतूहल जाग्रत होगा और पाठक संतुष्टि प्राप्त कर सकेगा। यही साहित्य की सार्थकता और सफलता हैं।

डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य का उद्देश्य मुख्य रूप से समाज सुधार रहा हैं। इन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से सामाजिक संवेदनाओं के प्रति मार्मिक अभिव्यक्ति प्रदान कर समाज के यथार्थ को अनावृत्त किया हैं।

लेखिका ने अपने उद्देश्य में सफलता पाने के लिए अपनी बात सबके सामने रखकर सबको उस पर चिन्तन करने पर विवश कर दिया हैं। इनकी कविताओं और कहानियों का उद्देश्य समाज सुधार के साथ ही वैयक्तिक कल्याण भी हैं। इनकी कहानियाँ मार्मिक एवं संवेदनाओं को जाग्रत करती हुई समाज में सामंजस्य बैठाती हैं और नैतिकता का पाठ भी पढ़ाती हैं।

‘सुशांत को एकाएक सामने देख शुचिता की आत्मा काँप उठी, पर अपने भय पर शोक व उलाहने का परदा डाल वह जहाँ खड़ी थी वहीं धरती पर बैठकर रोने लगी। शशांक पिता को माँ के कमरे में छोड़ बाहर चला आया।’[21]

लेखिका ने ‘बीति ताहि बिसार दे’ कहानी में हमारे भारतीय सामाजिक–सांस्कृतिक मूल्यों को जीवन्तता प्रदान करने के उद्देश्य से स्त्री–पुरुष के सम्बन्धों द्वारा प्रेम व विश्वास को महत्ता प्रदान की। पुरुष परस्त्रीगामी होने पर क्या उसे सही मार्ग पर लाने का तरीका स्त्री का परपुरुषगामी हो जाना है ? लेखिका ने समाज में स्त्री की इस मानसिकता पर प्रश्नचिह्न लगाकर सामाजिक–सांस्कृतिक चेतना जाग्रत की है।

‘अब परिंदा के साथी बदल गए। धीरे–धीरे उसने अपने पुराने घोंसले में आना कम कर दिया। उसकी गणना अब श्रेष्ठ कलाबाज़ों में होने लगी थी। उसे अब घोंसले में बैठे चुकती शक्ति से संघर्ष करते जन्मदाता चिड़ी–चिड़े पर बड़ा क्रोध आता, उनकी पीली पड़ती मिचमिची आँखें देख झुँझलाहट होती। उन्हें देखकर उसे शर्म आती। कई बार तो कलंगीवाले पुरस्कृत कलाबाज़ों से उनका परिचय कराने में वह शर्म से भर उठता। उसे, बुढ़ापे के कारण फटे स्वर में, भले ही प्रसन्नता स्वरूप की गई चिड़े–चिड़ी की चीं–चीं सुनना, अच्छा न लगता। वे उसे पिछड़े हुए और गए वक्त की चीज़ मालूम पड़ते। वह अब मूर्ख और कमअक्ल लगते जन्मदाताओं से दूर ही रहने का प्रयास करता।’[22]

‘नेपथ्य का सच’ कहानी संग्रह की कहानी ‘परिंदा’ वर्तमान सच को उजागर करने के उद्देश्य से लिखी गई हैं। आज की युवा पीढ़ी का व्यवहार भी माता–पिता के प्रति कुछ

चिड़े–चिड़ी जैसा ही है कुछ अपवाद को छोड़कर इस सच से परिचित चिड़ा–चिड़ी अपने जर्जर पंख और घटती शक्ति के साथ आज के सच में जी रहे हैं।

'घर आकर नंदन माता–पिता से झगड़ पड़ा, ''मेरी परीक्षा निकट आ रही है और आप लोग इस तमाशे में लगे हैं; मैं कह चुका हूँ कि पी.जी.करने से पहले मैं विवाह नहीं करूँगा फिर भी आप लोग समझते ही नहीं और हाँ, मैं बता दूँ कि मैं किसी डॉक्टर लड़की से ही विवाह करूँगा।'[23]

बहुत ही महत्वपूर्ण उद्देश्य को लेकर 'आधी छोड़ सारी को....' कहानी की रचना लेखिका ने की हैं। वर्तमान समय में लड़का–लड़की बिना सोचे–समझे विवाह बंधन में बँधना नहीं चाहते वो अपना भला–बुरा खुद समझते हैं। माता–पिता द्वारा पुरानी सोच, कि अपने समाज में ही विवाह करना, को वह नकारते है। जिसका दुष्परिणाम कृष्णमोहन व मृणालिनी के माध्यम से स्पष्ट हो जाता हैं। अपने पुराने, दकियानूसी विचारों के कारण उन्हें अपने लायक बेटों को खोना पड़ता हैं। कहानी मार्मिक एवं सामाजिक संवेदना जाग्रत करने वाली हैं। लेखिका का उद्देश्य पुरानी सोच को नकार नई सोच और वर्तमान समय की माँग को समाज के सामने रखना है।

'खूब सोच समझ कर, उत्तर पुस्तिका के पन्ने दस बार पलट कर नीता ने, पाँच अंकों के एक प्रश्न जिस पर तीन अंक दिए थे, आधा अंक बढ़ा दिया और जन्मेजय को बारहवीं में पढ़ने का अवसर मिल गया।'[24]

'मोड के बाद' कहानी का उद्देश्य इतना ही है कि अगर कोई बच्चा स्कूल में शरारती है तो उसे सुधारने का एक तरीका यह भी हो सकता हैं कि उसे अगली क्लास में पहुँचने का मौका दे और उसे अहसास करवाये कि वह पास नहीं हुआ पास, किया गया है। इसी का परिणाम है कि जन्मेजय आज सेना में मेजर बन गया हैं। समाज को प्रेरणा स्वरूप कहानी सर्जना हुई है।

'नन्हा विराट माँ के साथ फूलों से भरे उस बगीचे में पहुँच कर खुशी से झूम उठा। इससे पहले उसने अलग–अलग क्यारियों में लगे इतने सारे रंग–बिरंगे फूल एक साथ नहीं देखे थे। कहीं लाल तो कहीं पीले कहीं सफेद तो कहीं हल्के नीले, अलग–अलग क्यारियों में अलग–अलग रंगों वाले फूल मानों उसे अपने पास बुला रहे थे। वह दौड़ कर एक गुलाबी फूल के पास पहुँचा और उसे तोड़ने के लिए हाथ बढ़ाया तभी माँ बोल पड़ी, ''नहीं बेटे! उसे मत तोड़ों, वह प्यारा खुशबूदार फूल गुलाब का है।'' [25]

'सबसे प्यारा फूल' कहानी का उद्देश्य पर्यावरण जागरूकता के साथ ही अच्छी

आदतों की सीख देना है अर्थात् जीवन में अच्छी आदतें और अच्छा व्यवहार अपनायेंगे तो उसकी खुशबू भी खूब फैलेगी तथा जीवन मधुबन बन जायेगा।

कहानी ही नहीं कविता भी कोई न कोई उद्देश्य को लेकर चलती हैं। लेखिका के प्रथम कविता संग्रह 'अक्षरों की पहली भोर' का मूल उद्देश्य समाज में मानवीय रिश्तों, अवसादों, त्रासदियों, विकृतियों तथा वर्तमान समाज में आ रहे सामाजिक, सांस्कृतिक बदलाव को कविताओं के माध्यम से प्रस्तुत कर समाज सुधार का मार्ग प्रशस्त करना है।

हरीश भादाणी के लेखिका के कविता संग्रह के विषय में विचार हैं कि–''इन्होंने अपने समय के यथार्थ को पकड़ने का प्रयास किया है। सम्भव है कुछ पाठकों को भाषा में उतना पैनापन न लगे जितना यथार्थ का तीख़ापन उन सहित हम सबको खुमता रहता है। आज के यथार्थ को निरा नंगा करने का एक अर्थ, व्यवस्था की रूढ़ि पर प्रश्नात्मक हमला करना भी होता है। आज के रचनाकर्मी को यह सब देखकर उकेरना भर नहीं है वरन् अपने परिवेश के रंगों–बदरंगों से उसे भरना भी है ताकि व्यवस्था अपना चेहरा भी देख सके।'' लेखिका का उद्देश्य वर्तमान समाज की व्यवस्थाओं के प्रति मानवीय संवेदना जाग्रत कर समाज सुधार करना हैं।

'तूलिका के रंग फीके
चितेरे का ह्रदय चीखे
जीवन की तिक्तता ने
घुल किए सब रंग तीखे
पोर–पोर, रोम–रोम रच गई है तिक्तता।
कहाँ से लाएँ मधुरता ?'[26]

'कहाँ से लाएँ मधुरता' कविता का उद्देश्य समाज में सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति संवेदना जाग्रत कर समाज में प्रेम, विश्वास, एकता, अखण्डता के हो रहे ह्रास के प्रति ध्यानाकर्षित कर समाज सुधार करना है।

'कविता केवल शब्द जाल नहीं है
कविता कोरी कल्पना भी नहीं है
वह संगिनी है मानव की
साथी है मार्मिक पीड़ा की
स्वर देती है वेदना को
झिंझोड़ देती है चेतना को
कविता ऽऽ अर्ध नहीं पूर्ण सत्य है।'[27]

'मौन के स्वर' कविता संग्रह की कविता 'कविता' का मूल उद्देश्य कविता का महत्व बताते हुए कविता अर्थात् काव्य के प्रति समाज की रुचि जाग्रत करना हैं।

वाक़ई कविता मात्र शब्द जाल नहीं, न ही कोरी कल्पना है, वह मानव–जीवन के सुख–दुःख की संगिनी है।

'झड जाती है
जब आस की
आखिरी पत्ती भी
तब भी कुछ न कुछ
बाकी रह जाता है
ठूँठ में.....
जिसकी गंध वह
महसूसता रहता है
उन्मूलित होने तक।'[28]

'ठूँठ' कविता का उद्देश्य मूल से जुड़े रहने की प्रेरणा प्रदान करता हैं।

'बनाए रखो
आँखों में जल
और अंतर को तरल
वर्ना पसर जाएगा
मन तक मरुस्थल।'[29]

'शब्द की अनुगूँज' कविता संग्रह की कविता 'बनाए रखों' का मूल उद्देश्य जीवन में आत्म सम्मान एवं मधुर व्यवहार बनाए रखने की प्रेरणा प्रदान करना हैं।

बालगीत संग्रह 'टिम टिम तारे' की रचना बालकों के ज्ञानार्जन एवं प्रेरणा प्रदान करने के उद्देश्य से की गई है।

'जनवरी, मार्च, मई और जुलाई
इनमें दिन इकतीस हैं भाई
अगस्त, अक्टूबर और दिसम्बर
ये भी रुकते इकतीस दिन चलकर।'[30]

लेखिका ने बहुत सहज भाषा शैली में बालकों को वर्ष भर के महीनों की, दिनों की गणना का ज्ञान करवा दिया हैं। 'वर्ष हर्ष में' कविता का उद्देश्य किस महीने में कितने दिन होते है का ज्ञान कराना है।

इसी तरह इन्होंने बालोपयोगी यात्रावृतांत की रचना बालकों में अनुभव एवं जिज्ञासा जाग्रत करने के उद्देश्य तथा उन्हें अपने भौगोलिक परिवेश देश–विदेश एवं धार्मिक यात्राओं के महत्व एवं पर्यटन के प्रति रुचि जाग्रत करने के उद्देश्य से की हैं।

'द्वार से धाम तक' यात्रावृत्त में लेखिका बालकों को संबोधित करते हुए यात्रा वृतांत शुरू करती हैं –

''कुछ समय पूर्व मैं उत्तराखण्ड के इन्हीं प्रसिद्ध चार धामों की यात्रा पर गई थी। मैं अपनी उसी यात्रा का वर्णन तुम्हें सुनाती हूँ। इसे सुनकर पढ़कर और तुम जान सकोगे कि पहाड़ों पर बने इन तीर्थ स्थानों पर बने मंदिरों व उनके आस–पास असीमित सौंदर्य बिखरा पड़ा हैं। निश्चित ही तुम स्वयं इन स्थानों पर जाकर व देखकर प्रसन्नता पाना चाहोगे।''[31]

लेखिका के उक्त उद्बोधन में इस यात्रा–वृंतात का उद्देश्य निहित हैं।

बालोपयोगी यात्रा वृतांत 'मेरी यूरोप यात्रा' भी बालकों को यूरोप महाद्वीप की भौगोलिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, धार्मिक, आध्यात्मिक एवं आर्थिक स्थिति की जानकारी प्रदान करने तथा पर्यटन के प्रति रुचि जाग्रत करने के उद्देश्य से की गई। लेखिका की भाषा शैली इतनी पुष्ट एवं रचना कौशल इतना आकर्षक हैं कि इन यात्रा वृतांतों को पढ़ने मात्र से ही यात्रा का आनन्द प्राप्त हो जाता है। रेखाचित्रात्मक शैली ने इनके उद्देश्य को सार्थकता प्रदान की हैं। इनकी भाषा शैली में कहीं भी भटकाव नजर नहीं आता पाठक सरलता से इनके उद्देश्यों को हृदयांगम कर लेता है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि डॉ. उषा किरण सोनी का साहित्य उद्देश्य परक हैं इनके कहानी संग्रह की कहानियों में जहाँ यथार्थ जीवन को अभिव्यक्ति प्राप्त हुई है, वहीं कविता संग्रह की कविताओं में भी वर्तमान सच, सामाजिक–सांस्कृतिक, राजनैतिक तथा आध्यात्मिक जीवन–मूल्यों की प्रतिष्ठा हुई है। इनका अनुभव फ़लक जितना विस्तृत है, अभिव्यक्ति कौशल भी उतना ही समृद्ध है।

इनकी लेखनी का जादू और भाषा का कौशल बहुत ही उत्कृष्ट है, जो इनके अनुभव तथा भावों–विचारों को सहजता से पाठक को आत्मसात कराने में सक्षम है। साहित्य की भाषा सहज, सरल और आकर्षक है, भाषा में कहीं भी भटकाव या उबाऊपन नहीं हैं। परन्तु कहीं–कहीं लेखिका की कविताओं में साधारण से साधारण सी बात पर प्रबोधन देना, पाठक को लगता है कि कुछ फैसले उस पर भी तो छोड़े जा सकते हैं। जैसे–शिक्षकों के कार्यों को गिनाना, सत्य–असत्य का भेद बताना, आत्म उत्थान का राग आदि। इन एक–दो कविताओं के अलावा तो सारा साहित्य ही जीवन में घुला–मिला सा, जीवन को प्रेरणा प्रदान करने वाला हैं। सम्पूर्ण साहित्य उद्देश्यपरक है।

लेखिका ने वासना के नाम पर होने वाले भटकाव को भी सांस्कृतिक रूप में प्रकट करने का प्रयास किया हैं।

6.4 संवादों का स्वरूप –

संवाद घटनाओं के विकास के साथ ही पात्रों के चरित्र का प्रकाशन भी करते हैं अर्थात् संवाद घटना के विकास और चरित्र के प्रकाशन के उपयोगी और स्वाभाविक साधन हैं। संवादों में स्वाभाविकता एवं संक्षिप्तीकरण का गुण होना चाहिए तभी यह कुतूहल को सजग रख पाने में सफल हो सकेंगे। स्वाभाविकता और संक्षिप्तिकरण का गुण डॉ. उषा किरण सोनी के संवादों में बखूबी देखा जा सकता है। इनके चारों कहानी संग्रहों–'काम्या', 'नेपथ्य का सच', 'तृष्णा तू न गई....', 'नए सूरज की तलाश' की कहानियों में संवादों का स्वरूप स्वाभाविक एवं आकर्षक है, जो चरित्र प्रकाशन में तथा कथानक को गति प्रदान करने में सहायक है।

''हमारा दूधवाला दूध दे गया और नहीं चाहिए।'',

''ले लीजिए न मेमसाब हमारे साब और मेमसाब दो दिनों के लिए बाहर गए हैं।'' लड़की के स्वर में हल्की सी गिड़गिड़ाहट थी।

''तो क्या हुआ, घर ले जाओ तुम लोग पी लेना।''

''नहीं! मेमसाब घर ले जाऊँगी तो मेरा बाप मारेगा।''

लड़की रिरिया कर बोली। उसके स्वर में भय स्पष्ट झलक रहा था।

''क्यों ? मारेगा क्यों ? तुम्हारी माँ मना नहीं करती ?''

''माँ क्या करेगी मेमसाब ? वो मना करेगी तो मेरा बाप उसे भी मारेगा।'' लड़की के स्वर में समझाने का भाव था।'[32]

प्रस्तुत पंक्तियाँ 'काम्या' कहानी संग्रह की कहानी 'कठबपवा' की है। संवादों का स्वरूप स्वाभाविक एवं संक्षिप्त हैं। कथानक का विकास एवं चरित्र का प्रकाशन स्वाभाविक हैं।

'अकेले क्या बातें कर रही थी ? तुम्हारी प्रगाढ़ मित्रता है उससे ?'

'ऐसे शब्दों का प्रयोग न करो। तुम्हारों शब्दों में संदेह ही गंध आ रही हैं। यह उचित नहीं।' वह संयत किन्तु कठोर स्वर में बोली।

'हाँ! मैं तुम पर संदेह करता हूँ', उसने सुना। लगा जैसे झनझना कर कहीं कुछ टूट गया हो। आज दूसरी बार उसकी मौत हुई थी।'[33]

प्रस्तुत पंक्तियाँ, 'अनोखा सूर्यास्त' कहानी की है। संवादों का स्वरूप स्वाभाविक एवं संक्षिप्त हैं।

इसी प्रकार 'तृष्णा तू न गई ...' कहानी संग्रह की कहानियों के संवादों में भी यही विशेषता देखी जा सकती है। 'असर' कहानी के संवाद देखिए –

''मनीष तुम क्या करते हो ?'' उम्र में शीना से काफी बड़े लग रहे लड़के की ओर इति उन्मुख हुई।

''जी मैं पी.एम.टी. की तैयारी कर रहा हूँ'' मनीष ने सधे हुए सावधान स्वर में कहा।

''अच्छा शीना! मैं चलता हूँ'', कह वह चल पड़ा।

''तुम स्कूल से बिना मुझे सूचना दिए घर क्यों आ गई ? अच्छा बहाना है – मन नहीं लगा; तुम वहाँ मन लगाने जाती हो या पढ़ने जाती हो ?'' इति बरस पड़ी।

''सॉरी'' शीना ने मग़रूर स्वर में कहा और अपने कमरे में चली गई।'[34]

'नए सूरज की तलाश' कहानी संग्रह की कहानियों में संवादों का स्वरूप स्वाभाविक एवं आकर्षक है कथानक के विकास और चरित्रोत्घाटन में सहायक हैं। 'रति–विरति' कहानी के संवाद स्वाभाविकता से ओत–प्रोत मार्मिक एवं रोचक हैं।

'आप यहाँ कब से हैं ? क्या बीमार थी ? कुछ उदास सी लग रहीं हैं।' रमाकान्त जी ने पूछा।

''बस ज़िंदगी की सज़ा भोग रही हूँ भाई रमाकांत, यहाँ दस वर्षों से हूँ, अब तो जीने की इच्छा ही समाप्त हो रही है; जी नहीं रही हूँ, समय को कन्धों पर लादकर घसीट रही हूँ।''[35]

बाल कथा संग्रह ''घरौंदा'' की कहानियों के संवादों का स्वरूप भी आकर्षक एवं कथा विकास और चरित्रोत्घाटन में सहायक है। बालमन की जिज्ञासाओं की स्वाभाविक अभिव्यक्ति इनमें देखी जा सकती हैं।

''भई वाह! तुम्हारी गुडिया तो बहुत प्यारी है। मैं तुम्हारे लिए एक छोटा सा घरौंदा बना दूँगी, उसमें इस गुड़िया को बिठाना।'' दादी ने समझाया।

'घरौंदा ? वह क्या होता है दादी जी ?'' अनन्या ने विस्फारित नेत्रों से देखते हुए प्रश्न किया। उसने यह नाम जीवन में पहली बार सुना था।

''घरौंदा यानी छोटा सा घर जो गुडिया और अन्य खिलौने वाले पशु–पक्षियों के रहने तथा उनके सामानों का घर होता है।'' दादी ने बताया।'[36]

लेखिका के कहानी संग्रहों की कहानियों के अलावा काव्य अर्थात् कविता संग्रह की कविताओं में भी कहीं–कहीं संवाद शैली का प्रयोग हुआ हैं। कुछ कविताओं में संवादात्मक स्वरूप आकर्षक बन पड़ा हैं।

'शब्द की अनुगूँज' कविता संग्रह की कविता 'उत्तर' में संवादात्मक स्वरूप बहुत ही आकर्षक है। देखिए –

'स्वयं को
विस्फारित
नेत्रों से देख रहे
नवल पादप का
प्रश्न सुन
निकट खड़ा
जर्जर ठूँठ
सस्मित बोला
स्तब्ध न हो वत्स
तुम मेरा अतीत हो
और मैं तुम्हारा भविष्य
यही सत्य है।'[37]

बालगीत संग्रह 'टिम टिम तारे' की बाल कविता 'वह कौन' में संवादात्मक स्वरूप आकर्षक बन गया हैं। प्रश्नात्मक शैली में संवादों का प्रयोग अनूठा है।

'बोलो न माँ–
सबके मन में रहता कौन ?
मन में प्यार जगाता कौन ?
दुःखी उदास मन में मेरे ?
आशा का भाव जगाता कौन ?
माँ बोली –
वह ही सबका निर्माता है।
हम सबका भाग्य विधाता है।
है वही सभी का पिता और
वह ही हम सबकी माता है।'[38]

निबन्ध संग्रह 'अक्षर से 'अक्षर' तक' में 'दिव्यात्मा 'ठाकुर' रामकृष्ण परमहंस' में एक –दो स्थान पर संक्षिप्त संवाद हैं।

'अरे तू कब तक बंकिम रहेगा ? इन दुर्गेशनंदिनी, कपालकुण्डला, मृणालिनी के मायाजाल से निकल कर कभी माँ को भी प्रणाम करेगा ?

यह सुनते ही बंकिम बाबू के मुँह से निकला 'वंदे मातरम्'।'[39]

लेखिका के साहित्य में संवादों का स्वरूप बहुत ही आकर्षक और रोचक हैं। भाषा में प्रयुक्त शब्दावली सरल, सहज एवं भावानुकूल हैं। संवाद कथानक को गति प्रदान करने के साथ ही पात्रों के चरित्रोत्घाटन में पूर्ण समर्थ हैं तथा वातावरण की सृष्टि एवं उद्देश्यों को स्पष्ट करने में सहायक हैं।

6.5 प्रतीक और बिम्ब –

प्रतीक का शाब्दिक अर्थ–संकेत, अवयव या चिह्न होता है। प्रतीक से तात्पर्य–उस शब्द से है, जिसके द्वारा अदृश्य या अगोचर वस्तु को संकेतित किया जाता है। प्रतीकों के माध्यम से साहित्यकार अदृश्य, अगोचर और अमूर्त वस्तुओं को दृश्यमान स्वरूप प्रदान कर उसे स्पष्ट कर देता हैं।

डॉ. भगीरथ मिश्र अपने ग्रन्थ 'काव्यशास्त्र' में प्रतीक को परिभाषित करते हुए लिखते है – ''अपने रूप, गुण, कार्य या विशेषताओं के सादृश्य एवं प्रत्यक्षता के कारण जब कोई वस्तु या कार्य किसी अप्रस्तुत वस्तु, भाव, विचार, क्रिया–कलाप, देश, जाति, संस्कृति आदि का प्रतिनिधित्व करता हुआ प्रकट किया जाता है, तब वह प्रतीक कहलाता है।यह प्रतीक–पद्धति सामान्य जीवन और व्यापक व्यवहार–क्षेत्र में भी प्रयुक्त होती है। राष्ट्रीय या धार्मिक झण्डा, सिक्का, लिपि, वृक्ष, फल, व्यक्ति आदि प्रतीक अर्थ में प्रयुक्त होते है।'[40]

हिन्दी साहित्य कोश के अनुसार– ''प्रतीक शब्द का प्रयोग उस दृश्य अथवा गोचर वस्तु के लिए किया जाता है, जो किसी अदृश्य विषय या प्रतिविधान, उसके साथ अपने साहचर्य के कारण करती है अथवा कहा जा सकता हैं कि किसी अन्य स्तर की समान वस्तु द्वारा किसी अन्य स्तर के विषय का प्रतिनिधित्व करने वाली वस्तु प्रतीक है।''

इस प्रकार इन परिभाषाओं से स्पष्ट हो जाता है कि प्रतीक किसी अदृश्य या अप्रस्तुत के लिए प्रस्तुत किये गये प्रत्यक्ष या दृश्य संकेत हैं।

प्रतीक योजना अथवा प्रतीकों के प्रकार का विस्तार कई रूपों में देखा जा सकता हैं। जैसे – प्राकृतिक प्रतीक, सांस्कृतिक प्रतीक, ऐतिहासिक प्रतीक, जीवन–व्यापार सम्बन्धी प्रतीक, शास्त्रीय या वैज्ञानिक प्रतीक आदि। प्रतीक का सम्बन्ध मनुष्य की चिंतन प्रणाली से हैं अर्थात् प्रतीक हमारी भाव सत्ता को प्रकट करने का माध्यम है।

प्रतीक भाव व्यंजना की विशिष्ट प्रणाली है। इससे सूक्ष्म अर्थ व्यंजित होता है। साहित्यकार अपनी रहस्यवादी भावनाओं को प्रतीकों के माध्यम से ही संकेतित करता है।

डॉ. उषा किरण सोनी ने भी अपने साहित्य में मानवीय संवेदनाओं को जाग्रत करने

तथा समाज की बुराइयों के प्रति चेतना लाने के उद्देश्य से सांकेतिक भाव व्यंजना अर्थात प्रतीक योजना का सुन्दर संयोजन अपने साहित्य में किया है।

'पीछा करता है,
मृगतृष्णा सा अतीत (रामराज्य का)
दूर सामने जलते रजकण,
उत्तप्त शुआएँ
भरमातीं ज्यों लहराता जल।
कब बरसोगे ?
मेरे मरु पर ओ बादल!'[41]

प्रस्तुत पंक्तियाँ 'अक्षरों की पहली भोर' कविता संग्रह 'मानवता का क्रंदन' से हैं। अत्याचार से कुचली हुई व्यथित मानवता द्वारा शांति के बादल का आह्वान किया गया है। यहाँ बादल शब्द का शांति के प्रतीक के रूप में प्रयोग हुआ है।

'दोपहर की धूप में
अनगिन घावों से भरी देह तिलमिलाती है
प्यार भरे बोलों की औषधि का लेप दो।
सालते दर्द पर अँजुरी भर नेह दो।'[42]

'दोपहर की धूप' जीवन की भयावह विषमता का प्रतीक है। जीवन के दुःख, निराशा, हताशा, उदासी के प्रति समष्टि चेतना का स्वर मुखरित कर 'अँजुरी भर नेह' अर्थात जीवन में प्रेम, स्नेह, विश्वास की अभिलाषा व्यक्त की गई है।

'धुंध का कंबल ओढ़
फटी चादर में लिपटा फुटपाथ
कैसे बिताता है सर्द रात ?
नहीं जानती मखमली रजाई।'[43]

'लेखा' कविता की पंक्तियों में सर्वहारा वर्ग एवं सामंती वर्ग का चित्रण 'फटी चादर में लिपटा फुटपाथ' एवं 'मखमली रजाई' प्रतीकों के माध्यम से किया गया हैं। लेखिका ने प्रतीकों द्वारा सर्वहारा, ग़रीब, लाचार, शोषक वर्ग के प्रति मार्मिक संवेदना व्यक्त की हैं। वर्ग भेद को बहुत ही सहज रूप से संकेतित भाषा में स्पष्ट किया हैं।

'लगा लें हम
कितना ही राम का मुखौटा
पर अवसर पाते ही

निकल आता है भीतर से

दबाकर सुलाया गया रावण।'[44]

प्रस्तुत पंक्तियों में 'रावण' मनुष्य की दुष्ट प्रवृत्ति का प्रतीक हैं। 'मुखौटा' कविता में दुष्ट प्रवृत्ति के मनुष्य का आचरण नही बदलता है और अन्त में उसे पश्चाताप होता है कि काश! अच्छा इंसान होने का ढ़ोंग न कर अच्छा इंसान बना होता तो, यह युद्ध मारकाट न होती।

'शब्द की अनुगूँज' कविता संग्रह की कविता 'बूँद की चाह' में भी 'बूँद' को मानव का प्रतीक मानते हुए मानवजीवन की व्यंजना की गई हैं।

'सतत प्रवाह से उछलकर

धार से निराधार होकर

एक बूँद सहसा फिसलकर

आ गिरी इस नश्वर भू पर।'[45]

लेखिका के कविता संग्रह की कविताओं में ही नहीं कहानी संग्रह की कहानियों में भी प्रतीक योजना का सुन्दर संयोजन देखा जा सकता हैं। 'काम्या' कहानी संग्रह की कहानी 'प्रश्न', 'अनुष्ठान', 'चाँदनी के फूल', 'कठबपवा' आदि कहानियों में प्रतीक–योजना आकर्षक शैली में प्रयुक्त हुई है।

'अपूर्वा एक क्षण तो उसे जाता देखती रही फिर शुचि के पास आ उसे व्यर्थ ही कलेजे से लगा प्यार करने लगी। उसके हाथ शुचि के बाल सँवार रहे थे और कानों में उस लड़की का केवल एक शब्द गूँज रहा था– 'कठबपवा', 'कठबपवा'।'[46]

सौतेले पिता का दंश झेलती बालिका की पीड़ा की मार्मिक अभिव्यक्ति 'कठबपवा' कहानी के माध्यम से मुखरित हुई है। 'कठबपवा' सौतेले पिता का प्रतीक है, जिसे स्वयं बालिका द्वारा अपूर्वा को अर्थ स्पष्ट कर उसके प्रति दुष्ट व्यवहार के बारे में बताकर भय का भाव ध्वनित किया है।

'स्कूल में पढ़े गए पाठों में उसे अब्राहम लिंकन, जो एक लकड़हारे से राष्ट्रपति बने, लाल बहादुर शास्त्री जो ग़रीब परिवार में जन्म लेकर भारत के प्रधानमंत्री बने, एक भिखारी के पुत्र होकर भी बालकवि बैरागी प्रसिद्ध कवि व सांसद बने, के पाठ उसे सदैव प्रेरणा देते। उसने किसी से कुछ न कहा पर मन ही मन संकल्प कर लिया कि वह कुछ बन कर संसार में तिरंगे की तरह फहराएगी।'[47]

'नेपथ्य का सच' कहानी संग्रह की कहानी 'तिरंगे से वादा' की प्रतीक योजना प्रेरणास्पद है। तिरंगा; राष्ट्रीय गौरव, राष्ट्रीय सम्मान का प्रतीक है। इस राष्ट्रीय गौरव व

सम्मान की आकांक्षा से शीला (काम वाली बाई की लड़की) ने ओलंपिक खेलों व अन्य राष्ट्रीय खेलों में सफलता प्राप्त कर राष्ट्र का गौरव बढ़ाया।

'तृष्णा तू न गई...' कहानी संग्रह की कहानी 'ये द्रोपदियाँ, 'काली छाया', में प्रतीक योजना शीर्षक को पढ़ते ही स्पष्ट हो जाती हैं।

'पुष्पा के जीवन में मानों हरसिंगार झर रहा था। उसकी माँग में मोती भरे थे। वह सालभर में ही रोहन की बेटी की माँ बन गई। एक वर्ष बाद रोहन व पुष्पा ने रोहन की बेटी का धूमधाम से विवाह कर दिया। देखते–देखते पुष्पा की बेटी चार वर्ष की हो गई और स्कूल जाने लगी। पुष्पा माँ व पत्नी बनकर अब जीवन में स्थिरता, तृप्ति और शांति का अनुभव करने लगी थी कि दुर्भाग्य की काली छाया उसे ढूँढते हुए आ पहुँची।'[48]

'हरसिंगार' जहाँ खुशी, सुख का प्रतीक है वहीं 'काली छाया' मुसीबत, संकट का प्रतीक हैं। लेखिका ने इन प्रतीकों के माध्यम से पुष्पा के जीवन के दुःख एवं सुख को संकेतित कर संवेदना जाग्रत की है।

'प्रतिदिन के इस क्रम में धीरे–धीरे मुस्कराहट भी जुड़ गई। रति बस में चढ़ते समय ड्राइवर की मुस्कान का उत्तर मुस्कान से देती और दोनों के दिल धड़क उठते। स्वर्ग से निकाले जाने के पूर्व निषिद्ध सेब खाते समय आदम व हव्वा ने केवल दिल की बात सुनी थी। उनका रंग–ढंग, शिक्षा व अन्य विशेषताएँ उनके आड़े न आई थी; वे मात्र आदम और हव्वा थे; ऐसा ही कुछ रति व बस ड्राइवर मनोज के साथ भी हुआ।'[49]

'रति–विरति' कहानी में आदम और हव्वा मन चली प्रवृत्ति के प्रतीक हैं, जो न देख पाते है और न ही सुन सकते हैं, बस मन की करते हैं। रति व बस ड्राइवर की प्रवृत्ति भी इनके जैसी ही है। आदम और हव्वा प्रतीक संयोजना इन दोनों के चरित्रोत्घाटन को संकेतित करती हैं।

निबन्ध संग्रह 'अक्षर से 'अक्षर' तक' के निबन्धों में प्रतीकों की फुलझड़ियाँ बिखरी पड़ी हैं। प्रथम निबन्ध 'अक्षर' और अक्षर' में वर्णमाला का अक्षर ब्रह्म का प्रतीक हैं वहीं 'युग पुरुष कबीर' में भी प्रतीक संयोजना का सुन्दर समन्वय हैं।

'डॉ० हरिवंशराय 'बच्चन' की काव्ययात्रा' निबन्ध में बच्चन जी की कविताओं में प्रतीकों की सुन्दर छटा दृश्यमान है। इसी का एक अंश प्रस्तुत हैं –

'यह न समझना पिया हलाहल
मैंने जब न मिली हाला
तब मैंने खप्पर अपनाया
ले सकता था जब प्याला।'[50]

'हलाहल', 'हाला', 'खप्पर', 'प्याला' जैसे प्रतीकों ने सामाजिक युग बोध और युग के सत्य को रूपायित किया हैं। यहाँ हलाहल देश की परतन्त्रता के प्रतीक रूप में प्रयुक्त होकर राष्ट्रीय संवेदना को संकेतित करता हैं।

'अलौकिक प्रेम की अनन्य साधिकाः महादेवी वर्मा' निबन्ध में प्रतीक संयोजना बहुत ही आकर्षक एवं अनूठे अंदाज़ में की गई हैं।

'कल्पना निज देख कर साकार होते
और उनमें प्राण का संचार होते
सो गया रख तूलिका दीपक चितेरा।'[51]

'दीपक' आत्मा का प्रतीक हैं। महादेवी वर्मा ने अपने रहस्यमयी भावों को प्रतीकों के माध्यम से दृश्यमान किया है। इस प्रकार लेखिका ने अपने साहित्य में प्रतीकों की सुन्दर संयोजना प्रस्तुत की हैं।

बिम्ब – बिंब शब्द अंग्रेजी के 'ईमेज' शब्द का हिन्दी रूपान्तरण हैं। जिसका अर्थ है– प्रतिकृति, अनुकृति, प्रतिछवि, प्रतिरूप, मूर्तरूप प्रदान करना।

साहित्य में बिम्ब उस शब्द–चित्र को कहते है, जिसे कलमकार अपनी कलम कूँची से पाठक या श्रोता के मानस पटल पर अंकित करता हैं। विभिन्न विद्वानों ने बिम्ब की परिभाषाएँ निम्न प्रकार से दी हैं–

डॉ. नगेन्द्र के अनुसार– ''काव्य–बिम्ब शब्दार्थ के माध्यम से कल्पना द्वारा निर्मित ऐसी मानस छवि है, जिसके मूल में भाव की प्रेरणा रहती हैं।''[52]

बिम्ब को परिभाषित करते हुए डॉ. केदारनाथ सिंह लिखते हैं –''बिम्ब वह शब्द–चित्र है जो कल्पना द्वारा केन्द्रीय अनुभवों के आधार पर निर्मित होता है।''[53]

सी.डी.लिवीस के अनुसार– ''बिम्ब शब्दों के माध्यम से निर्मित एक चित्र है, जो ऐन्द्रिय गुणों से संपृक्त होता है।''[54]

उपर्युक्त परिभाषाओं से यह स्पष्ट हो जाता है कि बिम्ब मानस–पटल पर एक चित्रात्मक अनुभूति हैं जो ऐन्द्रिय गुणों एवं भावों से अनुप्राणित है। साहित्य सृष्टा शब्दों के माध्यम से बिम्बांकन करता है, जो पाठक के चेतन मन में अचेतन स्तर पर सोई हुई संवेदनाओं को मूर्तिमान करता है। बिम्ब का सम्बन्ध ऐन्द्रिय जन्य होता है।

बिम्बों के प्रकार– 1. ऐन्द्रिय बिम्ब 2. मानस बिम्ब

ऐन्द्रिय बिम्ब के अन्तर्गत दृश्य बिम्ब, दृश्य व्यापार बिम्ब, सांस्कृतिक बिम्ब तथा अन्य संवैद्य बिंब जैसे – स्पर्श बिम्ब, घ्राण बिम्ब, श्रवण बिम्ब आते हैं। मानस बिम्ब वे बिम्ब

होते हैं जिनका प्रभाव ऐन्द्रिय बिम्ब की उपस्थिति रहते हुए भी ऐन्द्रियगत न होकर मन या चित्र पर अधिक रहता हैं।

डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य में तो बिम्बों की झिलमिल बहुत ही आकर्षक है। 'अक्षरों की पहली भोर' कविता संग्रह की कविताओं 'आया वसंत', 'फागुन', 'मधुमास मानो आ गया है', 'सावन की साँझ', 'अरे! यह कैसी होली है ?', 'झोपड़ियाँ' आदि में बिम्बों की सुन्दर छटा देखने को मिलती है।

'मेघ बरसाते सुमन बूँदों के भर–भर अंजली में
गीत गाता फिर रहा है पवन देखो हर गली में
तितलियाँ शृंगार करतीं देख दर्पण हर कली में
झूमते तरु बजाते ले झाँझ पल्लव करतली में
नील नभ मुख इन्द्रधनुषी हास देखो छा गया है।
छोड़ सबको घर मेरे मधुमास मानो आ गया है।'[55]

वर्षा ऋतु और प्रियतम के आने की खुशी को सुन्दर बिम्बों के माध्यम से अभिव्यक्ति प्रदान की गई है। प्रियतमा के हृदय के भाव बिम्बों से मूर्त हो उठे हैं।

कविता संग्रह 'मौन के स्वर' की कविताओं 'महानगर', 'बूढ़े लाचार चेहरे', 'सुप्रभात', 'बूँद की मंजिल', 'मल्हार', 'होली', 'तो जाना! वसंत आ गया', 'चाँदनी', 'ज्योत्स्ना की धार' आदि में दृश्य बिम्बों की सुन्दर छटा बिखरी पड़ी हैं।

'रात–ग्वालिन चली बाँटने चाँदनी का पात्र सिर धर
खिलखिलाता दौड़ता विधु–देख चिहुँकी खाई ठोकर।
ढुल गया वह पात्र बरसी ज्योत्स्ना की धार भू पर
हो गया शीतल धरा का तप्त मन वह अमिय पीकर।'[56]

चाँदनी रात का मानवीकरण कर बिम्ब सृजन किया गया हैं। 'मुक्ताकाश में' कविता संग्रह की कविताओं में भी लेखिका का बिम्ब संयोजन बहुत ही आकर्षक हैं। 'मुझको बचा ले', 'जीवन की सड़क', 'प्रकृति से युद्ध', 'परछाइयाँ', 'वसंत ही वसंत', 'मन हरा हो गया', 'काश!', 'टेर', 'कब बरसोगे बदरा ?' आदि में बिम्ब सौंदर्य की छटा देखने को मिलती हैं।

'चलती हुई
गाड़ी की
बन्द काँच की
खिड़की से निकल
छू आई है आँखें

पटरी के किनारे

गड्डों में खिली

कुमुदनी की

कोमल श्वेतिमा

मन हरा हो गया।' [57]

प्राकृतिक सौन्दर्य को मूर्त रूप प्रदान करने में लेखिका ने बिम्बों की सुन्दर संयोजना प्रस्तुत की हैं। प्राकृतिक सौन्दर्य मन को खुशी प्रदान करता है।

'शब्द की अनुगूँज' कविता संग्रह की कविताओं में भी सुन्दर बिम्ब–विधान देखने को मिलता है। 'किरण–किरण', 'महाशून्य', 'ओ नियति सुन्दरी!', 'खोज', 'स्तम्भ', 'सम्बन्ध', 'मेह और नेह', 'उत्तर', 'बिसर गया', 'हम भी होते', 'रेट', 'अनुपात', 'सब चलता है', 'चादर', 'असलियत नहीं', 'आता है सावन', 'सुनो! सावन है आया', 'रसवंती निशा', 'नाच उठा प्यार', 'ओ ऋतुराज!', 'वसंत', 'हो रहा मलंग हैं', आदि कविताओं में बिम्बों की झिलमिलाहट देखते ही बनती हैं।

'झूम–झूम तरुओं ने गिरा दिए पीत पात

बनवाए नव किसलयों के कोमल परिधान

अतिथि और मीत आ, बस गए डार–डार

गूँज उठे पल्लवों में विहगों के मधुर गान।'[58]

वसंत ऋतु के प्राकृतिक उपादानों का मानवीकरण कर सुन्दर बिम्ब विधान प्रस्तुत किया गया है। प्राकृतिक सुषमा का दृश्य बिम्ब बहुत ही आकर्षक है। वसंत ऋतु और फागुनी बयार का मानवीकरण बिम्ब द्वारा मूर्त हो उठा है।

इनके कहानी संग्रह की कहानियों में भी बिम्ब संयोजना आकर्षक रूप में प्रस्तुत हैं। 'काम्या' कहानी संग्रह की कहानी 'प्रश्न' में बिम्ब संयोजना देखते ही बनती है।

'अब मेरे मन पर भी लेफ्टिनेंट मदन शर्मा छाने लगे थे। जब वे अपने माता–पिता के साथ मुझे देखने आए थे तो मैं खिड़की की झिरी से उन के पुरुषोचित सौंदर्य को देख अवाक् रह गई थी, दिल धड़क उठा और याद आ गई पत्र में लिखी राज की पंक्ति, 'क्या सचमुच कामदेव ही धरा पर उतर आए है या यह मेरा दृष्टि दोष है?'[59]

कहानी में दृश्य–बिम्ब की आकर्षक संयोजना दृष्टिगत होती है।

'नेपथ्य का सच' कहानी संग्रह की कहानी 'मरुपुष्प' में जैसलमेर के टिब्बों पर सूर्यास्त के सुन्दर बिम्ब बहुत ही आकर्षक हैं।

'मैं टिब्बे पर खड़ी अस्ताचलगामी सूर्य को देख रही थी। सूर्य धीरे–धीरे नीचे सरक रहा था। सूर्यास्त होने में अभी क़रीब दस मिनट बाकी थे, सूर्य अभी धरती से दो–तीन मीटर ऊपर ही था कि अचानक दिखना बन्द हो गया। आश्चर्य! कहाँ गया सूर्य ? क्या हवा में विलीन हो गया ?'[60]

'नए सूरज की तलाश' कहानी संग्रह की कहानी रति–विरति में दृश्य बिम्बों की सुन्दर छटा देखने को मिल जाती है।

'रति अवस्थी आपाद–मस्तक साक्षात् रति की प्रतिमूर्ति थी। उसकी बोलती सी बड़ी–बड़ी आँखे सदा दमकती रहतीं। बिना मेकअप के हल्के गुलाबी कपोलों पर कर्णचुम्बी आँखे चकित हिरनी की भाँति दौड़ती रहतीं, वे एक पल भी स्थिर न रहतीं। नाक की लौंग में जड़ा काँच का नग उसकी आभा से युक्त होकर हीरे की तरह दिप–दिप करता। रति की हँसी पीतल के कलश में हिलते जल के स्वर से मेल खाती और उसकी मोहक मुस्कान पर निछावर होने का जी चाहता।'[61]

लेखिका के निबन्ध संग्रह 'अक्षर से 'अक्षर' तक' में निबन्ध 'सूर काव्य में लालित्य', 'डॉ. हरिवंशराय 'बच्चन' की काव्य यात्रा', 'अलौकिक प्रेम की अनन्य साधिकाः महादेवी वर्मा', 'धरती धोरा री' के रचयिता की जीवनाधारित सृजन यात्रा' आदि में बड़ी कुशलता से दृश्य बिम्बों को उकेरा गया हैं।

बालकृष्ण के रूप सौन्दर्य को उकेरता दृश्य बिम्ब –

'चंचल चाल, मनोहर चितवन,
वह मुसुकानि, मंद धुनि गावत।'[62]

बाल कृष्ण की सुन्दर चाल, चितवन, मुस्कान व गुनगुनाने के दृश्य बिम्ब बहुत की आकर्षक है।

लेखिका के यात्रावृतांत में बिम्ब संयोजना पराकाष्ठा पर हैं। 'द्वार से धाम तक' में चारों धाम की यात्रा का वर्णन जिसमें प्राकृतिक दृश्यों को बिम्ब द्वारा मूर्त रूप प्रदान किया गया है, बहुत ही आकर्षक है।

देखिए –

'हेलीकॉप्टर से उतरने पर पवन हंस का कार्यकर्ता हमें पवित्र केदारनाथ जी के मन्दिर ले चला। चारों और बर्फ से ढ़ँकी चोटियाँ और उनसे गिरतीं जलधाराएँ हमें मंत्रमुग्ध कर रही थीं। ऐसा लग रहा था कि इन चोटियों पर भटकते–घूमते धुएँ के ढ़ेर से बादल मानों हमारे साथ आँख–मिचोली खेल रहे हों और घास में खिले फूल धरती के आँचल पर फुलकारी से लग रहे थे। एक ओर मंदाकिनी की तेज कल–कल करती धारा तो दूसरी

ओर सरस्वती के निर्मल जल की पतली धारा देख मन उस नियंता के औदार्य पर गदगद हो उठा। पतली जलधारा के बीच उगे पीले व घास में उगे नन्हें नीले तथा बैंगनी फूल इन नदियों के अंचल पर सितारों से टँके थे।'[63]

बालोपयोगी यात्रावृतांत 'मेरी यूरोप यात्रा' में भी बिम्ब–सृजन बहुत ही आकर्षक हैं।

'धरती करवट ले रही थी और आकाश अपने स्वामी की प्रतीक्षा में रंग बिखेरने की तैयारी में जुटा था। ऊपर अनंत आकाश नीचे बादलों का बिछौना और बीच में बाँहें फैलाए सतर चाल से उड़ते हनुमान जी सा विमान जिनके कंधों पर नहीं बल्कि कंधों में बैठे हम; अद्भुत अनुभूति थी।'[64]

'मेरी यूरोप यात्रा', 'यात्रावृतांत में विमान से यात्रा करते हुए, हुई अनुभूति के बिम्ब बहुत ही आकर्षक हैं। मानवीकरण, उपमा अलंकारों की छटा बिखराते दृश्य बिम्ब मन में आनन्दानुभूति जाग्रत कर अप्रस्तुत अर्थात् हनुमान जी, द्वारा राम–लक्ष्मण, को कंधों पर बिठाये उड़ते चले जाने की अनुभूति को मूर्तिमान कर रहे हैं।

लेखिका का शब्द कौशल बहुत ही अनूठा एवं आकर्षक हैं। इन्होंने अपने साहित्य में प्रतीकों और बिम्बों की सुन्दर संयोजना कर कथ्य को रोचक बनाया हैं। इनके शब्द–चित्र बहुत ही सुन्दर हैं जो भावों–विचारों को मूर्त रूप प्रदान करने में सक्षम हैं। प्रतीकों के माध्यम से जो शब्द संकेत इन्होंने प्रस्तुत किये हैं वह यथार्थ को समाज के सामने लाने में सहायक सिद्ध होते हैं। लेखिका का अनुभव व अनुभूति कौशल विस्तृत है। पाठक इनके साहित्य को पढ़कर आनन्दित हो आत्मविभोर हो जाता है।

6.6 शैलीगत विशेषताएँ –

शैली का सामान्य अर्थ है – ढ़ंग, तरीका, रीति, विचारों को प्रकट करने का अंदाज। शैली 'शब्द' अंग्रेजी के 'स्टाइल' शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है और अंग्रेजी के प्रभाव से ही हिन्दी में प्रयुक्त होने लगा हैं। प्राचीन साहित्य–शास्त्र में शैली का मिलता–जुलता अर्थ है–रीति।

किसी भी साहित्यकार की कृति में चाहे कविताएँ हो या कहानियाँ, चित्र हो या मूर्तियाँ या कुछ और जो अभिव्यक्ति की विशेषताएँ बार–बार मिलती है, उन्हीं का योग है – शैली। प्रत्येक व्यक्ति का व्यक्तित्व अन्य लोगों से भिन्न होता है, और उसकी अभिव्यंजना पद्धति भी उसके व्यक्तित्व के अनुरूप होती है।

कुछ विद्वानों ने शैली के विषय में अपने मत प्रकट कर शैली को परिभाषित किया हैं। प्रसिद्ध फ्रांसीसी विद्वान वफ़ों का कहना हैं – ''शैली स्वयं आदमी है।'' अर्थात प्रत्येक व्यक्ति अपनी शैली में स्वयं प्रतिबिम्बित होता हैं।

प्लेटो के अनुसार विचार को रूप दिया जाना ही शैली हैं तो गेटे का मानना है कि– ''शैली मस्तिष्क की सच्ची प्रतिलिपि हैं।''

डॉ. जानसन के अनुसार– ''हर व्यक्ति की अपनी शैली होती हैं।'' शेख के मतानुसार शैली का अर्थ– ''कलात्मक अभिव्यक्ति में व्यक्तित्व की विधा है।''

ब्राउन का कहना है कि लेखक की शैली उसकी उतनी ही अपनी होती हैं जितनी उसकी अँगुली की छाप।

ददाले का मानना है कि माध्यम, संघटक तथा संरचना में व्यक्त कलाकार का व्यक्तित्व ही शैली है।

उपर्युक्त परिभाषाओं से यह स्पष्ट हो जाता है कि शैली लेखक का व्यक्तित्व हैं अर्थात शैली लेखक के अनुभव एवं अनुभूति को अभिव्यक्ति प्रदान करने का ढंग या तरीका हैं। लेखक अपनी प्रकृति और रुचि के अनुरूप ही ध्वनि, शब्द, रूप, वाक्य आदि का चयन करता हैं तथा भाषा के सर्वस्वीकृत रूप द्वारा विचलन करता हैं। चयन और विचलन शैली के दो प्रमुख आधार हैं।

व्यापक अर्थ में शैली किसी भी कार्य को करने का विशिष्ट ढ़ंग हैं अर्थात भाषिक अभिव्यक्ति का विशिष्ट ढ़ंग ही शैली है जो साहित्यकार के व्यक्तित्व तथा विषय से सम्बद्ध होता है और जो चयन, विचलन, सुसंयोजन, समान्तरता एवं अप्रस्तुत विधान आदि सामान्य अभिव्यक्ति के लिए प्रयोग में लाया जाता है।

डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य की शैलीगत विशेषताओं का अध्ययन करने पर पाते है कि इनकी भाषा शैली भावानुकूल है। इन्होंने कथ्य के अनुरूप भाषा का प्रयोग साहित्य में किया है। जैसा कि हम पहले चर्चा कर चुके हैं कि प्रत्येक व्यक्ति का अंदाज़े बयां अलग होता है और यही अंदाज, ढ़ंग या तरीका शैली हैं। लेखिका शब्द शिल्पी हैं। इनके साहित्य में कल्पना और कलात्मकता के साथ शिल्प वैविध्य भी है।

इन्होंने भावानुरूप संस्कृत–निष्ठ, तत्सम शब्द, हिन्दी–उर्दू भाषा के शब्द तथा अंग्रेजी, पंजाबी, राजस्थानी भाषा के शब्दों का सुस्पष्ट एवं परिष्कृत परिमार्जित रूप में प्रयोग किया है। इनके शब्द भावों, विचारों को लिए दौड़ते से जान पड़ते हैं। लेखिका के कविता संग्रह– 'अक्षरों की पहली भोर', 'मौन के स्वर', 'मुक्ताकाश में', 'शब्द की अनुगूँज, की कविताओं में सपाट–बयानी, व्यजंना प्रधान शैली के साथ–साथ कल्पना की अपनी अजस्र सृजनशीलता बिम्ब फैंकती चलती है तथा अनुभव की गहराई से पाठक के हृदय में उतरती है।

सरल, सहज व प्रवाहपूर्ण भाषा में प्रतीकों, बिम्बों, अलंकारों, उद्धरणों का चित्रण

काव्य में भाव–लालित्य एवं भाव–सौन्दर्य जाग्रत करता हैं। इनकी कविताओं में छायावाद या छायावादी कवियों की झलक देखने को मिलती है।

'तिमिर मेघ को कर विदीर्ण
था दिनकर ने नव किया विहान।
सद्यः जात स्वतंत्र भारत के
शिशु–मुख छाई मधु–मुस्कान।'[65]

अलंकार शैली की सुन्दर छटा इन पंक्तियों में दृष्टिगत हो रही है।

मानवीय संवेदनाओं में आ रहे बदलाव को भी लेखिका ने बहुत ही सहज रूप से प्रतीकों के माध्यम से संकेतित किया हैं।

'पूर्णिमा या अमा, है हर रात काली
खुशहाली का सपना भी मानों है गाली
मनती है कैसे उनकी ईद और दिवाली ?
नही जान पाते ये कुबैर के भाई।'[66]

लेखिका ने सरल व सहज भाषा शैली में वैदेही, हेममृग व रावण जैसी अन्तर्कथाओं के उद्धरण द्वारा परिवेश को प्रासंगिक बनाते हुए सही दिशा में संधान करने की लालसा जाग्रत की हैं तो कुछ सत्त्वधर्मी, सूत्रात्मक, परिभाषा मूलक व उद्धरण बनने योग्य कविताओं में शब्दों की कसावट व अनुभव का निचोड़ गागर में सागर भरने जैसा हैं।

'कठिन है
स्वयं से हटना
कठिनतम है
परम् पर टिकना।'[67]

आध्यात्मिक तथा चिन्तनपरक कविताओं में दार्शनिक विचारों को अभिव्यक्ति प्रदान करने के लिए लेखिका द्वारा रूपकों, प्रतीकों का सहारा लेकर भावों का साधारणीकरण किया गया है। 'देह में विदेह', आवरण–अनावरण, भूली हर देशना, 'भिन्न–अभिन्न', 'प्रक्षालन', पाप–पुण्य आदि कविताओं में जैन दर्शन की शब्दावली प्रयुक्त हुई हैं।

कुल मिलाकर लेखिका की शैली जिंदगी के संगीत को सुर में लाने की कोशिश जैसी है, जिसमें विसंगतियों के लिए दर्द हैं, और टूटते दरकते रिश्तों की सिसकन भी है। क्या थे, क्या हो गये और क्या होंगे की आकांक्षा में भागते हाँफते शब्द है। इनके शब्द सजग है, संवेदना तरल तथा भाव सरल है जो जन–मन से सीधा संवाद सदृश हैं।

'शब्द!

जो कल बह रहे थे

अर्थ की धारा में

बंदी

हो गए हैं वे आज

मौन की कारा में।'[68]

उर्दू भाषा शब्दावली से अनुप्राणित रचनाओं में गज़ल शैली की झलक बहुत ही आकर्षक हैं। कविता 'असलियत नहीं' की पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं –

'दिखता तो है शक्ल से तू आदमी मगर

ए बश्र तेरी चाल में ज़रा भी इंसानियत नहीं

ये माना कि ज़िंदगी में हमें ग़म भी है नसीब

मगर ग़म ही जिन्दगी है यह तो असलियत नहीं।'[69]

लेखिका ने अपने रागात्मक भावों को प्रकृति के मानवीकरण द्वारा गीत शैली में अभिव्यक्ति प्रदान की है, यहाँ इनकी शैली पर छायावादी प्रभाव देखा जा सकता हैं।

सरसों के पीले खेत, भेज प्रीत के संदेस

मत्त हैं मनुज समेत जल–थल–नभचर विशेष

प्रीत भरे गीत लेके आया वसंत।'[70]

'सूर्योदय' कविता में संस्कृतनिष्ठ तत्सम बहुला शब्दावली का प्रयोग आकर्षक शैली में हुआ हैं।

'क्षितिज से उठ

प्रत्यूषा में

नूतन अवगाहन कर

रक्ताभ आदित्य

दान देने को,

सन्नद्ध हो आ खड़ा हुआ।'[71]

डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य में गद्य की विवरणात्मक, विवेचनात्मक एवं रेखा चित्रात्मक शैली सौन्दर्य बोध जगाती हैं, तो प्रश्न शैली और संवाद शैली मार्मिक संवेदना जाग्रत कर समाज में फैली कुरीतियों के प्रति ध्यानाकर्षित कर समाज सुधार का मार्ग प्रशस्त करती है। प्रश्न शैली में लिखी कहानी 'प्रश्न' समाज के सामने एक प्रश्न खड़ा कर देती है।

'राज को सभी ने सती की संज्ञा दी। सभी उसका नाम आदर से लेते। सभी कहते 'वह सती थी, उस ने पति के साथ ही देह त्याग दी।'

घर आ गया था और मैं अपनी सोच से बाहर निकल आई थी पर मन में एक अनुत्तरित प्रश्न लेकर कि राज को तो सती की संज्ञा दी गई और मुझे? क्या मैं इस संज्ञा की अधिकारी नहीं ? क्यों ? क्यों ?'[72]

वार्तालाप या संवाद शैली में भी लेखिका ने सामाजिक बुराइयों के प्रति मार्मिक संवेदना जाग्रत की है।

'पता नहीं, क़रीब चार वर्ष पहले उसका आखिरी पत्र मिला था जिसमें उसने पुनः मेरा उत्तर माँगा था, साथ ही यह भी लिखा था कि यदि तुम उत्तर नहीं दोगी तो भी मैं विवाह नहीं करूँगा, आजीवन अविवाहित रहूँगा।' कल्याणी का उत्तर था।

'तो तुमने उसे कभी पत्र नहीं लिखा ? 'मैंने साश्चर्य पूछा।

'मुझे साहस ही नहीं हुआ, मैं स्वयं कैसे कहती कि मैं भी तुम्हारे बिना अधूरी हूँ।' कल्याणी ने धीमें स्वर में बुदबुदाते हुए उत्तर दिया।'[73]

'तृष्णा तू न गई .....' कहानी संग्रह की कहानी 'तृष्णा तू न गई ....' विवरणात्मक शैली में समाज के सच को अनावृत्त करती हैं।

'बड़ी बेटी प्रार्थना को तो सुकन्या व दयाराम ने त्याग दिया था। उससे कोई सम्बन्ध न रखा था परन्तु छोटी बेटी पूजा कभी–कभी पिता की सार–सँभाल करने अपनी बच्ची के साथ आती। नन्हीं नातिन भव्या दयाराम से नानी के बारे में पूछती तो वे उससे ठिठोली करते, 'तुम्हारी नानी हमें छोड़कर चली गई; फिर स्वयं ही अपने मज़ाक पर हो–हो करके हँस पड़ते जिसे देखकर भव्या ताली बजाने लगती।'[74]

लेखिका द्वारा 'डायरी शैली' में लिखी कहानी 'डायरी के पन्ने' को भी आकर्षक भाषा शैली में अभिव्यक्ति प्रदान की गई हैं।

'कल शाम तुम्हारा पत्र मिला जो सामान्य था। लगता हैं कि तुम अपने टूर पर बहुतेरों से मिलकर शातं हो गए हो पर मैं क्या करूँ? मेरी छाती में तो आग सी लगी हैं।'[75]

इसी प्रकार वर्णनात्मक शैली में लिखी बाल कथा संग्रह 'घरौंदा' की कहानी 'सबसे प्यारा फूल' बहुत ही आकर्षक है। भाषा भावानुकूल एवं सरल, सहजग्राह्य है जो बालमन को संतुष्ट करने में सक्षम हैं। देखिए –

'वह तेज सुगंध वाला छोटा सफेद फूल मोगरा है। उसे बेला भी कहते हैं। वह सबेरे–सबेरे खिलता है और कुछ देर बाद झड़ कर नीचे गिराने लगता हैं।'[76]

निबन्ध की शैली के विषय में भवानी शंकर व्यास 'विनोद' का मानना है कि– ''निबन्ध संग्रह 'अक्षर से 'अक्षर' तक' के ''निबन्धों में जहाँ जैसी जरूरत हो, ये निबन्ध वर्णनात्मक, विवरणात्मक, विचारपरक, भावनात्मक, लालित्यपूर्ण तथा विश्लेषणात्मक रूप ग्रहण कर सकते हैं।'' निबन्धों की भाषा में रंजकता, लालित्य, भाव प्रवाह तथा शब्द सौन्दर्य एवं अर्थ सौन्दर्य के साथ ही पद–विन्यास, अलंकारिता, प्रत्यय, ध्वन्यात्मकता और बिम्बात्मकता का अनूठा संयोजन हैं।

निबन्धों में सपाट बयानी है, वैचारिकता से उभरने वाला सांस्कृतिक चिन्तन हैं। विचार भ्रामक एवं घुमावदार नहीं है जो भी कहा गया है वह साफगोई भाषा में कहा गया है। कथ्य संयम, व्यंग्य का तीखापन, परिवेश का चौकन्नापन इनके निबन्धों की शैली से स्पष्ट हो जाता है।

लालित्यपूर्ण शैली में लिखा निबन्ध 'सूर काव्य में लालित्य' बहुत ही आकर्षक एवं रोचक है। सूर के काव्य में छन्दों का लालित्य, अलंकारों का लालित्य, बिम्बों का लालित्य रस रंग का लालित्य आकर्षक शैली में अभिव्यक्त हुआ हैं।

'कुंज में विहरत नवल किशोर
एक अचंभों देखि सखी री, उग्यों सूर बिन भोर।'[77] (भ्रांतिमान)

सूरदास जी की प्रस्तुत पंक्तियों में अलंकार लालित्य की अद्‌भुत छटा दर्शनीय हैं। सूरदास का सम्पूर्ण साहित्य अलंकारों से अलंकृत है। डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी का कथन हैं – ''जब सूरदास अपने प्रिय विषय पर लिखते है तो अलंकार शास्त्र हाथ जोड़कर उनके पीछे दौड़ने लगता हैं। उपमाओं और रूपकों की बाढ़ आ जाती है।''

'वर्चस्व की खोज में हाशिए पर खड़ी नारी' निबन्ध चिंतनपरक एवं विचारपरक शैली में लिखा गया है।

'कहावत है कि समय आने पर कूडे के भी दिन फिरते हैं। श्रद्धा, महीयसी, अर्धांगिनी से गिर कर काया, यौवन, पायदान, कूडेदान और नरक का द्वार सोपानों से ढुलकती–गिरती वस्तु तक पहुँची नारी के दिन भी फिरे। अपनी इच्छा से श्वास तक न ले सकने वाली नारी ने, अब एक जीवंत प्राणी की तरह अपनी मानसिक शक्ति को प्रयोग कर सोचने–विचारने के साथ–साथ अपनी इस अवस्था से उबरने के प्रयास भी प्रारम्भ किए। यहीं से हाशिए पर खड़ी नारी की चेतना जाग्रत हुई और उसने अपने वर्चस्व की खोज के साथ अपने वास्तविक पद को पाने की मुहिम छेड़ दी।'[78]

वर्णनात्मक, रेखाचित्रात्मक एवं बिम्बात्मक शैली में लिखे बालोपयोगी यात्रावृतांन्त 'द्वार से धाम तक' तथा 'मेरी यूरोप यात्रा' बहुत ही आकर्षक है। देखिए –

'पैदल, खच्चरों, पालकियों व पिट्ठुओं पर लदे यात्रियों की भीड़, ठंडी बर्फ़ीली हवा, बीच–बीच में होती बारिश और सँकरी सड़क; रपटन होने के बावजूद उतराई, चढ़ाई की अपेक्षा आसान थी क्योंकि मन में अब तृप्ति जो थी। अनुपम दृश्यों को कैमरे में कैद करते हम जानकीबाईचट्टी वापस पहुँचे। झुकती आ रही साँझ और नीचे जाने वाले यात्रियों की भयंकर भीड़; हनुमानचट्टी की ओर जाने वाली गाड़ियों में जगह पाना सुबह से कम संघर्षकारी न था तथा अधिक देर हो जाने पर यहाँ रुकने के लिए जगह पाना तो और भी कठिन था, बहरहाल एक सहृदय यात्री परिवार ने हमें अपने साथ हनुमानचट्टी ले चलने की कृपा की।'[79]

'नीदरलैंड उत्तरी सागर के पूर्वी तट पर बसा एक छोटा सा देश हैं। इस पर प्रकृति ने बड़े औदार्य से प्रेम–वर्षा की है। बादलों के बीच अचानक धूप का आ जाना, धूप के साथ–साथ बारीक जलकणों की झीसी गिरना, अचानक तेज वर्षा की लहर आ जाना, मुँहज़ोर सीटियाँ बजाती हवा और काँच की बड़ी–बड़ी खिड़कियों से अचानक फिर धूप का आ जाना, सुबह–शाम और कभी–कभी तो दिन में कई बार दो–दो इन्द्रधनुषों का दिखना हमें धरती पर ही नैसर्गिक आनन्द की अनुभूति कराता है।'[80]

वर्णनात्मक शैली में नीदरलैण्ड के प्राकृतिक सौन्दर्य का वर्णन वास्तव में नैसर्गिक आनन्द की अनुभूति कराता हैं। इस प्रकार लेखिका ने अपनी कथ्य की विभिन्न शैलियों का प्रयोग कर साहित्य को रोचक एवं अधिगम पूर्ण बनाने में कुशल कारीगरी दिखाई हैं।

निष्कर्ष –

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता हैं कि लेखिका कुशल शब्द शिल्पी हैं। इनकी लेखनी एवं भाषा शैली में वो जादू है जो अनायास ही पाठक को आकर्षित कर आनन्दानुभूति करवा देता हैं। इनका सम्पूर्ण साहित्य इनके शिल्प कौशल की गवाही देता है। इन्होंने विषयौचित्यपूर्ण पात्रों की सृष्टि कर कथ्यानुसार भावाभिव्यक्ति की हैं।

देश–काल, परिवेश, परम्परानुसार, भाषा का प्रयोग कर समाज, संस्कृति, आचार–विचार तथा विषय की उपयोगिता को दृष्टि में रखकर वातावरण की सृष्टि बहुत ही रोचक एवं आकर्षक रूप में की हैं। लेखिका अपने साहित्योद्देश्य की प्राप्ति में पूर्ण रूप से सफल रही हैं। इन्होंने मार्मिक संवेदनाओं को जाग्रत करने में सरल, सहज भाषा शैली को अपनाते हुए भावानुरूप अभिव्यक्ति प्रदान कर समाज का मार्ग प्रशस्त किया है।

इनके साहित्य में संवादों का स्वरूप बहुत ही आकर्षक है। कथानक को गति प्रदान करने तथा वातावरण की सृष्टि करने में संवादों का स्वरूप देखते ही बनता हैं। लेखिका ने वर्तमान समाज के सच को प्रतीकों के माध्यम से संकेतित कर समाज सुधार का पथ प्रशस्त

किया एवं बिम्बों की फुलझड़ियों द्वारा अदृश्य, अगोचर को दृष्टिगोचर कर साहित्य सौन्दर्य को बहुगुणित किया हैं। भावानुरूप भाषा शैली में संस्कृतनिष्ठ तत्सम बहुला शब्दावली के साथ–साथ हिन्दी, उर्दू–फ़ारसी, अंग्रेजी, पंजाबी, राजस्थानी भाषा के शब्दों का प्रयोग बहुत ही सहज एवं सरल रूप में यथार्थ जीवनानुभूतियों को अभिव्यक्ति प्रदान करने में सक्षम हैं।

लेखिका ने गद्य एवं पद्य की सभी शैलियों को अपनाते हुए अपने लेखन कौशल से परिचय कराया हैं। शिल्प द्वारा बिम्बों को उभारते हुए कथ्य को ज्यादा स्पष्ट एवं आकर्षक बनाने में लेखिका सिद्धहस्त हैं। अलंकार, बिम्ब, प्रतीक, संवाद, रेखाचित्रात्मक, वर्णनात्मक, विवेचनात्मक, प्रश्नात्मक तथा व्यंजना प्रदान शैलियों में लेखिका ने कथ्य को रोचकता प्रदान की है। इनका कहने का ढंग बहुत ही निराला हैं, इन्हें जहाँ जैसी जरूरत महसूस होती हैं वहाँ वैसी ही शैली इनके आगे–'आगे दौड़ पड़ती हैं जिसे पाठक सहज रूप से आत्मसात कर आनन्दानुभूति करने लगता है। पाठक की उत्सुकता अन्त तक बनी रहती है ऐसी कुतूहल जाग्रत करने वाली शैली इनके साहित्य को सार्थकता प्रदान करने में पूर्णतः सक्षम हैं।

सन्दर्भ सूची –

1. ऐतरेय ब्राह्मण – 6/5/26
2. कथा सरित्सागर – 25/175
3. हिन्दी कहानी, आठवाँ दशक, सं. मधुर उप्रैति – पृ.सं. 196
4. काम्या–डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 25
5. नेपथ्य का सच, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 62
6. तृष्णा तू न गई ....., डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 10
7. नए सूरज की तलाश, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 73
8. घरौंदा, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 24–25
9. काम्या, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 53
10. नेपथ्य का सच, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 48
11. तृष्णा तू न गई...., डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 32
12. नए सूरज की तलाश, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 38
13. घरौंदा–डॉ० उषा किरण सोनी, पृ.सं. 35
14. अक्षरों की पहली भोर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 41
15. मौन के स्वर, डॉ० उषा किरण सोनी, पृ.सं. 91

16. 'मुक्ताकाश में', डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 38
17. 'शब्द की अनुगूँज, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 92
18. 'शब्द की अनुगूँज, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 95
19. टिम टिम तारे, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 2
20. द्वार से धाम तक, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 15
21. काम्या, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 63
22. नेपथ्य का सच, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 15
23. तृष्णा तू न गई .... डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 79
24. 'नए सूरज की तलाश, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 63
25. घरौंदा, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 20
26. अक्षरों की पहली भोर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 23
27. मौन के स्वर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 23
28. मुक्ताकाश में, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 48
29. शब्द की अनुगूँज, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 38
30. टिम टिम तारे, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 28
31. द्वार से धाम तक, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 4
32. 'काम्या', डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 40
33. नेपथ्य का सच, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 18–19
34. तृष्णा तू न गई ... डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 18
35. नए सूरज की तलाश, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 15
36. घरौंदा, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 8
37. शब्द की अनुगूँज, उॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 65
38. टिम टिम तारे, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 18–19
39. अक्षर से 'अक्षर' तक, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 101
40. काव्यशास्त्र, डॉ० भगीरथ मिश्र, पृ.सं. 271
41. अक्षरों की पहली भोर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 60
42. अक्षरों की पहली भोर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 78
43. मौन के स्वर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 46
44. मुक्ताकाश में, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 45
45. शब्द की अनुगूँज, डॉ. उषा किरणा सोनी, पृ.सं. 29

46. काम्या, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 40
47. नेपथ्य का सच, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 45
48. तृष्णा तू न गई...., डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 50
49. नए सूरज की तलाश, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 16
50. अक्षर से 'अक्षर' तक, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 53
51. अक्षर से 'अक्षर' तक, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 63
52. काव्य–बिम्ब, डॉ. नगेन्द्र, पृ.सं. 5
53. 'आधुनिक हिन्दी कविता में 'बिम्ब विधान का विकास' डॉ. केदारनाथ सिंह, पृ.सं. 23
54. Poetic Image, C.D.Lewis p.no. 18
55. अक्षरों की पहली भोर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 19
56. मौन के स्वर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 96
57. मुक्ताकाश में, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 53
58. शब्द की अनुगूँज, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 96
59. 'काम्या' डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 16
60. नेपथ्य का सच, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 48
61. नए सूरज की तलाश, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 16
62. अक्षर से 'अक्षर' तक, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 47
63. द्वार से धाम तक, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 23
64. मेरी यूरोप यात्रा, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 5
65. अक्षरों की पहली भोर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 39
66. मौन के स्वर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 46
67. शब्द की अनुगूँज, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 52
68. शब्द की अनुगूँज, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 32
69. शब्द की अनुगूँज, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 83
70. शब्द की अनुगूँज, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 95
71. अक्षरों की पहली भोर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 50
72. काम्या, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 20
73. नेपथ्य का सच, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 51
74. तृष्णा तू न गई, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 67
75. नए सूरज की तलाश, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 69

76. घरौंदा, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 21

77. अक्षर से 'अक्षर' तक, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 46

78. अक्षर से 'अक्षर' तक, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 91

79. द्वार से धाम तक, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 7

80. मेरी यूरोप यात्रा, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 7

अध्याय सप्तम

उपसंहार

अध्याय सप्तम

उपसंहार

डॉ. उषा किरण सोनी की साहित्य साधनाः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन' विषय पर सात अध्यायों में शोध कार्य पूर्ण करने के पश्चात इस निष्कर्ष पर पहुँचना और आसान हो गया कि लेखिका डॉ. उषा किरण सोनी युग बोध की लेखिका है। इन्होंने समाज में घटित घटनाओं को अन्तर्दृष्टि प्रदान करते हुए अपने अन्तर्मन के भावों को सृजन में उकेरा है। समाज की ज्वलंत समस्याओं को लेखनी का विषय बनाकर समाज सुधार का मार्ग प्रशस्त किया है।

मानवीय संवदेनाओं की चितेरी लेखिका को मानवीय रिश्तों, विकृतियों, त्रासदियों को जानने समझने की अदम्य शक्ति प्राप्त है। इनके साहित्य में यथार्थ जीवनानुभूतियों की अभिव्यक्ति हुई हैं, जिसमें जीवनानुभव भोगा हुआ यथार्थ और परिवार से प्राप्त पैतृक संस्कार, सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश इनका प्रेरणा स्रोत रहा है। इन्होंने वर्तमान समाज को बहुत करीब से देखा व समझा और जीवन के प्रत्येक विषय पर गम्भीरता से चिन्तन–मनन करते हुए भावों एवं विचारों को वाणी प्रदान की। इनकी लेखनी से जीवन का कोई भी विषय अछूता नहीं रहा चाहे नारी जीवन की समस्या हो या महानगरीय जीवन की विडम्बना या हो निम्न वर्ग की मजबूरियों से भरा बिलबिलाता जीवन। 'झोपड़ियाँ' कविता में निम्न वर्गीय जीवन की मार्मिक अभिव्यक्ति दृष्टव्य है–

'जूठन और कचरे के ढ़ेर सरीखे महत्वपूर्ण मुद्दों पर
गालियों की बेबाक बौछार छोड़ती झोपड़ियाँ।'[1]

इनके साहित्य में देश–भक्ति की अनुगूँज के साथ प्राकृतिक सौन्दर्य तथा अध्यात्म व दर्शन की आकर्षक छटा बिखरी हुई है। इनकी शोध ग्रन्थ पर आधारित आलोचनात्मक पुस्तक 'कन्हैया लाल सेठिया के साहित्य में जैन सम्मत जीवन मूल्य' बहुत ही उपयोगी है। सेठिया जी ने अपनी वामन कविताओं में जीवन के गूढ़तम रहस्यों को उघाड़कर रख दिया है। लेखिका ने भी गागर में सागर भरती मंत्रबीज कविताओं में जीवन के गूढ़तम रहस्यों तथा शाश्वत सत्यों को उजागर कर दिया है। 'आत्मा की जय' ऐसी ही वामन कविता है।

'पर' की पराजय
ईर्ष्या की जय
यदि अनछुई निकल जाय
आत्मा की जय।'[2]

डॉ. उषा किरण सोनी राजस्थान के ही नहीं देशभर के साहित्यकारों में अपना स्थान बना चुकी है और अपने नाम के अनुरूप उषा के सुनहरे किरणों के प्रकाश से सम्पूर्ण साहित्याकाश को आलोकित किए हुए है। इनका लेखन कौशल इतना सशक्त है कि पाठक स्वतः ही साहित्य सरिता में डुबकियाँ लगाने को मजबूर हो जाता है।

'अक्षरों की पहली भोर' से शुरू हुआ इनके लेखन का सफ़र अनवरत् जारी है। इनके चारों कविता संग्रह– 'अक्षरों की पहली भोर', 'मौन के स्वर', 'मुक्ताकाश में', 'शब्द की अनुगूँज'' की कविताएँ इतनी सरस एवं आकर्षक शैली में मार्मिक संवेदना जाग्रत करने के साथ ही अनन्त के गूढ़तम रहस्यों को उज़ागर करने वाली भी है–

'गण्य पलों को भू पर आना
तेरे कृत कर्मों की परिणति
सतत घूम रहा कालचक्र है
तुझसी नश्वर है तेरी कृति।'[3]

इनके कहानी संग्रह – 'काम्या', 'नेपथ्य का सच', 'तृष्णा तू न गई...', 'नए सूरज की तलाश' की कहानियाँ वर्तमान समाज की समस्याओं पर संवेदना जाग्रत करती हैं। स्त्री–पुरुष सम्बन्धों में आ रहे बिखराव के साथ ही नारी जीवन की समस्याओं को अनावृत्त करती इनकी कहानियों में नारी मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण बखूबी देखा जा सकता हैं।

'नागप्पा उसे पास ही के राहत शिविर में चल रहे अस्पताल में ले आया। अस्पताल में नर्स ने उसे समझाया और उसकी हताशा का कारण पूछा। राजम्मा ने उसे बच्चों के खो जाने का दुःख सुनाया और फूट–फूट कर रोते हुए बोली, ''इससे भी बड़ा दुःख मुझे इस बात का है कि मेरी नसबंदी का ऑपरेशन किया जा चुका है, अब मैं कभी माँ नहीं बन सकती, अब मेरे जीने का कोई अर्थ न रहा।'[4]

'सृजन की चाह' कहानी में एक नारी को पेट की भूख से ज्यादा मातृत्व की भूख हैं। इससे वह अपने जीवन को सार्थक मानती है।

'पुष्पा आजीवन पिता के प्रेम को तरसती रही थी। पिता का पत्नी की बहन से जुड़ जाना उसके अन्तर में एक घाव सा कर गया था। वह प्रत्येक पुरुष को लंपट समझती। सुन्दरी पुष्पा तो सबको पसंद आती पर वह अनेक लुभावने युवको को देख माँ से उन्हें मना करने को कह देती। उसे लगता कि सभी सुदर्शन युवक व्यभिचारी होते है। खूब सोच–समझकर एक साधारण से दिखने वाले एकाउंटेंट युवक अमित के लिए उसने हाँ भरी। कुंतल ने पूछताछ कर उसके विषय में जानकारी प्राप्त की।'[5]

''काली छाया ......'' कहानी में नारी जीवन की समस्याओं के प्रति संवेदना जाग्रत करते हुए पुरुष लंपटता का पर्दाफ़ाश कर स्त्री–पुरुष सम्बन्धों में आ रही कटुता, बिखराव की ओर समाज का ध्यानाकार्षित किया गया है।

इसी प्रकार इनका बालोपयोगी साहित्य भी बाल मनोविज्ञान को ध्यान में रखते हुए रचा गया है, जो बालकों के ज्ञानार्जन में सहायक है। बालकों को परिवेश, पर्यावरण तथा नैतिक शिक्षा का ज्ञान प्रदान करने के साथ–साथ देश–विदेश की यात्राओं के लाभ एवं पर्यटन का महत्व बताते हुए बालमन को प्रेरणा प्रदान करते इनके यात्रावृत –''द्वार से धाम तक', 'मेरी यूरोप यात्रा' एवं बालगीत 'टिम टिम तारे' बालकथा संग्रह –'घरौंदा' बहुत ही उपयोगी सिद्ध हुए है।

'रोज सवेरे सूरज आकर
धूप, ताप, प्रकाश फैलाकर
धरती में जीवन भर जाता
साँझ ढले अपने घर जाता।'[6]

'सूरज का खेल' बालगीत द्वारा बालकों को जीवन में सूरज की भाँति अपने कर्मों के प्रकाश से जग को आलोकित कर सुख प्रदान करने की प्रेरणा प्रदान की गई हैं।

'सेठ जी की बात सुनकर रघु सोच में पड़ गया कि मरे हुए चूहे से लखपति कैसे बना जा सकता हैं ? फिर सोचा कि इतना धनी व्यापारी जब कह रहा है तो कुछ तो बात होगी, तब तक वह नौकर मरा चूहा फेंक कर वापस भीतर चला गया था। उसने भीख माँगने का विचार एक बार छोड़ दिया और उस मरे चूहे को उठाकर बाज़ार की ओर चल पड़ा। वह अभी कुछ ही दूर गया था कि एक आदमी ने उसे रोक कर पूछा, ''यह चूहा बेचोगे ? मेरी बिल्ली घर के सब चूहे खा चुकी है, वह दो दिनों से भूखी है, उसी के लिए चाहिए।''

रघु ने एक रुपये में वह चूहा बेच दिया। उसने चार आनों के भुने हुए चने खरीद कर खा लिए और बचे हुए बारह आनों का मिट्टी का एक छोटा घड़ा खरीद लिया।'[7]

'सोने का चूहा' बालकथा बालकों में स्वाभिमान के साथ जीने की प्रेरणा प्रदान करती है। रघु अब मेहनत, ईमानदारी से स्वाभिमानी जीवन जीने लग गया, सेठ जी की बात ने रघु को भिखारी बनने से बचा लिया।

प्रकृति और मानव का अटूट सम्बन्ध होता है। प्रकृति प्राणी में जिज्ञासा जगाती है और बालमन को प्रकृति ज्यादा आकर्षित करती है। लेखिका ने बालमन की इन्हीं

जिज्ञासाओं को शांत करने के उद्देश्य से बालोपयोगी साहित्य की सर्जना की है। इन्होंने बहुत ही आकर्षक भाषा शैली में अपने व्यक्तित्व व कृतित्व से परिचय करवाया है।

डॉ. उषा किरण सोनी को मूल्यों की परख है और यही कारण है कि इनके साहित्य में आध्यात्मिक–दर्शनपरक, सामाजिक–सांस्कृतिक, राजनैतिक जीवन मूल्यों की प्रतिष्ठा देखने को मिल जाती है। बहुत ही सरल, सहज एवं आकर्षक भाषा–शैली में इन्होंने मूल्यों को अभिव्यक्ति प्रदान की हैं। मूल्य ही जीवन को नई दिशा प्रदान करते है। हमारे प्राचीन धर्म ग्रन्थों में मनुष्य के जीवन जीने की व्यवस्थाओं का वर्णन देखने को मिलता है। आज हमारा देश विश्वगुरु की उपाधि से विभूषित है वह इन्हीं जीवन मूल्यों का परिणाम है। भारतीय संस्कृति इन जीवन मूल्यों की विशिष्टता के कारण ही देश में महानतम तथा श्रेष्ठतम मानी जाती है। मानव सात्विक गुणों जैसे– सत्य, अहिंसा, बंधुत्व, सदाचरण, दया, क्षमा, परोपकार, त्याग भावना के द्वारा ही जीवन के अन्तिम सत्य मोक्ष को प्राप्त करता है। ये वे मूल्य है जो चिरकाल से भारतीय मानस में समाये हुए है। मूल्यों के आधार पर ही व्यक्ति का व्यवहार उचित तथा अनुचित ठहराया जाता है।

'बाँध चित्त को मूँद दृष्टि को
जागृत कर अंतरतम
खुलते अंतर्दृष्टि दिखेगा
सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम्।'[8]

'अन्तर्दृष्टि' कविता में आध्यात्मिक जीवन–मूल्यों की अभिव्यक्ति बहुत ही आकर्षक है। भारतीय संस्कृति में आध्यात्मिक दर्शनपरक जीवन–मूल्यों का बड़ा ही महत्व है।

परम्परा से प्राप्त मूल्य जीवन में संस्कार रूप में विद्यमान रहते है। लेखिका ने साहित्य में प्रत्येक जीवन मूल्य को प्रतिष्ठापित कर मानव जीवन में इनके महत्व व सार्थकता को अभिव्यक्ति प्रदान की है। आज समाज में आ रही विसंगतियाँ, टकराव, कुण्ठा, मानवीय दुर्बलताएँ आदि मूल्यों के हनन का ही परिणाम है। हमें अपने खोये हुए वजूद को प्राप्त करने के लिए हमारे शाश्वत मूल्यों, हमारी सभ्यता संस्कृति को अपनाना होगा तभी हम भविष्य के दुष्परिणामों से बच सकते है क्योंकि मनुष्य जीवन व मानवीय संवेदनाओं में गहरा सम्बन्ध है। मूल्य ही जीवन को मानवहित के महानतम संकल्पों की ओर प्रेरित कर जीवन को नई दिशा प्रदान करते है। मूल्य ही जीवन के वे उच्चादर्श है जिनके सहारे सम्पूर्ण मानवता फलीभूत होती है। लेखिका वर्तमान समाज में जागरूकता लाना चाहती हैं। इनके साहित्य में सामाजिक चेतना के बिम्बों की झलक प्रत्येक विधा में देखने को मिल जाती है। समाज की प्रत्येक समस्या को लेखनी का विषय बनाकर इन्होंने समाज सुधार का

मार्ग प्रशस्त किया। इनके साहित्य में मानवीय दुर्बलताएँ भी है तो जीवन मूल्यों का उपस्थापन भी हैं।

ईर्ष्या–द्वेष, घृणा, वैर–विरोध, घात–प्रतिघात, वैमनस्य के साथ ही परोपकार, दया, ममता, क्षमा, पर दुःखकातरता, प्रेम, वचन बद्धता, सहनशीलता, स्वाभिमान की प्रतिष्ठा भी है। दाम्पत्य जीवन के विविध पक्षों को कहानियों के माध्यम से पाठक के समक्ष रखा है। इनका सम्पूर्ण साहित्य यथार्थ जीवनानुभूतियों का साहित्य है। इन्होंने अपनी कविताओं, कहानियों के माध्यम से समाज की बुराइयों को उज़ागर कर समाज सुधार का पथ प्रशस्त किया तथा शिक्षा के महत्व के प्रति सामाजिक जागरूकता लाने का पुरजोर प्रयास किया है। सिर्फ़ बुराइयाँ गिनाना ही इनका उद्देश्य नहीं रहा बल्कि उनके समाधान भी इन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत किए है।

इनका साहित्य सामाजिक सरोकारों से लबरेज़ है, जो मौजूदा सामाजिक चरित्र से संवाद सदृश है।

डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य में रस का परिपाक भी बहुत ही आकर्षक रूप में देखने को मिलता हैं। रस जीवन है, प्राण तत्व है। इसके अभाव में साहित्य नीरस, उबाऊ, शब्दजाल मात्र रह जायेगा।

लेखिका के साहित्य में मुख्य रूप से श्रृंगार, वीर, करूण, वात्सल्य, हास्य, भक्तिरस की प्रधानता इनके चारों कविता संग्रह– 'अक्षरों की पहली भोर', 'मौन के स्वर', 'मुक्ताकाश में', 'शब्द की अनुगूँज' में देखी जा सकती है।

'पड़ी रिमझिम फुहार
गई यादें उभार
पीके दरस को अकुलाया मन
जब उठा पपीहा पुकार।'[9]

'साँसों के छंद' कविता में श्रृंगार रस की अभिव्यक्ति बहुत ही आकर्षक बन पड़ी है।

साहित्य में आधुनिक काल में उद्भूत रस यथा 'देशभक्ति रस', 'सत्य रस' तथा 'बुद्धिरस' की सुन्दर संयोजना देखने को मिलती है।

'श्वास डोर पर लटक रहे हैं
कच्चे–पक्के तिक्त, मधुर फल
कल लाए थे अरूण आसरंग
जाने कौन रंग होगा कल ?'[10]

'रंग' कविता की पंक्तियों में सत्य रस की अभिव्यक्ति बहुत ही आकर्षक शैली में प्रस्तुत की गई है।

राष्ट्रीय भावधारा की कविताओं में देशभक्ति रस है तो यथार्थ भावबोध की कविताओं में सत्य रस की प्रधानता है। तार्किक चिन्तन तथा दार्शनिक भावभूमि पर रचित कविताओं में बुद्धिरस और बौद्धिक चिन्तन की रसधारा प्रवाहमान है। इनका सम्पूर्ण साहित्य रसात्मकता से परिपूर्ण है। हमारे जीवन के जितने भी क्रिया–कलाप है उनकी प्रेरणा और लक्ष्य, आरम्भ और अन्त रस में ही है। रस जीवन का सार है।

इसी प्रकार 'दे सको तो' कविता में बुद्धिरस की सुन्दर संयोजना देखने को मिल जाती है।

'मैंने अपनी साँसों को
झींनी गठरी में बाँधकर
लटका दिया है वृक्ष पर
अवश, देख रही हूँ उन्हें
पोर–पोर से रिसते हुए
रवा–रवा जीवन बिखरते हुए
रिसाव रोकने की शक्ति नहीं
कितनी शेष है पता नहीं।'[11]

इसी प्रकार साहित्य में भाषा का बड़ा ही महत्व है। किसी भी साहित्य को पढ़ते या सुनते ही सबसे पहले सामना भाषा से ही होता है। भावों–विचारों के सम्प्रेषण का माध्यम भाषा ही है। भाषा ही भावों की वाहक होती है। लेखक की क्षमता का आधार यह है कि वह अपने सर्जनात्मक अनुभव या शब्द को कहाँ तक सम्प्रेष्य बना पा रहा हैं।

रचनाकार की पूरी चेष्टा उस भाषा की तलाश होती है जो समाज के लोगों, स्थितियों, परिस्थितियों, परिवेश की अन्दरूनी शक्लों और अन्तर्दृष्टि से प्राप्त यथार्थ को पूर्ण रूप से बयां कर सके। भाषा का स्वरूप ऐसा हो कि शब्दों से अर्थ फूटकर फैले तथा लेखक के कथ्य को सारगर्भित रूप से स्पष्ट कर सके।

लेखिका के साहित्य की भाषा में यह सभी गुण विद्यमान है। कविता साहित्य की भाषा के स्वरूप को देखे तो चारों कविता संग्रह–''अक्षरों की पहली भोर, 'मौन के स्वर', ''मुक्ताकाश में', 'शब्द की अनुगूँज' तथा बालगीत संग्रह 'टिम–टिम तारे' में भाषा का स्वरूप सुसंस्कृत, परिष्कृत, परिनिष्ठित, परिमार्जित एवं भावानुकूल मार्मिक संवेदना जाग्रत करने वाली शब्दावली से परिपूर्ण है।

मंत्रबीज कविताओं की भाषा नाविक के तीर के समान गम्भीर घाव करने वाली गागर में सागर भरने सदृश है। प्राकृतिक परिदृश्यों तथा प्रकृति की मानवीकरण के वर्णन में भाषा छायावादी काव्य परम्परा के अनुरूप माधुर्य एवं प्रसाद गुणों से ओत–प्रोत सरल, सहज एवं आकर्षक है। सामाजिक विसंगतियों, कुरीतियों, भ्रष्टाचार का पर्दाफाश करती कविताओं में व्यंग्य भाषा का प्रहार बहुत ही प्रभावकारी है। आध्यात्मिक एवं चिन्तन प्रदान कविताओं की भाषा सरल एवं सारगर्भित है।

'जन्में हैं क्यों हम
अनुत्तरित है प्रश्न
दिखती न कहीं दूर तक
सत्य की किरन
भेद सके जो तमाच्छादित
मन का गगन।'[12]

लेखिका कुशल शब्द शिल्पी है। शब्द इनके इशारे पर थिरकते हुए भाव, संप्रेक्षण में भाषा का माध्यम बन जाते है। इनके साहित्य में भाषा का स्वरूप उच्च स्तरीय है। काव्य भाषा ही नहीं गद्य भाषा में भी इनकी भावाभिव्यक्ति बहुत ही आकर्षक है जो पाठक को अन्त तक बाँधे रखती है। इन्होंने हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू–फारसी, राजस्थानी, पंजाबी भाषा के शब्दों के साथ–साथ साधारण बोलचाल की भाषा के शब्द एवं प्रांजल शब्दों का प्रयोग भी साहित्य में किया है। 'मौन के स्वर' कविता संग्रह की कई कविताओं के शीर्षकों से ही दार्शनिक शब्दावली का आभास होता है। जैसे– 'देह में विदेह', 'आवरण–अनावरण', 'भूली हर देशना', 'भिन्न–अभिन्न', 'प्रक्षालन' आदि। जैन दर्शन की शब्दावली भी इन कविताओं में प्रयुक्त हुई है। इनके कहानी संग्रह – 'काम्या', 'नेपथ्य का सच', 'तृष्णा तू न गई....', 'नए सूरज की तलाश' की भाषा का स्वरूप बहुत ही मार्मिक संवेदना जाग्रत करने वाला है।

भवानीशंकर व्यास 'विनोद', 'काम्या' कहानी संग्रह की भूमिका में लिखते है कि– 'उषा किरण ने यथार्थ के साथ कल्पना का सुन्दर समन्वय किया है क्योंकि एकदम यथार्थ हो तो उसमें कथारस भला कहाँ से आएगा ? उनकी कहानियों का विकास सीधे सपाट कथानकों से नहीं होता। प्रत्येक कहानी में कोई न कोई ऐसा मोड़ अवश्य आता है जो कहानी के अन्त को या तो विस्मय जनक बनाए या फिर किसी नए सोच को जन्म दे। 'प्रश्न' कहानी के अन्त का यह सवाल पाठकों के चिन्तन के लिए छोड़ दिया गया। राज को दी गई सती की संज्ञा और मुझे ? क्या मैं इस संज्ञा की अधिकारी नहीं ? क्यों ? क्यों? अब जूझते रहो पाठक इस प्रश्न से। 'चाँदनी के फूल' कहानी का अन्त कैसा होगा, कहानी

पढ़ते समय पाठक इसकी कल्पना तक नहीं कर सकता। धूमकेतु की तरह आए पति के पत्र ने सारी स्थिति पलट दी। कहानी के अन्त के दो वाक्य पूरी मनःस्थिति को सामने ला देते है– 'उसे लगा की उसके चारों ओर चाँदनी के फूल खिल उठे है'; अब उसे किसी परेश से आँख मिलाने में झिझक नहीं होगी।

लेखिका के बालोपयोगी यात्रावृत साहित्य की भाषा बहुत ही सरल एवं आकर्षक है जो बालकों को सहज रूप से आत्मसात हो जाती है। रेखाचित्रात्मक भाषा शैली में इन्होंने यात्राओं के प्राकृतिक परिदृश्यों को साकार रूप प्रदान कर दिया है। कथ्य और भाषा का अद्‌भुत सामंजस्य इनके साहित्य में देखा जा सकता है। इनके साहित्य की भाषा कुतुहल जाग्रत करने वाली आकर्षक एवं रोचकता से परिपूर्ण है।

लेखिका का शिल्प कौशल बहुत ही आकर्षक एवं बेजोड़ है जिसका कोई सानी नहीं है। भाषा भावों की अनुगामी है। इनकी लेखनी में वो जादू है जो अनायास ही पाठक को आकर्षित कर आनन्दानुभूति करवा देता है। साहित्य में पात्रों की सृष्टि भी कथ्यानुसार विषयौचित्य पूर्ण है। देशकाल, वातावरण, परिवेश, परम्परानुसार साहित्य में भाषा का प्रयोग बहुत ही आकर्षक है।

वातावरण की सृष्टि समाज, संस्कार, आचार–विचार एवं विषय की उपयोगिता के अनुरूप की गई है।

मार्मिक संवेदनाओं को जाग्रत करने में भावानुसार सरल, सहज भाषा शैली में भावाभिव्यक्ति कर समाज–सुधार लाने का प्रयास किया है। कथानक को गति प्रदान करने तथा वातावरण की सृष्टि के लिए बहुत ही आकर्षक संवादों की सर्जना इनके साहित्य में देखने को मिल जाती है।

लेखिका ने वर्तमान सच को प्रतीकों के माध्यम से संकेतित कर समाज में जाग्रति लाने का प्रयास किया साथ ही बिम्बों की झिलमिल में अगोचर, अदृश्य को दृष्टिगोचर कर साहित्य सौन्दर्य को बहुगुणित कर दिया है। भावाभिव्यक्ति में विभिन्न भाषाओं जैसे – संस्कृतनिष्ठ तत्सम बहुलाशब्दावली के साथ ही हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू–फारसी, पंजाबी, राजस्थानी भाषा के शब्दों की थिरकन स्वतः ही पाठक को भाव–विभोर कर आत्मलीन कर देती है। गद्य एवं पद्य की सभी शैलियाँ इनके कथ्य को रोचकता प्रदान करती है।

लेखिका शिल्प द्वारा बिम्बों को उभारते हुए कथ्य को ज्यादा स्पष्ट एवं आकर्षक बनाने में सिद्धहस्त है। इसलिए इन्होंने अलंकार, बिम्ब, प्रतीक, संवाद, रेखाचित्रात्मक, वर्णनात्मक, विवेचनात्मक, प्रश्नात्मक तथा व्यंजना प्रदान शैलियों को साहित्य में प्रमुखता दी है।

इनके कहने का अंदाज बहुत ही आकर्षक है, इन्हें जहाँ जैसी जरूरत महसूस होती है वहाँ वैसी ही शैली दौड़ पड़ती है जिसे पाठक सहज रूप से आत्मसात कर आनन्दानुभूति करने लगता है। पाठक की उत्सुकता अन्त तक बनी रहती है ऐसी कुतुहल जाग्रत करने वाली शैली इनके साहित्य को सार्थकता प्रदान करने में पूर्णतः सक्षम है।

हिन्दी के सम्मानित रचनाकार श्री श्रीराम शर्मा के अनुसार– ''डॉ. उषा किरण सोनी द्वारा लिखित विविध आयामी साहित्य से उनका विराट साहित्यिक व्यक्तित्व उद्घाटित होता है। उनकी पैनी रचनाधर्मी दृष्टि न केवल सामाजिक विद्रूपताओं को उजागर करती है बल्कि उनकी लेखनी समाज में नव–युगीन चेतना का संचार भी करती है। डॉ. सोनी ने साहित्य की विभिन्न विधाओं में सरस व सरल संवेदनशील प्रभावी संप्रेषणीयता के अनवरत प्रवाह द्वारा अपनी सिद्धहस्तता व उद्भटता प्रमाणित की है। निःसंदेह हिंदी जगत के विशिष्ट साहित्यकारों में उनका स्थान बहुत उच्च है।''

सन्दर्भ –

1. अक्षरों की पहली भोर– डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 26
2. मौन के स्वर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 84
3. शब्द की अनुगूँज, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 30
4. काम्या, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 55
5. तृष्णा तू न गई ...., डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 48
6. टिम टिम तारे, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 6
7. घरौंदा, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 28–29
8. मौन के स्वर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 76
9. अक्षरों की पहली भोर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 49
10. मौन के स्वर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 65
11. शब्द की अनुगूँज, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 42
12. मौन के स्वर, डॉ. उषा किरण सोनी, पृ.सं. 70

शोध सारांश

शोध सारांश

मनुष्य एक जिज्ञासु व चिन्तनशील प्राणी है और अपनी इसी प्रवृत्ति के कारण वह समाज में आ रहे परिवर्तनों व नारी की स्थिति व दशा पर अपने विचार प्रस्तुत करने लगा है। वर्तमान समाज में वह स्त्री–पुरुष सम्बन्धों में आ रहे बदलाव, भ्रष्टाचार, छल–छद्म, मानवीय रिश्तों में आ रहे टकराव के प्रति अपनी मार्मिक संवेदना प्रकट करने एवं समाज सुधार हेतु संघर्षरत हैं। इसी परम्परा की मुहिम में एक कड़ी के रुप में जुड़ी डॉ. उषा किरण सोनी अपने साहित्य के माध्यम से अपना अनुपम योगदान दे रही हैं।

इनके विचारों से समाज को अवगत कराने के लिए शोध विषय – ''डॉ. उषा किरण सोनी की साहित्य साधना–एक विश्लेषणात्मक अध्ययन'' को सात अध्यायों में विभक्त किया गया है।

प्रथम अध्याय – 'डॉ. उषा किरण सोनी का 'व्यक्तित्व एवं कृतित्व'

इस अध्याय में इनके जीवनवृत व साहित्य–संसार का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। इनके जीवन–वृत्त के अन्तर्गत जन्म, बचपन, पारिवारिक–परिवेश, शिक्षा–दीक्षा, रुचि–अभिरुचि, व्यवसाय, आत्मीय सम्बन्धों का यथार्थ, साहित्य सृजन की प्रेरणा एवं शुभारम्भ आदि का वर्णन किया गया है। कृतित्व के अन्तर्गत इनके सम्पूर्ण साहित्य–संसार यथा – कविता संग्रह – 'अक्षरों की पहली भोर', 'मौन के स्वर', 'मुक्ताकाश में', 'शब्द की अनुगूँज', कहानी संग्रह – 'काम्या', 'नेपथ्य का सच', 'तृष्णा तू न गई....', 'नए सूरज की तलाश', बालोपयोगी साहित्य – 'टिम टिम तारे', 'द्वार से धाम तक', 'मेरी यूरोप यात्रा', 'घरौंदा' निबन्ध संग्रह – 'अक्षर से 'अक्षर' तक' एवं शोध प्रबन्ध आधारित आलोचनात्मक पुस्तक– 'कन्हैयालाल सेठिया के साहित्य में जैन सम्मत जीवन मूल्य' आदि का संक्षिप्त परिचय दिया गया है।

'अक्षरों की पहली भोर' कविता संग्रह की कविताएँ वर्तमान समय में मानवीय संवेदनाओं में आ रहे बदलाव और इससे प्रभावित होती सांस्कृतिक परम्पराओं से परिचय करवाने के साथ ही समाज के यथार्थ को निरा अनावृत कर व्यवस्थाओं की रुढ़ि पर प्रश्नात्मक हमला करती है ताकि व्यवस्था अपना चेहरा देख सके।

'रोशन काँच दिखाता है
वीर बहूटियाँ
जग–बुझ, बुझ–जग के साथ ही
दिखती हैं
सूखी डबल रोटियाँ।'

आध्यात्मिक एवं दर्शनपरक कविताएँ जीवन के शाश्वत सत्य से परिचय करवाती हुई आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग दिखाती हैं, तो सामाजिक–सांस्कृतिक, राजनैतिक चिन्तन परक कविताएँ मानवीय संवेदना जाग्रत कर समाज सुधार का पथ प्रशस्त करती हैं।

'मौन के स्वर' कविता संग्रह की सभी कविताएँ अन्तःकरण के उन्मेष की तथा यथार्थ जीवन की अभिव्यक्ति हैं। अनुचिंतन, आलोड़न, निसर्ग के त्रिकोण में बँधी कविताओं में भावों, विचारों, अपभावों, दृश्य–बिम्बों और प्रतीकों की ऐसी जगमगाहट है, जो कथ्य को सुग्राह्य बनाने व भावों को नया उन्मेष देने का काम करती है।

'भव–सागर आलोड़ित होता
जाती टूट तमस जड़ता है।
मुकुलित कुसुमों से परिमल ले
पवन बाँटने चल पड़ता हैं।'

'मुक्ताकाश में' कविता संग्रह की कविताएँ 'स्वगत' व 'भवगत' दो खण्ड़ों में विभक्त हैं। इन कविताओं में दार्शनिक आध्यात्मिक अन्तर्मन की पुकार के साथ ही यथार्थ जीवनानुभूतियों का सच्चा दस्तावेज हैं। 'वृद्ध जनक दम्पत्ति' कविता में वर्तमान समय में रिश्तों में आ रहे बदलाव, वृद्ध जनक–दम्पत्ति की उपेक्षा बहुत ही मार्मिक संवेदना जाग्रत करने वाली है–

'स्मृति की कंथा को रहते पल–पल बुनते–उधेड़ते
उल्लसित पलों के शव देख कर रोते–सिसकते।'

'शब्द की अनुगूँज' कविता संग्रह की कविताएँ 'अन्तर्नाद' एवं 'अनुनाद' खण्ड़ों में विभक्त हैं। अन्तर्नाद खण्ड की कविताएँ जहाँ आध्यात्मिक एवं दार्शनिकता के साथ संसार की नश्वरता से परिचय करवाती है वहीं 'अनुनाद' खण्ड की कविताएँ जीवन के यथार्थ देशभक्ति की अनुगूँज, नारी की महिमा का बखान करती हुई प्राकृतिक सौन्दर्य की छटा बिखराती रागात्मक भाव जाग्रत कर आनन्दानुभूति करवाती हैं। प्रकृति के मानवीकरण की झाँकियाँ बहुत ही आकर्षक हैं।

'भँवरे से जब सुनी खबर प्रिय के आवन की
झाँकने लगी अलस धरा झिरी खोल नैनन की।'

इनके चारों कहानी संग्रह 'काम्या', 'नेपथ्य का सच', 'तृष्णा तू न गई....', 'नए सूरज की तलाश' की कहानियाँ मानवीय संवेदना जाग्रत करती हुए समाज में जागरुकता एवं वैचारिक जड़ता को तोड़ने में मददगार सिद्ध होती हैं। समाज में स्त्री–पुरुष संबन्धों में आ रहे टकराव, नारी की दयनीय स्थिति तथा भ्रष्टाचार का पर्दाफ़ाश करती

इनकी कहानियों में मार्मिक संवेदना की अभिव्यक्ति बहुत ही सरल एवं सहज भाषा शैली में हुई है। कुछ कहानियों में आदर्श चरित्र प्रस्तुत है जैसे – 'तपस्या' कहानी में सौतेली माँ मीना द्वारा अनेक तानों व संशयों के बीच अमर का किस तरह पोषण व विकास किया गया वह आदर्श का एक जीवन्त प्रतिमान हैं तथा 'काम्या' में निखिल का त्याग भी मर्यादित संयम का आभास कराता हैं। 'काम्या' संग्रह की दो कहानियाँ अपनी मार्मिकता से तत्काल ध्यानाकर्षित करती है। सौतेले पिता के व्यवहार से त्रस्त सौतेली बेटी की पीड़ा सुनाती कहानी 'कठबपवा' और मातृत्व की भूख से व्याकुल माताओं की व्यथा सुनाती 'सृजन की चाह', 'नेपथ्य का सच' कहानी संग्रह यथार्थ जीवनानुभूतियों का सृजनशील उपक्रम है। मदन सैनी के अनुसार – 'इन कहानियों में दाम्पत्य प्रेम के विविध आयामों में नारी–मन के उद्वेलन, मर्यादा–बंधन, आडम्बरहीन सौजन्यशीलता आदि बिम्बों को नेपथ्य के झीने आवरण के भीतर झिलमिलाते हुए देखा जा सकता है, वहीं पुरुष–मन के छल–छद्म वं स्वार्थपरता के बिम्ब भी दृष्टिगोचर होते दिखाई देते हैं।'

'तृष्णा तू न गई ....' कहानी संग्रह की कहानियाँ समाज की उन परिस्थितियों से साक्षात् करवाती है, जिन्हें समाज अपनी मर्जी से चलाना चाहता है। 'भूमिका' कहानी उच्च वर्गीय सोच को अभिव्यक्त करती है तथा भारतीय संस्कृति एवं संस्कारों की जीवन्तता को बरकरार रखते हुए शिक्षा का महत्व बतलाती है। 'नए सूरज की तलाश' कहानी संग्रह की सभी कहानियाँ समाज के सच को उजागर करती हुई समाज–सुधार की राह दिखाती हैं। स्त्री–पुरुष सम्बन्धों में आ रहे टकराव के कारण एवं समाधान 'अधिकार' कहानी में देखने को मिल जाते है। 'परिवेश कितनी ही अच्छी क्यूँ न हो खून असर दिखा ही देता हैं।' 'असर' कहानी की शीना में हत्यारे पिता व कंजरी सरगम का रक्त का रंग डॉ. इति व डॉक्टर कमलकान्त अपने पालन–पोषण, प्यार यहाँ तक कि जीवन देकर भी नहीं बदल पाए। सभी कहानियाँ सामाजिक भाव–भूमि पर आधारित हैं, जो सामाजिक समरसता का मार्ग प्रशस्त करती है।

'टिम टिम तारे' बालगीत संग्रह की कविताएँ बालकों को, खासकर छोटे बच्चों को गीतों एवं कविताओं के माध्यम से आनन्ददायी एवं मनोरंजक तरीके से शिक्षा प्रदान करने में सहायक सिद्ध होती हैं।

'झिर–मिर, झिर–मिर झड़ी लगी हैं
घन बिच बिजली चमक रही है।'

'सावन में किरणों का खेल' बाल गीत बच्चों को सावन में होने वाली वर्षा ऋतु के बारे में जानकारी प्रदान करता है। बालकथा संग्रह 'घरौंदा' की कहानियाँ बालकों को प्रेरणा

प्रदान करती हैं, उनमें उत्साह एवं उमंग जाग्रत कर स्वाभिमानता का पाठ पढ़ाती हैं। बालोपयोगी यात्रावृतांत– 'द्वार से धाम तक' एवं 'मेरी यूरोप यात्रा' बालकों में पर्यटन के प्रति रुचि जाग्रत करने के साथ ही धार्मिक स्थलों का महत्व एवं यूरोप के भौगोलिक स्थलों की जानकारी तथा धरती पर बिखरे प्राकृतिक सौन्दर्य को देखने की जिज्ञासा जाग्रत करते हैं। उत्तराखण्ड के चारों धाम की यात्रा का वर्णन 'द्वार से धाम तक में' है –

'ऊपर हवा में उड़ते समय हमने धागों सी दिखती सड़कों पर चींटी सी रेंगती गाड़ियाँ, माचिस की डिबियों जैसे घर तथा किसी फिल्मी दृश्य सरीखे सीढ़ीदार खेत देखे। पहाड़ों की हरितिमा ने तो हमें हमारा आपा ही भुला दिया।'

'मेरी यूरोप यात्रा' यात्रा वृतांत में यूरोप के तीन देशों नीदरलैण्ड, फ्रांस और बेल्जियम की यात्रा का वर्णन है। यूरोप के फ्रांस नामक देश में है फैशन व कला की नगरी पेरिस और पेरिस में है प्रसिद्ध –'एफिल टावर' जो विश्व के सर्वाधिक ऊँचे टावरों में गिना जाता हैं। पर्यटकों को आकर्षित करता है यूरोप का भौगोलिक वातावरण और शालीन संस्कृति। यूरोप के प्राकृतिक सौन्दर्य से प्रभावित होकर प्रतिवर्ष यहाँ ढ़ेरों पर्यटक इन देशों में पर्यटन के लिए आते है। ये पर्यटन वे आनन्द की प्राप्ति एवं ज्ञानार्जन के लिए करते है।

निबन्ध संग्रह 'अक्षर से 'अक्षर' तक' के निबन्ध में डॉ. उषा किरण सोनी के स्वच्छन्द व्यक्तिगत मौलिक विचार आकार लेते हैं। इनकी चिन्तन–दृष्टि व्यापक है, भाषा में लचीलापन एवं सूक्ष्मता है, शब्दों की कसावट अद्भुत है। इन्होंने अपनी रुचियों, अनुभूतियों, विचार सरणियों को कहीं भी आरोपित नहीं किया हैं। स्वाभाविक जीवन दृष्टि का प्रकाशन इनके निबन्धों में हुआ हैं।

लेखिका द्वारा श्री सेठिया जी पर लिखी शोध ग्रन्थ आधारित आलोचनात्मक पुस्तक भावी शोधार्थियों को मार्गदर्शन प्रदान करेगी तथा श्री सेठिया जी के साहित्यिक अवदान युगीन संदर्भ में जैन–सम्मत जीवन–मूल्यों की प्रासंगिकता से परिचय करवायेगा।

द्वितीय अध्याय – 'डॉ. उषा किरण सोनी की मूल्यपरक मीमांसा'

इसके अन्तर्गत इनके साहित्य में वर्णित आध्यात्मिक और दर्शनपरक मूल्य, सांस्कृतिक, सामाजिक एवं राजनैतिक जीवन मूल्यों का विस्तृत विवेचन करते हुए मूल्यों का महत्व तथा उपयोगिता के बारे में जानकारी प्रदान की गई है। सम्पूर्ण समाज की व्यवस्था का आधार जीवन मूल्य ही है। मूल्य ही मानव को महान बनाते है तथा जीवन को नई दिशा प्रदान कर जीवन जीने का मार्ग दिखाते है। मूल्यों की अवधारणा के कारण ही हम समाज में व्यक्ति के व्यवहार को उचित तथा अनुचित ठहराते है।

डॉ. उषा किरण सोनी का सम्पूर्ण साहित्य जीवन मूल्यों पर आधारित है जो समाज को प्रेरणा प्रदान करने के साथ ही मानव जीवन को नई दिशा प्रदान करता है।

'बुझा सका न कोई बवंडर,
मन में पनपी आस को
डिगा सका न कोई तर्क भी
प्रभु के प्रति विश्वास को।'

'मौन के स्वर' कविता संग्रह की कविता 'विश्वास' में आध्यात्मिक और दर्शनपरक जीवन मूल्यों की प्रतिष्ठापना हुई है। कहीं इनके साहित्य में सांस्कृतिक जीवन मूल्य आस्था के स्वर गुंजित हैं तो कहीं सामाजिक और राजनैतिक जीवन–मूल्य, समाज को प्रेरणा प्रदान कर रहे हैं।

'देखना चाहते है
दर्पण में
हम जो थे या
होना चाहते हैं
पर दिखाता है
वह जो हम है।'

डॉ. उषा किरण सोनी की कविताओं में ही नहीं कहानियों में भी इन जीवन–मूल्यों की झलक देखने को मिल जाती है। 'नए सूरज की तलाश' कहानी की पंक्तियाँ दृष्टव्य है।

'साँझ ढ़ल चुकी थी और रात सरकती हुई धीरे–धीरे निकट आ रही थी। सरस्वती बाई और ईसुरी की माँ बार–बार दरवाजे तक जाकर बाहर झाँकती फिर निराश होकर वापस लौट आती। रात के नौ बजे बाहर कार रुकने की आवाज़ सुनकर दोनों माताएँ बाहर निकलीं। रविकान्त ने दोनों के चरण स्पर्श किए। सरस्वती बाई ने अब कार में केवल ड्राइवर को देख ईसुरी व चन्द्रभान के सम्बन्ध में प्रश्न किया।'

निष्कर्षतः मानव जीवन में मूल्यों का बहुत ही महत्व हैं। सम्पूर्ण मानव सभ्यता का विकास जीवन मूल्यों द्वारा ही सम्भव हैं।

तृतीय अध्याय – 'डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य में सामाजिक चेतना'

साहित्य और समाज का घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। समाज में घटित प्रत्येक घटना यथा मानव के क्रिया–कलाप, आचार–व्यवहार, रहन–सहन, भाषा–भूषा, धर्म–कर्म आदि की झलकियाँ साहित्य में झलकती हैं। साहित्य और समाज एक सिक्के के दो पहलू हैं। समाज से भिन्न साहित्य की कल्पना नहीं की जा सकती। लेखिका ने सम्पूर्ण समाज की यथार्थ

जीवनानुभूतियों को अपनी कलम कलवार से साकार दृश्यावलियों के रुप में अभिव्यक्त किया है। इनकी सामाजिक दृष्टि समाज में एक नई चेतना जाग्रत करने का उपक्रम है। इन्होंने अपनी कविताओं, कहानियों एवं निबन्धों में समाज की हर बुराई पर प्रकाश डालते हुए उनके समाधान भी प्रस्तुत किए है। इनका साहित्य मानवीय संवेदना जाग्रत करने वाला है जो समाज को प्रेरणा प्रदान करने के साथ ही समाज में जाग्रति लाने का पुरजोर प्रयास करता है।

'सुन! तुझमें असीम है शक्ति,
उठ और खुद में विश्वास जगा,
तोड़ शृंखला की कड़ियाँ और
अपनी क्षमता को पहचान, ऐ नारी।'

'ऐ नारी' कविता में सामाजिक चेतना जाग्रत कर समाज में नारी–महिमा को मण्डित किया गया है। 'औरत', 'शक्ति पुंज', 'बेटी', 'लड़की', 'ऐसे बनी नारी, 'पहचान', 'सृष्टि की धुरी', 'नारी', 'नारी शक्ति', 'सिर्फ़ पायदान है', 'कहाँ जा रही', आदि कविताओं में भी नारी महिमा का बखान हुआ हैं। कविताओं द्वारा सामाजिक चेतना लाने व आत्म सम्मान के प्रति जागरुक करने का प्रयास किया गया है।

सामाजिक सरोकारों से लबरेज इनका साहित्य विशेषकर कहानी साहित्य – 'काम्या' 'नेपथ्य का सच', 'तृष्णा तू न गई ....', 'नए सूरज की तलाश' संग्रह की कहानियाँ सामाजिक–समरसता का मार्ग प्रशस्त करती हुई समाज से रु–ब–रु करवाती हैं, जो मौजूदा सामाजिक चरित्र से संवाद सदृश है।

चतुर्थ अध्याय – 'डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य में रसानुभूति'

रस जीवन है, प्राण तत्व है। रस के अभाव में कोई भी काव्य, काव्य नहीं वरन् नीरस, उबाऊ, शब्दजाल मात्र रह जाता है। काव्यास्वादन से प्राप्त आनन्द ही काव्य का मुख्य तत्व है। रसानन्द पाठक को अतीन्द्रिय जगत में ले जाता है और सहृदय व्यक्ति इसके सागर में डुबकियाँ लगाने लगता है। हमारे जीवन के जितने भी क्रिया–कलाप हैं उनकी प्रेरणा और लक्ष्य, आरम्भ और अन्त रस में ही हैं। रस ही जीवन का सार है। लेखिका के साहित्य में शृंगार रस, वीर रस, करुण रस, वात्सल्य रस, हास्य रस के साथ ही आधुनिक काल में उद्भूत रस 'देशभक्ति रस', 'सत्य रस' (यथार्थ रस) 'बुद्धि रस' का भी सुन्दर परिपाक हुआ है।

'पिया देख थिरक उठी सजनी किए सोलह शृंगार।
खिल गया मन का सुमन छाई चहुँ दिशि बहार।'

प्रस्तुत पंक्तियों में श्रृंगार रस की अभिव्यक्ति हुई हैं। श्रृंगार रस को रस–राज माना जाता है, क्योंकि यही एक मात्र रस है जिसमें सभी तैंतीस संचारी भाव आ जाते हैं। यह रस ही अपने आप में परिपूर्ण है जिसकी प्रतीति मानव और मानवेत्तर प्राणियों को शीघ्रता से हो जाती हैं। 'अक्षरों की पहली भोर' कविता संग्रह की कविता 'आया वसंत', 'फागुन', 'मधुमास मानों आ गया है' 'सावन की साँझ', 'मौन के स्वर' संग्रह की कविता– 'नैन खुले', 'सुप्रभात', 'होली', 'तो जाना! वसंत आ गया है', 'शब्द की अनुगूंज' कविता संग्रह की कविता 'सुनो! सावन है आया', 'रसवती निशा', 'नाच उठा प्यार', 'ओ ऋतुराज', 'वसंत' आदि कविताओं में श्रृंगार रस की अभिव्यक्ति दृष्टव्य है।

'अक्षरों की पहली भोर' कविता संग्रह की कविता 'तर्पण' में करुण रस की व्याप्ति है।

'सद्यः जात सुत का शव, तिरोहित करते बीच धार।
गंगधार से करती थी होड़, दोनों की नयन धार।'

डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य में 'वीररस' एवं 'देशभक्ति रस' से ओत–प्रोत कविताएँ पाठक हृदय में ओज–भाव जाग्रत करती है।

'बंदी माँ की इक पुकार पर
तन अपने केसरिया धर कर
उतर पड़े जो समरांगण में
जीवन के हर सुख को तजकर,
उन वीरों को नमन करें हम।'

'मेरे शिशु', 'चंचल किशोर', 'कल की बात है', 'विभोर करता है', कविताओं में वात्सल्य रस सलिला पूर्ण वेग में प्रवाहित होती सी जान पड़ती है। 'महानगर और बूढ़े', 'महानगर', 'बूढ़े लाचार चेहरे', 'हम भी होते', 'सब चलता हैं', कविताओं में हास्यरस के छींटे बहुत ही मनोहारी हैं। 'रेल का संदेश', 'आवरण–अनावरण' में शान्त रस ध्वनित हो रहा है। 'द्वन्द्व', 'सबसे बड़ा सच', 'घोषणा', 'आर्यावर्त के लाल', 'भाग्य–विधाता बन सके', 'मातृ–वन्दना', 'मिल गया इन्साफ़', आदि कविताओं में 'देश–भक्ति रस' की अभिव्यंजना हैं तो 'अरे! ये कैसी होली', 'झोपड़ियाँ', 'युग', 'आधुनिक रिश्ते', 'नारी शक्ति', 'कहाँ जा रही', 'हमारा ताज', 'भूख', 'सत्य', 'फिर न जाने', 'मानवता का क्रंदन', 'बेटी', 'नई पौध', 'बचपन से पचपन', 'बन्द द्वार के पीछे', 'चलता है यार', 'कहाँ आ गए है', 'महानगर', 'अपने घर के सपन', 'हाल बेहाल', 'कितना बदल गया', 'क्यों करते है वे ऐसा ?', 'प्रत्याक्रमण', 'सब कुछ बिकता है', 'स्खलन', 'बूढ़े लाचार चेहरे', 'दलित और धन्य धरा', 'लड़की', 'पोषण',

'महत्वपूर्ण', 'देह में विदेह', 'भूख–1', 'भूख–2', 'ऐसा उलझा पाँव' आदि कविताओं में सत्य रस की व्याप्ति हुई है।

'पोषण
जवानी में
माँ–बाप का फ़र्ज
बुढ़ापे में
माँ–बाप पर कर्ज़।'

'शब्द', 'सहस्राब्दी महोत्सव', 'जीवन', 'कर सृजन', 'जागरण', 'मुक्ताफल', 'नाद', 'उत्सव', 'अमी क्या है ?', 'मुक्ति', 'क्षण', 'पल', 'जब तक' आदि कविताओं में बुद्धिरस की अभिव्यंजना' हुई है

'क्षण की आयु
सदा क्षण ही है,
क्षण–क्षण कर
युग जाते बीत।'

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि 'रस' वास्तव में ही जीवन है, प्राणतत्व है। रस के अभाव में कोई भी काव्य, काव्य नहीं वरन् नीरस सा, उबाऊ, शब्द–जाल मात्र रह जायेगा। हमारे जीवन के जितने भी क्रिया–कलाप है उनकी प्रेरणा और लक्ष्य, आरम्भ और अन्त रस में ही है अर्थात् रस जीवन का सार है।

पंचम अध्याय – 'डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य में भाषा'

भाषा भावों–विचारों की संवाहक होती है। किसी भी साहित्य को पढ़ते या सुनते ही सबसे पहले सामना भाषा से ही होता है। भाषा मात्र शब्दों का संयोजन ही नहीं बल्कि अभिव्यक्ति का पूरा रुपाकार होने के साथ ही अनुभूति और संवेदना का माध्यम भी होती है। भावों–विचारों के सम्प्रेषण का माध्यम भाषा ही है। लेखक की क्षमता का आधार यह है कि वह कितने प्रभावी ढंग से अपने सर्जनात्मक अनुभव को सम्प्रेष्य बना पाता है। साहित्यकार की पूरी चेष्टा उस भाषा की तलाश से है जो समाज के लोगों, स्थितियों, परिवेश वस्तुओं की अन्दरुनी शक्लों और अन्तर्दृष्टि से प्राप्त हकीकत को रु–ब–रु बयां कर सके। भाषा का स्वरुप ऐसा हो कि उसके शब्दों से अर्थ फूटकर फैले जो कुछ भी लेखक कहना चाहता है, वह सुस्पष्ट और सारगर्भित हो।

डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य की भाषा में ये सभी गुण मौजूद हैं। इनके चारों कविता संग्रह– 'अक्षरों की पहली भोर', 'मौन के स्वर', 'मुक्ताकाश में', 'शब्द की अनुगूँज',

'बाल गीत संग्रह – 'टिम टिम तारे', आदि में भाषा की सुन्दर संयोजना देखी जा सकती है।

भाषा के विषय में डॉ. श्याम सुन्दर दास कहते है कि –'विचारों की अभिव्यक्ति के लिए व्यक्त ध्वनि–संकेत के व्यवहार को भाषा कहते है।' प्रसिद्ध दार्शनिक, प्लेटो ने 'सोफिस्ट' में विचार और भाषा के समन्वय में लिखते हुए कहा है कि –'भाषा और विचार में थोड़ा सा अन्तर है, विचार आत्मा की मूक या ध्वन्यात्मक बातचीत है पर वही जब ध्वन्यात्मक होकर होठों पर प्रकट होती है तो उसे भाषा की संज्ञा देते है।

स्वीट के अनुसार –

ध्वन्यात्मक शब्दों द्वारा विचारों को प्रकट करना ही भाषा है।[17] दोनों ही परिभाषाओं में ध्वन्यात्मक शब्दों को महत्व प्रदान है, विचारों के आदान–प्रदान के लिए ध्वन्यात्मक शब्दों का होना आवश्यक है।

कामताप्रसाद गुरु भाषा को पारिभाषित करते हुए लिखते है कि– ''भाषा वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचारों को दूसरों पर भली–भाँति प्रकट कर सकता है और दूसरों के विचार स्पष्टता को ग्रहण करने में सक्षम हो सकता है।''

षष्ठम् अध्याय – अन्य शिल्पगत विशेषताएँ

शिल्प का शाब्दिक अर्थ है– निर्माण अथवा रचना के तत्त्व। शिल्प शब्द वस्तुतः वास्तुकला या मूर्तिकला से सम्बद्ध है, जहाँ इसका प्रयोग हस्त–कौशल पर आधारित कलाओं में प्रमुख कारीगरी एवं कला के लिए होता है। साहित्य में जब रचना कौशल से सिद्ध सौन्दर्य की बात होने लगी तो वास्तुकला का यह शब्द साहित्य में प्रयोग किया जाने लगा। शिल्प का शाब्दिक अर्थ 'वृहद हिन्दी कोश' में इस प्रकार दिया गया है – ''किसी चीज़ के बनाने का, रचने का ढंग अथवा तरीका।'' अर्थात् वस्तु के रचने की जो विधियाँ या प्रक्रिया होती है, उनके समुच्चय को शिल्प कहा जाता है।

संस्कृत साहित्य में 'शिल्प' कई रुपों में प्रयुक्त होता है। 'एतरेय ब्राह्मण' में विधाता की रचना को 'देव शिल्प' और मनुष्य की सृष्टि के लिए 'एतोषाम् वैशिल्पनाम' कहा गया।'

वात्स्यायन ने शिल्प के अन्तर्गत ही 64 कलाओं का उल्लेख किया है। 'मनुस्मृति' में शिल्प का अर्थ 'कला–कौशल' के रुप में हुआ है। आचार्य भरतमुनि अपने ग्रन्थ 'नाट्य शास्त्र' में कलाओं और 'शिल्प' को काव्य का अंगांगी मात्र कहते है।

हिन्दी में शिल्प को अंग्रेजी के (Technique) टेकनिक का रुपान्तरण माना गया है। इसका अर्थ रचना पद्धति से है।

मार्क शोरर लिखते है– “The Difference between the contact of experience and achieved contact of its technique अर्थात् कथ्य अथवा अनुभव तथा सिद्ध काव्य अथवा कला के बीच का अन्तर ही शिल्प है।''

ज्ञानमण्डल लिमिटेड, बनारस द्वारा प्रकाशित 'वृहद् हिन्दी कोश' में दी गई परिभाषा है–'शिल्प से अभिप्राय हाथ से कोई वस्तु तैयार करने अथवा दस्तकारी या कारीगरी से है।'' जैसे वास्तुकार पत्थर को तराश कर सुन्दर मूर्ति का निर्माण करता है वैसे ही साहित्यकार अपने रचना कौशल से रचना को सौन्दर्य प्रदान करता है।

साहित्यकार के पास अपने मनोभाव तथा विषय की प्रस्तुति के लिए श्रेष्ठ शिल्प का होना नितान्त आवश्यक है, जिसके द्वारा वह अपने कथ्य को अक्षुण्ण रुप से पाठक तक संप्रेषित कर सके। शिल्प वह माध्यम है जिसके द्वारा लेखक अथवा साहित्यकार अपने अनुभव को रचनात्मकता का आधार बनाकर उसे कलात्मक मोड़ देता है। साहित्यकार के शिल्प की सफलता उसके द्वारा निर्मित शब्द–चित्र (बिम्ब) की स्पष्टता एवं सजीवता पर निर्भर करती है।

डॉ. उषा किरण सोनी ने गद्य एवं पद्य दोनों ही विधाओं में अपने मनोभाव तथा कथ्य को बिम्बों द्वारा स्पष्टता एवं सजीवता प्रदान कर अद्भुत रचना कौशल का परिचय दिया है।

इनकी शिल्पगत विशेषताओं को निम्न बिन्दुओं के अन्तर्गत विश्लेषित किया गया है–

1. **पात्रों की सृष्टि और विषयौचित्य** –पात्र ही कथानक की घटनाओं को उद्देश्य तक पहुँचाने का सशक्त माध्यम होते है। नियोजित घटनाओं के अनुरुप पात्रों की सृष्टि कर कहानीकार कहानी को विषयौचित्य प्रदान करता है। पात्रों की सृष्टि करने के लिए कहानीकार या लेखक को उसके परिवेश को जीना पड़ता है, जिस परिवेश से पात्रों को कथावस्तु के लिए चुना गया है। लेखक के मस्तिष्क पर उसके व्यक्तित्व की छाप होनी चाहिए और वही छाप पाठक पर भी लगनी चाहिए तभी कहानी का विषयौचित्य पूर्ण हो पाता है। लेखिका ने पात्रों की सृष्टि विषयौचित्य को ध्यान में रखते हुए की है।
2. **वातावरण की सृष्टि और उपयोगिता–** कहानी को वास्तविकता का आभास देने एवं यथार्थ पृष्ठभूमि प्रदान करने के लिए देश–काल, वातावरण की सृष्टि की जाती है। वातावरण की सृष्टि और उपयोगिता के अन्तर्गत सांस्कृतिक परम्पराओं, सामाजिक आचार–विचार, रहन–सहन तथा रीति–रिवाज़ आदि का भी चित्रण किया जाता है।

लेखिका द्वारा कहानी के कथाकाल और घटना–क्षेत्र के अनुरुप वातावरण की सृष्टि करने से कहानी की विश्वसनीयता और प्रभावोत्पादकता बढ़ गई है।

3. **उद्देश्यपरकता और भटकाव –** साहित्यकार की प्रत्येक साहित्य सर्जना के पीछे कोई न कोई उद्देश्य होता है। साहित्य केवल मनोरंजन के लिए ही नहीं होता बल्कि उसका उद्देश्य वास्तविक जीवन की झाँकी प्रस्तुत करना होता है। डॉ. उषा किरण सोनी का सम्पूर्ण साहित्य यथार्थ जीवनानुभूतियों का सृजनशील उपक्रम है।

'बनाए रखो
आँखों में जल
और अन्तर को तरल
वर्ना पसर जाएगा
मन तक मरुस्थल।'

लेखिका का सम्पूर्ण साहित्य उद्देश्यपरक है। कहीं–कहीं वासना के नाम पर होने वाले भटकाव को भी लेखिका ने सांकेतिक रुप में प्रकट करने का प्रयास किया है।

4. **संवादों का स्वरुप** – संवाद घटनाओं के विकास के साथ ही पात्रों के चरित्र का प्रकाशन भी करते है अर्थात् संवाद घटना के विकास और चरित्र के प्रकाशन में उपयोगी और स्वाभाविक साधन है। संवादों में स्वाभाविकता एवं संक्षिप्तीकरण का गुण होना चाहिए तभी वह कुतुहल को सजग रख पाने में सफल हो सकेंगे। लेखिका के साहित्य में संवादों का स्वरुप स्वाभाविक एवं आकर्षक है जो चरित्र प्रकाशन में तथा कथानक को गति प्रदान करने में सहायक है।

5. **प्रतीक और बिम्ब** – प्रतीक का शाब्दिक अर्थ – संकेत, अवयव या चिह्न होता है। प्रतीक से तात्पर्य– उस शब्द से है, जिसके द्वारा अदृश्य या अगोचर वस्तु को संकेतित किया जाता है।

'धुंध का कंबल ओढ़
फटी चादर में लिपटा फुटपाथ
कैसे बिताता है सर्द रात ?
नही जानती मखमली रजाई।'

इन पंक्तियों में 'सर्वहारा वर्ग' एवं 'सामंती वर्ग' का चित्रण 'फटी चादर में लिपटा फुटपाथ' एवं 'मखमली रजाई' प्रतीकों के माध्यम से किया गया है।

बिम्ब – बिम्ब शब्द अंग्रेजी के ईमेज (Image) शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है। जिसका अर्थ है –प्रतिकृति, अनुकृति, प्रतिछवि, प्रतिरुप, मूर्तरुप प्रदान करना।'

साहित्य में बिम्ब उस शब्द–चित्र को कहते है जिसे कलमकार अपनी कलमकूँची से पाठक या श्रोता के मानस–पटल पर अंकित करता है।

लेखिका के साहित्य में प्रतीक एवं बिम्बों का सुन्दर संयोजन देखने को मिलता है।

'रात ग्वालिन चली बाँटने चाँदनी का पात्र सिर धर
खिलखिलाता दौड़ता विधु–देख चिहुँकी खाई ठोकर
ढुल गया वह पात्र बरसी ज्योत्स्ना की धार भू पर
हो गया शीतल धरा का तप्त मन वह अमिय पीकर।'

चाँदनी रात का मानवीकरण कर बिम्ब सृजन किया गया है।

6. शैलीगत विशेषताएँ – शैली का सामान्य अर्थ है–ढंग, तरीका, रीति, विचारों के प्रकटीकरण का अंदाज़। किसी भी साहित्यकार की कृति में चाहे कविताएँ हो या कहानियाँ, चित्र हो या मूर्तियाँ या कुछ और जो अभिव्यक्ति की विशेषताएँ बार–बार मिलती है, उन्हीं का योग है–शैली। प्रत्येक व्यक्ति का व्यक्तित्व अन्य लोगों से भिन्न होता है और उसकी अभिव्यंजना पद्धति भी उसके व्यक्तित्व के अनुरुप होती है। डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य की शैलीगत विशेषताओं का अध्ययन करने पर पाते हैं कि इनकी भाषा–शैली भावानुकूल, कथ्यानुरुप है। इनकी कविताओं में सपाट–बयानी, व्यंजना प्रधान शैली के साथ–साथ कल्पना की अपनी अजस्र सृजनशीलता बिम्ब फैंकती चलती है तथा अनुभव की गहराई से पाठक के हृदय में उतरती है। सरल, सहज व प्रवाहपूर्ण भाषा में भावाभिव्यक्ति एवं भाव–सौन्दर्य बहुत ही आकर्षक है। कहीं सत्वधर्मी, सूत्रात्मक, परिभाषा मूलक उद्धरण बनने योग्य कविताओं में शब्दों की कसावट व अनुभव का निचोड़ गागर में सागर भरने सदृश हैं।

'कठिन है
स्वयं से हटना
कठिनतम है
परम पर टिकना।'

कथानक को गति प्रदान करने तथा वातावरण की सृष्टि करने में संवादों का स्वरुप देखते ही बनता है। शिल्प द्वारा बिम्बों को उभारते हुए कथ्य को ज्यादा स्पष्ट एवं आकर्षक बनाने में लेखिका सिद्धहस्त है। अलंकार, बिम्ब, प्रतीक, संवाद, रेखाचित्रात्मक, वर्णनात्मक, विवेचनात्मक, प्रश्नात्मक तथा व्यंजना प्रधान शैलियों में लेखिका ने कथ्य को रोचकता प्रदान की है। इनका अंदाज़े–बयां बहुत ही आकर्षक है, इन्हें जहाँ जैसी जरुरत महसूस हुई है। वहाँ वैसी ही शैली इनके आगे–आगे दौड़ पड़ी है, जिसे पाठक सहज रुप से आत्मसात कर

आनन्दानुभूति करने लगता है। पाठक की उत्सुकता अन्त तक बनी रहती है, ऐसी कुतूहल जाग्रत करने वाली शैली इनके साहित्य को सार्थकता प्रदान करने में पूर्णतः सक्षम है।

सप्तम अध्याय उपसंहार –

''डॉ. उषा किरण सोनी की साहित्य साधना–एक विश्लेषणात्मक अध्ययन'' विषय पर सात अध्यायों में शोध कार्य पूर्ण करने के पश्चात इस निष्कर्ष पर पहुँचना और आसान हो गया कि लेखिका डॉ. उषा किरण सोनी युग–बोध की लेखिका हैं। इन्होंने समाज में घटित घटनाओं को अन्तर्दृष्टि प्रदान करते हुए अपने अन्तर्मन के भावों को सृजन में उकेरा है। समाज की ज्वलंत समस्याओं को लेखनी का विषय बनाकर समाज–सुधार का मार्ग प्रशस्त किया है।

मानवीय संवदेनाओं की चितेरी लेखिका को मानवीय रिश्तों, विकृतियों, त्रासदियों को जानने समझने की अदम्य शक्ति प्राप्त है। इनके साहित्य में यथार्थ जीवनानुभूतियों की अभिव्यक्ति हुई हैं, जिसमें जीवनानुभव, भोगा हुआ यथार्थ और परिवार से प्राप्त पैतृक संस्कार, सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश इनका प्रेरणा स्रोत रहा है। इन्होंने वर्तमान समाज को बहुत करीब से देखा, समझा और जीवन के प्रत्येक विषय पर गम्भीरता से चिन्तन–मनन करते हुए भावों एवं विचारों को वाणी प्रदान की। इनकी लेखनी से जीवन का कोई भी विषय अछूता नहीं रहा, चाहे नारी जीवन की समस्या हो या महानगरीय जीवन की विडम्बना या हो निम्न वर्ग की मजबूरियों से भरा बिलबिलाता जीवन। 'झोपड़ियाँ' कविता में निम्न वर्गीय जीवन की मार्मिक अभिव्यक्ति दृष्टव्य है–

'जूठन और कचरे के ढ़ेर सरीखे महत्वपूर्ण मुद्दों पर
गालियों की बेबाक बौछार छोड़ती झोपड़ियाँ।'

डॉ. उषा किरण सोनी राजस्थान के ही नहीं देशभर के साहित्यकारों में अपना स्थान बना चुकी हैं और अपने नाम के अनुरुप उषा की सुनहरे किरणों के प्रकाश से सम्पूर्ण साहित्याकाश को आलोकित किए हुए है। इनका लेखन कौशल इतना सशक्त है कि पाठक स्वतः ही साहित्य सरिता में डुबकियाँ लगाने को मजबूर हो जाता है।

'अक्षरों की पहली भोर' से शुरु हुआ इनके लेखन का सफ़र अनवरत् जारी है। इनके चारों कविता संग्रह– 'अक्षरों की पहली भोर', 'मौन के स्वर', 'मुक्ताकाश में', 'शब्द की अनुगूँज' की कविताएँ सरस एवं आकर्षक शैली में मार्मिक संवेदना जाग्रत करने के साथ ही अनन्त के गूढ़तम रहस्यों को उज़ागर करने वाली भी हैं–

'गण्य पलों को भू पर आना
तेरे कृत कर्मों की परिणति

सतत घूम रहा कालचक्र है

तुझसी नश्वर है तेरी कृति।'

इसी प्रकार इनका बालोपयोगी साहित्य भी बाल–मनोविज्ञान को ध्यान में रखते हुए रचा गया है, जो बालकों के ज्ञानार्जन में सहायक है। बालकों को परिवेश, पर्यावरण तथा नैतिक शिक्षा का ज्ञान प्रदान करने के साथ–साथ देश–विदेश की यात्राओं के लाभ एवं पर्यटन का महत्व बताते हुए बालमन को प्रेरणा प्रदान करता है। इनके यात्रावृत – 'द्वार से धाम तक', 'मेरी यूरोप यात्रा' एवं बालगीत संग्रह –'टिम टिम तारे' बालकथा संग्रह –'घरौंदा' बहुत ही उपयोगी सिद्ध हुए है।

'रोज सवेरे सूरज आकर

धूप, ताप, प्रकाश फैलाकर

धरती में जीवन भर जाता

साँझ ढले अपने घर जाता।'

'सूरज का खेल' बालगीत बालकों को जीवन में सूरज की भाँति अपने कर्मों के प्रकाश से जग को आलोकित कर सुख प्रदान करने की प्रेरणा प्रदान करता है।'

परम्परा से प्राप्त मूल्य जीवन में संस्कार रुप में विद्यमान रहते है। लेखिका ने साहित्य में प्रत्येक जीवन मूल्य को प्रतिष्ठापित कर मानव जीवन में इनके महत्व व सार्थकता को अभिव्यक्ति प्रदान की है। आज समाज में आ रही विसंगतियाँ, टकराव, कुण्ठा, मानवीय दुर्बलताएँ आदि मूल्यों के हनन का ही परिणाम है। हमें अपने खोये हुए वजूद को प्राप्त करने के लिए हमारे शाश्वत मूल्यों, हमारी सभ्यता व संस्कृति को अपनाना होगा तभी हम भविष्य के दुष्परिणामों से बच सकते है, क्योंकि मनुष्य जीवन व मानवीय संवेदनाओं में गहरा सम्बन्ध है। मूल्य ही जीवन को मानवहित के महानतम संकल्पों की ओर प्रेरित कर जीवन को नई दिशा प्रदान करते हैं। मूल्य ही जीवन के वे उच्चादर्श हैं जिनके सहारे सम्पूर्ण मानवता फलीभूत होती है। लेखिका वर्तमान समाज में जागरुकता लाना चाहती हैं। इनके साहित्य में सामाजिक चेतना के बिम्बों की झलक प्रत्येक विधा में देखने को मिल जाती है। समाज की प्रत्येक समस्या को लेखनी का विषय बनाकर इन्होंने समाज–सुधार का मार्ग प्रशस्त किया। इनके साहित्य में मानवीय दुर्बलताएँ भी है तो जीवन मूल्यों का उपस्थापन भी है, ईर्ष्या–द्वेष, घृणा, वैर–विरोध, घात–प्रतिघात, वैमनस्य के साथ ही परोपकार, दया, ममता, क्षमा, पर–दुःखकातरता, प्रेम, वचन–बद्धता, सहनशीलता, स्वाभिमान की प्रतिष्ठा भी है। इन्होंने दाम्पत्य जीवन के विविध पक्षों को कहानियों के माध्यम से पाठक के समक्ष रखा है। इनका सम्पूर्ण साहित्य यथार्थ जीवनानुभूतियों का साहित्य है। इन्होंने

अपनी कविताओं, कहानियों के माध्यम से समाज की बुराइयों को उज़ागर कर समाज सुधार का पथ प्रशस्त किया तथा शिक्षा के महत्व के प्रति सामाजिक जागरुकता लाने का पुरजोर प्रयास किया है। सिर्फ़ बुराइयाँ गिनाना ही इनका उद्देश्य नहीं रहा बल्कि उनके समाधान भी इन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत किए है। लेखिका कुशल शब्द शिल्पी हैं। इनकी लेखनी एवं भाषा शैली में वो जादू है जो अनायास ही पाठक को आकर्षित कर आनन्दानुभूति करवा देता है। इनका सम्पूर्ण साहित्य इनके शिल्प कौशल की गवाही देता है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि डॉ. उषा किरण सोनी का सम्पूर्ण साहित्य वर्तमान समाज को आईना दिखाता सा जान पड़ता हैं। समाज का सच उजागर करती इनकी कहानियाँ प्रत्यक्ष घटित घटनाओं की अनुभूति कराती हैं तो निबन्धों में सूक्ष्मता के साथ गहरा संजीदापन है। शब्दों की बेजोड़ कसावट कम शब्दों में सारभूत कह देने में सक्षम हैं। भावों की अनुगामिनी भाषा में लालित्य, रंजकता, शब्द–छवियाँ तथा अर्थ–गांभीर्य है। शब्द–विन्यास, पद–विन्यास, अलंकारिकता, ध्वन्यात्मकता और बिम्बात्मकता आपकी भाषा को जीवंतता प्रदान करती हैं। रचनाओं में शोषित, प्रताड़ित, वंचित वर्ग के प्रति गहरी संवेदना हैं। लेखिका ने नारी को समाज में पहचान व उसका अधिकार दिलाने हेतु शिक्षा व ज्ञान–प्राप्ति को महत्व दिया हैं। इनके सम्पूर्ण साहित्य में कल्पना, यथार्थ और प्रतिभा का मिश्रण दिखने को मिलता हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

संदर्भ ग्रन्थ सूची

(क) आधार ग्रन्थ

(ख) सन्दर्भ ग्रन्थ

(ग) कोश साहित्य

(घ) पत्र–पत्रिकाएँ

(क) आधार ग्रन्थ

(अ) कविता संग्रह –

1. अक्षरों की पहली भोर, डॉ. उषा किरण सोनी, ज्ञान पब्लिकेशन्स, बीकानेर, प्रकाशन वर्ष, 2007

2. मौन के स्वर, डॉ. उषा किरण सोनी, ज्ञान पब्लिकेशन्स, बीकानेर, प्रकाशन वर्ष, 2012

3. मुक्ताकाश में, डॉ. उषा किरण सोनी, ज्ञान पब्लिकेशन्स, बीकानेर, प्रकाशन वर्ष, 2015

4. शब्द की अनुगूँज, डॉ. उषा किरण सोनी, कलासन प्रकाशन, माडर्न मार्केट, बीकानेर, प्रकाशन वर्ष, 2018

(ब) कहानी संग्रह –

5. काम्या, डॉ. उषा किरण सोनी, ज्ञान पब्लिकेशन्स, बीकानेर, प्रकाशन वर्ष, 2008

6. नेपथ्य का सच, डॉ. उषा किरण सोनी, ज्ञान पब्लिकेशन्स, बीकानेर, प्रकाशन वर्ष, 2009

7. तृष्णा तू न गई..., डॉ. उषा किरण सोनी, ज्ञान पब्लिकेशन्स, बीकानेर, प्रकाशन वर्ष, 2010

8. नये सूरज की तलाश, डॉ. उषा किरण सोनी, ज्ञान पब्लिकेशन्स, बीकानेर, प्रकाशन वर्ष, 2015

(स) बालोपयोगी साहित्य एवं यात्रा वृतान्त

9. टिम टिम तारे, डॉ. उषा किरण सोनी, ज्ञान पब्लिकेशन्स, बीकानेर, प्रकाशन वर्ष, 2010

10. द्वार से धाम तक, डॉ. उषा किरण सोनी, ज्ञान पब्लिकेशन्स, बीकानेर, प्रकाशन वर्ष, 2015

11. मेरी यूरोप यात्रा, डॉ. उषा किरण सोनी, ज्ञान पब्लिकेशन्स, बीकानेर, प्रकाशन वर्ष,2015

12. घरौंदा, डॉ. उषा किरण सोनी, कलासन प्रकाशन, माडर्न मार्केट, बीकानेर, प्रकाशन वर्ष, 2017

(द) निबन्ध संग्रह –

13. अक्षर से 'अक्षर' तक, डॉ. उषा किरण सोनी, कलासन प्रकाशन, माडर्न मार्केट, बीकानेर, प्रकाशन वर्ष, 2017

(य) अन्य

(1) सह लेखन संग्रह

14. सबके साथ : सबसे अलग, संपादक, धनंजय, सिंह, अमर भारती साहित्य संस्कृति संस्थान, प्रकाशन वर्ष 2005

15. मन में बसा आकाश, संपादक, धनंजय, सिंह, अमर भारती साहित्य संस्कृति संस्थान, प्रकाशन वर्ष 2006

(2) शोध ग्रन्थ –

16. कन्हैयाला सेठिया के साहित्य में जैन सम्मत जीवन मूल्य, डॉ. उषा किरण सोनी, ज्ञान पब्लिकेशन्स, बीकानेर, प्रकाशन वर्ष, 2013

(ख) सन्दर्भ ग्रन्थ

1. द डाइमेशंन ऑफ वेल्यूज, डॉ. राधाकृष्ण मुखर्जी
2. सोशियालॉजी, जोसेफ एच. फिचर
3. आधुनिक बोध, रामधारी सिंह दिनकर
4. ऋग्वेद
5. रामचरित मानस, गोस्वामी तुलसीदास
6. The Random House dictionary of the English language-Random
7. Principal Ethica, G.E.Moor
8. A Mamual of Ethics, J.S.Mackenzie
9. आधुनिक काव्य में नवीन जीवन मूल्य, हुकुमचन्द राजपाल
10. Fundamental of Ethics,W.M.Urban
11. साहित्य का उद्देश्य (लेख) साहित्य शिक्षा, संपा–पदुमलाल बख्सी, हेमचन्द्र मोरी हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर मुम्बई, 1947
12. Litrecture is a Criticism of life, M.Arnald.
13. It is fundamentally an expression of life though the medium of language.
14. कामायनी, जयशंकर प्रसाद
15. काव्यशास्त्र, भागीरथ मिश्र
16. भाषा और संवेदना, डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी
17. तारसप्तक, कवि व्यक्त पुनश्च
18. कविता के नये प्रतिमान, डॉ. नामवर सिंह
19. मानसरोवर भाग 1, प्रेमचन्द 2002, प्रकाशन संस्थान नई दिल्ली।

20. स्त्री पुरूषों के सम्बन्धों का विमर्श, डॉ. उषा राणावत, साहित्य आगार प्रकाशन चौड़ा रास्ता, जयपुर, 2007
21. नारी उत्पीड़न समस्या एवं डॉ. हरिदासराम जी समाधान, डॉ. हरिदासराम जी, साहित्य आगार प्रकाशन चौड़ा रास्ता, जयपुर, 2008
22. आधुनिक हिन्दी आलोचना के बीज शब्द, बच्चन सिंह, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, 2001
23. आलोचना और आलोचना, देवीशंकर अवस्थी, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, 2001
24. आलोचना की पहली किताब, विष्णु खरे, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, 2001
25. गोविन्द मिश्रः सृजन के आयाम, चन्द्रकान्त बांदिवडेकर, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, 2001
26. हिन्दी कहानी अंतरंग पहचान, रामदरश मिश्र, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, 2001
27. कहानी : अनुभव और अभिव्यक्ति, राजेन्द्र यादव, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, 2001
28. हिन्दी कहानी संरचना और संवेदना, डॉ. साधना साह, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, 2001
29. कवि कहानीकार अज्ञेय और मुक्तिबोध संवेदना और दृष्टि, डॉ. भरत सिंह, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, 2001
30. आधुनिक हिन्दी कहानी, लक्ष्मीनारायण, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, 2001
31. भाषा और संवेदना, डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी, भारतीय ज्ञानपीठ, प्रकाशन दिल्ली, 1964
32. हिन्दी साहित्य का इतिहास, रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभाकाशी, 2001
33. हिन्दी साहित्य वृहद इतिहास, डॉ. सावित्री सिन्हा, डॉ. दशरथ औझा नागरी प्राचारिणी सभा काशी, 2001
34. हिन्दी साहित्य का उत्तरवर्तीकाल, डॉ. सत्यदेव मिश्र, लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012
35. भारती संस्कृति, संतोष कुमार चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011
36. हिन्दी साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास, डॉ. विजय पालसिंह, रामधाकृष्ण प्रकाशन प्रा.लि. नई दिल्ली, 2012
37. हिन्दी साहित्य का परिचयात्मक इतिहास, डॉ. भगीरथ मिश्र, रामधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि. नई दिल्ली, 2012

38. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. बच्चन सिंह, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि. नई दिल्ली, 2010
39. हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. नगेन्द्र, मयूर पेपर बैक्स दिल्ली, 2003
40. हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. रामनिरंजन, साहित्य भण्डार इलाहबाद, 2012
41. हिन्दी साहित्य : एक आधुनिक परिदृश्य, सचिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय', राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली
42. नये साहित्य का सौन्दर्य शास्त्र, गजानन माधव मुक्तिबोध, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
43. कविता के नये प्रतिमान, नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
44. कविता और कविता, इन्द्रनाथ मदान, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
45. आधुनिक हिन्दी कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ, डॉ. नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग, हाउस, नई दिल्ली
46. आधुनिक हिन्दी कविता में शिल्प, कैलाश वाजपेयी, आत्माराम एण्ड सन्स, नई दिल्ली
47. आज का भारतीय साहित्य, सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन, 'अजेय', राजपाल एण्ड संस, नई दिल्ली
48. नई कविता के प्रमुख हस्ताक्षर, डॉ. संतोष कुमार तिवारी, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, 1980
49. कथा विवेचन और गद्य शिल्प, रामविलास शर्मा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2001
50. आधुनिक हिन्दी कविता में बिम्ब विधान का विकास, डॉ. केदारनाथ सिंह, दिल्ली, 1971
51. आधुनिक हिन्दी कविता, डॉ. जगदीश कुमार चतुर्वेदी, मेक मिलन प्रकाशन दिल्ली, 1975
52. काव्य में उदात्त तत्व, डॉ. नगेन्द्र, दिल्ली, 1961
53. भाषा और संवेदना, डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी, कलकत्ता, 1964
54. समकालीन हिन्दी कविता, डॉ. देशराज भाटी, साहित्य प्रकाशन, ग्वालियर, 1972
55. इधर की हिन्दी कविता, अजीत कुमार, किताबघर प्रकाशन, दिल्ली, 1999
56. काव्य शास्त्र, डॉ. भागीरथ मिश्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2001
57. हिन्दी विधाएँ रूपात्मक अध्ययन, डॉ. वेदनाथ सिंहल, हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़, 1988

58. साहित्य में आत्माभिव्यक्ति, डॉ. नगेन्द्र
59. हिन्दी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ, डॉ. शिव कुमार शर्मा

(ग) कोश साहित्य –

1. संस्कृत हिन्दी कोश, वामन शिवराम आप्टे
2. मानव मूल्य और साहित्य, डॉ. धर्मवीर भारती
3. मानव मूल्य व्याख्या कोष, भाग–1, धर्मपाल मैनी
4. भाषा विज्ञान, भोलानाथ तिवारी
5. मानक हिन्दी कोश, डॉ. रामचन्द्र वर्मा
6. वृहत् हिन्दी कोश, प्र. सं. डॉ. कालिका प्रसाद ज्ञान मण्डल, प्रा.लि. वाराणसी, तृतीय संस्करण, संवत् 2020
7. हिन्दी शब्द सागर (भाग 2), डॉ. श्याम सुन्दर दास
8. वृहत् पर्यायवाची कोश, डॉ. भोलानाथ तिवारी
9. हिन्दी का गद्य साहित्य, डॉ. रामचन्द्र तिवारी
10. हिन्दी साहित्य कोश भाग 1, डॉ. धीरेन्द्र वर्मा, ज्ञान मंडल प्रा.लि. वाराणसी, तृतीय संस्करण, संवत् 1985
11. आदर्श हिन्दी कोश, सं. पं. रामस्वरूप शास्त्री
12. संक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर कोश, सं. पं. रामस्वरूप शास्त्री

(घ) पत्र–पत्रिकाएँ

1. जगमग दीप ज्योति
2. (समीक्षा) नया शिक्षक
3. पिनाक
4. समकालीन भारतीय साहित्य
5. स्वातन्त्रोत्तर हिन्दी कहानियाँ, कमलेशवर, नेशनल बुक ट्रस्ट, दिल्ली
6. मधुमती, राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर
7. पुस्तक वार्ता, वर्धा
8. साहित्य अमृत, नई दिल्ली
9. तद्‌भव, लखनऊ
10. वागर्थ, कोलकाता

11. आलोचना, नई दिल्ली, पटना
12. पाखी, नोएडा
13. अक्सर, जयपुर
14. साक्षात्कार, साहित्य अकादमी, भोपाल
15. हंस, नई दिल्ली
16. नया ज्ञानोदय, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली
17. भाषा परिचय, भाषा एवं पुस्तक वि०., जयपुर
18. समकालीन साहित्य, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली
19. वैचारिकी, कोलकाता
20. वसुधा
21. भाषा
22. समाज कल्याण
23. भाषा परिचय
24. कादम्बिनी
25. जगमग दीपज्योति
26. विकल्प
27. शिविरा
28. नया शिक्षक
29. सदा नीरा
30. गृहशोभा
31. सरिता
32. वनिता
33. दैनिक भास्कर
34. राजस्थान पत्रिका
35. अन्य समसामयिक पत्र–पत्रिकाएँ

प्रकाशित शोध पत्र

देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८९/२

9 772395 711007

ISSN : 2395-7115

APRIL-JUNE 2019

Vol. 9, Issue 2

Impact Factor
3.478

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL MULTI DISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES QUARTERLY REFEREED RESEARCH JOURNAL

Editor
Dr. Naresh Sihag
Advocate

Publisher :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	सम्पादकीय	डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट	7–7
2.	डॉ. धर्मवीर भारती के काव्य में व्यक्त मूल संवेदना का स्वरूप	डॉ. विजयलक्ष्मी शर्मा	8–9
3.	वैदिक कालीन नारी	डॉ० रजनी धाकरे	10–13
4.	राजस्थान की मीना जनजाति का जनसंख्यात्मक तथा भौगोलिक अध्ययन	डॉ. मधु यादव	14–17
5.	प्रसाद जी के नाटकों में स्त्री पात्रों के पारिवारिक मूल्यों की प्रासंगिकता	हिमाँशु शर्मा डॉ पूजा धमीजा	18–21
6.	डॉ0 उषा किरण सोनी के साहित्य की मूल्यपरक मीमांसा	गायत्री साल्वी	22–24
7.	समकालीन हिन्दी कहानियों में प्रकृति और मानव का सम्बन्ध	मंजुषा. के. एम,	25–28
8.	उत्तर आधुनिकता : प्रवृतियाँ और हिन्दी कथा सहित्य	विकास साव	29–36
9.	मैत्रेयी पुष्पा के 'विज़न'– सामाजिक अंधेपन की शल्यक–चिकित्सा	डॉ. राजेन्द्र कुमार	37–40
10.	सामाजिक सरोकार : अवधारणा एवं स्वरूप	पी. मिनाक्षी	41–44
11.	नव जागरण काल और हिंदी साहित्य	पवन भारती	45–48
12.	परिचित एवं अपरिचित संबंधों की व्याख्या "अपरिचित" कहानी	डॉ. अम्बिली. वी. एस,	49–51
13.	शोध और अनुवाद की बढ़ती परस्परता	सुमन	52–56
14.	नारी लेखन का समकालीन हिंदी ग़ज़ल में योगदान	नूतन शर्मा	57–59
15.	भवानी प्रसाद मिश्र की कविताओं में गांधीवादी विश्वदृष्टि	डॉ. मनोज कुमार स्वामी	60–63
16.	तमिल के प्रसिद्ध राष्ट्रीय कवि श्री सुब्रहमण्य भारती के काव्यों में निहित राष्ट्रीय चेतना	डॉ. आर. पदमा	64–66
17.	आदिवासी जीवन की हकीकत : निर्मला पुतुल की जुबानी में	श्रीलेखा के.एन	67–70
18.	**ਪੰਜਾਬੀ ਨਾਵਲ ਵਿੱਚ ਨਾਰੀਵਾਦ**	**ਭਚਗਲੀਕਹ ਛਜਅਪੀ**	71-75
19.	अहल्या के अंतर्मन की व्यथा का मार्मिक चित्रण (सन्दर्भ : नरेंद्र कोहली कृत अहल्या)	राहुल प्रसाद	76–79
20.	प्रतिरोध की संस्कृति बुलंद करती "नव–वामपंथी कविता" : वर्तमान समाज के विशेष संदर्भ में	सैजू. के	80–82
21.	कामकाजी नारी के रूप में नासिरा शर्मा की शाल्मली	अजिना.ओ.वी	83–84
22.	कृष्णा सोबती के उपन्यासों में नारी	डॉ रश्मि सूद	85–87
23.	हाथरस जनपद में सिंचाई सुविधाओं का विकास : एक भौगोलिक अध्ययन	डॉ. कोमल सिंह डॉ. मधु यादव	88–92

Web. : www.grngo.org
Impact Factor : 3.478

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
April-June 2019 Page No. : 22-24

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

डॉ0 उषा किरण सोनी के साहित्य की मूल्यपरक मीमांसा

आदिकाल से ही सम्पूर्ण भारतीय वाङ्मय आदर्शो एवं मूल्यों के कारण श्रेष्ठ पद पर प्रतिष्ठित रहा है इसलिए हमारा देश संसार में विश्वगुरू कहलाता आया है। आदिकालीन प्राचीन धर्म ग्रन्थों, वेदों, पुराणों, उपनिशदों, स्मृतियों तथा रामायण, महाभारत जैसे महाकाव्यों आदि में इन आदर्शात्मक एवं नैतिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक धार्मिक मूल्यों को महत्त्व दिया गया है। हमारी सम्पूर्ण भारतीय सामाजिक व्यवस्था मूल्यपरक रही है। मूल्य ही मानव–जीवन को नई दिशा प्रदान कर समाज–निर्माण एवं समाज विकास में सहायक होते है।

मूल्य समाज की मान्यताओं और धारणाओं के अनुसार बनते–बिगड़ते रहते है, लेकिन शाश्वत मूल्य न कभी मिटते है और न ही कभी बदलते है। हर एक समाज अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप मूल्यों का निर्माण करता है। साहित्य पाठकों को जीवन के यथार्थ से जोड़ता है तथा नैतिक मूल्यों के प्रति आस्था उत्पन्न करता है।

आदि–अनादि काल से चली आ रही इस मूल्यपरक सामाजिक व्यवस्था की आवश्यकता प्रत्येक युग में रहेगी। वर्तमान समय में भी इसी आवश्यकता को समझते हुए साहित्यकारों द्वारा आदर्शात्मक मूल्यपरक साहित्य की रचना की जा रही है। इस क्षेत्र में राजस्थान के बीकानेर जिले की लेखिका डॉ0 उषा किरण सोनी ने सामाजिक फ़लक पर यथार्थ जीवनानुभवों की कूँची से कल्पनाओं के रंग भरते हुए मूल्यपरक साहित्य का चित्र उकेरा है। इनका सम्पूर्ण साहित्य मूल्यों पर आधारित है।

'प्रश्न चिह्न शाश्वत खड़ा है मुँह बाए
सर्जक के हाथों संग दृष्टि याचना की।
मन पाखी भरता ऊँची कल्पना की उड़ान
औंधे मुँह आ गिरता नित होती मृत्युकामना की।' (1)

प्रस्तुत पंक्तियों में आध्यात्मिक एवं दर्शन परक जीवन मूल्यों की प्रतिष्ठापना लेखिका द्वारा की गई है। ईश्वर सम्पूर्ण सृष्टि का नियामक है। वो ही सर्जक है और वो ही संहारक भी है।

'जीवन एक वरदान है–
उसका दिया गया।
उससे लिया गया।' (2)

मानव जीवन ईश्वर का दिया गया एक वरदान है। जीवन देने वाला भी ईश्वर है और जीवन लेने वाला भी ईश्वर ही है। लेखिका आत्मा–परमात्मा की सत्ता को कविता 'आवरण–अनावरण' के माध्यम ये विश्लेषित करते हुए लिखती है-

'मुक्ता है बंद सीप में
दिखता बस आवरण।' (3)

आध्यात्मिक एवं दर्शन परक जीवन मूल्यों के साथ ही लेखिका ने सामाजिक–सांस्कृतिक, राजनैतिक जीवन मूल्य की कल्पना साहित्य में कर समाज का मार्ग प्रशस्त किया है

'तिरे बैलों की घंटियों,
शंख और अज़ान के स्वर

गृहिणी ने ओज ले
माँड दी अल्पना द्वार पर
'घर' उद्‌भासित हुआ।' (4)

सांस्कृति जीवन मूल्यः आस्थों के स्वर से ओत–प्रोत पंक्तियों में सूर्योदय के समय का वर्णन कर हमारी संस्कृति की झाँकी प्रस्तुत की है। बैलों की घंटियों और भांख एवं अज़ान के स्वर सुनाई देते ही, भारतीय संस्कृति के अनुसार गृहिणी अपने द्वार पर रंगोली (माड़ना) माड़ देती है। 'घर' दमक उठता है। यह हमारी आस्था और संस्कृति से जुड़ी परम्परा है।

लेखिका समाज के निम्न वर्गीय लोगों के जीवन के प्रति संवेदना प्रकट करती हुई सामाजिक मूल्यों के प्रति जागरूकता लाने का प्रयास करती है। 'झोपड़ियाँ' कविता में इसी मार्मिक संवेदना को व्यक्त किया गया है। देखिए–

'नगरों और महानगरों के पंचतारा अंचल के
मखमल पर टाट सा पैबंद लगाती झोपड़ियाँ।' (5)

सामाजिक संवेदना जाग्रत करती कविता की पंक्तियों में नगरों और महानगरों में रहने वाले निम्न वर्गीय लोगों के प्रति संवेदना व्यक्त कर सामाजिक मूल्यों की स्थापना लेखिका द्वारा की गई है।

'भावों–अनुभावों का होता है व्यापार यहाँ
अलग–अलग मूल्यों में बिकते विचार यहाँ।' (6)

'शब्द की अनुगूँज' कविता संग्रह की कविता 'सारे शहर' की पंक्तियों के माध्यम से सामाजिक–राजनैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठापना कर लेखिका वर्तमान समय में महानगरीय भाहरी जीवन में आ रहे है परिवर्तन की ओर संकेत करती हुई मूल्यों के ह्रास के प्रति संवेदना प्रकट करती है'।

सांसारिक व भौतिक चकाचौंध मनुष्य को दिग्भ्रमित कर देती है। इन अनित्यतापूर्ण सांसारिक सुखों की भावना इतनी बलवती होती है कि मनुष्य अपने संयम व संस्कारों को परे छोड़कर कुत्सित व वर्जित कार्यों को अपनाकर अपने वास्तविक लक्ष्य से च्युत होने लगता हैं। निम्न पंक्तियों में इसी आशय को स्पष्ट किया गया है।

'ये कैसा अनचीन्हा पथ हैं ?
दिशि–दिशि भ्रम से आच्छादित है
नहीं सूझता लक्ष्य किधर है
बुद्धि हुई जाती है कुंठित
वल्गाहीन संयम का रथ है।' (7)

लेखिका ने काव्य पंक्तियों के इन मार्मिक अंशों के द्वारा आज के युग में निरन्तर सांस्कृतिक पतन की ओर अग्रसर होने वाली भावी पीढ़ी को सावचेत किया कि अपने जीवन में लक्ष्य प्राप्ति हेतु संयम व अनुशासन की अनुपालना करें। ऐसा कर लेखिका समाज में सांस्कृतिक जीवन मूल्यों को बरकरार रखना चाहती है। इनकी कहानियों में भी यह मूल्य दृष्टिगत होते है।

'शारदा के पिता ने अपनी बेटियों से कहा कि जब मै मूर्ति गढ़ूँ तब तुम मुझे उपन्यास पढ़कर सुनाया करों। उन्होंने सोचा, 'बेटियाँ श्रेष्ट साहित्य पढ़ेंगी, तो उनमें सुविचार व संस्कार जन्म लेंगे, दूसरे व मेरी आँखों के सामने रहेंगी साथ ही मेरा शौक भी पूरा हो जाएगा।' (8)

लेखिका के अनुभव की दृष्टि व सृष्टि दोनों ही परिपक्व है और अभिव्यक्ति कौशल ऐसा प्रभावकारी है कि पाठक उसके बहाव में आत्मविभोर हो आनन्दानुभूति करने लगता है। सांस्कृतिक जीवन–मूल्यों को इन्होंने कहानी की पंक्तियों में बड़ी कुशलता से स्थापित किया है साथ ही श्रेष्ट साहित्य के महत्त्व की ओर भी संकेत कर भावी पीढ़ी को प्रेरणा प्रदान की है।

'बंद द्वार के पीछे
बिकती मातृभूमि सिक्कों में
भुनता देशद्रोह किश्तों में
रचाते 'वे' आतंकी षड्यंत्र
स्वर्ग सी भू बन जाती नर्क।' (9)

'बन्द द्वार के पीछे' कविता की पंक्तियों में सामाजिक और राजनैतिक मूल्यों को वाणी देकर लेखिका समाज मे हो रहें षड्यंत्रों का पर्दापाश कर देशद्रोही आततायी जो हमारी मातृभूमि का सौदा करने से बाज़ नही आ रहे है और इस स्वर्ग–सी धरती को नर्क बना देना चाहते है। समाज के इस यथार्थ के प्रति आँखें खोल देना चाहती है।

'नए सूरज की तलाश' कहानी संग्रह के विषय में लेखिका कहती है कि – "इस संग्रह की कहानियाँ मानवीय सत्य और ऐसे जीवन मूल्यों के प्रतिस्थापन का प्रयास हैं जो उस क्षितिज की तलाश कर रही हैं जहाँ से उगा नया सूर्य मानवता के मस्तिक पर अपना धवल–निष्कलुष प्रकाश बिखराकर सम्पूर्ण मानव जाति को सकारात्मक ऊर्जा से आपूरित कर देगा।" निश्चय ही लेखिका साहित्य में मूल्यों को प्रतिष्ठापित कर समाज को नई दिशा प्रदान करना चाहती है। इनके साहित्य में आध्यात्मिक एवं दर्शन परक जीवन–मूल्यों के साथ ही सांस्कृतिक जीवन–मूल्यों का भी परिपाक हुआ है।

संदर्भ ग्रंथ

1. 'अक्षरों की पहली भोर' डॉ0 उषा किरण सोनी पृ. सं. 31
2. 'अक्षरों की पहली भोर' डॉ0 उषा किरण सोनी पृ. सं. 66
3. 'मौन के स्वर' डॉ0 उषा किरण सोनी पृ. सं. 64
4. 'अक्षरों की पहली भोर' डॉ0 उषा किरण सोनी पृ. सं. 50
5. 'अक्षरों की पहली भोर' डॉ0 उषा किरण सोनी पृ. सं. 26
6. 'शब्द की अनुगूँज' डॉ0 उषा किरण सोनी पृ. सं. 72
7. 'मुक्ताकाश में' डॉ0 उषा किरण सोनी पृ. सं. 31
8. 'तृष्णा तू न गई...' डॉ0 उषा किरण सोनी पृ. सं. 33
9. 'मौन के स्वर' डॉ0 उषा किरण सोनी पृ. सं. 33

–गायत्री साल्वी, शोधार्थी
कोटा विश्वविद्यालय, कोटा (राज.
सी–58 प्रगति नगर देवली अरब रो
बोरखेड़ा कोटा (राज.

वर्ष- 7, अंक- 27, 20 अगस्त 2020, श्रीगंगानगर, पृष्ठ- 48, मूल्य- 200/- सालाना
ISSN 2348- 568X

सृजन कुंज

शोध, संस्कृति एवं साहित्य की त्रैमासिक

RAJHIN/2014/56425

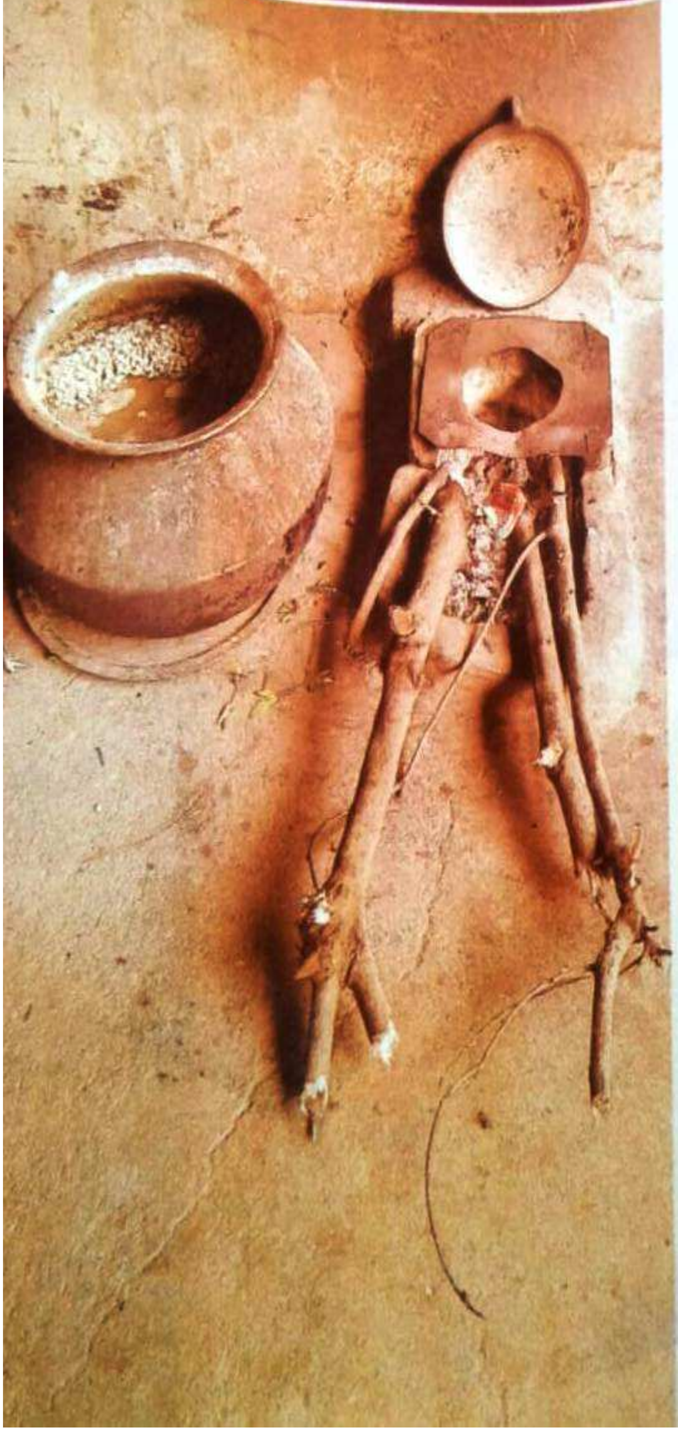

शोध

+ गायत्री साल्वी
+ नीलू टेलर
+ सीमा सिंघी बांठिया

संस्कृति

+ डॉ. शकुंतला देवी राणा
+ डॉ. गोपीराम शर्मा

साहित्य

+ कृष्णकुमार यादव
+ डॉ. प्रदीप उपाध्याय
+ प्रो. राजेश कुमार
+ मुरलीधर वैष्णव
+ जयप्रकाश मानस
+ सुदर्शन शर्मा
+ डॉ. सविता मिश्र
+ ओम वर्मा
+ डॉ. मनोहर सिंह राठौड़

वर्ष- 7, अंक- 27, 20 अगस्त 2020, श्रीगंगानगर

ISSN 2348 - 568X

सृजन कुंज

शोध, संस्कृति एवं साहित्य की त्रैमासिक

सम्पादक
डॉ. कृष्णकुमार 'आशु'

प्रबंध सम्पादक
अंशुल आहूजा

सह सम्पादक
डॉ. संदेश त्यागी

परामर्श मंडल
डॉ. मंगत बादल
डॉ. कृष्ण कुमार रत्तू
डॉ. नवज्योत भनोत
डॉ. रामनिवास 'मानव'
डॉ. अरुण शहैरिया 'ताइर'
स. भूपेन्द्र सिंह
विनोद शर्मा
डॉ. रामनारायण शर्मा

संरक्षक
श्री मोहन आलोक
श्री गोविंद शर्मा
श्री विजय गोयल, एडवोकेट
श्री जयदीप बिहाणी
श्री विक्रम चितलांगिया
श्री प्रहलाद राय टाक
श्री राजकुमार जैन 'राजन'

कम्प्यूटर ग्राफिक्स
विरेन्द्र लबाणा
मो. 97726-15600

सम्पादकीय पत्र-व्यवहार का पता
'शब्दांश' बालाजी की बगीची, म.नं. 488, वार्ड नं. 10, पुरानी आबादी, श्रीगंगानगर-335001 (राजस्थान)
मो. 094146-58290
076150-34573
ईमेल-
srijankunj@gmail.com
dr.kkashu@gmail.com

सम्पादकीय पद अव्यावसायिक और अवैतनिक है। संचालन साहित्यिक और सांस्कृतिक उन्नयन के लिए है। प्रकाशित रचनाओं की रीति-नीति और विचारों से प्रकाशक अथवा सम्पादक मंडल की सहमति अनिवार्य नहीं है। शोध आलेखों में प्रयुक्त किए गए तथ्यों के प्रति संबंधित लेखक उत्तरदायी हैं।

अनुक्रमणिका

सम्पादकीय: साहित्य, साहित्यकार और कोरोनाकाल 2

शोध 3-12

संस्कृति 13-18

साहित्य 19-48

सदस्यता शुल्क

■ वार्षिक शुल्क: 200.00 रुपए ■ तीन वर्ष : 500.00 रुपए ■ सात वर्ष : 1100.00 रुपए ■ आजीवन: 2100.00 रुपए

सृजन कुंज 'पियर रिव्यूड' जर्नल है। इसमें प्रकाशित होने वाले शोध आलेख विशेषज्ञों के पास आकलन के लिए भेजे जाते हैं। विशेषज्ञों की समिति पूर्णतः गोपनीय है। शोध आलेखकों से आग्रह है कि अपने आलेख शोध के अंतर्राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप भेजें।

सदस्यता शुल्क 'सृजन कुंज' के नाम से एटपार चेक अथवा ड्राफ्ट से भेजा जा सकता है। आप 'सृजन कुंज' के आईडीबीआई बैंक खाता संख्या 0356102000007153 IFSC IBKL 0000356 में भी जमा करवा सकते हैं। नकद शुल्क देते समय कृपया रसीद अवश्य प्राप्त करें।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक कृष्ण कुमार 'आशु' द्वारा केयर ऑफ विजय आहूजा, संजय वाटिका के पास, वार्ड नम्बर 9, पुरानी आबादी, जिला- श्रीगंगानगर, राजस्थान से प्रकाशित एवं पारीक कम्प्यूटर प्रिन्टर्स, पावर हाउस रोड, नियर रेलवे क्रॉसिंग, श्रीगंगानगर से मुद्रित
सम्पादक: कृष्ण कुमार 'आशु' शीर्षक सत्यापन पत्र - RAJHIN/2014/56425

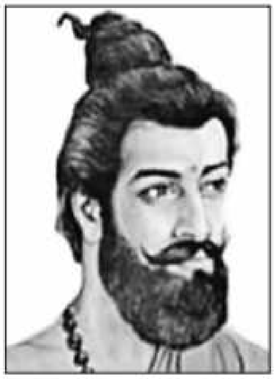

रस ही सौन्दर्य है,
रस ही आनन्द है,
रस आस्वाद भी है,
आस्वाद्य भी है, रस स्वयं प्रकाश है
तो रस ब्रह्मानन्द सहोदर भी है।

– भरतभूमि

शोध

3–12

डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य में सामाजिक चेतना	गायत्री साल्वी	4-5
सौन्दर्य निरूपण की भारतीय दृष्टि	नीलू टेलर	6-9
बहुआयामी वातायन के पृष्ठ खोलती कहानियां	सीमा सिंघी बांठिया	10-12

आलेख

गायत्री साल्वी
शोधार्थी कोटा विश्वविद्यालय, कोटा में शोधरत हैं।

द्वारा श्री दुर्गाशंकर वर्मा
सी-58 प्रगति नगर देवली अरब रोड
बोरखेड़ा कोटा (राज.)
पिन कोड-324001
मो. नं. - 9413945002

डॉ. उषा किरण सोनी अपनी यात्रा का आरम्भ 'अक्षरों की पहली भोर' कविता संग्रह से करती हुई यथार्थ जीवनानुभूतियों को पाठक के समक्ष बड़ी शिद्दत के साथ प्रस्तुत करती हैं। शब्द को रचना रूप देने वाली यह शख्स अपने परिवेश की बहुरंगीय दृश्यावली से उल्लसित, रोमांचित, व्यथित तथा प्रेरित होती रही हैं।

डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य में सामाजिक चेतना

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। सामाजिक प्राणी होने के नाते उसके जीवन पर समाज का प्रभाव पड़ना स्वभाविक है। साहित्य समाज का दर्पण है। समाज में घटित प्रत्येक घटना का प्रभाव साहित्य में नज़र आता है। डॉ. उषा किरण सोनी के साहित्य में जो सामाजिक चेतना के बिम्बों की झलक देखने को मिलती है, उसमें देश-काल, ग्रामीण एवं महानगरीय जीवन, पारिवारिक वातावरण, सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक वर्ग चेतना, नारी चिंतन, भू-मण्डलीकरण, व्यक्तित्व चेतना और उत्तर आधुनिकता का प्रभाव स्पष्ट नज़र आता है।

डॉ. उषा किरण सोनी अपनी यात्रा का आरम्भ 'अक्षरों की पहली भोर' कविता संग्रह से करती हुई यथार्थ जीवनानुभूतियों को पाठक के समक्ष बड़ी शिद्दत के साथ प्रस्तुत करती है। शब्द को रचना रूप देने वाली यह शख्स अपने परिवेश की बहुरंगीय दृश्यावली से उल्लसित, रोमांचित, व्यथित तथा प्रेरित होती रही है। अपने जेहन में घुमड़ते विचारों को व्यक्त करते हुए लेखिका यथार्थ के अनुभवों को व्यावहारिकता के धरातल पर प्रतिष्ठित कर यथार्थ को भिन्न-भिन्न कोणों से उजागर करती है। पाठक इन रचनाओं को पढ़कर कभी उल्लसित तो कभी रोमांचित होता हुआ भावों के सागर में डुबकियाँ लगाता हुआ रसास्वादन करता है।

संवेदना जगाने वाले समाज के निर्धन, ग़रीब, बेबस झोपड़ियों में रहने को लाचार वर्ग का चिंतन लेखिका ने बड़े ही अनूठे ढंग से किया है।

'गंदे नाले के पास, पुल के नीचे पटरी के किनारे
गंधाती बातास बीच, उगी हुई झोपड़ियाँ।'..1

तो कही मनष्य के किये गये जुल्मों, अत्याचारों और प्रकृति से किये गये खिलवाड़ पर 'धरती की चेतावनी' कविता में सुन्दर वर्णन हुआ है-

'ब्रह्माण्ड का मैं कण मात्र एक
फिर तेरी हस्ती की क्या बिसात ?
चेतावनी पर धरता न कान।
करता ही जाता दुराचार।'...2

पुरुष प्रधान समाज में नारी की स्थिति बड़ी सोचनीय है। 'सिर्फ पायदान है' कविता की पंक्तियों से यह भली प्रकार स्पष्ट हो जाता है -

'देवी, रानी, प्रिया, दासी, माँ, पत्नी उसके लिए विधान है।

सब कुछ है औरत जग में, बस नहीं एक इंसान है।'..3

डॉ. उषा किरण सोनी ने केवल कविता ही नहीं बल्कि कहानी विधा को भी अपनी लेखनी का विषय बना समाज में वर्तमान दौर की पाठकीय जरूरतों को पूरा करने का सफल प्रयास किया है। इनके कहानी संग्रह 'काम्या', 'तृष्णा तू न गई ....' 'नेपथ्य का सच' में समाज के प्रशिक्षण टूटते बिखरते सामाजिक सम्बन्धों को रचना रूप में प्रस्तुत कर समूचे समाजशास्त्र का आधार हमारे समक्ष उपस्थित किया गया है।

'अनुष्ठान' कहानी की सुरजा बेटे के शव को गोद में लिए दहाड़ें मार-मार कर रोये जा रही थी और छाती पीट-पीटकर कहे जा रही थी - 'अरे! मैंने खुद ही तेरी जान ले ली मेरे बच्चे, हाय! मुझे क्या पता था कि दूसरी मां की गोद उजाड़ने के प्रयास का दण्ड देने के लिए परमात्मा मेरी ही गोद सूनी कर

देगा।'...4

समाज की हर स्त्री मातृत्व सुख की चाह रखती है। मातृत्व सुख की चाह उसके पेट की भूख से भी बढ़कर होती है। 'सृजन' की चाह कहानी से - 'राजम्मा को नर्स के शब्द किसी नैसर्गिक संगीत से कम न लगे। उसने तुरन्त नर्स की ओर उन्मुख हो, हाथ जोड़कर विनती की, मेरा तुरन्त ऑपरेशन कर दे ताकि मैं पुनः माँ बनने का सुख पा सकूँ।'...5

डॉ. उषा किरण सोनी की सभी कहानियाँ सार्थक है। संवेदना के व्यापक फलक की रचयिता को इस प्रक्रिया में कष्ट, पीड़ा और वेदना को निमंत्रण देना पड़ता है। वह चरित्रों के सुख-दुख, आशा-आकांक्षा, द्वन्द्व, कुण्ठा सभी का बारीक अवलोकन करती है। समाज में पारिवारिक रिश्तों की समझ, विश्वास, रिश्तों के टूटने की पीड़ा आदि को लेखिका ने अपनी लेखनी से जीवन्तता प्रदान की है। 'घर लौटे पिता के उदास चेहरे को देखकर शारदा को कुछ भी पूछने की आवश्यकता न रही। उसने इसे अपना भाग्य लेख मान लिया और सोचा,' यदि पति को दूसरी पत्नी से सुख मिल सकता है तो वे अवश्य पाएँ। मैं तो अब यहीं पिता के घर रहूँगी।'....6

वे दिन भी क्या दिन थे जब जीवन का दूसरा नाम ही खुशी था। हर ओर कलियाँ ही कलियाँ। उन्मुक्त विचरण ही लक्ष्य। चिन्ता, ईर्ष्या, कुंठा कुछ भी नहीं। गुड़िया सी गुड़िया लिए फिरती रहती थी। एकाएक एक दिन समय ने पंख फैलाकर अपने नीचे पापा को समेटा और उड़ गया, फिर सब कुछ बदल गया। घर से खुशी काफूर हो गई।'.......7

'मौन के स्वर' कविता संग्रह की कविताएँ अन्तःकरण के उन्मेष की कविताएँ है। समस्त कविताओं में यथार्थ की चिंतनपरक अनाविल अभिव्यक्ति है। संग्रह की अनेक कविताओं में गहरी व्यथा के साथ कवयित्री ने उन्हें अनावृत किया है। जीवन के अनुभवों में पकी कविताएँ अनुचिंतन, आलोड़न, निसर्ग शीर्षकों के त्रिकोण में बंधी है।

भारतीय समाज में स्त्री होना अभिशाप रहा है, 'बेटी' कविता में पिता का ग्लानी बोध

मुखर हुआ है।

'कुल तारक समझा था
मैंने जिसको निजकण्ठ का हार
कुल बोरन कर न सका।
वह अपना भी उद्धार।'...8

भारतीय हिन्दू समाज में आज भी लड़के-लड़कियों के रिश्ते अपने ही समुदाय में किये जाते है। 'तुम इन तस्वीरों को देखो, यदि पसंद नहीं आती है तो मैं अन्य अच्छे परिवारों से सम्पर्क करूँगा पर तुम्हें अन्य समुदाय की किसी लड़की से विवाह की अनुमति नहीं दूँगा।'.....9

डॉ. उषा किरण सोनी के कहानी संग्रह 'नेपथ्य का सच' के बारे में रवि पुरोहित का मानना है कि, ''नेपथ्य का सच' की कहानियों में मानवीय दुर्बलताएँ भी है, तो जीवन मूल्यों का उपस्थापन भी है। यहाँ स्वार्थपरता, छल-कपट, लोभ-मोह, ईर्ष्या-द्वेष, वैर-विरोध और घात-प्रतिघात भी है, तो पर दुःख कातरता, परोपकार, दया, क्षमा, वचन-पालन, सहनशीलता और स्वाभिमान की प्रतिष्ठा भी है। इन कहानियों में दाम्पत्य प्रेम के विविध आयामों में नारी मन के उद्वेलन, मर्यादा-बंधन, आडम्बरहीन सौजन्यशीलता आदि बिम्बों को नेपथ्य के झीने आवरण के भीतर झिलमिलाते हुए देखा जा सकता है, वहीं पुरुष-मन के छल-छद्म एवं स्वार्थपरता के बिम्ब भी दृष्टिगोचर होते दिखाई देते है।'....10

निश्चय ही लेखिका ने अपने साहित्य से समाज में सामाजिक समरसता एवं सामाजिक चेतना जाग्रत कर समाज को नई दिशा प्रदान की है।

संदर्भ : -

1. डॉ. उषा किरण सोनी 'अक्षरों की पहली भोर' पृ.सं. 26
2. डॉ. उषा किरण सोनी 'अक्षरों की पहली भोर' पृ.सं. 28
3. डॉ. उषा किरण सोनी 'अक्षरों की पहली भोर' पृ.सं. 47
4. डॉ. उषा किरण सोनी 'काम्या' पृ.सं. 26
5. डॉ. उषा किरण सोनी 'काम्या' पृ.सं. 55
6. डॉ. उषा किरण सोनी 'तृष्णा तू न गई' पृ.सं. 34
7. डॉ. उषा किरण सोनी 'नेपथ्य का सच' पृ.सं. 17
8. डॉ. उषा किरण सोनी 'मौन के स्वर' पृ.सं. 24
9. डॉ. उषा किरण सोनी 'नेपथ्य का सच' पृ.सं. 38
10. डॉ. उषा किरण सोनी 'नेपथ्य का सच' भूमिका से।

परिशिष्ट

साक्षात्कार

(प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध हेतु शोधार्थी द्वारा लिया गया डॉ. उषा किरण सोनी का साक्षात्कार)

1. गा.सा. – आपको लेखन की प्रेरणा कैसे मिली ?

डॉ.उ.कि.सो.– इंजीनियर पिता श्री रामचन्द्र जी का शिक्षा के प्रति गहरा रुझान था। नाना श्री रामाज्ञा प्रसाद जी तथा माँ श्रीमती बिंदू देवी को श्रेष्ठ साहित्य पढ़ने की आदत थी। स्वर्णकारी व्यवसाय से जुड़े नानाजी को जेवर बनाते समय उच्चकोटि की गद्य व पद्य रचनाएँ सुनाना मेरी ड्यूटी थी। इस तरह अनजाने ही साहित्य रोम–रोम में बस गया। 1966 में माँ के मात्र 32 वर्ष की आयु में हुए आकस्मिक देहावसान ने भावों को शब्दों में पिरोकर कविता के रूप में कागज़ पर धर दिया फिर धीरे–धीरे कलम चल पड़ी।

2. गा.सा.– आपके लेखन में सामाजिक विसंगतियों की अभिव्यक्ति से क्या अभिप्राय है ?

डॉ०उ.कि.सो. – समाज में लोगों की कथनी व करनी में धरती व आसमान सा फ़र्क दिखता है। इन विसंगतियों को देख हृदय की अकुलाहट रचना के रूप में अभिव्यक्त हो जाती है। इस अभिव्यक्ति के दो उद्देश्य होते हैं– पहला अपने हृदय की अकुलाहट में कमी लाना और दूसरा–शायद इन रचनाओं को पढ़कर सामाजिक विसंगतियों में कमी आए।

3. गा.सा.– आपने कहानियों में ज़्यादातर दाम्पत्य जीवन से जुड़ी घटनाओं को क्यों चुना ?

डॉ.उ.कि.सो.– दाम्पत्य मानव समाज का आधार भी है और भविष्य भी। दंपति एक–दूसरे के पूरक होते हैं। उनके बीच वैचारिक साम्य घर को स्वर्ग बना देता है और उनका वैचारिक वैषम्य तरह–तरह की समस्याओं को जन्म देता है फिर उन समस्याओं को सुलझाने में पूरा जीवन लग जाता है। यही हर कहानी का मर्म भी है और विषय भी और यही चुनाव का कारण भी।

4. गा.सा. – क्या आपकी कहानियाँ जीवन के यथार्थ को इंगित करती हैं ?

डॉ. उ.कि.यो. – प्रसिद्ध विद्वान डॉ. काशीनाथ सिंह ने लिखा है – ''कहानी वह झूठ है जो जीवन के सच को उजागर करती है।'' इस दृष्टि से कहूँ तो मेरी हर कहानी जीवन के यथार्थ को इंगित करती हैं।

5. गा.सा. – आपकी यात्राओं के अनुभव बाल पाठकों को कहाँ तक सही मायने में प्रेरित कर सकेंगे ?

डॉ. उ.कि.सो. – केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, नई दिल्ली द्वारा संचालित साहित्यिक पत्रिका

'भाषा' में मेरे यात्रा वृतांत प्रकाशित होते रहे है। इस पत्रिका के अनेक प्रबुद्ध पाठकों ने मुझे सुझाव भेजे कि ये यात्रावृतांत रोचक एवं ज्ञानवर्धक है अतः इन्हें पुनः बाल पाठकों के लिए लिखे व प्रकाशित कराएँ। मेरे विचार से मेरी यात्राओं के अनुभव बाल–पाठाकों के लिए लिखें व प्रकाशित कराएँ। मेरे विचार में मेरी यात्राओं के अनुभव बाल–पाठकों को देश–विदेश घूमने–देखने अर्थात् पर्यटन के लिए तो प्रेरित करेंगे ही, इसके साथ–साथ उनके तत्सम्बन्धी स्थानीय ज्ञान में वृद्धि भी करेंगे।

6. गा.सा. – कविताओं में आध्यात्मिक व दर्शनपरक अभिव्यक्ति की प्रेरणा आपने कहाँ से प्राप्त की ?

डॉ. उ.कि.सो. – परिवार में सभी का शिवोपासक होना, शिव अर्थात कल्याणकारी धर्म का पालन करने पर विश्वास करना, साथ ही बड़ों की, लालसाओं से दूर रहकर सत्कर्म करने की प्रेरणा पाना कब रक्त में आ समाई और कविताओं में ढुलक पड़ी, पता ही नहीं चला। 'कन्हैयालाल सेठिया के साहित्य में जैन सम्मत जीवन मूल्य' विषय पर शोध करते समय, उनकी रचनाओं की गहराई से प्रभावित हो, ह्रदय में समाया अध्यात्म व दर्शन आत्मा में बस गया।

7. गा.सा. – आप साहित्य के क्षेत्र में किस मुकाम तक सफलता अनुभव करती हैं ?

डॉ. उ.कि.सो. – मैं अभी साहित्य की देवी माँ शारदा के चरणों में उनकी कृपा हेतु वंदना की मुद्रा में ही बैठ पाई हूँ।

8. गा.सा.– हिन्दी साहित्यकारों की भीड़ में आप अपने आपको किस प्रकार अलग पाती हैं?

डॉ. उ.कि.सो. – साहित्यकारों की बहुतायत को मैं भीड़ नहीं मानती। उनकी कृतियों में गहनता, विशिष्टता, भेद व विभिन्नता हैं। मुझसे जैसा माँ शारदा रचवाती हैं, मैं वैसा रचाव करने का प्रयास करती हूँ।

9. गा.सा. – आपके साहित्य में शोध कार्य की दिशाएँ क्या होंगी ?

डॉ. उ.कि.सो. – मेरे साहित्य के शोध कार्य की दिशा साहित्य की गहनता को पढ़ने वाले पाठक एवं शोधार्थी ही निश्चित करेंगे।

10. गा.सा.– आपके साहित्य का बेहतर भविष्य आप किस विधा में देखती हैं ?

डॉ. उ.कि.सो. – साहित्य की अनेक विधाएँ है। प्रत्येक विधा की अपनी महत्ता एवं सौन्दर्य

है। मैं स्वयं कई विधाओं में रचना करती हूँ परन्तु मैं कविता विधा को अपने अधिक निकट पाती हूँ मेरे साहित्य का बेहतर भविष्य कविता विधा हैं।

11. गा.सा. – हिन्दी साहित्य के नए आयाम क्या होंगे ? हिन्दी साहित्य आज किस मुकाम पर है आप कैसा अनुभव करती है ?

डॉ.उ.कि.सो. – अमीर खुसरो के काल में हिंदवी ने भाषा का रूप लिया, धीरे–धीरे साहित्य समृद्ध हुआ। हिन्दी साहित्य प्रारम्भ से ही तृप्तिदायी व मनमोहक रहा है। हिन्दी साहित्य कान्तिमान व प्रभावशाली है तथा इसका भविष्य और भी उज्ज्वल है बस थोड़ी सी गम्भीरता की आवश्यकता है। शब्दों को भीड़ से निकालकर ब्रह्म के समान उचित आसन पर प्रतिष्ठित करना होगा।

12. गा.सा. – साहित्य से आपका जुड़ाव स्वाभाविक है या कोई विशेष कारण है ?

डॉ.उ.कि.सो. – साहित्य से प्रत्येक व्यक्ति का स्वाभाविक सम्बन्ध होता है – किसी के लिए प्रशासनिक तो किसी के लिए व्यावसायिक। कुछ के लिए चिन्तन तो कुछ के लिए मनोरंजन। मेरे लिए साहित्य हृदयोद्गार है और मेरा उससे वही सम्बन्ध है जो देह का आत्मा से हैं।

13. गा.सा. – अपने साहित्य में आप किन सरोकारों को लेकर आगे बढ़ी हैं ?

डॉ. उ.कि.सो. – मैं साहित्य में कुछ नया सीखने, अपने ज्ञानकोष को समृद्ध करने, अध्यात्म, चिन्तन तथा अपने रचाव द्वारा आत्मतुष्टि के सरोकारों को लेकर प्रयासरत हूँ। सामाजिक सरोकारों की पृष्ठभूमि में सुचिन्तन को शब्दबद्ध कर सकूँ। यही कामना हैं।

14. गा.सा. – आपने सबसे अन्त में निबन्ध विधा को क्यों चुना ?

डॉ. उ.कि.सो.– वैयक्तिक भावनाओं, आदर्शों, आध्यात्मिक व दार्शनिक–आत्यंतिक सभी विचारों को कहानी, कविता, संस्मरण .... आदि विधाओं में पूरी तरह अभिव्यक्त करना संभव नहीं होता। यह काम केवल निबन्ध विधा में ही सम्भव है। अपने मन की अतृप्ति की पूर्ति रचनाकार मन खोल कर निबन्ध विधा में ही कर सकता है। वह अपने विचारों की अभिव्यक्ति आवश्यकतानुसार वर्णनात्मक, विवरणात्मक, विचारपरक, भावात्मक, लालित्यपूर्ण तथा विश्लेषणात्मक शैलियों में निबन्ध विधा में कर सकता है। मैंने भी अपने मन की वैचारिक अतृप्ति की पूर्ति के लिए अन्त में निबन्ध विधा को चुना।

कॉन्फ्रेंसों में प्रस्तुत पत्र

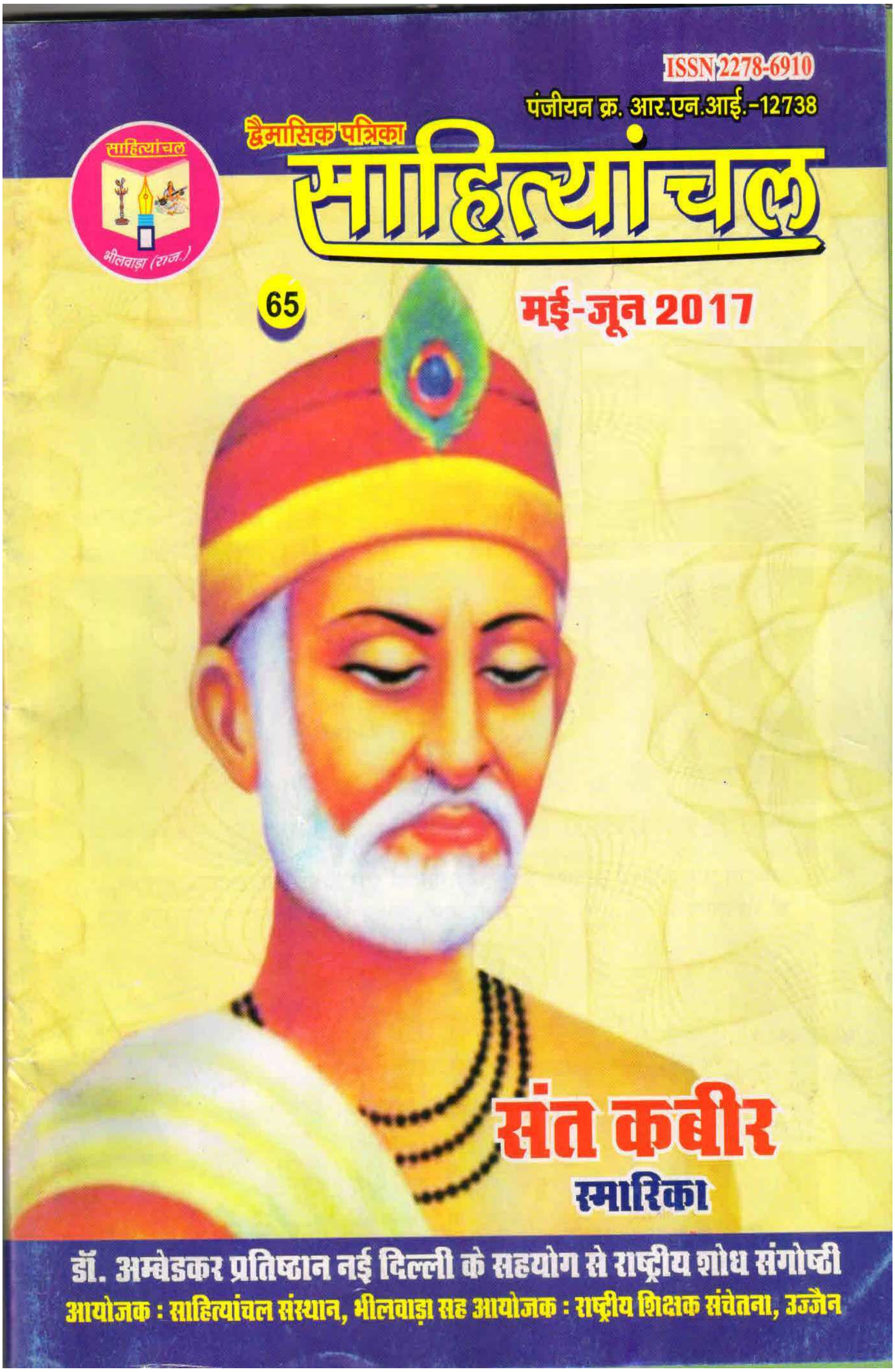

अनुक्रम

लेखक	पृष्ठ सं.
1. मत–अभिमत	2
2 संपादकीय	4
शोध आलेख	
3. राजमति सुराणा	6
4. माधुरी शर्मा	8
5. पूजा चौधरी	11
6. अवधेश जौहरी	12
7. मधु मीणा	14
8. रेखा भालेराव	16
9. दिव्या जोशी	20
10. डॉ. सविता टाक	24
11. चाइना मीणा	26
12. किशनलाल धाकड़	28
13. नरेन्द्र स्वर्णकार	31
14. मीना पांडेय	33
15. डॉ. साधना गुप्ता	35
16. डॉ. रोशनी भारिल्य	39
17. डॉ. अजित जैन	43
18. डॉ. मनोरमा जैन	49
19. श्रीमती शशि ओझा	54
20. प्रो. सुरेश माहेश्वरी	57
21. प्रो. शैलजा माहेश्वरी	60
22. सरिता वैष्णव	64
23. सुनील कुमावत	66
24. निर्मला पुरसवानी	69
25. डॉ. भारती शर्मा	71
26. डॉ. प्रभु चौधरी	75

लेखक	पृष्ठ सं.
27. एम.डी. कनेरिया	79
28. ज्ञानीकुमारी जाट	81
29. सुविधा पंडित	84
30. पवन कुमार गर्ग	87
31. मुकेश कुमार वैष्णव	89
32. गायत्री सालवी	91
33. डॉ. कृष्णा आचार्य	93
34. श्रीमती दीप्ति कुलश्रेष्ठ	97
35. अमित कुमार कसाना	102
कविता	
36. चतुर कोठारी	15
37. शालिनी खरे	38
38. डॉ. प्रीति प्रवीण खरे	70
39. डॉ. विनयकुमार विष्णुपुरी	74
40. कीर्ति श्रीवास्तव	81
गीत	
41. कृपाशंकर अचूक	
42. कन्हैयालाल अनंत	59
43. डॉ. गार्गीशरण मिश्र 'मराल'	68
दोहा	
44. डॉ. ए.बी. सिंह	27
45. डॉ. सत्यनारायण सिंह	86
क्षणिकाएं / हाईकू	
46. रमेश मनोहरा	83
47. गुलाब मीरचंदानी	103
लघुकथा	
48. आचार्य सूर्यप्रसाद शर्मा	19/30

संत कबीर एवं समाज सुधार

— गायत्री सालवी

आदत से अक्कड़, स्वभाव से फक्कड़, जन्म से स्पृश्य, कर्म से वंदनीय, बाहर से कठोर, अन्दर से ोमल, सिर से पैर तक मस्तमौला युग प्रवर्तक और ांतिदृष्टा संत कबीर मध्यकालीन तिमिराच्छादित ातावरण में ज्ञानदीप लेकर अवतरित हुए। कबीर का ाल विधर्मी शासकों का काल था, जिनके पास ात–बात पर निर्दोष जनता का खून बहाने और कर ागाने के सिवा कोई कान न था, जिससे वे स्वयं ाुलकर अय्याशी भरा जीवन बिता सके। मुगलों का ेिन्दूओं पर तो प्रकोप था ही, उस पर हिन्दूधर्म के ाकेदार कर्मकाण्डों का बढवा देकर अपना उल्लू ाीधा कर रहे थे। बेचारी जनता मुगल शासकों के ाकोप व धार्मिक अन्धविश्वासों के बीच पिसी जा रही ाी। ब्राह्मण और सामन्त लागों का अपना वर्ग था, जो ाटुकारिता से मुगलों से तो बनाकर रखते थे और ेनम्न वर्ग धर्म व शासन के नाम पर शोषण करते थे।

ऐसे में सन्त कबीर ने इस ब्राह्मणवादी प्रवृत्ति व ाार्मिक कट्टरता के उन्मूलन का बीड़ा उठाया और ामाज की गन्दगियों को साफ करने का पुरजोर ायास किया। कबीर धार्मिक बाह्याण्डम्बरों व सामाजिक ाढियों के घोर विरोधी थे, उन्होंने जहाँ कहीं भी वेद्रुपता और विसंगति देखी, अपनी कलम कलवार के ााध्यम से उस पर तीक्ष्ण प्रहार किया।

'माला फेरत जुग भया, गया न मन का फेर।
कर का मनका डारिदे, मन का मनका फेर।।"

हिन्दू ही नहीं अपितु मुस्लिम भी कबीर की लेखनी के तीक्ष्ण के प्रहार से बच नही पाये।

"दिन में रोजा रखत है, रात हनत है गाय।
यह तो खून है बन्दे, कैसे खुशी खुदाय।।"

इसी प्रकार कबीर ने जाति–प्रथा का विरोध करते हुए कहा कि–

"जाति–पाँति पूछे नही कोई, हरि को भजे सो हरि को होय।।"

समाज की अप्रिय रीति को देखकर उस पर उन्होंने इतने तीखे प्रहार किये कि धार्मिक आडम्बरों तथा ढ़ोगी और पण्डों मौलवियों के दिखावों की धज्जियाँ उड गयी। कबीर की वाणी में तीखा और अचूक व्यंग्य मिलता है, जो कि विशुद्ध बौद्धिकता की कसौटी पर खरा उतरा हो। आज भी हिन्दी में उनके तीखे व्यंग्यों की तुलना में हिन्दी में कोई लेखक नहीं। तर्क का सहारा लेने वाले तर्कवादियों को उन्होंने मूर्ख व मोटी बुद्धि वाला कहा है। क्योंकि जीवन की हर बात तर्क से सिद्ध नहीं होती।

"कहै कबीर तरक जिनि साधे, तिन की मति है मोटी।"

उनके इन तीखे प्रहारों में विद्रोह, हीनता तथा वैमनस्य का भाव नहीं है। उनकी कटुक्तियों में भी द्वैष या आत्मश्लाघा नहीं है। किन्तु एक आत्म विश्वास है स्वयं की आत्मा को तमाम विषमताओं के बीच शुद्ध रखने का। यहाँ वे सुन,नर,मुनि की आत्मिक शुद्धता को चुनौती देते प्रतीत होते हैं–

"सो चादर सुर नर मुनि, ओढि के मैली कीनी चदरिया।
दास कबीर जनत से ओढि के मैली कीनी चदरिया।।"

समाज में फैले धार्मिक अन्धविश्वासों के चलते उन्होंने अपनी आलोचना में हिन्दू या मुस्लमान नहीं देखा सबके मिथ्याचारों पर कटाक्ष किये–

"जो पू बाम्हन–बाम्हनी जाया, आन बाट व्है क्यूँ नहीं आया।
जो तू तुरक–तुरकनी जाया, भीतर खतना क्यूँ न कराया।।"

एक पद में तो उन्होंने पण्डितों से खुलकर पूछा हैं उनमें शूद्रों से भला कौनसी श्रेष्ठता है?

"काहे को कीजै पाण्डेय छोति बिचारा,
छोतहि ते उपजा संसारा।
हमारे कैसे लहू तुम्हारे कैसे दूध, तुम्ह
कैसे ब्राह्मण पाण्डे हम कैसे सूद।।"

कबीर ने ब्राह्मण की, शुद्र की ही नहीं, हिन्दू तथा मुस्लमानों के बीच भी वैमनस्य व भेदभाव की खाई को पाटने का प्रयास किया। दोनों घर्मों के लोग तब मुस्लमानों के बीच भी वैमनस्य व भेदभाव की खाई को पाटने का प्रयास किया। दोनों धर्मों के लोग तब भी एक-दूसरे पर कीचड उछालते थे और अपने अन्ध विश्वासों की ओर देखते तक न थे।कबीर ने दोनों धर्मों की कुप्रथाओं की और ध्यान खींच कर दोनों के बीच सामनस्य करवाने की शुरूआत की थी। दोनों जातियों के दोषों को समान रूप से उजागर किया-

"ना जाने तेरा साहिब कैसा है।
मसजिद भीतर मुल्ला पुकारै क्या साहिब तेरा बहिरा हैं?
चिंउटी के पग नेवर बाजे सो भी साहिब सुनता है।
पण्डित होय के आसन मारै, लम्बी माला जपता है।
अन्दर तेरे कपट कतरनी, सो भी साहिब लखता हैं।"

उन्होंने हिन्दुओं के मुर्ति पूजा का घोर विरोध किया और ईश्वर को घट-घटवासी बताते हुए वे कहते हैं-

"पाहन पूजे हरि मिले तो मैं पूजूँ पहार।
ताते या चाकि भली पीस खाये संसार।।

इसी तरह मुस्लमानों को भी खरी-खोटी सुनाने में कसर न छोड़ी-

"कंकर पाथर जोड के मसजिद ली चिनाय।
ता चढ मुल्ला बाग दे क्या बहिरा हुआ खुदाय।।"

जातिय विभेद को दूर करने के अलावा कबीर ने सामाजिक आचरण में व्याप्त भ्रष्टता को भी इंगित किया। कबीर की वाणी ने समाज के लिए बडा उपकार किया, उन्होंने सात्विक आचरण पर जोर दिया। कबीर के युग में वासना का प्रचण्ड स्वरूप फैला था, कबीर ने उसका डटकर सामना किया और सात्विक वृत्तियों को बढ़ावा दिया। हालांकि इसके लिए उन्होंने स्त्री की भरसक निंदा की, पर वहाँ स्त्री का माँ, बहन व सहचरी रूप नहीं बल्कि काम्य स्वरूप की निंदा की है-

"कामणि काली नागणी तिन्यू लोक मंझारि।
रामसनेही ऊबरे, विषयी खायें झारि।।"

मन को नियंत्रित रखने पर कबीर ने बहुत ही उत्कृष्ट कार्य किये। उनके समय में प्रचलित नाना धर्मों और उनके बाहरी आडम्बरों में सें किसी को भी अछूता नहीं छोडा। उन्होंने समस्त धर्मो के आडम्बरों का पर्दा खोल साधनाओं और सर्वधर्म का सार लेकर जनता को धर्म का अनोखा वह सहज रूप दिखाया जो सर्वग्राह्य व सर्वसुखकारी था। जैन, वैष्णव धर्म जिससे कि स्वयं कबीर प्रभावित थे, के व्रत दोषों को भी कबीर ने नही छोध-

"बैस्नों भय तो क्या भया, बूझा नहीं विवेक।
छापा तिलक बनाई कर, दग्ध्या लोक अनेक।।"

पूजा, तीर्थ, व्रत आदि का भी कबीर ने खुलकर विरोध किया-

"पूजा, सेवा, नेम, व्रत, गुडियन का सा खेल।
जब लग पिउ परसै, तब लग संसय मेल।।"

इसी प्रकार योगीयों की हठ साधना में भी कबीर ने कुछ शब्दों की अर्थ भ्रांति को दूर किया हैं-

"सहज-सहज सब की कहै, सहज न चीन्हे कोय।
जो कबीर विषया तजै, सहज कहीजै सोय।।"

वास्तव में समाज सुधारक कबीर ने मध्यकाल में अपने इन अमृत वचनों से भटकती जनता का उपकार किया था। यही नही कबीर वाणी आज के इस विषय व काम प्रभावी युग में भी उतनी ही सामयिक व उपयोगी है जितनी कि तब थी। आज भी भौतिकवाद के अन्धकार तथा विभिन्न धर्मों के भेद से हम कहां मुक्त हो सके है, ऐसे में कबीर के ये अमृत वचन आज भी मानव के लिए प्रकाश का मार्ग आलोकित करते है।

– कोटा (राज.)

ISBN : 978-93-82597-94-0

पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज (सांध्य)

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

3

भक्तिकालीन कविता : भारतीय संस्कृति के विविध आयाम

दो दिवसीय अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी / 2-3 नवम्बर, 2017

हरीश अरोड़ा
संयोजक एवं सम्पादक

रवीन्द्र कुमार गुप्ता
प्राचार्य

सौजन्य : केन्द्रीय हिन्दी संस्थान

अनुक्रम

सम्पादकीय *(भक्तिकालीन कविता : भारतीय संस्कृति की विराट गाथा)* 3

1. भक्ति आन्दोलन और कबीर 13
गायत्री सालवी
2. संत काव्य : आध्यात्मिक चेतना का विराट बोध 18
जसराम
3. गोस्वामी तुलसीदास के रामचरित मानस में प्रोक्ति योजना 21
आशुतोष मिश्रा
4. कबीर की जीवन दृष्टि 26
आशाराम भार्गव
5. हिन्दी दलित साहित्य में दलित जीवन-मुक्ति का संघर्ष 29
आशीष कुमार
6. भक्ति आन्दोलन और कबीर 33
अवधेश कुमार जौहरी
7. कबीर और तुलसी के राम 35
अवधेश कुमार
8. राजस्थानी संत साहित्य में आध्यात्मिक चेतना 39
मीनाक्षी बोराणा
9. कृष्ण भक्ति परम्परा : उद्‌भव और विकास 42
दुलुमनी तालुकदार
10. लोक मानस की महागाथा : रामचरितमानस 45
जी. रेणुका
11. कबीर की कविता 49
जुहेबउद्दीन
12. लोक मानस की महागाथा : रामचरितमानस 52
ज्योति वर्मा
13. सामाजिक एकीकरण का भाव और निर्गुण काव्य 55
कमलेश चौधरी
14. भक्ति आन्दोलन : प्रतिरोध का स्वर 61
खुशबू
15. संत कवि कबीर के नाम 64
कृष्णा पटेल
16. लोकमंगल की अवधारणा और रामकाव्य 67
रीता नामदेव
17. भारतीय संस्कृति और हिन्दी की कृष्ण-काव्य की परम्परा 75
ममता शर्मा
18. भक्ति और शक्ति का समन्वय 'आईपंथ' 79
मनोज सिंह
19. रामचरित मानस में समाज व संस्कृति 85
मीनू पारीक
20. भक्ति आन्दोलन और कबीर 88
मोना शर्मा

भक्ति आंदोलन और कबीर

गायत्री सालवी
शोधार्थी
कोटा विश्वविद्यालय, कोटा

भक्ति-आंदोलन का सूत्रपात भागवत धर्म के प्रचार-प्रसार के परिणाम स्वरूप हुआ। भक्ति-आंदोलन ने जन सामान्य को सम्मानपूर्वक जीवन जीने का रास्ता दिखाया, उनके मन में आत्मगौरव एवं आत्मसम्मान का भाव जगाया तथा जीवन के प्रति सकारात्मक, आस्थापूर्ण दृष्टिकोण विकसित किया। देश की एकता, अखण्डता और समस्त देशवासियों के कल्याण तथा मानव के समान अधिकारों को अभिव्यक्ति दी। भक्ति-आंदोलन उस समय की राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक परिस्थितियों की देन थी। भक्ति-आंदोलन के बारे में जानने से पहले उसकी पृष्ठभूमि के बारे में जान लेना जरुरी है।

राजनीतिक दृष्टि से यह काल मुस्लिम आधिपत्य का काल था। भारत में सर्वत्र मुस्लिम सत्ता का परचम फहराने लगा था। कुछ राजाओं की धार्मिक कट्टरता और असहिष्णुता की नीति का शिकार हिन्दू जनता को होना पड़ा। इस्लाम की तलवार की धार में भारतीय राजा डूब चुके थे। इसी तरह सामाजिक दृष्टि से भक्ति काल दो भिन्न-भिन्न संस्कृतियों के संघर्ष और सम्मेलन का काल था। एक ओर हिन्दू संस्कृति अपनी पूर्णता और प्राचीन परम्परा के अस्तित्त्व की रक्षा के लिए प्रयास कर रही थी, वही दूसरी ओर नूतन धार्मिक उन्माद से ओत-प्रोत मुस्लिम संस्कृति उस पर हावी होना चाहती थी। अतः हिन्दू और मुसलमानों में परस्पर वैमनस्य बढ़ रहा था। सामाजिक बंधन दृढ़ हो रहे थे। बाल-विवाह व पर्दा-प्रथा ने स्त्रियों के जीवन को कष्टप्रद बना दिया था।

धार्मिक दृष्टि से यह वह काल था। जब मूर्ति पूजकों पर मूर्ति भंजक हावी होते जा रहे थे। ऐसे समय में हिन्दू जनता को निराकार उपासना पद्धति से संतोष नहीं हो पा रहा था। ऐसी स्थिति में दक्षिण भारत के आलवार संतों से भक्ति की प्रबल लहर उठी जो शीघ्र ही सम्पूर्ण भारत में व्याप्त हो गई। इसके लपेट में हिन्दू जनता ही नहीं अपितु सह्रदय मुस्लिम भी आ गये। भक्ति-आंदोलन के उद्भव में राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक परिस्थितियाँ सहायक सिद्ध हुई है। लेकिन भक्ति-आंदोलन के उद्भव के विषय में विद्वानों में मतैक्य का अभाव पाया जाता है। सुधी समालोचक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल इस्लाम की विजय और हिन्दुओं की पराजित मनोवृत्ति को भक्ति-आंदोलन के उद्भव के लिए उत्तरदायी मानते हैं। उन्होंने लिखा है- ''देश में मुसलमानों का राज्य प्रतिष्ठित हो जाने पर हिन्दू जनता के ह्रदय में गौरव, गर्व और उत्साह के लिए अवकाश न रह गया था। उसके सामने उसके देवमंदिर गिराये जाते, देव मूर्तियाँ तोड़ी जाती व पूज्य पुरुषों का अपमान किया जाता था, किन्तु वे कुछ नहीं कर सकते थे। ऐसी दशा में न तो वे अपनी वीरता के गीत गा पाते और न ही बिना लज्जित हुए सुन सकते थे। ऐसी स्थिति में अपने पौरुष से हताश जाति के लिए भक्ति और करुणा में ध्यान लगाने के अतिरिक्त दूसरा मार्ग क्या था?''

भक्ति-आंदोलन के सम्बन्ध में शिव कुमार मिश्र लिखते हैं- ''यह भक्ति-आंदोलन, सच पूछा जाए तो अपने समय की राजनीतिक, धार्मिक, और सामाजिक परिस्थियों की अनिवार्य देन था। वह युग जीवन की ऐतिहासिक माँग बनकर आया। इस तथ्य का अनुमान महज इस बात से लगाया जा सकता है कि इसने न केवल अपने समय की राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक जड़ता को तोड़ा, चली आती हुई सांस्कृतिक जीवन की धारा के साथ विजेताओं की नई संस्कृति को घुलाते-मिलाते हुए पहली बार जाति, धर्म, वर्ग, वर्ण आदि से निरपेक्ष एक मानव धर्म तथा एक मानव संस्कृति की परिकल्पना सामने रखी। इसने शताब्दियों से कुंठित और अपमानित देश के करोड़ों-करोड़ साधारण जनों के लिए उनकी सामाजिक मुक्ति तथा आध्यात्मिकता के द्वार भी उन्मुक्त कर दिये, समाज तथा धर्म के ठेकेदारों ने जिन्हें उनके लिए कब का बंद कर रखा था। इस आधार पर यदि यह कहा जाए कि एक स्तर पर यह भक्ति-आंदोलन रूढ़िग्रस्त धर्म तथा उसके द्वारा अभिशप्त एक अनैतिक और अमानवीय समाज व्यवस्था के प्रति सामान्य जन के सात्विक शेष तथा उसकी दुर्दम जिजीविषा की भावात्मक अभिव्यक्ति था, तो अतिशयोक्ति न होगी।''

पाश्चात्य विद्वान, ग्रियर्सन, बेवर, कीथ आदि भक्ति को ईसाईयत की देन मानते हैं। उनके मतानुसार क्राइस्ट का बिगड़ा हुआ रूप ही कृष्ण है। डॉ. ताराचंद और हुमायु कबीर ने सम्पूर्ण भक्ति-आंदोलन को मुस्लिम संस्कृति का परिणाम बताया। इससे तो ऐसा लगता है कि मानो धर्म और दर्शन के क्षेत्र में भारत प्राचीनकाल से ही दरिद्र रहा हो। यह नितान्त भ्रामक तथ्य है।

लोकमान्य बालगंगाधर तिलक भक्ति को भारतीय दर्शन का उपजीव मानते हैं। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी भी इसी मत के समर्थ हैं। उन्होंने आचार्य शुक्ल के मत का खण्डन करते हुए लिखा है- ''यदि भक्ति पराजित मनोवृत्ति की देन होती तो

उसका जन्म और विकास दक्षिण भारत में नहीं हुआ होता।''

निष्कर्षत कहा जा सकता है कि भक्ति-आंदोलन न तो मुस्लिम सत्ता की प्रतिक्रिया है, न ईसाईयत की देन और न ही मुस्लिम संस्कृति के प्रभाव से उत्पन्न है, अपितु इसके मूल में भारतीय वैदिक धर्म विद्यमान है-श्रीमद्भागवत, गीता, महाभरत, नारदभक्ति सूत्र, शांडिल्य भक्ति सूत्र आदि ग्रन्थों में भक्ति का सांगोपांग विवेचन हुआ है। जैसा कि पूर्व में कहा जा चुका कि भक्ति-आंदोलन का सूत्रपात भागवत धर्म के प्रचार और प्रसार के परिणाम स्वरूप हुआ है।

इन परिस्थितियों में कबीर के आविर्भाव को रेखांकित करते हुए शिव कुमार मिश्र लिखते हैं- ''समझौते का रास्ता छोड़कर विद्रोह का रास्ता अपनाते हुए निर्गुण भक्ति की जो धारा भक्ति-आंदोलन की स्रोतस्वनी से फूटी कबीर उसकी सबसे ऊँची लहर के साथ सामने आए। समझौता उनकी प्रकृति में नहीं था। विद्रोह और क्रांति की ज्वाला उनकी रग-रग में व्याप्त थी। सिर पर कफन बाँधकर, अपना घर फूंककर वे अलख जगाने निकले थे। उन्हें समझौता परस्तों की नहीं, अपना घर फूंककर साथ चलने वालों की जरुरत थी, वे लुकाठी लिए सरे बाजार गुहार लगा रहे थे।''

''कबीर खड़ा बाजार में लिए लुकाठी हाथ।
जो घर जारे आपना चले हमारे साथ।।''

आदत से अक्खड़, स्वभाव से फक्कड़, जन्म से अस्पृश्य कर्म से वंदनीया बाहर से कठोर अन्दर से कोमल। सिर से पैर तक मस्तमौला युग प्रवर्त्तक और क्रांतिदृष्टा कवि कबीर मध्यकालीन तिमिराच्छादित वातावरण में ज्ञान दीप लेकर अवतरित हुए। ''मसि कागद को छुआ नहीं, कलम गाहि नहीं हाथ।'' ऐसे अक्षर ज्ञान से हीन कबीर ने कागद की लिखी न कहकर आँखन की देखी को अपनी लेखनी का विषय बनाया।

भक्ति-आंदोलन के व्यापक पटल पर कबीर का मूल्यांकन हमें कबीर को बाहर से भीतर तक देखकर करना होगा, कबीर बाहर से जैसे दिखाई देते हैं, भीतर से उससे कहीं अधिक है। कबीर को केवल दार्शनिक, निगुण ब्रह्म के प्रतिपादक, समाज-सुधारक, हिन्दू-मुस्लिम एकता के समर्थक पुरोधा तथा एक संत के रूप में देखना उनके साथ अन्याय होगा।

कबीर का मूल्यांकन उन मूल्यों के आधार पर किया जाना चाहिए जिन्हें विकसित एवं पल्लवित करने में उन्होंने अपना सारा जीवन समर्पित कर दिया। कबीर का मूल्यांकन उस वैचारिक पृष्ठभूमि पर करना चाहिए जिसके आधार पर वे अकेले इतना जबरदस्त विद्रोह कर सके। समाज की सम्पूर्ण सामन्तीय जीवन-प्रणाली और पुरोहिती दंभ के विरुद्ध जन सामान्य की प्रतिष्ठा, आत्मसम्मान, आत्म गौरव की घोषणा कर सके। सदियों से अनुप्राणित उस कठोर जीवन को तोड़कर नई उर्वर जमीन बनाने के प्रयास के आधार पर करना चाहिए जिसे उन्होंने अपने आँसुओं से सींचा।

''सोई आँसू साजणां, सोई लोक बिडाहिं।
जे लोइण लोई चुवै, तो जाणो हेत हियाहि।।''

करुणा के आधार पर यदि कबीर का मूल्यांकन किया जाए तो कबीर समस्त मानवता के प्रति संवेदनशील थे। चुपचाप, खा-पीकर चौन की नींद सोने वाले इस संसार की नींद पर, इस जड़ता और अपमान, अन्याय को चुपचाप सहन करने की आदत पर अपनी भविष्यता के प्रति उदासीनता की सोच पर कबीर रात-रात भर जागते है और आँसू बहाते हैं।

''सुखिया सब संसार है, खावे औ सोवे।
दुखिया दास कबीर है, जागे औ रोवे।।''

कबीर जाग रहे हैं, रो रहे हैं शेष सब खा रहे है और सो रहे है। कबीर का यह जागना और रोना बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। कबीर देश की सांस्कृतिक नवजागरण के अग्रदूत, पुरोधा थे। कबीर ने अपने समय में जिस युग सत्य का साक्षात्कार किया था उसे देखकर कबीर जैसा संवेदनशील, निष्ठावान व्यक्ति रो ही सकता है। इनके विद्रोही होने का एक कारण यह रुदन भी है। कबीर लोकचेतना के कवि हैं, लोक का दुख-दर्द उन्हें संवेदित करता है।

कबीर ने अहंकार त्याग पर विशेष बल दिया है। अहंकार ब्रह्म-जिज्ञासा, ईश्वर प्राप्ति के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा है। अहंकार रहित हुए बिना त्रिविध ताप से छुटकारा नहीं होता।

''आपा जानि उलटि लै आप, तो नहीं व्यापे तीन्यूँ ताप।''

'जहं आपा तहं आपदा' कहकर कबीर ने अहंकार-त्याग पर बल दिया। अहं से मुक्ति उनकी प्रखर विचारधारा से जुड़ा प्रश्न है, चुंकि मध्यकालीन समाज अहं परिचालित था। वर्ग-भेद आधारित समाज में जहाँ अमीर-गरीब का अन्तर है, धर्म और जाति का अन्तर है। सामन्तीय पुरोहितवाद ने अपने को सुरक्षित करने के लिए मानव-मानव के बीच कई दीवारें खड़ी कर दी। इसलिए कबीर कहते हैं- अपने से बाहर निकलो, सीमाओं का अतिक्रमण कर व्यापक समाज में पहुँचों जहाँ उच्चतर मानव-मूल्यों की प्रतिष्ठा है;

''हद चले सो मानवा, बेहद चले सो साध।
हद बेहद दोऊ तजे, ताकर मता अगाध।।''

अहं के साथ सहजता और सहिष्णुता जैसे मानवीय मूल्य नहीं चल सकते। इन मूल्यों के अभाव में न ही ईश्वर मिल सकता है और न ही सांसारिक सुख। कबीर ईश्वर प्राप्ति का मार्ग प्रेम मार्ग बताते हुए कहते हैं-

"पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ, पण्डित भया न कोई।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय।।"

इस प्रेम के अर्थ की व्यंजना गहरी है जिसे कबीर ने कई प्रकार से परिभाषित किया है-

"कबीर यह घर प्रेम का, खाला का घर नाहिं।
सीस उतारे भुई धरे, सो घर पैठे आहिं।।"

कबीर प्रेम के घर में बैठने के लिए अर्थात् ईश्वर तक पहुँचने के लिए जो शर्त है वह यह है कि व्यक्ति जब तक अहं का त्याग नहीं कर देता तब तक उसे ईश्वर की प्राप्ति नहीं हो सकती।

"प्रेम न खेतो नीपजै, प्रेम न हाट बिकाय।
राजा-परजा जिस रुचै, सिर दे सौ ले जाए।।"

अर्थात् ईश्वर को सम्पूर्ण समर्पण के द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है। यहाँ कबीर की ऐसी विचारधारा है, एक ऐसा दृष्टिकोण है, एक ऐसा सूत्र है जिसके आधार पर ही मनुष्य मात्र समानता के सिद्धान्त पर जिये जहाँ कोई ऊँच-नीच, भेद-भाव कोई विषमता और विश्रृंखलताएँ न हो।

"अवधू, बैगम देश हमारा
राजा-रंक फकीर-बादसा सबसे कहों पुकारा।
जो तुम चाहो परम पद को, बसिहों देश हमारा।।"

कबीर का यह आध्यात्मिक देश उच्चतम मानव मूल्यों का देश है। सामाजिक स्तर पर जहाँ व्यक्ति का सामाजिक चेतना में पर्यवसान होना ही मानवीय मूल्यों का प्रतीक है। कबीर ने समाज के प्रत्येक व्यक्ति के लिए सामाजिक-सांस्कृतिक चिंताए की हैं और इस दृष्टि से वे अपनी अनगढ़ता में भी कुछ मूल्य स्थापनाएँ कर सके, जिसे हम उनका विशिष्ट योगदान कह सकते हैं। कबीर का समय तीव्र असंतोष का काल था। उन्होंने सामजिक-संस्कृति पर बल देते हुए मध्यकाल के लिए एक नए मानवतावादी विकल्प का संकेत दिया। कबीर ने साधा-जीवन जीने का आग्रह किया। समस्त आडंबर मुक्त, शानो-शौकत से मुक्त, ताम-झाम से मुक्त समान्ती-पुरोहितवादी अलंकरण का निषेध किया। उन्होंने उन छोटी जातियों, जिन्हें निम्न समझा जाता था; जिनकी कोई सामाजिक, आर्थिक पहचान नहीं थी, उन्हें विशेष रूप से संबोधित किया। कबीर ने जातिवाद, बाह्यडंबर, छुआछूत, भ्रष्टाचार पुरोहितवाद शोषण- उत्पीड़न का जमकर विरोध किया। वे जन-सामान्य की प्रतिष्ठा और आत्म-सम्मान को महत्त्व देते थे।

कबीर का यथार्थ ऊपर-ऊपर नहीं तैरता वह प्रश्नों की गहराई तक जाकर एक संवेदनशील विचारक के रूप में हमारे सामने आते हैं। कबीर अपने युग सत्य से सबसे अधिक गहराई से जुड़े प्रतीत होते हैं। यह उनका भोगा हुआ यथार्थ हैं, जिसे वे अपनी विद्रोही वाणी में अभिव्यक्त करते हैं। कबीर को जहाँ भी विद्रुपता, आडंबर, पाखण्ड नजर आया उन्होंने अपने तीखे वाणी के प्रहार से उसे खत्म करने का पुरजोर प्रयास किया। वे मानवीय संवेदना के महान संत कवि थे। पण्डितों, मुल्लाओं और अछूतों के कर्मकांड और पाखण्ड उनके लिए 'आँखों देखी' प्रमाण थे। कबीर सुनी-सुनाई बात पर ध्यान न देकर आँखों देखी पर ही विश्वास करते थे। हिन्दू-मुस्लिम एकता के समर्थक कबीर ने हिन्दुओं और मुस्लिमों दोनों को फटकार लगाते हुए कहा-

"जो तू बामन-बामनी जाया, आन बाट व्है क्यूं नहीं आया।
जो तू तुरक-तुरकनी जाया, भीतर खतना क्यूं न कराया।।"

जाति-पाति पूछे ना कोई, हरि को भजे सो हरि को होई। कहने वाले कबीर जातीय भेदभाव से परे ईश्वर के स्मरण को महत्त्व देते हैं। वे बाह्यडंबरों का विरोध करते हुए मन की शुद्धता, पवित्रता को महत्त्वपूर्ण मानते हुए कहते हैं-

"माला फेरत जुग भया, गया न मन का फेर
कर का मनका डारि दे, मन का मनका फेर।"

महात्मा कबीर की खण्डन-मण्डनात्मक उक्तियों में मानव-मात्र की समता का उद्घोष है। कबीर की भक्ति समाजोन्मुखी व दृष्टि यथार्थपरक थी। कबीर ने मध्य युग में सत्य के भाव वाले जिस सद्भाव का संदेश दिया। वह सटीक है-

"सांच कहूं तो मारिहे, झूठे जग पतियाइ।
यह जग काली कूंकरी, जो छोड़े तो खाई।।"

कबीर ने अपने ब्रह्म को राम, हरि, मुरारी, गोपाल, विष्णु आदि नाम देकर भी निर्गुण निराकार ही माना है। वह बिना इन्द्रियों के और बिना स्वरूप के सृष्टि का संचालन करता है।

"बिन मुख खाई चरण बिन चाले,
बिन जिभ्य गुण गावे।
आछे रहे ठौर नहीं छाड़े,
दस दिसिही फिरि आवे।।
बिन ताला ताल बजावे,

बिन मंदल पर ताला।
बिनही "ाबद अनहद बाजे,
तहा निरतर है गोपाला।।''

कबीर ने समाज में सामाजिक समता को लाने का पुरजोर प्रयास किया। वे केवल सामाजिक असमानता से ही दु:खी नहीं थे बल्कि आर्थिक असमानता के लिए भी उतने ही दु:खी थे। वे चाहते थे कि आर्थिक रूप से भी समाज में समानता बनी रहे उन्होंने कहा है-

''सांई इतना दीजिए, जामें कुटुम्ब समाय,
मैं भी भूखा ना रहूँ, साधु न भूख जाए।।''

कबीर की वाणी का स्वर इतना तीव्र था कि उसकी गूंज हर दिशा में झोपड़ी से लेकर महलों तक सुनाई देती थी। कबीर के विचारों में क्रांतिकारी तत्त्व की मौजुदगी यूं ही नहीं हुई वे उस समय की परिस्थितियों से क्षुब्ध थे। उनकी कथनी व करनी में कोई अंतर नहीं था। कबीर हिन्दी साहित्य के पहले व्यंग्यकार है, जिन्होंने अपनी वाणी से सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक जाति विरोधाभासों को व्यक्त किया। कबीर पलायनवादी नहीं थे, उन्होंने समाज के मध्य रहकर गृहस्थ रूप में कर्मयोगी बनकर समाज को शिक्षित किया। जुलाहा कर्म को अपनाकर सभी के समक्ष आदर्श रखा कि कोई भी व्यवसाय हीन नहीं है। अर्थात कर्म की महानता के वे साक्षात् प्रतीक थे। उन्होंने दु:खी मानव की पीड़ा को स्वयं भोगा है-

''चलती चक्की देखकर, दिया कबीरा रोय।
दुई पाटन के बीच में साबुत बचा न कोय।।''

आचरण की शुद्धता पर बल देते हुए कबीर ने सत्य, अहिंसा तथा कर्म का महत्त्व बताया।

साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके हिरदै साँच है, तांके हिरदै आप।।''

शांति-प्रिय जीवन के उपासक कबीर सत्य, अहिंसा, सदाचार आदि गुणों के प्रशंसक थे। पराये दोष देखने के पूर्व स्वयं के दोष देखने में विश्वास रखते थे-

''दोष पराए देखि करे, चला हसंत-हसंत।
अपने याद न आवई, जिनका आदि न अंत।।"

कबीर एक रहस्यवादी कवि थे, उनके रहस्यवाद पर सिद्ध-नाथ, वैष्णव धर्म, अद्वैतवादी वैदान्त दर्शन का प्रभाव रहा है। वह ईश्वर को घट-घटवासी बताते है। मनुष्य को जिस परमात्मा की तलाश है वह कहीं ओर नहीं उसके ही अन्तस में है। लेकिन हम ना जाने कहाँ खोजते-फिरते है क्योंकि जन्मों-जन्मों से हम बाहर ही खोजते आ रहे हैं। अंदर खोजने की आदत ही नहीं रही, बाहर खोजने की आदत पड़ गई है।

''कस्तुरी कुंडली बसे, मृग ढूंढे बन माहि।
ऐसे घट-घट राम है, दुनिया देखत नाहि।।"

कबीर के काव्य में साधनात्मक रहस्यवाद के साथ ही भावात्मक रहस्यवाद भी मिलता है। जहाँ कबीर कुण्डलिनी जाग्रत करने जैसा कठिन मार्ग बताते हैं, वही जीवात्मा को ईश्वर की प्रेयसी बताकर परमात्मा रूपी प्रियतम से मिलने का सहज मार्ग भी बता देते हैं।

''दुलहिन गावहु मंगलाचार।
मोरे घर आए हो राजा राम भरतार।।"

सभी की आलोचना करने वाले कबीर इतने रसिक होंगे। यह एक आश्चर्य की बात प्रतीत होती है। कबीर की कविता में कल्पना, कवित्व एवं प्रतिभा के सर्वत्र दर्शन होते हैं। उनकी कल्पनाशक्ति में व्यावहारिकता व कलात्मकता का सुन्दर समन्वय देखने को मिलता है। कबीर ने अपनी उलटबासियों में प्रतीकों के माध्यम से जीवात्मा एवं परमात्मा की एकता को वर्णित किया है-

''काहे री नलिनी तू कुम्हिलानी।
तेरे ही नाल सरोवर पानी।।"

यहाँ 'कमलिनी' जीवात्मा तथा 'जल' परमात्मा का प्रतीक है।

कबीर को यदि संत के रूप में देखा जाए तो वे एक ऐसे संत थे, जिन्होंने उस समय की विपरीत परिस्थितियों में, जहाँ कुरीतियों व अंधविश्वास का बोल-बाला जनता के हृदय में घर करके बैठा था, उस अंधविश्वास, सामाजिक रूढ़ियों को हटाने का प्रयास किया। कबीर ने सभी स्तरों में क्रांति के रमणीय बीज बोय, उन्हें सींचा और पल्लवित किया इन बीजों से विराट वृक्षों का जन्म हुआ जिसकी अनुभूति की छाया में आज भी अनेक पथभ्रष्ट आत्माओं में आलोक की किरणें फूटी देखी है।

कबीर ने ऐसे धर्म का आह्वान किया जो विश्वधर्म है, जो देश का निरपेक्ष्य है, जो समस्त मानव-समाज के सदाचरण का प्रतीक है। कबीर के अनुसार जो धर्म है, वही जीवन है। समस्त मानव मात्र एक ही सत्ता की ईकाई है, उसमें एक ही जीवन

का आदर्शन है, एक ही राष्ट्रीयता है। इस दृष्टि से कबीर को मानव धर्म और राष्ट्रीय एकता का महान सूत्रधार कहा जा सकता है। व्यक्ति की आचरण प्रवणता ही उनका श्रेय और प्रेय था। मन की चंचलता, शुद्धि आत्मसंयमशीलता, चरित्रता, पवित्रता को धारण करने के साथ विवशता तथा विलासिता से मुक्ति के लिए उन्होंने साखियाँ रची हैं। उनकी साखियों में तत्कालीन समाज और उसके परिवेश के जीवन का अक्स है। कबीर समाज सुधारक ही नहीं वस्तुतः वे व्यक्तिगत साधना के प्रचारक थे। जीवन के जटिल अनुभवों-अनुभूतियों से उपजे उनके विचार आज भी समाजी-वैविध्य को मिटाने और मानवता को विकसित करने की ऊर्जा-"क्ति तक वह ऊ'मा देते रहेंगे और विकसित करते रहेगे। मनुष्य के गौरवपूर्ण भविष्य के प्रति दृढ़ आस्था। ज्ञानमार्गी शाखा के सर्वप्रमुख महान संत कबीर एकान्त प्रिय, चिंतशील, साधुवादी स्वभाव के थे। उन्होंने जो कुछ सीखा, अनुभवों से सीखा। वे एकेश्वरवाद के समर्थक थे। उन्होंने विचारात्मक धरातल पर गम्भीर चिंतन द्वारा विषय के मूल में विद्यमान तत्व का अनुसंधान किया। ऐसे भविष्यदृष्टा, युगप्रवर्तक कबीर भक्ति-आंदोलन में ज्ञानदीप लेकर प्रकट हुए। पहले से चले आ रहे, बाह्याचारों से सामाजिक जड़ता का विकास हो रहा था। इसीलिए मानव-मानव को समझने और उसे संवेध बनाने की सार्थक चेष्टा कबीर का सबसे बड़ा योगदान है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि भक्ति-आंदोलन में निर्गुण-ब्रह्म के उपासक, महान संत कवि कबीर का विशेष योगदान रहा। इन्होंने समाज में एकता, समरसता, आत्मसम्मानपूर्ण जीवन जीने का मार्ग प्रशस्त किया। युग की पुकार को, युग-सत्य को समझते हुए मानव-मानव को प्रेमपूर्वक जीना सिखाया। कबीर ने निर्गुण ब्रह्म की उपासना पद्धति पर जोद देते हुए साधनात्मक मार्ग का अनुसरण किया। माया को महाठगनी बताते हुए उसे ईश्वर प्राप्ति के मार्ग में बाधक माना। कबीर भक्ति-आंदोलन में क्रान्तिकारी, युगद्रष्टा, पथप्रदर्शक रूप में ज्ञान का दीप लेकर भटकती जनता का उपकार करने अवतरित हुए। आज भी भौतिकवाद के अन्धकार तथा विभिन्न धर्मों के भेद से हम कहाँ मुक्त हो सके हैं, ऐसे में कबीर के ये अमृत वचन आज भी मानव के लिए प्रकाश का मार्ग आलोकित करते हैं।